श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीविठ्ठलेशो जय
यदंघ्रिकंजविलसद्दलितं प्राप्य येन मः
तं विठ्ठलमहं वंदे श्रीवल्लभतनूद्भवं
॥१॥

॥श्रीगणेशाय नमः श्रीविठ्ठलेशो जयति
यदंघ्रिकंजविलसद्दलितं प्राप्य येन मः
तं विठ्ठलमहं वंदे श्रीवल्लभतनूद्भवं ॥१॥
यं नामनाव नास्य भवाब्धिमतरन्निजाः
तस्माद्दसंप्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतं
छंदोनुष्टुप् ऋषिकर्त्ता देवो गोपीजनप्रि
यः कामात्तो बीजमेकांतनिष्टा गोपाल
नंदनः २ शक्तिः श्रीराधिकाकांतो नील
मेघातिसुंदरः सर्वेष्टफलसिध्यर्थे वि
नियोगः प्रकाशितः ४ श्रीवल्लभसुतः श्री
मान् श्रीकृष्णजन्मपूर्णकर्मलक्ष्मीगर्भ
पयःसिंधुतारागणाधिपः ५ श्रीमद्गोव
र्द्धनाधीशदर्शनात्यागकातरः श्रीवल्ल
करांभोजलालितश्रीमुखांबुजः ६ व्रज
वासीजनानंददायकः सकलापद्धृत्पुं
डरीकविशालाक्षो रुक्मणीकेशालनः ७॥
जगदार्तिहरी दीनपालकः करुणानि
धिः पूजितावनिगीर्वाणपादुकस्तस्मृ
तिप्रदः ८ श्रीलक्ष्मणनटोच्छिरस्मातः

कुलदीपकः गिरिधारिमुखांभोजमनस्कोवि
ठ्ठलेश्वरः गोकलेशपदांभोजमाध्वीको
न्मत्तषट्पदः विशदीकृततद्भक्तिस्त्वामा
मृतपानकृत् १० कुंडलाकांतगल्ल श्रीस्त
ल्लस्थापिताकृतिः तत्पादविलसत्पंकसां
द्रीकृतहृदंबुजः ११ विठ्ठलेनोधमानेक
लोविदांतपारगः नवभक्तिप्रचारैककर्ता
ब्रह्मत्वकारकः १२ अस्वधर्मनिराकर्ता स्व
धर्मप्रतिपालकः मायावामनः पुंजनिराक
रणभास्करः १३ सर्वेष्टसिद्धिदातास्वकमनी
यकलेवरः सर्वविद्याप्रवीणश्चसर्वसंसार
दुखहा १४ अतिगंभीरतात्पर्योनवनीत
प्रियःप्रियः श्रीमद्वृंदावनाधीशःस्वेष्टतपा
लिकामदः १५ सोमयागप्रतिष्टातासोम
वंशोद्भवाश्रयः प्रचंडदास्ययुक्तात्मापवि
त्रीकृतमानवः १६ पंचास्यःसुखसेव्यश्चसु
खराशिप्रपंचकृत् कालिंदीपुलिनावि
ष्टचितःपतितपावनः १७ व्रजनाथप्रशं
सार्थेकृतश्रीगोकुलालयः श्रीकृष्णभोग
समयेगोजनमानुजञ्च १८ जितारिवर्णा
जगत्स्तोत्रपंडितः श्रीकरान्वयः समानश्री
लद्दसितः प्रतितोद्धारकारकः १९ गुंजा
वलिलसत्कंठो गोपिनाथोसहोदरः स्वलू
पलक्षितानेगयशाशक्तिप्रदर्शकः २०
सेवार्थविवृतेःकर्ता सेवासमतत्परः त्रि
षविख्यातकीर्तिश्च विश्वधर्मप्रदर्शकः २१

स्वाधीकृतचतुर्वर्गो ह्यतुमार्गविशारदः श्रीभाग
वततत्त्वार्थज्ञाताततज्ज्ञानपोषकः २२ पुष्टिमा
र्गैकधर्मादिप्रकाशनपरायणः अवतारद्व
यकर्त्ता नामातिकृतमृतमः २३ जगज्ज
दुरुः पूज्यो भक्तपादाब्जसरोरुहः श्रीकाणि
कजनयनापांगादत्तसेवकः २४ अवि
तमहिमाज्ञानकर्मनामोतिरिक्तदः प्रतिष्ठ
ह्लाघ्वी नट वानलः कल्याणकारणः २५ भ
स्त्यावितवल्लवादैकपदः परमसुंदरः नि
स्तारितत्रिलिंगास्पदक्रांतिचतुरो विभुः
२६ श्रीरुक्मिणीपतिः श्रीदः कुलिनस्त्र्वे
वह्ननः पद्मावतिप्राणनाथः सर्वलोकैक
मंडनः २७ श्रीमत्पुराणपुरुषः प्राणसंतोष
कारकः त्रुविप्रसिद्ध गोपीशः तत्पादसक्त
मानसः २८ लौकिकालौकिकार्थ्यदिदाता
कालात्मवल्लवितः संसारसागरामग्नजी
वोद्धतिकृतिक्षमः २९ वृंदावनदमयः पूर्णः
कालिंदीवह्ननः प्रियः व्रजप्रियो व्रजास
क्तो हरिवक्त्राब्जसंभवः ३० श्रीमद्भागव
तिपादांभोजयुग्मावलंबनः सर्वस्वयं
नियंताब्जनगदंर्मैवस्फुटः ३१ श्रीक्षोति
स्मृतिपुराणोक्तिसर्ववेत्ता व्रतापवादवया
मतिहिमेकाचरवितानामसालिका ३२ श्री
विठ्ठलेशकुलनाममालिकां ये पठंति जगति
तले जनाः प्राप्नुवंति रतिकुंजमंदिरये ३३ हृ
द्धयेधायेतयेतन्नामकोस्कः मन्मूषणे मत्त

:कल्पतुल्यात्माहृडयतेसर्वेनूतले२४
तत्मजन्मसुगापानापासनयक्तपुरा
ज्ञाकृकौस्कन्नसारस्यज्ञातेत्वाधिकार
ण २५ नगौवलंबका केचित् केचित्छ
क्याबलंबका: वयंतुविठ्ठलेशस्यदास
दासावलंबका: २६ इतिश्रीरघुनाथ
जीविचितनामकौस्कैनास्त्रस्तोत्रसंपू
र्ण संवत् १९३० के मितीकौ स सुदी १०

कृष्णायनमः॥श्रीगोपीजनवल्लभायनमः॥अथश्री
हरिरायजीकृतसिक्षापत्रताकीटीकाश्रीगोपेश्वरजीलि
खते॥एकसमयश्रीहरिरायजीपरदेसपधारेहुते
औरश्रीगोपेश्वरजीघरसेवामेंहुते।श्रीहरिरायजीवडेभाई
श्रीगोपेश्वरजीछोटेभाई सोश्रीगोपेश्वरजीकीवहू
वोहोतअनुकूलसेवामेंतत्परभगवद्भावसंवलि
तसोश्रीवहूजीलीलाविस्तारी।तवश्रीगोपेश्वरजी
सेवासंवेधार्थवहुतहीविरहभयो।सोदिनतीन
तोभोजननाहीकीयो।सोश्रीवहूजीकेलीलाविस्ता
हरिरायजीमहीनादोयपहलेंजानी
विचारेजोश्रीगोपेश्वरजी
विप्रयोगकरिवोहोतदुखपावेगे।तातेंकछुसिक्षाके
पत्रपहलेंतेपठाएचहिये।श्रीआचार्यजीमहाप्र
भुनकीकृपातेंजोकोईसिक्षापत्रवाचेगो।ताकेस
कलदुःखनिवर्तहोइगो।हृदयमेंभगवद्भावहोइ
गो।यहविचारसगरोसास्त्रपुराणश्रीभागवत
सर्वकोसिद्धांतसंयुक्तसिक्षापत्रलिखकेएकपत्रनि
त्यश्रीहरिरायजीअपनेमनुष्यहाथश्रीगोपेश्वर
जीकोपठावते।सोश्रीगोपेश्वरजीअपनीवेठकमें
एकगवाखमेंधरिराखते।वाचतेनाहीजानतेजो
भाईश्रीसदाहमऊपरवोहोतनेहहैं।सोसिक्षाकरतहैं
सोहमतोभगवत्सेवाकरतहैं।औरकछुजानत
नाहीं।यहविचारिकेएकगवाखमेंधरिराखते
ऐसेंकरतसिक्षापत्र४१पठाए।सोसबश्रीगो
पेश्वरजीधरिराखते वाचतेनाही।तवश्रीहरिरा
यजीअपनेमनुष्यनसोंपूछेजोभाईश्रीगोपेश्वरजी
पत्रवाचतहैं।तवमनुष्यननेविनतीकरीजोम
हाराज।हमआपेंतोएकगवाखमेंधरिदेतहैं।
वा[illegible] नाहीकुसलपत्रलिखिकेहमकोविदाक

२

रमहे पाछें आपु वाचत होय ताकी ठीक नाही हमारे
गेतो वाचत नाही तब श्री हरिराइजी विचारे जो नाही व
बेक है ४१ एकता की सिपठाये सोई बहुत है एक प
त्र वाचेंगे तो सकल दुख निवर्त होइगो पाछें श्री हरि
राइजी पत्र नाही लिखे पाछें बहुत दिन में श्री गोपेश्वर
जी की बहुत जी लीला विस्तारे सो श्री गोपेश्वरजी को ब
हुत ही दुख भयो तीन दिन लो भोजन नाही कीयो
सगरे मिलि कें समुझाय हारे काहू की मानी नाही कहे
जो देह के लेमें सो सेवा न होइगी घर छोडिकें वन में
जाउंगो पाछें एक सेवक हरिजीवनदास सो श्री हरि
राइजी को कृपापात्र श्री गोपेश्वरजी हू हरिजीवनदास
पर बहुत कृपा करते सो उह देश तें श्री गोपेश्वरजी के पा
स आय बहुत समझाय कें विनती करी सो श्री गोपे
श्वरजी ने एक हू न मानी तब हरिजीवनदास ने कही
या समय श्री हरिराइजी घर होते तो समझावते औ
र केवल सकी बात नाही है पाछें हरिजीवनदास ने
श्री गोपेश्वरजी सों पूछी जो कोई पत्र श्री हरिराइजी
के हू आयो है तब श्री गोपेश्वरजी ने कही जो आगे तो
बहुत आवते गवाख में धरे हें अब दस पाच दिन ते तो आव
ते नाही तब हरिजीवनदास ने गवाख में ते पत्र ४१ निक
सिकें श्री गोपेश्वरजी के आगे धरे और विनती कीनी
जो महाराज एक पत्र वाचिये तो सही तब श्री गोपेश्वर
जी ने एक पत्र अपने श्री हस्त में लीयो सो भगवदिच्छा
ते प्रथम पत्र हस्त में आयो तब श्री गोपेश्वरजी उह पत्र
वाचत ही सगरो दुख दूरि होइगो भगवद्भाव हृदय
में बढ्यो तब श्री गोपेश्वरजी उठि कें हरिजीवनदास को
सब कों अपने हृदय सों लगाइ कें कहे वे सब तू आ
यो तो हम यह श्री हरिराइजी के पत्र वाचे ताको
सगरो दुख गयो पाछें श्री गोपेश्वरजी सिद्धाप

ह

सो सब बांचे। पाछें श्री गोपेश्वरजी नें हरिजीवनदास
जो यह सिक्षापत्र की टीका में करूं। जो नृसिंह
महाराज

श्वरजी प्रसन्न होइ कें स्नान कीयो। पाछें आप भोजन कीं
तो सगरो परिवार प्रसन्न भयो। पाछें हरिजीवनदास कें
यो सगरो परिवार प्रसन्न भयो। पाछें हरिजीवनदास के
बेठाय पास श्री गोपेश्वरजी भाव में मग्न होया। श्री आचा
र्यजी श्री गुसांईजी श्री हरिराइजी को स्मरण करि नम
स्कार करि सिक्षापत्र की टीका करन लागे। सो प्रथम
सिक्षापत्र को स्लोक कहत हैं। स्लोक॥ सदा छिन्न मना हृ
सद्दर्शनः क्लिष्टमानसः लौकिकं वैदिकं चापि कार्य
कुर्वन्न नास्थया॥ १॥ याको अर्थ॥ अब श्री हरिराइजी
सिक्षा करत हैं जो लौकिक वैदिक कार्य के आवेस क
रि मन को उद्वेग करिकें तथा लौकिक वैदिक कार्य के
आवेस करिकें श्री हरि के दर्शन को जैयें जो प्रभु तो सदा
आनंद रूप हैं। सो जीव को सन्मुख आवेस रूप देखिकें
दासी न होय जाय तातें लौकिक संसार के कार्य सि
द्ध होऊ। अथवा बिगरि जाय। परंतु मन में आवेस न क
रिये। तैसें ही वैदिक कार्य सिद्ध होउ। अथवा बिगार
होय। ताह बात में मन में आवेस नाहीं करियें। तौ किंवे
स्व मन में तुछ करिकें जानियें। और प्रभु की सेवा स
बंधी कार्य है सो सिद्ध होय तब मन को प्रसन्नता रा
खे। जो कदाचित बिगरे सेवा न बने तो खेद मन में रा
खे। यह पुष्टिमार्ग की रीति है। जैसे व्रजभक्त श्री ठाकुरजी
कों बन में पधारते। तब विप्रयोग में बेणुगी
त गावते। पाछें जब श्री ठाकुरजी संध्या समे
घर में पधारते। तब व्रजभ
क्तन को सुख दान

५. आगेंदसोंदरसनसेवाकुरते तैसेंही पुष्टिमार्गमेंसेवासम
यसेवासोंन चूकिये अनोसरमेंश्रीठाकुरजीको लेस्वरू
पैं त्रस्वीरूपकें मुखारविंदको मनमेंध्यानकरियें
तबसमयसेवाको होय तब आपतें आतुरतासोंश्रीस्व
रूपफलात्मकपुरुषोत्तमतिनको दर्शनकरिये पाछेंलौ
किककार्यवैदिककार्यग्रहस्थाश्रमकोधर्महैं तातेंलौ
किकअपकीर्तिकेभयतथावैदिकमर्यादाकेलीयेआ
चरणकरिये परंतुलौकिकवैदिकमेंमनआसक्तिनराखियें
मनएकश्रीठाकुरजीमेंराखिये तातेंमनमेंलेसरूपके
दर्शनकरिये प्रसन्नतासोंकरिये याप्रथमश्लोकमें
दरसनकोप्रकासकरे सेवाकोनाहीकरे सो यातेंजोस
नवमेंमंदिरकीसेवानहोयसकें भावकरिमानसीसेवा
होय यहमर्यादाग्रंथमेंआगेंकहीजाय अबओरहूसिद्धां
करतहैं: श्लोक: निरुद्धवचतोवाक्यमायस्यकुसदाहर
नूमनसा भाव्यं नित्यं लीलाःसर्वात्मना गता: भा
आपकेवचनकोनिरोधकरनो बोलनो नाही
आवस्यककार्यहोइसोई बोलनो मुख्यसिद्धांततो
यहहैं जो भगवत्संबंधविनाअन्यवार्तानबोलनो
परंतुलौकिकवैदिककार्यग्रहस्थाश्रममें बोलेविना
कार्यनचलेतो अवश्यहोय सोई बोलनो काहेतेंवा
नीकोनिग्रह होइ तो मुखरतादोषनहोइ औरभगव
द्भावहृदयमेंस्थिरहोइरहे बहुतबोलेतें भगवद्भा
वहृदयतेंनिकसिजातहें वानीद्वारा एसीभगवद्धर्म
कीसहजगति हैं तातेंजबवानीकोनिरोधहोइ तबम
नकोधर्मयहहें जोअनेककाम्यानेभटकतहैं सोमनमें
विचारिकें श्रीठाकुरजीकीलीलाअनेकप्रका
रकीहैं तातें तासमेंहित लगाइदीजे काहेतेंमनको
गमनपवनतेंअधिकहैं तातेंमनकोकोटि यसो

परंतु रोकेसों मन तो रहे नाहीं तातें श्रीठाकुरजी
कीलीलामें लगाइये जन्माष्टमी अन्नकूट होरी हिंडो
ल्यादि वरस दिनके उत्सव तिनकों अनेक लीला भा
वकरिकें पुष्टिमार्गकी रीतिसों मन लगाइये तथा नि
त्यलीला प्रातःकालतें श्रीठाकुरजी श्रीनंदरायजीके घ
जागतहैं कुंजमें श्रीस्वामिनीजीके इहांतें जागतहैं
थारें डिना मंगलभोग मंगला आरती सिंगार ग्वाल
पालन राजभोग उत्थापन भोग संध्या सेन पर्यंत नितु
अनुसार तथा सेन पीछें सुखसेन होय मन लागे तो
रासलीला मानादिक जलस्थल विहार इत्यादिक
मनसों भावना करे तथा श्रीआचार्यजीके कुल
श्रीगुसांईजीको स्वरूपको विचारे श्रीठाकुरजीको प्र
गट्यकों तथा लीला सामग्री वागा वस्त्रको भावक
हादें यह मनमें विचारिकें भावना करिये क्रमसहि
तलीलाकों विचार करिये ताकरि भगवद्स्वरूपसें
अष्टप्रहर लीलाको स्मरण मनमें राखनो भावना
होय प्रकार है एक उत्तम साके मध्यम उत्तम प्रकार
यह जो भाव करि गुरुके पास आपु जाय स्नान करि
मुख होय प्रथम गुरुकी सेवा करिकें पाछें गुरुकी सें
नामहित्तसें जाय तहां गुरु जो आगपूरें तथा विन
तीकरि सेवा करे तो प्रभुको श्रम न होइ और आनु
रूपप्रभु वेगिही प्रसन्न होइ यह उत्तम प्रकार जान
और मध्यम यह जो अपने हृदयमें प्रभुको पधरावे
प्रभु तो दयाल हे पधारे हें परंतु प्रभुको श्रम होय
पुष्टिमार्गकी रीति नाहीं याक्रमसों सेवा करें
और हू विलास करत हें श्लोक ॥ सेवा पिका पिको
निरूपे नवचिंता ॥ हे हिककमें निश्चित प्रभुसे
यो [illegible] ॥ याको अर्थ ॥ अब कहत हें जो स्व

हस्तौं करनौं ओरकौ ऐसें न
अपने स्वरीरसों संगारी सेवा न
श्रीठाकुरजीकौ श्रम होत होइ तो सहाय
ये औरहसों करावनौं पुष्टिमारगीय वैष्णव होय
या अपने कुटुंबमें समर्थ नीम यो टी होय तो सा
रावनौं अवैष्णवसों सेवा सर्वथा नहीं करावनौं
ज हस्तौं जितनी सेवा अपनी देहसों वनसो करने
या तन स्वकरिकै लौकिक वैसन न करनौं अपनी का
सें श्रीठाकुरजीकी सेवा करे तो सरीर इंद्रियन सब श्री
ठाकुरजीके सन्मुख होइ भगवदसंबंधत्व सुख
होइ तातें आवस्य अपने स्वरीरसों नेमसहित भग
वदसेवा करनौं यह नेम राखनौं तो अपनी सेवा विन
लौकिक कार्य वैदिक कार्य खांनपान न करनौं मन
में विचार करि लौकिक मनकों समझावनौं जो जा
भांति खांनपानको नेम है प्रीतिसों तैसी प्रीतिसों
सेवा जो वैष्णवकौ मुख्य धर्म है यातें मुख्य करि
नौं महदासको धर्म है सेवा विन पशु सम है और लौ
किक वैदिक कार्य आदिदै ते वा ठौर मन भटकत है तहां
तें मनकौं निरोध करिकें सेवा करें प्रथम तो मनकौ
निरोध राखै जो मन लौकिक वैदिकमें नाय तो भ
गवत्सेवामें उद्वेग होय तथा सेवामें श्रद्धा घटि जा
य तातें मनकौ निरोध सेवामें आवस्यक है तापीछे
इंद्रियनकौ निरोध करनौं सेवासंबंधी कार्य विना वो
लनौं नाहीं लौकिक वातानीते मुख नादोषते सेवा
में भगवदभाव रूपी रस तिरोधान होत है तातें मि
थ्यावानीकौ निरोध करें तेसें ही मिथ्याक्रियाकौ नि
रोध करनौं भगवत्सेवाके समय लौकिक कार्य कछु
आयपरे सो न करनौं जो सेवासंबंधी कार्य [illegible] सो

दिकें औरकार्यकरेंतोंउहकार्यहू सिद्धिनहोइ लौकिकावै
महोय याप्रकारमनवानीक्रियातीनोकों लौकिक
वैदिकतेंनिरोधकरिभगवत्सेवाकरें औरवैदिकमेंहूवहु
तहें लौकिकवैदिकसोयहसंसारमेंरहिकेंनकरेंतोसंसा
रमेंअपकीर्तिहोय सेवामेंप्रतिबंधहोय तातेंलौकिक
वैदिककार्यहू लोगनकेदिखायवेकेलियेश्रीठाकुरजी
कीसेवासोंपोहोंचिकेंयनेंसमयमेंआसक्तिविनाकरें।
याप्रकारप्रभुकोअंगीकारवस्त्रसामग्रीसकलकरिपाछे
अपनेस्वार्थलौकिकवैदिकमेंलगावें।याप्रकारवैष्णव
सेवाकरेंतोंप्रभुअनुभवकरावें।अत्रवचोरहूकह
तहैं श्लोक॥यथोपकरनादीनारक्षानतद्धियीयता
भार्यादीअनुरागोपिसेवाहेतुकएवहि॥ या
अर्थ।अवकहतहैंजोपाकादिकसामग्रीकीरक्षा
औरश्रीठाकुरजीकीसेवामेंसामग्रीसिद्धकर
णार्थ।कारेंतें स्त्रीभगवत्सेवामेंसहायहोयतो
भगवत्सेवामेंसहायहोयतोभगवत्सेवाभलीभां
तिसोंहोय यांभांतिभगवत्सेवार्थभार्याजोस्त्रीता
सेंअनुरागराखनो।अपनेविषयादिककेअर्थ
अनुरागसर्वथानकरनो ताकोदृष्टांतकहतहैंम
हादेवजीकीस्त्रीसतीहुती सोमहादेवजीकोकह्यो
नाहींमान्यो श्रीरामचंद्रजीकीपरीक्षालीनी जानकी
जीकोरूपधरि सोयातोमहादेवजीनेंजानी सोम
हादेवतोभगवद्भक्तभयो सोवाहीसमयसतीको
त्यागहीकीयो पाछेंसतीदक्षप्रजापतिकेजग्यमेंआ
इकेदेहभस्मकीयो पाछेंहेमाचलपर्वतमेंप्रगटीत
हांअनेकतपस्याकीनी तबमहादेवजीकोमनसती
परप्रसन्ननभयो तबश्रीठाकुरजीनेंमहादेवजीसोंकही
जोअनेकतुम इतनोमेरोकह्योकरो पार्वतीकोअंगीकार
महादेवजीपार्वतीकोव्याहिकेंअपनेघरल्या

स.प.

रे तबपार्वतीनें महादेवजीसों भगवत्सेवा पूछी
तबमहादेव प्रसन्न भये तातें वे सब होइवेको विशु
विषयके अर्थ स्त्रीपर प्रसन्न न होय भगवत्सेवार्थ
अनुराग भये जाप्रकार भगवत्सेवा भलीभांतिसों
होइ सोई करनो याभांति सेवाहेतु लौकिक करिये
सब और हू कहत हैं ४ श्लोक ॥ प्रतिकूले यथा त्याग
प्रभुसंबंधिवस्तुन: धनेच निस्पृह: सेवोपयोगत्वेन र
क्षोपयाको अर्थ ॥ औरजो स्त्री प्रतिकूल होय भगव
त्सेवामें प्रतिबंध करे तो गृहस्त्री को त्याग ही करिये
वा स्त्रीमें अनुराग न करिये काहेतें प्रभुसंबंधीन
होय ताको त्याग ही उचित है काहे ते प्रभुसंबंधवि
ना जो स्त्री होय सो सर्वथा भगवद्भाव को नाश करे
तातें सिवाय और भगवद्भावमें वाको मन लागे पुष्टि
मार्गमें श्री आचार्यजी के द्वारा नाम निवेदन होय
मर्यादा होय तो श्रीठाकुरजीके पधराइये सेवक होय मर्या
दा होय तो श्रीठाकुरजीको पधराइये सेवक होय मर्या
दा नहीं होय तो ऊपरली सेवा कराइये प्रतिबंध करे तो सोई
ही वाको त्याग करिये और धनमें आसक्त न राखे नि
ही की नाई है धनकी रक्षा करे नाही उत्तमोत्तम है सो
यह कलियुग है याकालमें जीवको धीरज तो का
छूट जात है सो धनकी रक्षा न करे तो धन सब कछू दि जाय
पाछें जीवको धीरज नाहें तब धन बेलीगो बहुत दुःख पा
वे यातें करै धनकी रक्षा आपने सुखअर्थ न करे यह जा
ने जो यह धन प्रभुको है सो प्रभुकी सेवा अर्थ रक्षा क
रे जो हृदयमें पूर्ण वैराग्य होय तो धनकी रक्षा न करे
जो वैराग्य दृढ न होय तो भगवत्सेवार्थ ताकी रक्षा क
रे और भगवत् उत्सव आदिमें उद्यम को लगावे जो
भगवद् अर्थ द्रव्य न लगावे लौकिक में लगावे या
धनमें आसक्त मनको करिके भगवद्उत्स

हूं व द्रव्य पुत्रमें वैष्णवमें न लगावे तो दुःख आसुरावेस
होय तातें धनकरि दत्त रहे धनकी रक्षा करि भगव
त्सेवा गुरुसेवा वैष्णवसेवामें विनियोग करे या भां
ति विवेक विचार करि वैष्णव रहे तो भगवत्स्वरू
पमें बुद्धि पे श्रीआचार्यजी कहत हैं श्लोक ॥ विवा
हादिषु कार्येषु व्यवहारेष्वनारथ्यमानसः भगवत्सार्गसंयो
पि स्वप्राणप्रेष्ठवानेया ॥ यथा ॥ अर्थ। ऊपर पहले कहे जो
धनको लै विवसे न खर्चे सो विवाहादिक कार्यमें
मन खर्चे विना वै. सेये हां हां कहत हैं जो अपनो वि
वाह तथा पुत्रादिकको विवाह होय तो प्रभुसेवाको
विचार करे जो भगवत्सेवामें और मनुष्य होय तो भ
गवत्सेवा भली भांति सो होय यह विचारिके जितनो
द्रव्य विवाहादिक कार्यमें लगावनो होय सो श्रीठा
कुरजीकी आज्ञा पायके ऊह द्रव्य खरच करे या भांति प्र
भुकी आज्ञा पायके दास भाव होयके लौकिक वैदिक
कार्य करे और भगवदीयको संग करिये सो कछु लौकि
क वैदिककी चाहना स्वारथके लीये न करिये केवल अ
पने प्राणप्रेष्ठ जो श्रीठाकुरजी हैं तिनकी वार्ता वरणार्थ
भगवदीयको संग न होय तो वह मुख होय जाय तातें भग
वदीयको संग आवश्यक ही करनो ॥ निरपेक्ष भावसों अप
नी बड़ाई प्रतिष्ठा अर्थ भगवद्धर्म कछु न करनो दैन्य
होय आपनो धर्म जानि करनो श्रीआचार्यजी कहत हैं श्लोक
वियोगानुभवं कुर्वन्सेवा न वर्त्म पुनः मूर्तौ भगवतो दृ
ष्टिर्भोग्यानन्तस्य दर्शने ॥ ७ ॥ याको अर्थ। भगवत्सेवामें
संयोगात्मक लीला रसको अनुभव करिये जो सामग्री
धरिये ताको भाव विचारिये जो वस्त्रादिक धरिये ताको
भाव विचारिये जो वस्त्रादिक धरिये ताको भाव वि चा
रिये तब सेवासों पोहोचि अनोसर करिये तब वियोगा

सन्मुख

-५-

भवकरियें जैसें व्रजभक्त वेणुगीत युगलगीतमेंकी
वाहीभांति विचारियें॥ अब प्रभु कोनसी कुंजमें
कहांकौन भक्तनके संग करत हैं ताको स्म
रण विकल होय जो मैं वडो दुष्ट हों तोसुं
न नाहीं होत तव यह श्लोक श्रीगुसांईंजी
हैं ताको भाव विचारनो चित्तेन दुःशेवचसापिद्
श्कायेन दुष्टक्रियया वदुष्टः तान्नेन दुष्टे भगवन्
दुष्टो ममापराधः कतिधा विचार्ये॥१॥ याभांति दैन्य
करि वियोगानुभव करियें जब सेवाको समय होय
तब वे शीघ्री स्नान करि आपरसमें पुष्टिमार्गकी रीति
सों मंदिरमें जायके श्रीठाकुरजीके श्रीमुख श्री आग
आनंदमय दर्शन करि सकल विरहको दूरि करियें
भावसहित दर्शन करियें जैसें व्रजभक्त नंदरायजीके
घर आयके श्रीठाकुरजीको दर्शन करत हैं ताभावको
स्मरण करियें तो व्रजभक्तनकी कृपातें याहूको भा
व दृढ होय। और कहत हैं श्लोक॥ विवीये
न्द्रियेषु कार्येषु स्पर्शनत्वैव भावेन सर्वास्तत्रैवतत्क्रिया
भावात्म अनुभाव सर्वभावेन नान्यथा॥८॥ या श्लोक
के अर्थको विस्तार प्रकाश कहे तामें नेत्रंद्रियको सुखभ
या पाछें स्नान करि सेवामें सर्वेंद्रियको विनियोग
होत है या प्रकार कहत हैं। प्रथम मंगला तें पाछें वि
पाछें श्रीठाकुरजीको स्नान करावें अंगवस्त्र करि रि
तु अनुसार वागा वस्त्र धरावें याभांति सेवामें भग
वत्स्वरूपको परम भावसों करें जो हृदय शुद्ध होय तो
व्रजभक्तनकी भावना करि भाव विचारें जो आपने घ
रते व्रजभक्त आभूषण वस्त्र पहिरिके ताते के श्रीनंद
रायजीके घर प्रातकाल आय सेवा करत हैं सो न्हा
वत हैं श्रृंगारादिक करत हैं जो सुकृत न भोगे

प न्तहां ताई राजा की नाई भय मन में राखे ।

तो सीन को लग्यो ताको अपनो हाथ

सर्वात्मभा
व सों श्री ठाकुरजी की सेवा करे तो स्वरूपानंद को अनुभ
व होय ॥ ५ ॥ अब और हू कहत हैं ॥ श्लो० ॥ हृदयस्यात्मसु
ख्यात्वमनयावस्य संभवेत् ॥ स्वमूर्त्तावति शुद्धायामाविर्भा
व भवेद्धरिः ॥ ६ ॥ याको अर्थ ॥ अब कहत हैं जो भगवद्सेवा
में अपने हृदय को इंद्रिय को अत्यंत शुद्ध राखे तो लौकि
क आवेस विषय की भावना करे तो लौकिक देहसंबंधी
को दुखसुख मन में राखे । तो लौकिक वैदिक दुःखसुख
है सो यह देहसंबंधी है । और भगवत्सेवा संबंधी दु
खसुख है सो आत्मसंबंधी जन्मजन्म को है । और श्री ठाकुरजी
की मूर्ति अति शुद्ध है । ताते लौकिक माया के गुण प्रभु विषे
कछु न विचारे । प्रभु को श्री अंग करपाद मुखोदरादि सब आ
नंदरूपात्मक है । और प्रभु मन कल्पित अनुभव योग्य हैं । का
म क्रोध मद लोभ मत्सर ना करिके रहित हैं । और सब दुख
के हनो है । परमानंद के स्थान हैं । ऐसे श्री ठाकुरजी को अ
लौकिक गुण संयुक्त मन में भावना करि स्वरूप ठारे ताके अ

थे । अब और हू कहत हैं । श्लो०
साधन संपत्ति कार्य ते त्यक्त्वा निजानु । शुद्ध वि

वि.प.
१६

धायहं स्वयं पश्चात तत्रा विसस्य यो । भयको ...
इस संसारमें आसुरी पदार्थ हैं सो दैवी पदार्थ हैं
दैवी में दोय प्रकार हैं। एक मर्यादा राख पुष्टि सो तीन
भेद न्यारे न्यारे करत हैं तीनो के भेद हृदयमें राखे
अज्ञान करिके दुःख सुख न पावें । पुष्टि पदार्थ करत है
भगवद्सेवामें जो साधन संपति है। प्रथम अपनी है
भगवद्सेवामें जो साधन संपति है। प्रथम अपनी है
इजो भगवद्सेवामें लगी रहे तो दैवी प्रथम अपनी
वामें आलस होय कछु चित तो दैवी जानिये जो म
नेकरें तो रोगादिक बाधक करें तब कोई देसवकेस
देहको दैवी मन होय तो आसुरी जानिये जो आ
अनुभव होय जो मन आसुरी होसि वाकरनमें प्र
वाकरनमें मन थेनेको विकमें भटके । ताको स्वरूप
नेको अनुभव न होय । ओर देहसंबंधी स्त्रीपुत्रादि
... देव भगवद्सेवामें विरोध करें तो आसुरी जानि
नोक मेमामें जाको रुचि होय तो मर्यादा जानिये
याही प्रकार द्रव्य जो भगवद्सेवामें विनियोग होय
तो दैवी जो धर्ममर्यादा नहीं आवइ उठे सो मर्यादा लौ
किकमें जाय । चोरी जाय देड होयसो आसुरी तातें जो प
दार्थ भगवद्सेवामें विनियोग होय तो दैवी जो धर्ममें ति
नको शुद्ध जानें जो भगवद्सेवामें विनियोग न हो
ताको अशुद्ध जाने । या भांति जो प्रभुको सेवा संबंधी
पदार्थ हैं तिनको हृदयमें धारन करें जो मेरे काम
... तब स्वयं भाव न सुधे हृदयमें प्रवेस करि स्वरूप
को अनुभव करावें । तातें सेवा संबंधी न होय ता पद
ार्थ को त्यागही करिये । भगवद्भाव संबंधी पदार्थ सामग्री
... की भाव हृदयमें राखिके भगवद्सेवा करिये
और कछु करन नहीं ॥ इत्यादि ... न सन्तष्ठति

यंदेहमलौकिकं।स्वयंप्रविश्यभावात्मानुभवैकरूपेत्स्व
कं॥११॥या॰टी॰॥ अर्थ॥ ऊपरकहेताप्रकारसेवाकरेंऔर
दैन्यतोमननमेंहोयतोंश्रीठाकुरजीसंतुष्टनहोयतातें न
भगवद्सेवाकरिदैन्यताकरिश्रीठाकुरजीकोसंतुष्टक
रियेंतवश्रीठाकुरजीप्रसन्नहोय।काहेतें।भगवान्स्व
द्गुणपूर्णईश्वरकेईश्वरहैं।काहूवस्तुकीअपेक्षानाहीं
हैं।एकप्रीतिदैन्यताप्रसन्नकरिवेकोउपायहै।सोभ
गवद्गीयगीतामेंहैं।प्रीतमप्रीतिहीतेंपैयो।जद्यपिहैपगुण
सीलसुघरतोइनबातनननरिझैये॥१॥सनकुलजन्म
कामसुभक्तहूलाणादेहपुराणपढैये।गोविंदरुहैसनेहु
सुवालोरसनाकहानचैये॥२॥तातेंभक्तदैन्यताकरिजो
कछुप्रीतिसोंसमर्पेंसोप्रभुअंगीकारकरेंजेसैंपत्रनाभ
दासछालासमर्पे।सोप्रभुअंगीकारकीयें।तवप्रभुप्र
सन्नकरिदैन्यसंतुष्टहोय।तवजीवपरकृपाकरें।तवअ
लौकिकदेहजोनित्यहै।सेवायोग्यताकोसिद्धकरि
वापुहृदयमेंपधारें।भावात्मकप्रभुतवअपनेस्वरूपको
अनुभवकरावैं।तवसगरोजेतलौकिकमयहींसेंकछू
प्राणीमात्रमेंदुःखोनहोय।तवपुष्टिमारगीयफलसि
द्धभयो॥१२॥अवश्रोरकहतहैं।स्लो॰।एवंविधंफ
लनित्यंचिंतयन्चेतसासदा।कुर्यात्तत्पादरंकृष्ण
सेवायांसेवसर्वथा॥२२॥या॰टी॰॥अर्थ॥ऐसेंपुरुषोत्त
मफलात्मकतिनकोचिंतनचित्तमेंसदासर्वकाल
मेंकीयोकरेतोकवहूअन्यसंबंधनहोय।जोनित्य
नकरेतोअन्यसंबंधहोयतोताकरिआसुरी
बुद्धि जाय।तातेंऊपरकहेताहीप्रकारदैन्य
आतुरतासंयुक्तचिंतनकरें।औरभ
गवद्सेवाकरें।लौकिकमेंदृष्टि
हूअर्थ्येसेवानकरेपुष्टिमारगीय

५.

वैस्नवकौमुख्यधर्मयहीहै दासभावसौं फलरूपसबौपर
जानिसेवाकरै अतिआदरपूर्वक सदायहनविचारैजो
यमुनाहीसेवाकरीतोकालिकरूंगो नितयनेमपूर्वक
अपनीदेहको अनित्यजानिदेहइंद्रीकोसुखसबछो
डिकेभावदसेवाकरै यहसबोपरसिद्धांतहै २ अब
औरकहतहैं श्लो० साक्षात्परोक्षरूपत्वात्सेवापूर्व
वित्तद्वेधा यथागायंत्यत्रभावःसंयतिनोमन
२ श्रीयाको अर्थ साक्षात और परोक्ष दोऊ समयकेस्व
रूपसंवलितभावहोय सेवाकरै प्रथमसेवासमयसा
क्षातस्वरूपकीसेवाकरिसंयोगरसको अनुभवकरै अ
नोसरमेपरोक्ष कुंजकीलीलाविचारिविचारिवियो
गस्वरूपको अनुभवकरै जैसेव्रजभक्तरासपंचाध्याई
मेंअपनेघरतेश्रीठाकुरजीकेपास आयस्वरूपानंदको
अनुभवकराउयै काहेतें प्रथमहीश्रीठाकुरजीस्वरूपा
नंदको अनुभवनकरावतेतो अंतरध्यानमेंविप्रयोग
दुखभक्तनको बहुतहोतो जैसेलौकिकमेंकोईधन
पावै औरफेरिधननष्टहोयतोबहुतमनमेंदुख
पावै जाकेपासजन्मतेहीमूलतेधननहोयसोदुखक
हांतेपावै ताभांतिगोपीजनने थोरोसो अनुभवसंयोग
रसको अनुभवकीयो पाछेश्रीठाकुरजीके अंतरध्यान
मेंविप्रयोगरसको अनुभवकीयो पाछेंश्रीठाकुरजीप्र
गटभये तबजलस्थलक्रीडासिद्धिभई जैसेहीपुष्टि
मार्गमेंसेवाहै वैस्नवभगवदसेवामेंसाक्षातस्वरूपा
नंदको अनुभवकरेहें तासमयसेवासंबंधीसंयोग
केकीर्तनकरे औरजबअनोसरहोइ तबपरोक्ष
जानिविप्रयोगकेकीर्तन वेणुगीतयुगलगीत
गोपिकागीतआदि आतुरतासोंगानकरैपरोक्षकी
सेवाहोयसोसबसिद्धिकरै याभांतिसंयोगविप्रयोग

विचारिसेवाकरेंतौ आगेंभावकहें।सोप्रकारआगेंलो
कमेंकहतहें।२३।श्लोक।।तदुक्तंयथाभावःकेवलोवि
रहात्मकः फलंतथैवचात्रापिफलंतौकेवलस्यहि
२४।याकौअर्थ।।ऊपरकहेंताप्रकारभगवत्सेवापुन
ानकरेंसंयोगविप्रयोगमेंदोउभावकेछिनहोय
करेंतौताकरिउनरहनजोकेवलविरहात्मभावकौ
दानप्रभुकरेंसोफलसुपुष्टिमार्गमेंहें।सर्वोपरहे।या
रूपांतरऔरफलकोइनाहीं।जहांउत्तरदलभाववि
रहात्मकभावकोदानश्रीआचार्यजीरीतिनवसर्वप
लकीसिद्धिहोयचुकी।।विप्रयोगमेंसगरोपदार्थप्र
भुरूपहीदीसें।तवभगवद्सेवासमयसंयोगमेंहूविप्रयो
गहोयविकलहोय।प्रेमलहरसमयहनानि।प्रभुमा
कौछोडिकरेंगरेयहसौतातेंविरहवनानसकौली
लासुधकरिविकलहोयजोप्रभुधूपमेंनागेपाइन
गायचरायवेकैसेजायगें।कोमलचरणहैं।कंकरि
कानचलजायमेंप्रभुविनाकैसेंकालविताऊंगी
याभांतिकेटानकोटिविप्रयोगसमयहें।लौकिक
देहसंवंधीभोगसवछूटिजाय नवजानियेजोप्रेमल
क्षणभक्तिकीप्राप्तिभई यहसुखमरसहें।२४।अवश्री
हरिकहतहें।श्लोक।। फलासूयाफलंछन्नवदनंदि
चिन्पतौ।।
१५याकौअर्थ।।

समझननाहीं।सोभाववलभभक्तहीजानतहैं

सिवादिककोत्यागम्यहै औरसेवागुनगान करैं तामेंकछु
लौकिकवैदिकफलकी आसानथा अनेकप्रकारकीआस
राखे ताकोपुष्टिमार्गीयसुखात्मकफलनहोय फलयहीमन
में[illegible] है जोश्रीकृष्णचंद्रकेवदनकमलकोदर्सन काहूते
श्रीमहाप्रभुजीकेसुखारविंदहूतें श्रीआचार्यजी तातेंश्री
आचार्यजीकेदरसनकोमिलनकोअभिलाखराखे सोभावद
सेवामेंआसानतसुखारविंदकोदरसनवारंवारकरे यही
सेवाकोफलहै ऐसेंजानै तातेंश्रीकृष्णचंद्रकेवदनके
दर्सनसंयोगमेंहू [illegible] वियोगानुभवहू
करैं [illegible] केवलविप्रयोगभावात्मकफलनासिद्धभयो
नश्रीकृष्णकोवदनचंद्र [illegible] देखे तातेंविरहहै
सोफलरूपहै औरश्रीकृष्णहै सोफलात्मकरूपभक्त
[illegible] बालकका [illegible] निसेवा [illegible]
[illegible] [illegible] नतत्त्वज्ञानसंबंधीयत
[illegible] सविसर्गदरूपंतु प्रसिद्धपुरुषोत्तम
[illegible] श्रीकृष्ण [illegible] नन्यभ
[illegible] भक्तयोगहै नहींकोईकहैजोपुराणमें
[illegible] प्रभुकीप्राप्तिकही
[illegible] ताकोकहाकारनहै
[illegible] जोश्रीनकारमेंज्ञानीनि
[illegible] स्वरूपहै तिनज्ञानीकोस्वरूप
[illegible] ज्ञानी [illegible] योगपूर्न
[illegible] ज्ञानीकेसंबंध [illegible] है अक्षरब्रह्मकीनाश्या
[illegible] है तिनहीमेंलयहोतहै उनकोभक्तिरसकीप्राप्तिक
[illegible] है तातेंज्ञानीकेभाग्यात्स्वरूपकोभावनाक
[illegible] औरश्रीकृष्णहै सोसच्चिदानंदस्वरूपकोभावनव
[illegible] श्रीकृष्णहै सोसच्चिदानंदस्वरूपानंदरसात्मक
[illegible] है सत्चित्आनंदकोलिंग [illegible]

हैं। औरश्रीठाकुरजीपरमानंदस्वरूपप्रसिद्धहैं श्रीभागवतजी
तामेंकहेहैंजोश्रीकृष्णपूर्णपुरुषोत्तमहैं। सोवेदशास्त्र
मेंसर्वत्रप्रसिद्धहैं। तातेंएकश्रीकृष्णहीकोसर्वतेंपरएक
पुरुषोत्तमजाननो। ब्रह्मादिशिवादिभगवद्भक्तजान
नोस्वतन्त्रआत्मकश्रीकृष्णहीकोजाननो॥१७॥ श्लोक॥ पूर्वो
वस्थापरित्यक्तसर्वकेवलश्चान्तरोमतः। तत्सेवास्वरूप
पूर्णः प्रभुश्रीवल्लभाभिधः॥१८॥ याको अर्थ॥ अबकोइक
हैजोतुमश्रीठाकुरजीकीसेवाकरिकेकछुफलहूकीवास
नामनमेंराखतहो। काहेतेंवेदमेंजितनीक्रियाकही।
ताकोफलहूकहेहैं। ताकछुफलनहोयतोक्रियाव्यर्थक
ह्यैं यहवेदशास्त्रकीमर्यादाहै यहसंदेहहोयनहीं
कहतहैंजोजाजीवकोश्रीद्वाराब्रह्मसंबंधजीवकोभय
योऔरउदहवेलवपुष्टिमारगकीरीतिसोंभगवत्सेवाक
रनलागे। तबउदहसेवाकरतमेंसाधनहैंश्रीकृष्णही
फलश्रीरसेवासिद्धभये। पाछेंश्रीकृष्णहीफलनातें
पापुष्टिमार्गमेंसाधनकरीमेंफलकीप्राप्तिभई। औरवेद
भयोहामेंक्रियान्यारीहैं। साधनरूपफलभयो। तबकर्म
भयोताकीक्रियानासभई। औरपुष्टिमार्गमेंसाधनहू
मेंश्रीकृष्णसेवासोंश्रीकृष्णवप्राप्तिहोय। तबश्रीठा
कुरजीकेमुखारविंदरूपश्रीआचार्यजीकीसंपूर्ण
कृपाहोयतबहीयहजीवशरनआवेपुष्टिमार्गमें
भावकेसेवामेंरुचिहोय श्रीआचार्यजीकीकृपावि
नापुष्टिमार्गमेंशरणागतनहोय यहसिद्धांतनि
श्चयजाननो। सोश्रीआचार्यजीकीशरणकृपाकोनआ
श्रयरहेय। सोउपायआगेंश्लोकमेंकहतहैं॥२१॥ श्लो
तदाश्रयसदाकार्योमनोवाक्कायवृत्तिभिः स्व
कीयतातदीयेषुतद्भक्तामिलितापना॥१८॥ या
ग्रंथकेश्रीहरिरायजीकृपाकरे सोउपायकहतहैंजो

प॰ [illegible]के चेतु भूमि दिराकी श्री आचार्यजीके आगमनस
कौ आपसरूं नेवश्री आचार्यजी आनन्दप्रधवकौ
मोलिहूं टिके प्रसन्न होय औरश्री आचार्यजीको श्रा
[illegible] हृदयमें न होय तो कोहि मानको हिसाधन कीये
सररे [illegible] फल नहीं हिन होय अन्यसंबंध ते नापजा
य सो श्री गुसांईजी विज्ञप्तिमें कहे हैं अन्यसंबंधेथं
[illegible]रामेद वाधते अन्यसंबंध होय तो माया रीके
नेसबक्षोमोहदास्य सबभजनवारकी वानोमें प्रसिद्ध है
[illegible] यहै धर्मी ये तो उत्तम न होय भयो अन्यसंबं
[illegible] महाबाधक है औरजो श्री आचार्यजीमह
[illegible] होय औरसाधनयोरावति आव
[illegible] होय औ [illegible] दृढ [illegible] को
[illegible] है श्री आचार्यजीको दृढ आश्रय भयो जब
तियनो श्री आचार्यजीको [illegible] भयो अनन्य होय
[illegible] हृदयमें जिनको दृढ भाव
[illegible] श्री आचार्यजीको दृढ आश्रय
[illegible] श्री आचार्यजी प्रसन्न होय अपनो
[illegible]रावत हैं [illegible] सबचरन [illegible] श्री आचा
[illegible] भगवदीय ये तो [illegible] के
[illegible] है जो छन्को श्री
[illegible] श्री आचार्यजी [illegible] है सो अहर्निश
[illegible] श्री आचार्यजी [illegible] नहै तातेश्री
[illegible] मिलेतानी
[illegible] नगारी जैडत हैं सोक
[illegible] भगवदीय मे और श्री आचा
[illegible] नोनहैं जीको पुष्टिमार्ग
[illegible] श्री आचार्यजी प्रसन्न होय
[illegible] अपनी स्त्री पोंजो गोन

नातरवैसेवगोवरउठायलेजायगो यहसुनतही
ीआचार्यजीकोधकरित्यागकीयो कितनेजनको
क्तरायभयो तातेंभगवदीयमेंश्रीआचार्यजीमेंभ
द्बुद्धिनराखें॥१ यवश्चारहूकहतहें श्लोक॥ नही
यपुचतदुधानरस्थाप्यो विशेषतः यथाहुनीभा
कौंक्षिपाणपामतिस्तथा॥१॥ या० अ०॥ नहीय
मेंलौकिकबुद्धिनराखें यहजानतो नहीयप्रसन्न
होसो तबश्रीआचार्यजीप्रसन्नहोयहानकरेगो
तो लौकिकदृष्टांतकहतहें जैसेकोकामीपुरुषहो
इसोदूतीद्वारापरस्त्रीकोबुलावे सोकामनापरस्त्रीसोन
कोसिद्धहोय परंतुवीचमेंदूतीप्रसन्नहोसके करेतोवा
मसिद्धहोयनातनताहीसिद्धहोय ताते दूतीजो कार्यकी
नरहें सोईकामीपुरुषकरतहें ताते इतीजो जैसेंदूतीजी
सिद्धकरताहे तापरहेअधिककरतहें दूतीको कार्यसि
भगवभगवानकोमिले तवदीयहूजो भगवदीयकेसत्संगवि
द्वहोय परंतुभगवानहें विनाभगवदीयप्रसन्नहोतहें
नानमिले भगवदीयद्वारा भगवानबुद्धिस्थापन
ताते भगवदीयमेंभगवान्सेवरावरिबुद्धि धनगृहे यथा
करे॥१॥ अथवश्चोरहूकहतहें श्लो०॥ विनियोगकर्तव्य वोर्हप्र
सोतथाभक्तस्थितेपिचे अबकहतहें जो
भोवाभविष्यति॥२॥ या० अ०॥ जैसेंधनग्रहस्थ
भगवदीयमेंभावभयो कवजानिये भावसहितभगवत्सेवाकर
श्रीकृष्णकोंसमर्पेतहें भगवदीयकीसेवाकरिये धन
तैसेंहीभावपूर्वक जैसेजेसेंश्रीकृष्णको
हमनवचनक्रियाकरिये तैसेंहीसवेर्संयुक्तभगवदीय
विनियोगकरिये तोभगवाननहोयसो आगेकहतहें
नियोगकरिये कृष्णोनसंशा
लो० ॥ नहीयाश्चैत्समनतुश्यतुष्टः

प. दीयातुनिजाचार्यप्रागौरूपरायण ॥ २१ ॥ या श्लोक में अबकु
परकहे जैसें भावपूर्वक धनग्रह श्रीठाकुरकों समर्पे तैसेंहीभ
वसहित भगवदीयकों हू धनग्रह समर्पे तहां कोउ कहे जो भ
गवान की सेवा तो आवस्यक है सो करी चाहिये और भगव
दीयकी सेवा कीये तें कहा होत है याभांति कोई कहे तहां
कहत हैं जो भगवदीयकी सेवा करि प्रसन्न करिये भग
वदीय संतुष्ट होइ तब भगवान हू संतुष्ट होइ जो भगव
दीय संतुष्ट न होइ तो भगवान कोउ प्रकार संतुष्ट न होइ
ऐसो जानि भगवदीयकों सब प्रकार संतुष्ट करनों ताक
रिकैं [illegible] य भगवान संतुष्ट होइंगे तहां कोउ कहे जो त
दीय संतुष्ट न होय वे सब जानिकें आपतें बनें सो सेवा क
रिये और वे सब कठिन आग्या करे सो आपतें बनें ना
ही तब वे सब संतुष्ट न होय तो भगवान हू संतुष्ट न होय
याभांति कोई कहे तहां कहत हैं जो जैसें राजा के बाल
क की सेवा करिये सो उह बालक कों ज्ञान न होइ प्रस
न्न न होय बालक अनेक बात कहे सो आपतें न ब
नें सो राजा अपने मन में जानें जो यह मेरी बालक की
बहुत सेवा करी है या सों बनी तितनी करी है यह जा
निकें राजा प्रसन्न ही होय यह जानि आपतें बनें
तितनी वे सब की सेवा करिये तदीय न प्रसन्न होइ
गे तऊ करिये तातें भगवान प्रसन्न ही होइंगे ऐसें
सब कितनी प्रकार के हैं तहां कहत हैं जो ऐसें वैष्णव हो
य तिन की सेवा करें एक श्रीआचार्यजी के चरणारवि
न्द की भक्ति में परायण होय अहर्निस यह स्तोकपरलो
दनें श्रीआचार्यजी के स[illegible]की कामना होइ ऐसें भ
गवदीय की सेवा करें सत्संग करें तो जीवन की अनन्य
ता श्रीआचार्यजी में होय सब और हूं भगवदीय के ल
क्षण कहत हैं ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ अनन्यभजनासुष्ठकामलो

वर्जिता। निरपेक्षा चिन्ता स्व भक्त हित रता ॥२४॥
।अर्थ। अब कहत हैं। जो ऐसे भगवदीयकी सेवा के
ये जो एक श्रीठाकुरजी सेवाही करि संतुष्ट हैं और दे
तरको भजन स्वप्नमेंहू नाही जानत हैं। जो श्रीठाकुर
प्रसन्न होय। और काहू वस्तुकी कामना नाही है। तो
लोकपर्यंत ब्रह्मानंद मोक्ष पर्यंत तुच्छ जाने है। लौकि
कामक्रोधमदमत्सरतादि विषयवासना नाही गोधवा
नही होय। और लोभ नहीं होय जो सगरो धर्म द्रव्य
लीये वेचे काहेतें यह कलियुगमें द्रव्यको रसिक
र्थ लौकिक सिद्ध होत है सोइ धर्ममें जाको वहु न खो
न होय सो भगवदीय जानिये। और निरपेक्ष भाव
भगवत्सेवा करें कछु लौकिक वैदिक की काम
नाम नमें न राखे और मन करि विरक्त रहे स्त्रीपुत्रकु
स्व ग्रह देह संबंधी सगरी जगतमें द्वैत राग न जाने
काहूसो अपने स्वारथके लीये कछु जाचे नाही यह जाने
जो श्रीठाकुरजी सर्व कार्य सिद्ध करेंगे मेरो धर्म तो भगवत
सेवाही करिवेको है। और सर्व भूत प्राणीमात्रमें हित
राखे। काहूको बुरो सर्वथा न विचारे मन वचन कर्म
करि सबको हित ही करें ऐसे भगवदीयको संग अह
निसही करे। ऐसे हैं तिनकी सेवा स्नेह पूर्वक करे। २२
अब और कहत हैं श्लोक। निमेषार्द्ध सेवा
कथादि विहितादरा। एवं विधास्तदीयाश्च संगार
पविशेषतः।२३। याको अर्थ। निमेषार्द्ध और
को उत्कर्ष देखि न सके सो न करें आपनते और वैष्ण
वृथा रो भगवद्धर्म करत होय तो वाहूकी बड़ाई करे
करें धन्य हैं तुमको आपुको जो गपता न जाने जो सेव
हत धर्म करत हैं यह जाने जो मेरे मैं तो भगवद्धर्म रंचक
ह्लादी हैं याको निर्वेंपना राखे। कुलकी सेवाहू आद

रपूर्वककरै श्रीकृस्नकी कथा आदरपूर्वक वै सुनै क
तैं भगवत्सेवा कीयेतें सर्वदा भगवत्परायण होय
श्रीकृस्नकी कथा सुनेतें भगवत्सेवा में रुचि उपजे तो
भगवत्सेवा हू करनी और भगवत्कथा हू अति आदर सों
सुननी या भांति ऊपर कहि आए ऐसे भगवदीय सर्वगु
णपूर्ण होय तिनको संग आवस्यक नेमपूर्वक करै क
हू लौकिक दोष न भगवदीय दिखावे तो उह दोष मन
में रंचक हू न लावै यह जाने जो इनमें दोष नाहीं है मो
ही को अपमान करिकै दोष दीसत है या भांति सुद्ध मन
सो भगवदीय को संग करै उनकी सेवा करै भगवदीय
कहै तामें विस्वास राखिकै मनमें स्नेह संयुक्त करै या प्र
कार वैष्णव होतो श्री आचार्यजी प्रसन्न होय या न्तें(?)
नकरेंगे २३ श्लो० सर्वथा सुद्धभावानां स्वकृतानां
कृपालुना सर्वं श्रीवल्लभाचार्य प्रसादेन भविष्यति २४
पा[illegible]त्र [illegible] ऊपर राजित नो प्रकार कहे सव सुद्धभाव सो
करै भगवत्सेवा हू सुद्धभाव सो करै गुरुसेवा हू सुद्धभा
व सो करै श्रीकृस्नसेवा हू सुद्धभाव सो श्रवन करै सगरी
भगवत्लीलामें सुद्धभाव राखे सर्व भगवत्सामग्री में
सुद्ध भाव राखे भगवदीय प्रसन्न होय कृपा करै तो प्रभु हू
कृपा करै तहां कोई कहै जो तुम इतने धर्म महा कठिन हैं पर कहे
कलियुग के जीव सों कैसे बनि आवेगे जीव सों तो एक हू
धर्म महा कठिन तासों सिद्ध होत है या भांति संदेह करै
तहां कहत है तो श्रीवल्लभाचार्यजी यह कलियुग के जी
वनको कृपा करिवे के तांई प्रगट हैं यह पुष्टिमार्ग सवी
र[illegible] कीयो है सो श्रीमहाप्रभुजी की कृपा तें सगरे धर्म
वन[illegible] में आवेगे जीवको तो सब ही कठिन है जीवक
[illegible] है और श्री आचार्यजी कृपा करैं तिनको
[illegible] गम है ताते मन में राखि श्री आचार्यजी ग

कमलकोआश्रयदृढराखे सर्वकार्यआश्रयहीतेंनिश्च
यसिद्धहोयगो याभांतिश्रीहरिरायजी पतिसावकरिकेंकहत
हैं जोएकश्रीआचार्यजीकोआश्रयमनमेंदृढराखे ताही
करिसर्वेसिद्धिहोइगी निश्चयपुष्टिमार्गीयमेंफलहें सो
श्रीमहाप्रभुजीदानकरेंगे याप्रकारप्रथमसिक्षापत्रकोभा
वयथाबुद्धिअनुसारकह्यो २४ ॥ इतिश्रीहरिरायजीकेप्रथ
मसिक्षापत्रताकीटीकाश्रीगोपेश्वरजीकृतसंपूर्ण ॥ १ ॥ अ
बदूसरोसिक्षापत्रश्रीहरिरायजीपठायेहें ताकोव्याख्यान
श्रीगोपेश्वरजीकरतहें ऊपरप्रथमसिक्षापत्रकोभाव
हृदयमेंधारनकरें तोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकेऊपर
निश्चयदृढधारें पुष्टिमार्गमेंश्रीकृष्णफलात्मकरसरूप
हांनवरें तवश्रीकृष्णकोस्वरूपहृदयारूढहोय सोयहे
दूसरेसिक्षापत्रमेंकहतहें जोऐसोस्वरूपकोअनुभ
वहोय ॥ श्लोकः ॥ यसोदोत्संगलालितंकृष्णग्रथित
वेणिकंमुक्ताफलसैलेझालोचनलुंडिनकुंतल १
याकोअर्थ अबकहतहें श्रीयसोदोत्संगलालित यह
बलक भावात्मकस्वरूपहे वसुदेवदेवगीके इहांजोम
थुरामेंप्रागट्यहें औश्रीयसोदाजीकेंउहांजोस्वरूपप्र
गटहें सोकेवलव्रजभक्तनकोआनंददानार्थहें सोश्री
यसोदोत्संगलालितजोरसात्मकसोइयहश्रीआचार्य
जीकेपुष्टिमार्गमेंसेवनीयहें ताहूमेंदोयप्रकारहें कल्प
कल्पमेंद्वापरआवतहें तवश्रीनंदयसोदाप्रगटतहें त
वश्रीठाकुरजीप्रगटहोतहें सोयसोदोत्संगलालित
पुष्टिमार्गीयमेंसेवनीयहें काहेतेंकल्पकल्पमेंक
वहूँऐसोबनावहोतहें औऐसोस्वतंत्ररूपमेंजोस्वयं
प्रभुआपपधारेहें जोवेदकीऋचाकोंवरदानदीए सो
याऽस्वतंत्ररूपकेयसोदोत्संगलालितयहपुष्टिमार्ग
मेंसेव्यनाहींहें सोश्रीगुसांईजीकेवचनहें २५

जानितेपरमंतत्वं यसोदोत्संगलालिता। तदन्यादृनीयो
रासुरास्तानदेखुधा ॥ १ श्रीयसोदोत्संगलालितविला
श्रोरकोजानेनार्को श्रासुरजानियें सबै लीलासवै
तकेकारणरूपयसोदोत्संगलालितहैं तिनकोश्रीय
सोदाजी अतिस्नेहसों उत्संगमें लीये लालनपालन
करतहैं परमआनंदमेंमग्नहैं यसोदाजी ऐसोमंगलरूप
प्रभुकोपायकें सो श्रीगुसांईजी मंगलग्रंथमें कहेहैं मंगल
मिदंश्रीमंदयसोदा नामसुकीर्तनमें बहुविरोत्संगसुल
लितंपालितंरूपं मंगलरूपको गोदमें यसोदाजीलिआ
ऐं मंगलरूपभई ऐसेस्वरूपकोध्यानकहतहैं श्रीयसोदा
जीके आपहूं मंगलरूपभई ऐसेस्वरूपकोध्यानकहतहैं
श्रीयसोदाजी उत्संगमें पुत्रको लेकें सुंदरघूघरवारेवार
हैं तिनकों बारंबार वारीगुहतहैं अथवा श्रीयसोदा
जी अपनी गोदमें प्रभुकोलेकें अनेकभेवासोखिलाइ अरोगा
वतहैं अनेकप्रकारसों खिलावतहैं कुमारिका जोघ
रमेंभतहैं सो वेनीगुहतहैं अथवा स्तुतिरूपा श्रीचंद्राव
लीजीपक्षआश्रितालभावसोगुहेहैं अथवा श्रीठाकुरजीके
याख्भावकहतहैं श्रीयसोदाजी वृषभानकुमारीकोस्व
प्रभासऐसेहायदोऊस्वरूपकीवेणीसुंदरगुहतहैं याभांति
अनेकभावहैं श्रीमहाप्रभुजीकीकृपातें अनुभवहोत
है याभांतिवेणीसभारिकें सुंदरभालपरमोतीकीलर
सोभादेतहैं सो मानोनीलकमलके ऊपरवरावरि
जलकीबूंदआयरहीहै तथाश्यामचंद्रमाकेऊपरत
रागनकीपंक्तिआयरहीहै सीतलमंदसुगंधवायुते
कुंतलजोअलकेंसो चलायमानहैं सो परमअद्भुत
सोभादेतहैं मानोमुखकमलके मकरंदवसहोयके
लिजो भ्रमरकेपुत्र छोटेछोटे पांतिकीपांति आयपा
नकरतहैं तथामुखचंद्रमापर अलकसोसपकै

आयेहैं यामें तिनासिखातेन्नखपर्यंतश्रृंगारको भा
हित्रहस्यमें विचार। श्रवश्रोरहूं कहतहे श्लोक॥ मु
क्ताफलावलीभालप्रान्ताकर्णविभूषितः कस्तूरी
कृयुकभालभूषातिसुंदरा। भूयाश्चौ मुक्ताफल
कीलरभालतेश्रवणतांइविंदीधरेहे।
श्रवणकीपंक्तिपरमसोभारहें। मु
कस्तुरीकोतिलकभालपरविराजमान
गुसाईजीकेभालपरकस्तू
कोतिलकहेताते श्रीचंद्राव
भावसंबंधीतिलककस्तूरीको श्रीठा
हे। श्रोर श्रीमुखस्वामिनी श्रपनेभाव
को भावात्मकहेशरत्र हे
का॥ विलसत्कपोलद्वयचित्रनः
लघुतिमंडिता। भ्यावे श्रथ
श्रीरमजोदेशारकुमकुमश्रादिश्रृंगारसोकपो
चित्रि सोदोऊकपोलमेंकमलपत्रपरमसो
स्वामिनीजीकेमनो
कोहेका कमलपत्रजबप्राहहोतहेतबही
श्रोर श्रीस्वामिनीजीश्रपनोमनोरथक
हो
कुजी जो
हाजीश्री
त
रतहें जोह
चिरकालको तवश्रीठा
सोरव का
मनोरथपूराणकरनहें

नीजीकेकपोलपरकमलपत्रन्यासनेहसतसोंसवा
रिकेअपनेप्याहकोमनोरथकरतहैंतोनित्यप्रतिमां
तिहमकोहीयाकेरोयापक्षकेअनुसारदिनदूलहमेरो
कुरसवानेयायाभांतिअनेकलीलागोयकरिपाछेश्री
ठाकुरजीकोगोदलेश्रीस्वामिनीजीश्रीयसोदाजीपास
ल्याअबकेकहतहैंतोयहतुमारोपुत्रप्रानितेंवल्लवेसें
रहतनाहीसोकोहुकेयाकूंराखेहैं मेरोतोयाही
कोमनतनाहीलागतनातेंहिसेवायलारहेंतवश्री
यसोदाजीश्रीस्वामिनीजीकेऊपरप्रसन्नहोयश्रीप
कुरजीकोअपनीगोदमेलेतहैं विधनासोयेप्राप
सारियहप्रार्थनाकरतहैंतोवृषभानकुमारीतेंमेरोपु
कोव्याहहोयअबहीमांगतिहोमाधूंसेवामिलाइयो
स्वामिनीजीकीगोदभरिदेतहैं याभांतिश्रीठाकुरजीके
कपोलचित्रनहैं औरहोकश्रुतिजोकानमेंकुंडलप
प्रसोभायमानहैं सोकुंडलअतिचंचलहैसोकवह
कराछनकुंडलधरतहैं अबहमकरांछनकुंडलधरतहैं
सेनवराछनमेंस्वकीयभगतकोमनोरथमोराछनमेंपरक
यमतकोमनोरथसोकुंडलकीकांतिगंडस्थलपर
लचकतहैसोकोछिकोदर्पनकीछविकोहरतहैं
नीलमनिमकीकांतिलजावतहैं अबओरहूकु
नहैं२ श्लो० चिबुकांतलसद्धन्येभूषसोगनत
वनः नयनगातविलसमानिदेहुसुशोभनथ
श्री सुंदरचिबुकपरहीराकोभूषणसोहत
सोपरमभजनश्रीचंद्रावलीजीकोभावहै सोमधुर
कपोलकीकामलितारसकरिवसतहैं सोश्रीस्वामिनी
धरामृतकोपानकरतरसकेअधिकातेमुखक
तेअधररसश्रवतहैं सोचिबुकपरआवतहैं सो
चन्द्रावलीजीआसक्त इनकरतहैं याभावतेचिबु

ाविराजत है नैनकमलमें अंजन श्रृंगाररसहीसो
तहैं।सो नयननवें वांटालस्सो हिवा भक्तनके रूपरस
तहैं।ताको हिजभक्त मोहित होयकें अपनो गृहका
जभूलिजातहैं काहेते नेत्र अतिकुटिल हैं।अतिच
लतहैं।अतिचपल घूर्णायमान हैं।अनेकभावसो
मतहैं।सो श्रीगुसांईजी ललितत्रिभंगी ग्रंथमें वर्णन
कीयेहैं।रसदिसाके भक्तनको संकेतनेत्रहीद्वारारस
पानकरावतहैं।सो रसचर्वणकविहारको प्रकार नेत्रद्व
ारसपानकरावतहैं।और श्रीयसोदाजी मसिविंदुका
श्रीमाटीरीरहैं जोमेर पुत्रके काहूकी दृष्टिनलागे तामि
सविंदुकापरमसोहतहैं।सबकेमनको हरतहैं।अत्र
औरहकहतहैं।श्लोक॥लालमिलच्चयथपुरस्फुरणा
ानबोधके वालभावान्मिसलेन रसबोधनतनप
ःभयावो अधो।घोरण अधरतेरसअश्रवतहैं।सोर्पि
यसोदाजी तोयह जानतहैं।सोबालककें मुखकुंजनक
नहैं।सोश्रीयसोदाजी होयहजानतहैं।सुखकुं लालको आर
तहैं।नदअधरामृतकीननकें लालनको अधरामृतपान कि
हदोनहैं।काहेते पुष्टिलीलामें अधरामृतपान
ाश्रीकारनहोय।और श्रीठाकुरजी तोनित्य
तामें सबको अंगीकार करावनके लीये पधारेहैं
श्रीयसोदाजी वड्डगोपीजनकों तथा श्रीनंद
जीको अधरामृत नवेंसे प्रातहोय तातेंवालभाव
रतहैं।सखानकों गवालमंडलीमें फूटारवबाय
व्रजभक्तनकों तोलाभहूनामें अधरामृतहीको
में पशुपक्षीकों वेणुद्वारा सेंधरसतसवनको
कनरहतहैं।अन्यसंबंधनाहीं होतहैं वाल
श्रीस्वामिनीजीको अधरामृतपानवहै
श्रीयसोदाजीसों कहिकें श्रीठाकुर
नें श्रीयसोदाजी

धराइकै लेजात हैं तो तुमारे पुत्र को खिलाइ लावैं तब स
नको ऊं यह ज्ञान नहैं जो बालक कों खिलावन को ले जा
त हैं। काहूको विषमबुद्धि नाहीं होत एकांत में ले जाय
गुप्त रस की रीति प्रार्थना करत हैं श्रीठाकुरजी रसदान में
तत्पर हैं। या भांति समस्त भक्तन के मनोरथ सिद्धि करत हैं
॥ अब अंगुष्ठ कहत हैं। स्तो॰ ॥ मुखांबुजनिजांगुष्ठ
वेसनपरायणाः भांति प्रदर्शिखगान्निक्रियासक्तिवि
बोधकार्दियाः ॥ टी॰ ॥ श्रीठाकुरजी सुरपालन में
पौढ़े हैं अपने अंगुष्ट को बारंबार मुखमें प्रवेस करत
हैं ताको यह जनावत हैं जो चरणारविंद में कोटान
कोटि भक्तन के मन लागि रहे हैं। तिन भक्तन के मन में
यह तापखानेक कल्यो रहत है जो हमको अधरामृत
को पान कबहू न भयो। यह सबको नेभो तिकों है सो भक्तन
की आरति प्रभु सहि नाहीं सकत तातें बाल भाव सों
कों छोनें नाहीं या भांति चरणारविंद के भक्तकों अ
धरामृत रस को पान करावत हैं। अथवा प्रभु यह विचा
रत हैं जो मेरे चरणारविंद में ऐसो कहा रस है जो हमा
रे भक्त चरणारविंद को पूजत हैं ध्यान धरत हैं सो रस
को मैं हूं तो देखूं सो बाल भाव सों आपु हू चरणारविंद
के रस को आस्वादन करत हैं अथवा कबहू श्रीहस्त के
अंगुष्ठ मुखमें मेलत हैं ताको अभिप्राय यह जो हैं हू
श्रीठाकुरजी के पास आइ हैं तिनको आपु श्रीहस्त सों
पकरि अपने मुखारविंद में धारन करत हैं सो कबहू एका
तमें उन भक्तन को बाहिर निकासि रमण करि पाछे प
रि मुखारविंद में धरि लेत हैं लोगन के दिखाइबे में बा
लक अंगुष्ट चूसत हैं। स्वामिनीआदिकों अनेक रमण
बंधनादिक क्रियाको बोधन करत हैं याभांति श्री
ठाकुरजी का जेसो श्रीठाकुरजी को अधिकार है ताकौ

हीरसपानकरावतहैं।यअरुमीहरूदहनहै।सोकामी
सनुमाफललमनविभूषनोनदनरलमस्य
मनिमालातिमोहनं।७।याकेअर्थ गौदासोजगी
नीकीमालाताकोनामकौ।श्री परमसोभादेतहैं
हीकेपासरखवउद्दै मनिका और माणिमाला ग्रंथ
करिअपनेभक्तनकोयहजनावतजोमेतुमकोअपई
ठमें राखतहोजुमाकीमालाखरुणोतयामे
मयअनेकभक्तनकेभावात्मकहैंतातेप्रभुप्रेमते
कीरहैं।८।अर्थ औरहूंकहतहैं।सोकौस्तुभ
रत्न चक्रवैयाद्युभयताभसुनमफलरुसोमालते
लतोहर।९।याकोअर्थ उरस्थलकेऊपरकौ
कौनरववधनखापरमसोभादेतहैं।सोश्रीयसोदाजी
अपनेपुत्रकीरक्षाअर्थधारेहैं।सोएकभक्त
अनेकलीलामाधनकरावतहैनरवहानराम
हारलीलामेंहोतहैं सोवघनखाहैटाहैताको
अभिप्राययहहैजोकिअनेकभक्तनकोहृदयढ़ोहैं
कोमनश्रीठाकुरजीकोंअपनेवसकरतेहैं सोवे
खाहेटोअपनेहृदयमेंधारियहजनावतजोमेंहूंत्रिभ
हूंयाभांतिभक्तनकेमनसूधेकरिभक्तनकोअ
हृदयमेंराखेहैंतथाअनेकभक्तनकेघरश्रीठाकुर
तकहांऊपरारखवारीचाहिएतवनखत

से हिरदेविकनासिंघजीप्रगटकरिह
ऊपराखवारीराखिभक्तनकेसंगानिर्भयततासोंली
लाविहारलीलाकरतहैं तातेपारीपरासिंघहैसो
पूतलीलासंबंधीहैं।ताहीतेश्रीठाकुरजीनखरूपय
कीरे याभांतिसगारेआभूषणहेज
हैं।तातेश्रीठाकुरजी

सोपासराखेहैंजोव

कूल होय ताको तत्काल श्री ठाकुरजी आगाढ़ करत हैं तातें पु
ष्टिमार्गमें श्रीकार स्वजन भक्तन लीलातें होय और उपास्य
ई नाहीं याभांति सो वृथा न रखो प्रभु धरे हैं ताते रन भूषणके
मारस्तुती पूर्व और स्वरूप के मणि का धरत हैं गृथी ऐसी
सुन्दर माला कह रूप विराजमान हैं सो स्वर्णमणिका श्री
स्वामिनीजीको भाव मुक्ता सो श्री चंद्रावलीजीके भावसो
श्री ठाकुरजी आपने हृदयमें धारन कीये हैं अब आगें क
हत हैं ॥ श्लो ॥ [illegible] बाहुमध्ये लसद्रत्न जटितेन मोद सुंदर
परागुच्छ लसत्कल्पक रचित कंकन भूषणाढ्यौ ॥ टीका ॥ अर्थ सुंद
र बाहुमें बाजूबंद रतन जटित हैं मधु तरल जडाऊ
हो भुजनमें सो भावे हैं सो वाम भुजामें श्री स्वामि
नीजीको भाव दक्षिन भुजामें श्री चंद्रावलीजीके
भावसो और पाटके गुच्छामें परोये ऐसे छोटे हलके
सो उदरमें कंकन परम सोभा देत हैं ॥ ४ ॥ अब आगें कह
त हैं ॥ श्लो ॥ [illegible] रत्नांगुलि लसद्दल जटितोत्तम मुद्रिका
किंकिणी परागुच्छ [illegible] जित कटिस्थल ॥ १० ॥ या टीका
य [illegible] अर्थ श्री हस्तकी दसों अंगुली सो दसोंमें लाल जटि
त जडाऊ मुद्रिका सो हैं परम उत्तम सो दस मुद्रिकाके
अभिप्राय यह है सो दस प्रकारके भक्तनके भावात्मक
हैं जा रसके जो भक्त हैं तिनको ताही अंगुरी सों नखदान
करि परम सुख देत हैं और कटिस्थल विषें पाटके गुच्छा
में पोई ऐसी जो किंकिनी ताकी अनेक लरी तामें सुं
दर घुंघरू [illegible] लीक नारी सो कटिमें बांधी है सो भक्तनकी कि
किंकिनीके नादसों अनेक लीलाको स्मरण होत है ॥ ५ ॥ अ
ब और कहत हैं ॥ श्लो ॥ [illegible] मन्मथ परमपदन्यास ध्वनिमो
हितगोपिकाः हृदय वरे नखविधु जोत्स्ना जित नितिसाप
ति ॥ ११ ॥ या टीका ॥ चरणकमलमें नूपुर परम सुंदर धा
रण कीये हैं सो नूपुरकी धुनि सुनिके अनेक गोपीजन

औरबाललीलाकोंस्वरूपहिवरनिराव
सनकरावतहैं।सोश्रीनवनीतप्रियाजी
क्र॰ प्रगटदरसनहोतहैं स्तान
।१।जाननखचंद्रकेश्रा
चंद्रमा।८ नहोतहैं।चंद्रमाकीभीतिंऐसेनखचंद्र
नकेहृदयमेंरहतहैं।तिनकेहृदयमेंप्रकासहोय
।सादरसनोनखचंद्रनेंअपनेज्योतिकेप्रकास
चंद्रमा।१।सूर्य।२।दर्पन।३।मणि।४।आदिसबके
यासकोजीतेहैं।औरदरसनखचंद्रहनामेंवामच
रविंदमेंनखपुष्टिभक्तनिहृदयकोतिमरदूरिक
औरदहनचरणकेनखमर्योदाभक्तनकेतिमरकोदू
र॰ करैं याभांतिनासिखांतनखपर्यंतस्वरूपवर्णन
।२।हैं।२२।अबऔरहूकहतहैंश्लोक॥स्वरूपप्रतिबिंबे
दृष्ट्वा हास्यमुखांबुजः पंकागराबरुचिरसदामुग्ध
शिरोमणिः।२३।याकोअर्थ॥ऊपरकहेऐसेसुंदरबाल
रूपकीलीलाश्रीठाकुरजीकरतहैं।अपनोप्रतिबिं
बहूंमणिजटितअंगानमेंदेखिपकरनकोदौरत
प्रतिबिंबहस्तमेंनाहींआवतनवमुखमेंहास्यहोत
है।बहुमणिजटितखंभहैंतहांअपनोप्रतिबिंबदे
खिबारंबारकिलकिलहसतहैं।वृजकीरजपंकीगरमें
गिरतहैं।सोपरमसोभादेतहैं।मुग्धलोकिकब
कीनाईअनेकलीलाकरतहैं।परंतुमुग्धसिरोम
णिहैं।मानोकछूहीनाहींजानतहैं।याभांतिवृजभक्त
सुखदेतहैं।२३।अबऔरकहतहैं।श्लोक।१।स्व
गान्यज्ञानरहितसर्वलीलाविचक्षणः।कंदर्पकोटि
लावण्योमाननीमानदर्पहा।१।याकोअर्थ।सर्व
गनकोयहदीसैजोवेकेवलबालकहीजानतहैं।
कछुऔरलीलाकोनाहींजानतपरममुग्धहैं।मात्र

चरनयसोदाजीनंदरायजीरोहिनीजीत्र्प्रादिदेगोपगो
पीसबकोंकेवलबालकहीजानतहैं। औरजेनेराग
जभक्तहैं सोयहजानतहैं जोसबलीलामेंपरमचतु
रहैं कहाभयोमात्रचरणकेआगेमुग्धताजनावतहैं
तोब्रजभक्तयहभावजानतहैं। औरकोटिकोटिकंदर्प
जिनकीसोभादेखिलज्जाकोपावतहैं। ऐसेलावण्य
जिनकेंश्रीअंगपरमसोभायमानहैं मानिनीजोश्री
स्वामिनीजीमानकोहरतहैं। यहचित्तहरणरीतिहैं जोर
सकालावच्छिन्नसगरीलीलाकोअनुभवकरावतहै
सोश्रीगुसांईजीपालनामेंकहेहैं। मानिनीमानहरणं
श्रीयसोदाजीकेआगेपालनामेंफूलतहैं। ताहीसम
यमेंमानिनीजोश्रीस्वामिनीजीकोमानहरतहैं। ऐसे
विरुद्धधर्माश्रयअलौकिकबालकहैं।।१३।। श्लो०।। व
गोपिकागूढचौरकृतसंकेतगोपनः।। परमानंदसंदो
हसद्दुःखविवर्जितः।।१५।। व्या०।। व्रजोप
नीगोपिकाश्रीस्वामिनीजीतिनकोगूढभावहैं। ति
नकेघरचोरीकरिवेकेनकरतहैं। पाछेऔरगोपीज
नकेआगेस्वामिनीजीकोसंकेतदुरावतहैं जोयह
नजानेंतोआछौ। अथवासमस्तगोपीजनकेघरश्री
ठाकुरजीगूढभावसोंछिपिकेपधारतहैं दूधदहीमा
खनसगरीसामग्रीआरोगिकेपाछेंजहांगोपीआव
तहैं। तबउनकोंएकांतमेंसंकेतकरतहैं पाछेंकाहूगो
पआवतहैं। अथवामात्रचरणायसोदाजीकेआगेउ
हसंकेतगोपनकरतहैं तथासमस्तभजनकेसंगसंके
तकरतहैं। एकएकभक्तकेआगेसंकेतगोपराखतहैं
यहजानतहैंजोहमहीकोंश्रीठाकुरजीमिलेहैं और
कोनाहीयाभांतिश्रमनकरतहैं अथवासमस्तभक्त
केनघरमेंश्रीस्वामिनीजीबैठीहैं तबश्रीठाकुरजीसैन

मेंश्रीस्वामिनीजीको गूढभावसों व जावत हैं। जो ओरकों ई
नजनें। याभांति जनावत हैं। सो पत्तानी ठौर आवें। नहीं
सकेंत हैं। तव श्रीस्वामिनीजी कछु वहानेतें घरको नाम
लेके छुमिसतें श्रीठाकुरजीके पास पधारत हैं। पाछें अ
नेकभांति लीला करि पाछें सवसखीनके आगें रसली
ला गोप्य करत हें परमआनंदरूप हें। तातें समस्त भक्तन
को परमानंदको दान करत हें। औरसर्वकाल दुःखमें
दुःखकहिबेंराहित हें। ५४। अब और कहत हें सो
असमस्तोद्दुःखितानां प्रपंचसुखिनामपि। स्यान्निधिसु
खभावस्वीयवरपौ काकारक। ५५। याको अर्थ। लौकि
कप्रपंचके अनेक प्रकारके दुःख सो कामक्रोधमोहमदमत्स
रताआदि मायासंबंधी तिनसबनके पोखनहारे हें
अविद्यारूपफल नाहनी जाके श्रीठाकुरजी मारिकें समस्त
भक्तनकी अविद्यादूरिकीनी। काहेतें भक्तनकों साम
र्थ्य अविद्यादूरिकरनको नाही हतो। तातें श्रीठाकुरजी आ
पने भक्तनके अर्थ व्रजमें अवतार धारे हें। तातें सवन
की अविद्यादूरिकरि अनेक लीलारसको अनुभव
कराय परमसुखदीये दुःखनको नासकीयो। काहेतें
कृपानिधि हें भक्त दुःखपावें सो सहिनाही सकत हें। लौ
...नमें स्वतमुग्धभावको अंगीकार करीयें हें मानों कछु
जानत ही नाहीं। काहेतें जानें भक्तनको स्वयं प्रगटहोय
तो वात्सल्यभाव छूटिजाय। काहेतें ऐश्वर्यता स्फुरै तो यह
जानें जो सगरे जगतनके पोखनकर्ता ये हें इनको मैं भोजन करा
धरूं आभूखण वस्त्र खिलौना कहांसों देउं सगरो श्रीठाकु
रजीको हें याभांति स्नेह छूटें तो पुष्टिभक्तकी प्राप्ति न हो
य। तातें श्रीठाकुरजी मुग्धलौकिक वालककी नाईं लीला
करत हें। भूखे होत हें तव रुदन करिकें हठ करिकें मातासों
भोजन मांगत हें। तातें भक्तनपर कृपा करिकें लीलामें मुग्ध

भावकोधारनश्रीठाकुरजीकीरे मुग्धभावमेंयोरीवमुसोरु
नुष्टहोतहै जोईश्वरनासहैतनप्रभुमांगेतोभतसोंदीयोनाही
जाय जेसेंराजावलिसोंतीनपेंडधरतीमांगीहै सोराजाव
लिसोंदीनीनगई तातेंमुग्धभावहोय व्रजभक्तनकेसु
खदेतहैं औरअपनेव्रजभक्तजोअंगीकृतहै तिनकेवा
क्यहैं तेरएोकजोहै सोश्रीभागवतमेंकहेहैं कोईव्रजभक्त
कहतहै श्रीकृष्णकूलावो कोईकहतहैमथानीलावोको
ईकहतहै पादुकाल्यावो तुमकोहममाखनदेंगी कोउ
कहतहैंनाचोतवश्रीठाकुरजीसवकोकह्योकरतहैं जो
प्रकारव्रजभक्तसुखपावतहै सोईश्रीठाकुरजीकहत
है १५ अवचोरहूंकहतहैं श्लोक प्रपंचेनासनास्वे
यनिरोधकृतितत्परः वालभावग्रहपरः हृतानांलाविक
लरणः १६ याकोअर्थ श्रीठाकुरजीअपनेनिजभक्तन
केप्रपंचलौकिकग्रहासक्तकेमनतें नरछुडाय औ
पसेंलगावतहैं तातेंव्रजभक्तनकेघरश्रीठाकुरजीचोरी
करनकोपधारतहैं व्रजभक्तनकोमनदूधदहीमाखन
कीचोरीकरी तवव्रजभक्तनकेमनमेंश्रीठाकुरजीको
ध्यानभयो जोअवचोरीकरनकोप्रभुआवतहोइंगे
औरवेनुनादकरिसवभक्तनकोमनहरिलीनो ताकरिप
तिपुत्रग्रहादिदेहसंवंधीसवभक्तभूलिजातहैं औरप्र
वअविद्यारूपपुतनाकोमारिकें समस्तभक्तनकीअवि
द्याहूरिकीनी औरअपनेभक्तनकेनिरोधकरनमेंतत्प
रहें इन्द्रयागव्रजवासीकरतहे तेसोइन्द्रकोयज्ञछोडायो
गिरिराजकीपूजाकरायअपुसगरीइन्द्रियेंवसामग्री
अंगीकारकीनी संयोगात्मकसगरीलीलाकरी वा
हरकीसगरीइन्द्रियनकोनिरोधकीरो औरवनांतर
हेमानरकीलीलाकरी मनइन्द्रियकोनिरोधकीरो
जेसेंरासपंचाध्याईमें प्रथममुरलीवजायघरतेंव्रज

मनोमस्कौठुतायिसत्नकी सर्वांग विसम्का ख्याहि
कौसारीइदीस्ककपिपाठ्ठे तन्थानेहोस्के वेतन
एमेसमाकेमीतसौ इदी सुक्षपिय सुरसमें विग
जे याश्रवासकयोग विश्यानानलसे स्वेपनेमत
नकौं निरोधसि द्रिकीनी तरवालसाकसिमला
[illegible]
[illegible]

नके हृदयमें आवेस होय जैसो मनोरथ होय ताहीकार्य
में श्रीठाकुरजी तत्पर हैं और बात जानत ही नाहीं अप
ने निजभक्तनके हृदयके अभिप्राय विना कछु जानही
मनमें नाहीं राखत काहे ते जो श्रीयसोदाजीके घ
रप धारत हैं सो के व्रजभक्तनके सुखके अर्थ तातें पुष्टि
मारगमें प्रभु भक्ताधीन हैं अन्य ज्ञान करि रहित हैं १७
अब औरहू कहत हैं श्लोक सेवनीयमनावर्षी नैविप
रीतिगतिक्रिया गूढलीलापरो भक्त गूढभावरसात्म
कः १८ याको अर्थ भक्तनके संग गूढलीलापरायण हैं
गूढलीला सो रासलीला तामें अनेक प्रकारके रासहैं
गोपीवि चवि चमाथों तयाश्लिष्ट्वाभवंती तया भक्त
भक्त प्रति या भांति अनेक रासलीलामान अनेक भांति
को विहार अनेक प्रकारसों जलक्रिया अनेक भांतिको
अवनमें श्रीवृंदावनमें निकुंजनकी करें और व्रजभक्त
नके घर बार स्वरूपते किसोर होय अनेक लीला तथ
स्याशिवमें गाइ वृंदावनमें अनेक लीला समुद्रको पार
नाहीं ताते गूढलीलापरायण कहें गूढभाव है जि
नके भावको काहूकी खबर नाहीं श्रीठाकुरजीके भा
वकी काहूको खबर नाहीं गोपीजनके भावकी का
हूको खबर नाहीं रसात्मक श्रीठाकुरजी रसात्मक व्र
जभक्त सोरसमग्र अनेक भांतिकी लीला करत हैं अ
में रसात्मक यसोदोत्संगलालित हैं सो श्रीहरिरा
यजी श्रीगोपेश्वरजीको पत्रमें लिखे जो ऐसे प्रभुन
की सेवा अत्यंत सावधान होयके कर्तव्य हैं का
हे ते प्रभुकी विपरीत गति है विपरीत क्रिया है एक
क्षणमें प्रसन्न होय एक क्षणमें क्रोध करें तातें नि
मिषमें मनन राखिये प्रभुमें मन राखिये जो भाति
कछु अप्रसन्न होय या भांति भयसंयुक्त भगवत्सेवा

कह्यो ॥ १८ ॥ अब और हू कहत हैं ॥ श्लो० ॥ श्रीमदाचार्यरूप
याति श्रुति स्वगृहे हरिः ॥ एवंविध सदा ह्स्तो योगिनपार
री यथा ॥ १९ ॥ याको अ० ॥ अब श्रीहरिराइजी कहत हैं जो
प्रसिद्ध व्रजभक्तनके भावात्मक स्वरूप अपने गृहमें विराज
त हैं सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी कृपातें कछु अपने
प्रेम स्नेह भक्ति और एक कछु साधनको बल मति जानीयो
रासरसात्मक भावात्मक प्रभुकी सेवा अपुने करावैं
वियोगपर है ॥ परंतु श्रीआचार्यजीकी कानितें छ पास प्रभु
रमें विराजत हैं ॥ या प्रकारको भाव अपने मनमें सदा
जानतो ॥ केसे हैं प्रभु योगिजनके ध्यानमें नाहीं आवत
अनेक जन्मलों अनेक योगसाधन करत हैं ॥ तिनको
जन्ममें हू दरसन दुर्लभ है सो प्रभु श्रीआचार्यजी म
प्रभुकी कृपातें साक्षात अपने गृहमें विराजत हैं अ
अपने मनमें सदा विचार करी सावधानतें सेवा करि
मति कहू अपराध परे तो प्रभु अप्रसन्न होय जायगो
अब और हू कहत हैं ॥ श्लो० ॥ चिंतनीयो नवसरे
या सर्वथा धिया ॥ एतौ निरोधसंसिद्धसेवया हादि य
त ॥ २० ॥ याको अ० ॥ अब श्रीहरिराइजी कहत हैं
मियसो दोन्स्मारनालिन भावाभव सेवासमय मन
य सेवा करनो उचित है ॥ पाछें अनोसर होय तब
छिपाये ता भांति हृदयमें चिंतन करनो ॥ सूदा
सोहसो ता भांति सेवा सर्वथा अपनो धर्म जा
ना ताही भांति अनोसरमें सर्वथा चिंतन क
निरोधसिद्ध होइगो ॥ जैसे व्रजभक्तनको निरो
भयो ॥ संयोग वियोग रसवों अनुभवत तसे
मथ संयोगकी भावना अनोसरमें विप्रयोग

हराग्रंथ्रवीसस्तोत्रनकोकियेहैं ताभावकेअनुसारश्रीह
रिराइजीयहसिक्षापत्रमेंनिरोधपुष्टिमारगीयजीवनको
ताभांतिसिद्धहोय सोप्रकारसबकहतहैं तातेनिरोध
श्रीभागवतदसमस्कंधहै तेसेंहीयहसबोपरनिरोधप्र
कारकह्यो २० ॥ इतिश्रीहरिरायजीकृतद्वितीयसिक्षापत्र
तात्पर्यदीपिकाश्रीगोपेश्वरजीकृतसंपूर्णं २ ॥ अब
उपरकहेजोसेवादिकरोगे तथाअनोसरमेंचिंतनहुकरो
गे परंतुदुःसंगमिलें तबएकक्षणमेंसगरोधर्मकोनास
होयजाय जन्मजन्मकोभावदुःसंगतेएकक्षणमेंजा
तरहतहै तातेयापत्रमेंदुःसंगतेबचेसोनिरूपणकरत
हैं श्लोक ॥ निधिप्राप्तखलरक्षा दुःसंगादिकनसदा त्य
क्तापिलोकसंकोचभयवार्तादिभिःस्थायेयं
अबश्रीहरिराइजीकहतहैं जोनिधिप्राप्तहोय ताकी
रक्षाकर्तव्यहै जैसेंकाहूकोंधनकोद्रव्यमिल्यो सोजदि
वाकीरक्षाजतननकरें तोद्रव्यकोचोरलेजाय तेसे
हीयहभगवद्भावरूपनिधिश्रीआचार्यजीकीकृपा
तेप्राप्तभईहै तानिधिकीदुःसंगतेरक्षाअवस्यकरी
कर्तव्यहै तामेंदुःसंगअनेकप्रकारकोहै लौकिकवि
षयवार्तादितथाअन्यमारगीयकोसंग तथादेहसंब
धीकुटुंबपुत्रादिकवैदिककर्मइनसबनतेमनतिको
सिद्धभयोरवे तहांकहतहैं जोगृहस्थाश्रममेंरहनो
लौकिकवैदिककार्यविनाकैसेंबने तहांकहतहैं
जोभगवद्सेवाप्रतिदिनारागीयधर्मतोअपनेमनतें
स्नेहपूर्वककरें लौकिकवैदिकलोकनकेदिखाइवेकी
लीरीतिकरें पिछसमयसेवाछोडिनकरे सेवामेंलौकि
ककोसंकोचनकरें तैसेंदामोदरदाससंभलवारश्रीद्वारि
कानाथजीकीसेवाकरते सोजलअपनेहाथकूपतेंभ
रिलावते तबदामोदरदासकेससुरनेकही जोतुमजल

भरनको। सो हमको वो होत नलज्या आवत है। तातें तुम जल
लोडी पास भरावौ। तब रामोदरदास ने कही अब ऐसें
ही करो। पाछें अपनी स्त्री सों कहे जो चलो जल लावें
तब स्त्री भगवदीय हुती। तत्काल के लपाल टोकनी लें
चले जल भरिकें सुसर की हाट आगें होइकें निकसे
तब सुसर आय रामोदरदास के पायन पर्यो। कह्यो मैं
चूक्यो जो तुम सों कह्यो। अब तुम ही जल भरो। स्त्री ज
न सों मति भरावो। तब रामोदरदास ने कह्यो काल्हि
तें न भरावेंगे। या भांति भगवत्सेवा में लोक संकोच
सर्वथा नाहीं करनो यह है छोटी बडी सेवा सब भावसों
के प्रेम सों करनो। या भांति दुःसंग को जाननो। भग
वद्भाव है सो तो अग्निरूप है। और दुःसंग है सो ज
ल भगवद्भाव को नासक तो है।१। अब श्लोक कह
त हैं श्लोक ॥ वन्हिवद्भगवद्भावस्सत्संगो विधीयते
॥ नासयेत्संसृति यद्वत्पात्रव्यवाहितो जलैः ॥२
को अर्थ। भगवद्भाव है सो अग्निरूप है। सो सत्सं
जैसें अग्नि में काष्ठ परे तो और हू अग्नि
दै तेजपुंज जैसें ही भगवद्भाव सत्संग पाय के बढ
ट होय। और भगवद्भाव अग्नि में दुःसंग रूपी जल तें ना
नास होय। जैसें थोरी सी अग्नि होय ता में जल जो डा
रे तब अग्नि को नास होय। तहां लौकिक कुसंग हे चिन
चले नाहीं तो कहावरो दुःसंग रूपी जल सों संग रू
अंगारे जैसें अग्नि को साक्षात जल को संबंध
तो अग्नि को नास होय। और एक पात्र में जल धरि
के ऊपर धरे तो जल को नास होय। भगवद्
अग्नि को संबंध सत्संग रूप काष्ठ ने बढायें जाय
संग जल को पात्र में धरि अपने हृदय में अष्ट
चार करि दुःसंग को जराय देइ तब ही बचे।

तो वडे कहे भगवदीय दुःसंगा ते गिरे हैं ताते दुःसंगा ते सव हु
डरपत रहे हैं। अब अगोर दृष्टांत कहत हैं। श्लोक। जन्नव लौकि
क प्रोक्तं सालात मिलने ने नतु मूल तो नास्य ये दु भावं जथा
वेश्वानरं जल। अर्थ। याको अर्थ। ये इस संसार में लौकिक दु
:संग है सो जल को पात्र विना सालात भगवत् स्वरूप
अग्नि में नाही डारनो। जो सालात डारे तो वैश्वानर जो अग्नि
ताको मूल तें नास होय। जैसे जड भरथ सरीरो लौकि
क छोड़ि भगवत् भजन को वन में गये। तहां हरनी ज
न्मपी कन आई सो सिंह नाद ते गर्भ नव चा गिरे सो
भरथ को स्याल आई। यही दुःसंग मिल्यो भगवद्भज
न सव भूलि गये। एक हिरनी के पीछे तीन जन्म को अन्त
राय भयो। असो दुःसंग वाधक है। तथा श्री नंदरायजी
अपने पुत्र की सवा करत हुते सो अंविका पूजन गये
सो श्री ठाकुरजी न सह हि सके। तहां सुदर्शन सर्प आयके
नंदरायजी को ग्रस लीये। तव श्री ठाकुरजी ने छोडाये
ताते दुःसंग अन्य संबंध सिद्धि भक्त है। तिन को वाध
क है जो साधन भक्त को लगे ताम कहा कहनो। ताते
दुःसंग को यह जाननो। जो हमारे सर्व भाव को नास
ही करेगो। या प्रकार सत्संग ते रहा करे। अव अगोर हु क
हत हैं। श्लोक। अनः सदैव भेतव्यं लौकिकासक्ति
तो जनैः सत्संग भगवंतः इदं तानाशनीय नचान्यथा
॥ याको अर्थ। अव श्री हरिरायजी कहत हैं। जो लौ
किकासक्ति रूप है दुःसंग ते सदा डरपत ही रहनो।
यह जानने जो जव लौकिकासक्ति होइगो तब मैं सत्सं
ग करि लेहुंगो। ताही समय दुःसंग मिल्यो ताही स
मय तत्काल लौकिकासक्ति होय भगवद्भाव को
नास ही होयगो। ताते दुःसंग मिले पहिले ही तें सत्सं
ग कीया करे। तव दुःसंग वाधक न करे। ताको दृष्टांत।

कहत हैं ॥ जो जीव के पीछें काल फिरत हैं ॥ जो पहले ते स्म
रण भजन करि राखे तो पीछें अंतकाल समय कोलवा
धान करें जो जाने अब तो लौकिक करि लेहु ॥ पीछें भ
गवत्स्मरण करूंगो ॥ ताकों काल आवे सो एक क्षण में
खाय जाय ॥ तब वा समय कछु भगवत्धर्म न बने तासें
ही पहले ते सत्संग हू न करें ॥ और भगवत्सेवा स्मरण हू क
रें सो जब लौकिक दुःसंग आवे ॥ तब सत्संग के प्रताप ते
बचि जायगो ॥ और दूसरो उपाय सत्संग बिना दुःसंग ते
बचिवे को नाहीं है ॥ यह निश्चय जाननो ॥ अब और ए
क कहत हैं ॥४॥ श्लोक ॥ सतां परोक्षे सत्संगजातभावो वि
भाव्यतां न छिद्रं वचो नैव माननीयं सतां क्वचित् ॥
५॥ याको अ ॥ अब एक कहे जो सत्संग करिके दुःसं
ग न बाधा करेगो ॥ तहां कोई कहे जो सत्संग तो होय घ
री बनेगो ॥ पाछें सेवा स्मरण लौकिक वैदिक कार्य हू
सब करतो रहियो ॥ तब दुःसंग ते कौन प्रकार बचेगो
याभांति कोईक कहे तहां कहत हैं जो नित नेम करि जै
सें भगवत्सेवा स्मरण करें तैसें ही नित्य नेम करिके स
त्संग एक घरी होय घरी बने तितनो ही करें ॥ पाछें जब
सत्संग के परोक्ष में जो जो वार्ता मार्ग को सिद्धांत सत्सं
ग में भयो होय ॥ ताको स्मरण करि अपने धर्म को हृदे
जो श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी ने याभांति कहे हैं
और में कहा कहत हूं ॥ जो विरोध होय ताके त्याग में मन
करो जा प्रकार कहे हैं सो कारण को मन में करें ॥ याभांति म
कों जाको भगवद्धर्म में लगाय राखेगो ॥ सो दुःसंग ते ब
चेगो ॥ जो जो वार्ता भगवदीयन के मुख सों सुनिये ॥ तामें
अय दृढ विश्वास करि हू वा वार्ता की भावना मन में करि
तब मन ठिकाने आवे जैसें गाय बछरा हैं ते चरि आवत हैं ॥
घर आय उहपै पोढे कें चर्वन करि सवार लेत हे ॥

प॰ सवैष्णव को संग न होय । ता समय भगवद्धर्म को अव
गा करे । पाछे सत्संग के परोक्ष में अपने हृदय में मन करिके
भावना सो रस को आस्वादन करे । सत्संग ते विरुद्ध वच
न जितने हैं । तिनको विचारि धर्म अधर्म को विचार म
न में राखे । और सत्संग ते विरुद्ध वचन न कहै जा में स
त्संग छूटि जाय । ऐसो न करे कबहू । यह अर्थ आगे कहत हैं
श्लो० ॥ भिरन्त्यपि दुःसंगेजाता हरिणजा तिना केवलं
कलिदोषाभिभूतास्त्वपि जनाः स्वनाशयाः ॥ अ० ॥ दु
संगते मन में भय राखे । अपनो काल जाने । काहे ते दुःसं
गदोष होय तो हरि जो भगवान सो दूरि जात रहत हैं । सो
श्री आचार्य जी महाप्रभु संन्यास निर्णय ग्रंथ में कहे हैं
विषयाक्रान्तदेहस्य: भावेसः सर्वथा हरि । जहं दुःसंग
दोष करि देह विषयाक्रान्त भई ता देह में भगवदावेस
निश्चय न होय । ता ते दुःसंगदोष महाबाधक है । और ज
गत में सब प्राणी जो हैं सो सहज ही में दोष करि भर्यो है
काहे ते यह कलिकाल महाकठिन है । अपने मन हू को
विश्वास न करे । जो मैं बहुत समझत हों मेरो दृढ ज्ञान वै
राग्य है मेरो मन तो मेरे वस है यह न जाने । जा समय दुःसं
ग मिलेगो । ता समय ज्ञान वैराग्य विवेक धैर्यादिक गुण
में सब जात रहेगो । ता ते अपने मन को इन्द्री को देह को
कलि के दोषरूप ही जाने । और यह जाने जो सत्संग के
प्रतापते में बच्यो हूँ । सो जा समय दुःसंग मिलेगो ता ही
समय में गिरूंगो । ऐसो ज्ञान मन में जो राखे यह कलियु
ग ने सगरे प्राणीमात्र की बुद्धि हरि लीनी है कलि को दोष
सब को लग्यो है । अब और हू कहत हैं श्लो० ॥ सत्संग
तिनै निंद्य भवितव्यं विशेषतः । अथवा सर्वतो मौनं त
दभावे विधीयते ॥ ७ ॥ या को अ० ॥ अब सो जो दुःसंगदो
ष सर्व धर्म को नाश करे तिनते न्यारो यह जीव रहे ।

तवहीभगवद्भावविरोधहोय।औरउपायकोईनाहीहेंत
हांकोईकहेजोदुःसंगप्रबलहोय।अपनेवसनहोय।
अपनेघरकेपडोसमेंहोय।तथाकहूजीवकाहोय।नहां
दुःसंगहोय।अथवाअपनेकुटुंबमेंहोय।अपनेगृह
दुःसंगनिवारननहोय।औरजीवकातथाघरमेंरहे
बिनातोबनेनाही।औरदुःसंगप्रबलहोयतो।नहां
कहाकरें।तहांश्रीहरिरायजीकहतहें।जोमुख्यतोयही
हेंजोअपनेसमुझावतेअपनेउपायतेदुःसंगछूटत
होयतोछुडाईये।अथवाआपछोडिकेऔरठोरनि
वासकीजे।औरजोअपनेकाहूभांतिदुःसंगछूटेतो
तहांमौनहोयरहिये।बोलियेनाही।जहांअपनेक
नकोभावभगवद्धर्मकी
चर्चानहोय।तहांअपनेमनतेमनन्यारोराखिये।काहे
बातोंकवहूनकहिये।
तेजाकोभगवद्धर्मसुनिबेकीश्रद्धानहोय।तिन
केआगेंभगवद्धर्मसर्वथानकहिये।नाहीतेंभगवा
नमेंभगवद्धर्ममेंभेदनाहीहे।एकहीपदारथहे।ता
तेभगवानकोअतिक्रमहोतहे।यहविचारदुःसंग
मेंमौनरहिये।मनमें
प्रबलहोय।तहांवारनकरिये।श्रीआचार्यजीमहाप्रभु
रिसरनकीभावनाकरिये।दुखहानोतथापाप
कीविवेकधैर्याश्रयमेंकहेहें।असकोवासुसकोवासर्वथासर
णकामार्थपूरनी।
हरि।याभांतिहरिसरनकीभावनामनमेंकरि
नुपहोयरहिये।७।अबऔरहूकहतहें।श्लोक
वर्तनतथावाणीमाधायेवचेनाजना।सं
औरकोबापितसंगोदुष्टसंजन।।८।।याकोअर्थ
कोईकहेजोदुःसंगअथवाविरोधभगवद्ध
तिनकोकहिये।तहांश्रीहरिरायजीकहतहें।जै
वल्लभाचार्यजीकेवचननेसिद्धांतनेअन्यथा

सवैस्नवकोसंगकेरिहोय ॥ तासमयभगवद्धर्मकोश्रव
णकेरें ॥ पाछेसत्संगकेपरोक्षमेंअपनेहृदयमेंमनकरिकें
भावनासोंरसकोआस्वादनकरें ॥ सत्संगतेविरुद्धवच
नजितनेहें ॥ तिनकोविचारिधर्मअधर्मकोविचारम
नमेंरारवें ॥ औरसत्संगतेविरुद्धवचननकहें ॥ जामेंस
त्संगछूटिजाय ॥ ऐसोनकरेंकबहूं ॥ अबश्लोककहतहें ॥
श्लो० ॥ भरतस्यापिदुःसंगेज्ञानोहरिणजातिना ॥ केवलं
कलिदोषाभिःभूताअपिजनाःस्वस्ता ॥ टीका ॥ अ ॥ दु
संगतेमनमेंभयरारवें ॥ अपनोकालजानें ॥ काहेतेंदुसं
गदोषहोयतो ॥ हरिजोभगवानसोदूरिजातरहतहें ॥ सो
श्रीआचार्यजीमहाप्रभुंसंन्यासनिर्णयग्रंथमेंकहेहें
विषयाक्रांतदेहस्यःभावेसःसर्वथाहरि ॥ नहेदुःसंग
दोषकरिदेहविषयाक्रांतभई ॥ तादेहमेंभगवदावेस
निश्चयनहोय ॥ तातेंदुःसंगदोषमहाबाधकहें ॥ औरज
गतमेंभूतप्राणीजोहेंसोसहजहीमेंदोषकरिभर्योहे
काहेतेंयहकलिकालमहाकठिनहें ॥ अपनेमनहूकों
विस्वासनकरें ॥ जोमेंबहुतसमझतहों मेरोदृढज्ञानवै
राग्यहें मेरोमननामेंरवसहे यहनजानें ॥ जासमयदुस
गमिलेगो ॥ तासमयज्ञानवैराग्यविवेकधैर्यएकक्षण
मेंसबजातरहेगो ॥ तातेंअपनेमनकोइंद्रीकोदेहको
कलिकेदोषरूपहीजानें ॥ औरयहजानेंजोसत्संगके
प्रतापतेमेंबच्योहूं ॥ सोजासमयदुसंगमिलेगो ताही
समयमेंगिरूंगो ॥ ऐसोज्ञानमनमेंजोरारवें ॥ यहकलियु
गनेंसगरेप्राणीमात्रकीबुद्धिहरिलीनीहें ॥ कलिकोदोष
सबकोलग्योहें ॥ ईहांअबऔरहूकहतहें ॥ श्लो० ॥ सत्संग
नितेनिवभवितव्यंविशेषतः ॥ अथवासर्वेनमौनंत
दभावेविधिपतः ७ ॥ टीका ॥ अ ॥ ऐसोजोदुसंगदो
षसर्वधर्मकोनासकरें ॥ तिनतेंन्यारोयहजीवरहे

तवहीभगवद्भावविशेषहोय।औरउपायकोईनाहीहैंत
हांकोईकहैजोदुःसंगप्रवलहोय।अपनेवसनहोय।
अपनेघरकेपडोसमेंहोय।तथाकछुजीवकाहोय।नहीं
दुःसंगहोय।अथवाअपनेकुटुंबमेंहोय।अपनेतेदु
दुःसंगनिवारननहोय।औरजीवकातथाघरमेंरहे
विनातोवनेनाही।औरदुःसंगप्रवलहोयतो।नहीं
कहाकरै।तहांश्रीहरिरायजीकहतहैंजोमुखतोयही
हैजोअपनेसमुझावतेअपनेउपायतेदुःसंगछूटत
होयतोछोडाइये।अथवाआपछोडिकेऔरठौरनि
वासकरिये।औरजोअपनेकाहूभांतिदुःसंगछूटेनो
तहांमौनह्वैरहिये।बोलियेनाही।जहांअपनेक
हेनहोय।जहांअपनेमनकोभावभगवद्धर्मकी
वार्ताकवहूनकहिये।अन्तमनप्यारोराखिये।काहे
तेजाकोभगवद्धर्मसुनिवेकीश्रद्धानहोय।तिन
केआगेभगवद्धर्मसर्वथानकहिये।काहेतेभगव
मेंभगवद्धर्ममेंभेदनाहीहै।एकहीपदारथहै।ता
तेभगवद्भावनसै।अतिक्रमहोतहोय।यहविचारदुःसंग
सवहोय।तहांवादनकरिये।मौनरहिये।मनमेंस
रिसरनकीभावनाकरिये।श्रीआचार्यजीमहाप्रभु
जीविवेकधैर्याश्रयमेंकहेहैं।दुखहानौतथापापेभ
येकामाद्यपूरनौ।असक्येवासुसक्येवासर्वथासरणं
हरिः।याभांतिहरिसरणकीभावनामनमेंकरिके
चुपहोयरहिये।७।अववचौरहेकहतहैं।श्लोक।
वर्त्तन्तपथावेश्रीमाचार्यवचैनाजना।संस
र्गकोवापितृसंगोदुष्टसंजन।८।याकोअर्थ
वकोईकहैजोदुःसंगअथवाविरोधभगवद्धर्म
विनकोकहिये।तहांश्रीहरिरायजीकहतहैं।जो
वल्लभाचार्यजीकेवचननतेसिद्धांतनतेअन्यथाव

५. नहीं तो वचन अन्यथा करि जानने श्री आचार्यजी
ने विरोध धर्ममें बोध कैये लोवे अन्यमार्ग की रीति
करें तिनको दुष्ट करिके मन में जानें जो याके वचन
मानें तें मेरो सर्व धर्म को नाश होय जायगो तातें अ
न्यमार्गीयन के पास न बैठिये अन्य संबंध होय जाय
अन्यमार्ग को धर्म न सुनिये अन्यमार्ग की क्रिया कछु
न करिये गोविंददुबे की वार्ता में प्रसिद्ध है एक सम
य गोविंददुबे मीराबाई के घर गए तहां मीराबाई ने आ
दर सनमान करि गोविंददुबे को राखे सो मीराबाई भग
वद्भक्त हुती परंतु श्री आचार्यजी के पुष्टिमार्ग में न हु
ती मर्यादामार्ग में हुती सो यह बात श्री गुसांईजी ने
सुनी जो गोविंददुबे मीराबाई के घर हैं तब श्री गुसांई
जी एक श्लोक लिखे भगवन्मद [illegible] पुषो न स्यु
[illegible] नरे मरण विना [illegible] राज्य [illegible]
समम पुरवीकुरुते यह लिखिके एक व्रजवासी को दी
ये जो गोविंददुबे को दीजो सो व्रजवासी ने गोविंददुबे
को दीयो सो गोविंददुबे वाचत ही उठि आए तातें यह
पुष्टिमार्ग है सो ठीक सो है श्री गुसांईजी गोविंददुबेसों क
ही सो हाथी की असवारी करि अब गदहा की असवा
री को मन भयो है ऐसे सो भाव राखि पुष्टिमार्ग तें अन्य
धर्म चलावे ताको ऐसें जाननो जो दुष्टसंग है ताको
लत ताको त्याग करनो [illegible] एव श्री आचार्य कहत हैं श्लो
क [illegible] त्यवाय न भयो जने निरपेक्ष सा
[illegible] सत्संग साधं [illegible] या [illegible] ऊपर कहे
जो अन्यमार्गीय को संग न करे तहां कोई कहें जो कि
[illegible] करे तहां कहत हैं जो [illegible] श्री कृष्ण फलात्म
[illegible] भावात्मक व्रजपति निकट नित्य प्रति नोतन प्रीत
होय और [illegible] आदि में न होय ऐसो अनन्य भाव ना

कीहोय॥औरएकश्रीकृष्णजीकेचरणारविंदकीभक्तिह
दावैयहीवोधकरे॥औरहृदयमेंयहीवासनारहेजोश्री
कृष्णकेचरणकमलमेंप्रीतिहीहोय॥औरदूसरोप्रयो
जनमनमेंनहोय निरपेक्षहोय॥काहूकीअपेक्षानरा
खें यहमनमेंजानेजोएकश्रीकृष्णहीसर्वकर्ताहैं औ
रकोऊनाहीं काहूकोंभगवद्धर्मदिखाय॥अपनीप्रति
ष्ठाअर्थलोभअर्थभगवद्धर्मनकरनहोय॥औरसा
त्विकहोय॥छलकपटकामक्रोधमदमत्सरताइन्द्र
यमेंनहोय॥ताकोंसंगकरे अरु सोधर्मनहोंहेंखेसोभ
गवदीयकोंऐसाकरे॥श्लोक॥ एवंनिश्चित्यसर्वेषुधी
रस्त्वेषुवापुनः॥मदन्युक्तप्रसन्नेषुकर्तव्यःसंगति
तोयः॥१४॥याको अर्थ॥सर्वऔरतेनिश्चिंतहोय॥लौ
किकवैदिकऔरदेहसंबंधीअनेकउपाधिग्रहकाज
तमनकरिनिश्चिंतहोय॥भगवदपरायणहोय॥एतनमा
रगीयपुष्टिमारगीयवैष्णवकोंअपनोजानें॥जोश्री
चार्यजीकेसरणहैं॥औरहैं॥हमहूश्रीआचार्यजीकेसर
णहैं येवैष्णवहमारेसंबंधीहैं॥ऐसेसोतेहवैष्णवप
होय॥तिनकोसत्संगकरनेकोंहो॥अन्यमारगीयजोअ
रहे तिनसोजाकोप्रयोजननहोय॥मदहंकुलउनामें
जलेज नमहोय॥सोसालानवहत्वेभवकुलमयसगए
मेंहै॥एकश्रीकृष्णजीकीसेवा एकश्रीकृष्णजीकेआश्र
इनहीकोसत्संग॥मनवचनक्रियाकरिकेंजन्मह
थवाश्रीआचार्यजीकेअंगीकृतपुष्टिमारगीयनाम
मेंरनमर्यादासेवाश्रीकृष्णमेंजाकीरतिहोय॥के
भगवदीयकों निश्चयहीसत्संगकरनो कहें॥१५॥अ
रहेकहतहैं॥श्लोक॥श्रीमदाचार्यचरणौ मनसिस
न्तस्वतः॥ततएवकृतकीयानां सिद्धकार्यस्यसर्व
॥१५॥याको अर्थ॥श्रीआचार्यजीकेच

...मातेंदृढाश्रयरसस्वास्थ्यहोय मनवचनकरि
श्रीआचार्यजीकेचरणकमलमेंताकीवुद्धिहै ति
गकरनो॥ जोश्रीसर्वोत्तमजीकीटीकाश्रीगोकु
जीकरीहै तहांलिखेहैं॥ पद्मनाभदाससरीखेभ
दीयकोटिकविरला॥ ऐसेभगवदीयकेहृदयमेंश्री
चार्यजीमहाप्रभुनित्यविराजमानहैं तिनकेसं
सकलकार्यसिद्धहोय भीजोकपराई ताकोसुख
[illegible]ाहीकोसंबंधहोय तोउहूंभीजे तेसेहीभगवदीय
कोसत्संगतेंभगवदीयहोय॥ ऐसेस्वकीयभावदी
यमिलनेवहुतदुर्लभहैं॥ औरजहांताई ऐसेस्वकी
यभगवदीयकोसंगनहोय तहांतोईकार्यहूंसिद्धिन
होय॥ तातेभगवद्सेवास्मरनकरिये॥ ऐसेभाव
दीयकेमिलिवेकोना[illegible]रे॥ तोश्रीआचार्य
जीकृपाकरिकेनिश्चयमिलावें तवश्रद्धापूर्वकसेम
होयउनकोसंगमनलगाइकेकरिये जववेभगवदीय
प्रसन्नहोय॥ कृपाकरिपुष्टिमार्गकोप्रकारलीलाभा
ववतावें॥ तवसर्वकार्यनिश्चयसिद्धहोय ताहीतेंश्री
आचार्यजीमहाप्रभुनवरल ग्रंथमेंआपुनिरूपनकी
रहे॥ निवेदनंतुस्मर्तव्यंसर्वथातादृसैर्जनैः निवेदन
कोस्मरण ताद्रसीवैस्नवसोंमिलिवेकरे॥ तामारग
मेंमुख्यहोय॥ तातेंसत्संगहीअवस्यकर्तव्यहे॥१॥ अव
औरहूकहतहैं॥ श्लोक॥ अवैस्नवत्वेनेत्वंतद्धिरुदजन
स्वापि जीवेषुदोषवत्स्वे तथातासाम्यवस्तुषु॥२॥
अर्थ॥ अवकहतहैं वैस्नवअवैस्नवकेसंजोनि
सोतहुनवकहतहैं॥ जोयहश्रीआचार्यजीनेपुष्टि
मार्गप्रगटकीयोहै श्रीगुसांईजीप्रकासकीयोहै सोन
वलीमेंनामकहेहैं॥ पुष्टिमार्गप्रवर्तकायनमः यह
आचार्यजीकोनामहै॥ पुष्टिमार्गप्रकासकायनमः

यहश्रीगुसांईजीकेनाम॥ जोकोईपुष्टिमार्गकीरीतिसोंविरु
द्धआचरणकरें॥ ताकोंअवैस्नवजानिये॥ जोकोईपुष्टिमा
र्गकीरीतिहीं॥ नासमानचलतहैं॥ तिनकोंवैस्नवजानि
ये॥ कांहेतेंशुद्धजीवसोंअशुद्धक्रियाबनेंहैं सोजीवनी
नप्रकारकेहैंजगतमें॥ सोपुष्टिप्रवाहमर्यादाग्रंथमें
श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकहेहें॥ इच्छामात्रेनमनसाप्रवा
हसृष्टिंवान्हरिः॥ वचसावेदमार्गंहिपुष्टिंकायेननिश्चयः
श्रीठाकुरजीइच्छाकरिकेंमनतेंसृष्टिप्रगटकरीहैं॥ सोप्र
वाहीसृष्टिहैं॥ वाकोमनवृत्तिभगवद्धर्ममेंनाहींल
गें॥ सदादुष्टआचरणहीकरें॥ औरवचनकरिकेंश्रीठाकुर
जीसृष्टिप्रगटकरीहें॥ सोवेदकर्ममेंलागीमर्यादाधर्म
मेंआसक्तहें॥ औरश्रीठाकुरजीअपनीकायातेंसृष्टि
प्रगटकरीहें॥ सोवैदिककर्ममेंलागी॥ सोपुष्टिजीवहें॥ उनसों
भगवद्सेवाहीबनें॥ याप्रकारतीनप्रकारकेजीवहें॥ तो
तातेंजोजीवदोषकरिकेंभर्योहै॥ प्रवाहीहें॥ तेसेंही
दुष्टआचरणकरतहैं॥ ताकोअवैस्नवहीजाननो॥ १२॥ अ
बऔरहूकहतहैं॥ श्लोक॥ श्रीकृष्णश्रीमदाचार्य
तथाश्रीविठ्ठलेश्वर॥ तथालीलास्थसामग्रीनेनत्सी
मकराचन॥ १३॥ श्लोक॥ अर्थ॥ अबश्रीहरिरायजीपु
ष्टिमार्गीयजीवनकोसिद्धांतकरतहें॥ जोयहभावअह
निसमनमेंराखियें॥ अलौकिकपदारथमेंलौकिकबु
द्धिआवेंतोवाकोसर्वस्वनासहोय॥ सोकहतहैं॥ एक
श्रीकृष्णऔरश्रीवल्लभाचार्यजीऔरश्रीविठ्ठलनाथ
जीतथालीलासामग्रीमेंव्रजभक्तआदिश्रीआचा
र्यजीकेपुष्टिमार्गमेंसेवासामग्रीसबअलौकिकजा
ननी॥ श्रीकृष्णसाक्षात्फलात्मकभावात्मकरसात्म
कश्रीयसोदोत्संगलालितसर्वांगसुंदरव्रजभक्त
सर्वस्वजीवनधन॥ सोईश्रीठाकुरअपनेदेवीजीवनके

उद्धारार्थ श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकौ प्रागट्य लौकि
क अलौकिक द्विरूपसौं अलौकिक मार्ग प्रगट कीनो सोई
श्रीआचार्यजी अपनो दूसरो रूप श्रीगुसांईजीको धारन
करि यह पुष्टिमार्गको प्रकास कीयो जैसें श्रीकृष्ण बनाये
ब्रजमें सगरी लीलासामग्री अलौकिक जाननी श्रीकृष्ण
अलौकिक श्रीनंदरायजी यसोदाजी आदि सब अलौ
किक बालकलीलासों मग्न हैं। सखा ग्वाल ये अलौ
किक सख्यभावमें मग्न हैं गोपीजनमें अनेक प्रकार हु
ते ललितादिका मुख्य श्रीस्वामिनीजी वृषभानजा श्री
यमुनाजी। इनके यूथ अनेक सखी ये सब अलौकिक
श्रीगिरिराज वृन्दावनादिक पशुपक्षी कुंज भूमि गुल्म ल
ता औषधी निकुंजादि ये सब लीलासामग्री आभू
षण वस्त्रादिक सब अलौकिक तैसें ही यह श्रीआचा
र्यजी श्रीगुसांईजीने पुष्टिमार्गमें सेवाप्रकार वरस
दिनके उत्सव नित्य सेवाके शृंगार सामग्री आभूष
ण वस्त्र सिंहासन खंड पाट पिछवाई निजमंदिर म
णिकोठा तिबारी डोलतिबारी रसोईघर पानघर फूल
घर सागघर भंडार चौक सेवककी नैनी याद सब सा
मग्री सेवासंबंधी पदारथ अलौकिक जानिये। इनके
भावात्मक पदारथ अलौकिक जानिये। इनको भाव
सब जानिये। इनमें लौकिक बुद्धि करे तो महा अप
राध होय याभांतसौं पुष्टिमार्गीय सेवा करे। पहले दे
व्यमन मैसरावे सो श्रीआगे श्रीमस्तक में कहत हैं श्लोक य
दृश्यानि पुरुषोत्तमनाम्नि निर्दिष्टानि तानि सर्वाणि नेतुं चाविद
... लापन दि दुरव बुना ... ध्याया को अ ... षवको
पूर्वपक्ष करि जो सेवासामग्रीनु मस्य अलौकिकता
ता सो तुम अलौकिकता युक्त सो कहत हो। बिन ... ग्रंथमें कहा
है सो सुनो हें है याभांतिको ... तहां श्रीहरिरायजीप्र

रिवें तुम सों कहत हैं जो यह स्वार्थ तो अपने चित्त में स्था
पन करियो। सदा काहू कों कोई काल में भूलि कें तो किन
मत जानियो। और यह भाव काहू के आगे मत कहियो
तुमारो धर्म ही है जाको शुद्ध हृदय यह समुझै। और श्री आ
चार्य जी श्री गुसांई जी के चरणकमल में विश्वास होइ
तिन सों मिलिकें अलौकिक परमार्थ को विचार कीजो
है। और वहिर्मुख जन जाकी लौकिक बुद्धि है। तिन प्रति
कबहू अलौकिक परमार्थ की बात न कहियो। नहीं के [illegible]
कहे जो समुझे नाहीं। ता के आगे कहिये तो उपहास न
तुम के धर्म कहिये ता को कारण कहा। या भांति को है
कहे तहां कहत हैं। श्लोक॥ सो मुख बोधनेन वजो
यतेवा स्वधर्मतः एकोपि दोष संदृष्टः सर्वनास इति ध्रुव
॥५॥ याको अर्थ॥ और वेद्याग चले कि कस्मा रहे सो न
कहनो। या पुष्टि मार्ग में भगवदीय बिना अन्य है। तिन
कों कहिये तो अपनो धर्म जाय। और वेद्याग अदृष्ट
बहु बहन के प्रकार संयोग अपवने तो ताको एक
को प्रकार कहिये जिये। अलौकिक ताको प्रकास
न करियो। काहे ते अपने हृदय को धर्म वाहिर प्रकास
करें तो बाध धर्म सजात रहे। हृदय ते प्रभु जानत रहें
ताते मुख्य धर्म है। सो बाहर प्रकास सर्वथा ही न करनो
काहे ते एक दोष यह ऐसो जीव में दृढ़ है। जो लौकिक
बुद्धि चलो कि जा में सो यह सब धर्म को निश्चय ही नास

करतहैं सो अलौकिक पदारथ
कोई कोटानकोटि में कोई एकको अलौकिक बुद्धि सब
कारी प्रभु की लीला में देखेगो सगरी वस्तु लीला में दृ बुद्धि होइ
ताकी लौकिक क्रिया पूर्व ह नेंनी नाते यह एक देख
महाप्रभुन में मिलि रह्यो है जो लौकिक बुद्धि रहे
क में है तिनको सर्वधर्मको नास है कछु अनुभव नाहीं
ौ या प्रकार पुष्टिमारगमें हैं तिनको श्रीआचार्यजी
कीकृपा ते भाव उत्पन्न होय स्वरूपानंदको अनुभव है
मस्था सो आश्रमाभिरंब लिखिने निरपेक्ष
बन्तः सो हैं न सर्वथा बिन धीयनाय हरि गान
आपै अब श्री हरिराईजी अपने भाई श्रीगोपेश्वरजी
को निवेदित यासिक्षापत्र में संबोधन करत हैं नामें कहत हैं जे
जहां सिक्षापत्र में हम तुमको लिखे हैं सो तुम यह मति जा
नियो जो श्रीप्रभु के संबंध करिके लिखे हैं अथवा कछु
नो लौकिक स्वारथ की भावना मन में सो ऊ नाहीं है तुम
जो सरनिवेदन ऐसे नाहीं निरपेक्ष भाव सों लिखे
श्रीमहाप्रभुजी की लीला धरमें बिराजत हैं सेवा सो
पी ओ अलौकिक भाव होय सो आनंदको अनुभव
य याते लिखे हैं नाते जो तुम्हारे चित्त में चेतावहु
जिनतें प्रकार के हैं सो यह चित्त में निश्चय धार
खि जा पदार्थ नाहीं है ताको भोग प्रकास क
गोपदारथ है नाहीं यह मार्ग श्रीआचार्यज
प्रभुजी को है सो भावात्मक गोप्य हैं नाते स्नेह
ते चित्त में यह भाव को धारन करोगे जी
[illegible]
[illegible]
[illegible] २ अब ऊपर कहत
: संग को निरूपण करे हैं ताके हृदय में भगवान प
भगवान नाम श्री हरि के से है विरुद्ध धर्माश्रय हैं

तिनकेस्वरूपकोज्ञानहोय।सोस्वरूपअवगाहोसिद्ध।
नपूर्वकनिरूपणकरतहैं।श्लोक॥अथोधर्मश्रुतेप्रोक्ता।
तथाभावोपिच॥अप्राकृतास्वरूपेषुनित्यभिन्न।
स्वरूपक॥१॥याकोअर्थ॥प्रभुजोश्रीकृष्णहैं।तिनकेधर्महैं
सोश्रुतिमेंसगरेविलासकरिकेकहेहैं।औरश्रीभाग
वतमेंहूंप्रभुपरिधर्मसबकहेहैं।सोश्रुतिकेंश्रीभागव
तकेदोऊवचनप्रमानजाननें।जिनकेंहृदयमेंश्रुति
वचनऔरश्रीभागवतकेवचनप्रमाननाहींहैं सो
जीवकोअसुरमाननें।जिनकेंहृदयमेंश्रुतिकेवच
नऔरश्रीभागवतकेवचनप्रमानहैं तिनकोसुद्ध
जीवकेंवीजाननें।सोश्रुतिहैंभगवानकेस्वरूपकोअ
प्राकृतकहै।सोअप्राकृतऔरप्राकृतमेंयहतारतम्य
है।अप्राकृतहै सोसदाएकरसहै नकछुअंतरसमय त
है।अप्राकृतहै सोसदाएकरसहै नाहींहै औरप्र
हैं।क्रिमायाकेगुनकीप्रवेसनाहींहै।मायाकेगुनकोसंबंध
कृतहै।सोमायाजन्यहै।मायाकेगुनलपायकेनिर्गुह
रसमछहुदुखसुखसबलगेहैं।कालपायकैनिर्गुहै
यजाय।यहप्राकृतजाननें।तातेप्रभुकोस्वरूपअप्र
कृतजानें।अप्राकृतस्वरूपप्रभुकोजान्योकवूजानि
ओ।जबप्रभुकेस्वरूपमेंओरनाममेंदृढनेहहोयश्री
ठाकुरजीकेस्वरूपकीसेवाकरेविनारह्योनजाय।औरश्रीठाकु
कुरजीकेदरसनविनारह्योनजाय।औरश्रीठाकुरजीकीलीलासंबंधीकीर्तन
जीकेनामश्रीठाकुरजीकीलीलाजानिये।जोश्रीठाकुरजीके
नानरह्योजाय।सबजानिये।जोश्रीठाकुरजीसंबंधीधर्मकेंसगरी
रूपमेंनेहभयोश्रीठाकुरजीसंबंधीयहकेसबपरा
मनेंहैं तबपोरहैं।तबजानियेयहलेश्लो॥२॥
प्रभुकीसो।१।सबओरहूकहतहैं।श्लो।२।वर्तमान
सबरूपत्वसर्वाधारत्वमुख्यको।अपकल्प
साधर्मोयाश्रुतिहैपितहैयाकोअर्थ।औ

सि.प.
२६

तिन्हौंनें श्रीभागवतप्रभुकौं त्रयात्मकरूपनिरूपणकहा
जोजोश्रीठाकुरजीनेंजेरूपकोधरिकेंआपने
तानकेसुखदेनार्थसोश्रीभागवतमेंप्रतिपादितकिया
हैतबहूश्रीप्रभुजीनेंइनलोकनकोवोहीतनदुःखदीय
नवप्रभुनेंसिंहरूपधरिकेंइनलोकनकोमारेयहली
कीलीलाकरिलीनी श्रीयशोदाजीकोसुखवालभाव
हैतिनकोंबालकहायपलनामेंझूलतहैं औरव्र
भक्तनकोपतिभावहैतातेंउनकोरासलीलानेमानम
यनहेंकरतहैं एककालावछिन्नसर्वलीलाकरते
काहैतेंसर्वकेआधाररूपमुख्यश्रीठाकुरजीहैंतेवु
व[illegible]न्यथावातेंसर्वसामर्थ्ययुक्तहैंसर्वव्यापक
हैंसर्वाधारश्रीठाकुरजीकीसत्ताहै औरसबतेन्यारेहैं
यहीविरुद्धधर्माश्रयजोसर्वमेंहैं औरसबतेंन्यारे या
भांतिवेदपुराणश्रुतिश्रीभागवतभगवांनकोस्व
रूपलिखेतिनरूपणकीयोहैं सुखश्रोरहैं कहतहैं
श्लोक॥ [illegible] श्रीभागवततथाते
पसरूपमेंहैं नभयोन्मुखभ्रष्टिमें [illegible]॥ अथयाकोअर्थ
श्रुतिनें श्रीभागवतनेंस्थायिभावकोरूपकह
तहैं एकभावेनश्रुत्यनिवहोंप्रभुकोआपसर्व
कोआधाररूपसोमर्यादाभक्तयेंयथजानिभजनक
रतहैं श्रुतिनेंतनकरतहैंप्रेमलक्षणवशेष्यादि
स्थायिभावसोंभजनकरतहैंसोमर्यादाभक्तहैं ये
प्रभुकेअंतरंगभक्तहैंसोस्नेहभावसोंभजनकरत
हैं [illegible] रागजमार्ग एपुष्टिभक्तहैं सोश्रीठाकुर
जीएकहीहैं भक्तनकेभावकरिन्यारेन्यारेहैं सोश्रीभा
गवतमेंकहेहैं नन्दकुमारजी श्रीठाकुरजीकोमधुपुरीमें
पधरायकेंलेगयेहैंतहांजाकोजेसोभावहतोताकोतैसो
दिखायनमयो [illegible] कोवेरभावहतोतातेंकालरूपप्रभुको

देखे॥ गोपीजनपरमतत्वदेखे॥ मथुरास्थभक्तस्त्रीजनपरम
कोमलसुकुमारबालकरूपदेखे॥ जहांजैसोभक्तकोभाव
तहांश्रीठाकुरजीताहीभावसोंविराजतहैं॥ मर्यादाभक्त
ऐश्वर्यभावसोंआराधनकरतहैं॥ यहजानतहैं॥ प्रभुको
भूखप्यासनाहीं॥ कोटिब्रह्मांडकेजीवनकोपालनकरोसंघा
रकरैं॥ तिनकोंहमकहादेहिंगे॥ प्रभुहमारीरक्षाकरतहैं
यहभावतिनकेंसोंप्रभुकछुमांगतनाहीं॥ औरपुष्टिभ
क्तहैं॥ तेस्वयसोसहजभक्तआदिदैतिनकेस्नेहभावहैजो
लालजूकोंभूखेहोइगो॥ सीतउष्णलागतहैं॥ तहांश्रीठा
कुरजीमांगिकेअंगीकारकरतहैं॥ सोश्रीभागवतमेंप्र
सिद्धहीनिरूपणहै॥ ऐश्वर्यभावमेंमर्यादारीतहै॥ स्नेहभा
वमेंपुष्टिरीतिहै॥ याभांतिस्वरूपभेदन्यारेन्यारेरसकों
अनुभवहैं॥ सोदोऊमार्गप्रसिद्धिहैं॥ अब वक्ष्यमाणकहत
हैं॥ श्लोक॥ सर्वेपिविभिद्यंते इतिश्रीमत्प्रभोवचः॥ अंत
पुष्टिमारगीयअंतरंगाविशेषतः॥४॥ याकोअर्थ सर्वमें
व्यापीहैं॥ भगवानसोसात्विकपुरानश्रीभागवतआदिकनमें
औरश्रीसुबोधनीजीआदिग्रंथमेंश्रीआचार्यजीमहाप्र
भुहूसर्वव्यापकप्रभुकोंकहैंहैं॥ परंतुअंतरंगपुष्टिमारगीय
भक्तनकोभावसर्वोपरहै॥ काहेतें॥ ग्यानीहैं तथामर्यादा
मारगीयभक्तहैं॥ सोसर्वव्यापकभगवानकोंजोतिभजनक
रतहैं॥ तिनकोंस्वरूपानंदकोअनुभवनाहींहैं॥ केवलमो
क्षकेअधिकारीहैं॥ औरपुष्टिमारगीयभक्तहैं॥ सोसर्वोप
रहैं॥ श्रीठाकुरजीकेअंतरंगीसदासेवाशृंगारभोगआ
दिकरीस्वरूपानंदकोअनुभवकरतहैं॥ तिनतेंएककृ
पाश्रीठाकुरजीन्यारेनाहींरहतहैं॥ यहपुष्टिभक्तविशेष
करिसर्वोपरहैं॥४॥ अबवक्ष्यमाणकहतहैं॥ श्लोक॥ विरुद्ध
मन्वयत्वंस्वमुखायपिच्छायते॥ प्रभुःकुमारत्वात्तीव्र
जेमात्रप्रदायकः॥ ५॥ याकोअर्थ॥ प्रभुकोस्वरूपप्रभुविरु

द्धधर्माश्रय है। यह प्रकार भक्तजनको अवश्य हृदयमें क
रनो। वैष्णवको मुख्य धर्म यह है जो प्रभुको विरुद्धधर्माश्र
य जानै। काहेतें जहां तांई प्रभुकी लीलामें असंभावना
विपरीतिभावना होय सो भक्तबीजको नाश करै। ताकूं
प्रकार कहत हैं जो प्रभुकी लीलामें संदेह आवै तो दामो
दरलीलामें कटि छोटीसी प्रभुकी होय अरु गुणको बी
च जसोदाजीको दाम जो रह जाय। और होय अंगुल ही घ
टै याभांति असंभावना करै। यह न जानै जो प्रभु विरुद्ध
धर्माश्रय हैं। या है सो ऐसो। और अनेक भांतिकी विपरीति
भावना उठै जो प्रभु माखनके लीये पास [illegible]
नाहि लीलामें [illegible] प्रभु [illegible] करत हैं याभांति प्रभु
की लीलामें दोष बुद्धि आवै सो विपरीत भावना। सो यह
असंभावना और विपरीत भावना जाय। जब श्रीठाकुरजी
को विरुद्धधर्माश्रय जानै। यह मुख्य विचार वैष्णवको
करनो है। प्रभु सुकुमार पांच बरषके [illegible] श्रीयसो
दाजी मातके [illegible] अंकमें बिराजत हैं। और प्रभु [illegible]
[illegible] लीलाको अनुभव करावत है। प्रभुकी सगरी लीला
[illegible] आनंदरूप है जैसे प्रभु आनंदरूप है तैसे ही प्र
भुकी लीला है नित्य सो श्रीगोवर्धन धरत है। [illegible] श्री
भागवत [illegible] जो [illegible] तथैवास्म
[illegible] श्रीभागवतमें नि
त्यलीला कहे हैं जो कुमारलीला ब्रजमें राखिके पौगं
डलीला [illegible] लीला [illegible] को मारं जहतु है जो प्रति
[illegible] मनुष्यको बालपनो [illegible] रिवारूप
[illegible] श्रीठाकुरजीको का
[illegible] लीला नित्य है [illegible] लीला [illegible] रत
है। यह विरुद्ध धर्माश्रय प्रभुको जाननो। ताहीतें श्रीभा
गवतमें श्रीशुकदेवजी कहे हैं जो कुमारलीला राखि दूसरी

लीलाकीरी॥ याश्लोककोव्याख्यानश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुश्रीसुबोधिनीजीनिबंधसमार्थविवेचनकरिकीये
हैं कोमारंजहजुबूजे॥ औरनित्यलीलाठाकुरसपाद
नकीरी॥ ताहीभांतिपुष्टिमार्गमेंश्रीआचार्यजीमहाप्र
भुसेवाप्रगटकीरी॥ वरषकेव्रतजन्माष्टमीदानरास
होरीफूलमंडलीहिंडोरासबुनित्यलीलाकोअनु
भवसोलागतहोतहै याभावतेवैष्णवनित्यलीलाकी
भेदजानिस्मरणभजनकरो॥१॥ अबश्लोककहतहै
श्लोक॥ व्रजराजकुमारश्चकुमारीचाभावधृक्॥ ग का
रसमग्नास्तत्रगूढाविनः सर्वतादन॥ अथाकोअर्थ
तातेंव्रजमेंकुमारप्रभुयातेंहैंजोकुमारहैंसोरहहजा
रअविकुमारिकापांचपांचवरषकीहोतनकेभावनी
यभावनामेंपांचवरषकेप्रभुहैं॥ काहेतेंरससास्त्रमें
यहकहेहैं जोजेसोभावस्त्रीकोहोय तेसोईपतिहोइ
तवरसविशेषहोय॥ तातेंकुमारीकेभावनीयस्वभाव
यकीभावनाप्रभुमेंकरतहें॥ तातेंकुमारीकोप्रभुकुमा
रूपसेंभावकीवृद्धिकरतहैं॥ औरग्यारहवरषकीली
लाव्रजमेंसदाहै॥ तामेंबाललीलातेंपौगंडकिसोर
सबहीकरतहैं॥ कुमारिकानेंगूढभावसौंकात्यायनीको
अर्चनकीरी॥ गूढभावनेंछिपायकें यातेंकीयौ॥ जो हमा
रेभावकोंनंदरायजसोदाजीआदिव्रजमेंकोऊनजा
नेंकाहेतेंगूढभावप्रगटभयेतेंरसजातरहतहै॥ तातेंस
वसोंछिपायकेंकात्यायनीकोअर्चनकुमारिकानकीयो
ताकरिकेंश्रीठाकुरजीकोअपनेवसकीरी॥ कुमारीको
गूढभावप्रभुजानचीरहरणकरिसर्वांगदरसनकरिके
तेंविलक्षेहरसंपादनकरवायो॥ पाछेवस्त्रदेअलौकिक
करिकेंदीये॥ बारहदिनदीयेजोसरदरितुमेंरासकरितुम
रमनोरथपूरणकरेंगे॥ सोरासमेंग्यारहवरषकेकुमा

तैकि सोरूपको धारिकें जैसो जैसो मनोरथ कुमारीनको
तो॥ सोसब पूरनकीए॥ याभांति गूढभावसों कात्यायनी
की आराधनकरि प्रभुको वसकीए कुमारिका॥ ७॥ अथश्लो
कहेहें॥ श्लो॥ एतद्द्वयं मिश्ररूप कुमारिके व्योर
॥ मग्नप्रापितथे वासितयतो गोप्य कुमारिका॥ ८॥
॥ या॥ श्लो॥ याभांति दोयवाक्य है॥ दोयप्रकारको भाव है
श्रुतिवाक्यनतें ऐश्वर्यभाव श्रीभागवतके वाक्यतें कु
मारसो मिश्रितरूप दोयरूप प्रभु वे॥ सो केवल कुमाररूप
हरि कुमारिकाके भावकरि हे॥ रहें॥ यद्यपि प्रभुकी स्थिति
सगारहे॥ परन्तु गोप्यकुमारिकाके पासही रसरूप प्रभु है कुमा
रिकाके भावविना रसरूप प्रभु हैं तहां नाहीहै॥ काहेतें भा
वात्मक रसरूप प्रभु पात्रविना और रसरहे नाहीं ता
तें भावरूप पात्र कुमारिका हैं॥ तातें कुमारिकाके पास
भावात्मक प्रभु हैं॥ और हू कहत हैं॥ श्लो॥ एवं
मन्तीदसरूपरासकी लीलादिकरि ह्विविधा॥ विरुद्धधर्माश्र
यत्वबोधायैव हि युज्यते॥ टी॥ या॥ श्लो॥ चवकह
तहें जो रसात्मक प्रभु कुमारिकाके ही पास है॥ सो रासली
ला में वर्णन है॥ जो वेणुप्रवेश जाय श्रीठाकुरजी सगरे व्र
जभक्तनको रसदानकीयो॥ तब सबनको सो भगमद भयो त
बश्रीठाकुरजी कुमारिका गुणातीत तिनको मदन भयो त
एक गुणातीत कुमारिकाको लेके पधा
श्रीठाकुरजी एक गुणातीत तब कहांते अन्तर्ध्यान
पाछे सबनको सो भगमद भयो जो प्रभु हृ
यतें गुणातीत भक्तनके हृदयमें पधारे अवस्था भक्तनकी
नहोयतो एकल रसमें समी अवस्था बाहर प्रग
ट भयो गुणातीत कुमारिकाने खायके गिरी सो
प्रभुको देखे नाहीं समय तब उन्हें भक्तको लीला
वे दोऊ भुजा यों ऊंची कीहें॥ महाभुजः॥ हास्य स्वरूप
रसप्रेमश्लोक सिद्धासि महाभुज

सवेदृशीनसंनिधि॥तुमपासनो होउठायमहाप्रभुरता
कीनी तो अवसर्शीनसेहुं॥पाछे सगरे भगतआइफेरिपुलिन
मेंगुनगानगायपाछेंनिःसाधनहोयरुदनकीयो॥तबप्र
भुरुदनहीकेभीतरतेबाहिरप्रगटे॥तातेंकुमारीकेपासहीं
प्रभुहैं औरसबठौरआपुनऐश्वर्यधर्मकोंकेंयाभांतिवि
रुद्धधर्मकरिहैं मोऐश्वर्यकोबोधकीयो॥सोवेदमवकोसा
मर्थस्पजानोचाहियें॥ऐसैंवर्ओएहूँकरनहें॥लोक
रुहंहिपुष्टिमारगीयतदेवंज्ञायतेवुद्धेगीतगोविंदसहू
यद्यपितदेवनिरूप्यते॥१॥याको अर्थ॥नहांकोऐसेंहै
जोकुमारिकापुष्टिमारगीयहैं॥यसुबुद्धिकेंजानतो
कुमारिकाकेधर्मजनवयादें॥तबजानियेंपुष्टिमारगीय
धर्मआयो॥ऐसोदुर्लभपुष्टिमारगहें॥तातेंयहनिस
कुमारिकाकेभावकीभावनामनमेंकरनी॥उनकीदास
निकीरीतेंकुमारिकाकीकृपातेंभावजबहृदयारूढहो
इगो॥तबप्रभुकोअनुभवहोइगो॥यहबुद्धिमेंनिश्चयक
रिकुमारिकाकेभावकीभावनामनमेंकरीये॥सोश्रीआच
र्यजीकेपुष्टिमारगमेंउनहींकेभावकीसेवाहोयहैजो
निरीतिसोंसेवाकरियें॥श्रीआचार्यजीश्रीगुसांईजी
केचरणकमलकोआश्रयकेउनकेभावस्वरूपहीपि
तापुत्रकोंजानिये॥गीतगोविंदमेंमानादिकविह
रजयदेवनेंकुमारिकाकेभावकीलीलासबवर्णननें
याप्रकारप्रभुकुमारिकाकेवसहें॥याप्रकारस्वजभ
नसंगरसपरवसहें॥सोरसकेग्रंथअनेकहें॥तामें
तगोविंदआदिमेंसबवर्णन॥सोकुमारिकाकीलीि
याप्रकारमनमेंजानिभावनाकरनी॥१॥अबश्री
कहतहैंश्लोक॥अन्यथानंदवदनंनाइसेयुज्यते
ये॥अतस्तुपुष्टिमारगीयदितत्वगुणसमयया॥१॥य
अर्थ॥नंदरायजीकेवचनसत्यजाननें॥काहेतें

रिकाकोदेयनेत्यारे नंदरायजी सोकंसकेदेनाथे
सोवेपुष्टिमार्गीयहती तातेंप्रभुकीसेवामेंलागी
तबनंदरायजीकंसकोनाहींदीयो कुमारिकाकीबहु
तसराहनाकरी पुत्रकेसेवार्थघरमेंराखे सोश्रीनंदराय
जीकेकछुनबडेबडेनाहूसीनंदरायजीके स्नेहकीसराहना
करतहैं सोनंदरायजीकुमारिकानकीसराहनाकरतहें
तातेंकुमारिकाकोस्नेहभावनंदरायजीसोंअधिकहैतो
तेश्रीठाकुरजीकुमारिकाकेवसहैं एसोपुष्टिमार्गसर्वो
परहै तामेंश्रीकृष्णभगवान्प्रकटहोतसोसदाविराजतहैं
सोपुष्टिमार्गमेंप्रभुविरुद्धधर्माश्रयस्वरूपसोंविराजतहैं
अबआगेश्लोकमेंविरुद्धधर्माश्रयकोभावप्रकाशकी
वर्णनकरतहें १ श्लोक रसमार्गीयधर्मास्तुतेनाथ
याविलक्षणी वार्त्ता रसिकभक्तनास्ववृत्त्यान्यवृत्तःसदा
१२ याकोअर्थ रसमार्गकीरीतिमेंमर्यादामेंविरोधहै
औरपुष्टिमेंविरोधनाहीं पुष्टिमेंविलक्षणरीतिहैसो
कहतहैं श्रीरामचंद्रजी [illegible]मेंधर्मस्थापनकीरी
तिहै तातेंयेकपत्नीव्रत औरश्रीकृष्णावतारमेंसमस्त
रसभक्तनगोपभायेंसोरसमार्गधर्मकोस्थापनहै औरए
लोकवेदमेंजहांरसमार्गरससास्त्रवर्णनहै तहांधर्म
मार्गमेंविरोधहै काहेतेरससास्त्रमेंपरकियामेंकेछुन
भावहै सोजहांपरकियारमणभयो तहांधर्मस्थाप
ननाहीं औरजहांधर्मस्थापनसास्त्रमेंवर्णनहै त
हांपरस्त्रीकोमननेकसोरमणविचारतोदोषहै य
हमर्यादामार्गकीरीतिहै औरपुष्टिमार्गमेंश्रीठाकु
रजीविराजतहैं सोसगरेधर्मनकोस्थापनकरतहैं और
समस्तव्रजभक्तनसोंरससास्त्रोक्तरमणहूकरतहैं यहू
विलक्षणताहै यहविरुद्धधर्माश्रय औरपुष्टिमार्ग
मेंश्रीठाकुरजीबालकह्वैपलनाझूलतहैं औरपरम

रसिकनके मुकटमणि ॥ या पदवारथके योडस्ववस्थके रा
ककालवांछित हैं। यपनेवसहैं कोटानकोटि भांतिके
साधनकोईकरो। त्रेतादि सिवादि ग्र्याहिकोटानकोटि
रसतेसाधनकरत हैं। अवस्वरूप नहोत हैं। वेदनेन
नेतकहत हैं। कालवसप्रभुनाही। औरभक्तनकेवसम
रहें श्रीयसोदाजी भक्तिकें विवाधे हैं वृजभक्तनकेस
दाआधीन हैं। भक्तमान हैं सो कारण अन्यथा जानत
नाही। यह धिरधर्म श्रियजाननो। अब औरहूकहत
हैं श्लोक। अभीतः सर्वथाभीतः सोपेक्षी निरपेक्षकः
चतुरोपिमहामुग्धः सर्वज्ञोपत्र एव चः॥२७॥ याको अ
र्थ। प्रभुकैसे हैं अभीत हैं। भयकरिके रहित हैं। काहेते
कालके काल हैं। रंचक भ्रकुटी विलासतें कोटानको
टि ब्रह्मांडको मारें। रंचक भ्रकुटी विलासतें कोटानकोटि ब्र
ह्मांडको करें। नासहूं करें। सगरे देवता डरपत रहत हैं। तिन
कोभयको लेसनाही है। औरभयसंयुत हैं। सो श्रीठाकु
रजी व्रजमाटी खाई तब श्रीजसोदाजी लकुटी लेके डरपा
वत हैं जो माटीको खायो। तब श्रीठाकुरजी डरकरिके
नेत्रसे तें मलभारिके कहत हैं मैयामैं माटी नाही खाई
याभांति भक्तसों डरपत हैं। औ व्रजभक्तनसों डरपत
हैं जो ये अप्रसन्न होय। के बहुमान मतिकरें औसेप्र
मुहे। औरप्रभुको कोई वस्तुकी अपेक्षा नाहीहै अद्
रजतसारिखो घर है। लक्ष्मीसारिखी रानी। कौस्तुभ
मणियाभूषण है। या हिसब अलौकिकपदारथतिन
कोकहा अपेक्षा है। मायासारिखी दासी सर्वएक हाण
मैं सिद्ध करें। ऐसे निरपेक्षी हैं। औरभक्तनकी रंचकहू
वस्तुहोय ताकी लेवेकी अपेक्षा है। व्रजमें यसोदाजी
तथा व्रजभक्तनसों नवनीत आदि दिखुलेला आदि
कृष्णी स्वीकार करत हैं। औरप्रभु चतुरसिरोमनि हैं। को

५.

हिंत्रैलोकमेंजोकोईभयोहे॥ ऐसोनाथकेतिनकोहेउस
।। हरणकीक्रियामनकोभावसबकोजानतहे॥ औरभ
क्तनकेअपनेमहासुग्धहेबालकहेंभक्तरेनहेसोई
आरोगतहे॥ आपकछुजाननहीनाही॥ औरसर्वज
हेसर्वठौरव्यापकहेसगरीसत्ताप्रभुकीहे॥ तिनतेत्र
ह्मलोकमेंकछुदूरहेसोनाही॥ भक्तनकेआगेत्राणपावकुम
ननाही॥ देखतनमेंहाराजानहे॥ ऐसेलाकोलेकेखेल
नलीहारूदनकरतहे॥ ऐसेविरुद्धधर्माश्रयप्रभुहे
॥ यह अर्थ औरहूकहतहे॥ श्लो० ॥ आत्मारामोप्यगो
पीनांसर्वदारतिवर्द्धनः॥ पूर्णकामोपिकामार्तोघरी
णोहीनभावतः॥ १४॥ याकोअर्थ॥ प्रभुसदाआत्मारा
महे॥ अपनेआत्मामेंरमतहे॥ बाहिरनाही॥ औरगोपी
जनकेसंगनित्यरमणकरिकेनित्यनोतनकामकीवृद्धि
करतहे॥ औरप्रभुपूर्णकामहे॥ साक्षातमनमथकेमनमथ
हे॥ तिनकोकामनकहाबाकीहे॥ सदैकामनापूर्णहेसकल
स्थितिआतहेंतनकेमध्येलेलाननिर्दोषहरिक्ष्याकुलहो
य लक्ष्मीकोमेअर्थार्थव्याकुलनादनहे॥ दीनताकोरहि
तहे॥ इन्द्रकेईश्वरहे॥ त्रिलोकीजिनकोनमस्कारतहे
सोदीनताधरोकेऐसेभक्तनसोंकहेंन्याकरतहे॥ जोमेंतुम्हा
राहू॥ तुमबिनामेंऔरकोनाहीजानतमोपरकृपाराखो
याभांतिभक्तनकेदीनताकेवचनकहतहे॥ यहविरुद्धधर्मा
श्रयजाननो॥ १४॥ याकोअर्थऔरहूकहतहे॥ श्लो०॥ स्वप्रका
शोप्यप्रकाशोवाहिष्ठोनः स्थितः सदा॥ स्वतंत्रः स्वत
त्रोपिसमर्थोपिनतथापिच॥ १५॥ याकोअर्थ॥ प्रभुअ
पनोप्रकाससगरीत्रिलोकीमेंकरेहे॥ औरजाकोप्रका
सतेजअभिमानभयो॥ तिनकोतत्कालनासकरिअ
पनोहीप्रकासराखेहें॥ औरभक्तनकेआगेअपनोप्रका
सजाननदेतनाही॥ भक्तकेरसोईहोइभक्तकहेसोईआप

रें वाहिर स्थित हैं। सदा सर्व व्रजभक्तन के संग आने
स्तीला करत हैं। और सर्व प्राणीमात्र के अंतःकरन
स्थिति हैं सदा। और प्रभु सदा स्वतंत्र हैं मन आवे ते
ली लीला करत हैं अपनी इछा तें काहू के लोगमें ना सकर
नहिं भक्तन के वस रहे व्रजभक्त कहत हैं इहां बैठो तहांई
बैठत हैं भक्तन के आगे स्वतंत्र की बात नाहीं कहत भक्त
के मनोरथानुसार प्रभु कारज करत हैं। सर्व सामर्थ्य युक्त
प्रभु हैं परंतु अकर्तुमन्यथा करतु सर्व सामर्थ्यवान हैं
भक्तन के आगे अपने सामर्थ्य करि रहित हैं। और ऐसे व्रज
भक्त के मन आवे त्यों ले जात हैं। अपनो मनोरथ करत
हैं या भांति प्रभु को स्वरूप है।१५। अब और हू कहत हैं
श्लोक॥ एवं हि पुष्टिमार्गीय विरुद्ध स्वगुणालये। कृष्ण
रूपा कु सततं स्मरणं भावयेद्दृढं॥१६॥ या को अर्थ। श्री
व श्रीहरिरायजी कहत हैं। जो या प्रकार विरुद्ध गुण के
घरजों काहू तें जान्यो जाय नाहीं। ऐसे प्रभु रसात्मक भाव
त्मक यह पुष्टिमार्ग में विराजत हैं। साक्षात् श्रीकृष्ण
फलात्मक परम कृपालु भक्तन पर सो ऊपाय है। तातें
ऐसे श्रीकृष्ण की संतत जो निरंतर अहर्निश स्मरण जे
यो मन क्रम वचन करि सर्वभाव सों स्मरण राखिये। अप
न हृदय में स्मरण की भावना निरंतर राखिये। तव श्री
कृष्ण तो परम उदार हैं कृपालु हैं। या करि कृपा करेंगे
सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन नवरत्न ग्रंथ में कहे हैं
तस्मात्सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम। तथा
विवेकधैर्याश्रय में सबको वा सबको वा सर्वथा स
र्वदा हरिः॥ इत्यादि ठौर ठौर श्रीआचार्यजी श्रीगुसांई
जी कहे हैं। तातें स्मरण की भावना हृदय में कर्तव्य है। अ
ष्टाक्षर महामंत्र सर्व सिद्धि करनो जानि स्मरण अष्टप्रह
र करिये। सो विज्ञप्ति में श्रीगुसांईजी कहे हैं। यदुनंद

धु होतो श्री कृष्णः शरणं मम यातें नाम वार्ता तें निश्चिंत मोहि है
पारलौकिक को प्रतिबंध नाहीं तातें श्री कृष्ण जो परम छपा
रूप हैं तिनकी भावना अपने हृदय में मन तें सर्वथा क
रिए यातें ये पंनी यह निश्चय सिद्धांत है १६ ॥ अब श्री हरिराय जी क
हत हैं श्लोक ॥ असाधनः साधनवान् साधुसाधुरे
वा शरणा देवानि रिक्तं फलं प्राप्नोति संशय १७ या
को अर्थ । अब श्री हरिराइजी कहत हैं जो कोई जीव में
एकहू साधन नाहीं है और कोई जीव अनेक प्रकार के
साधन करत हैं कोई जीव साधु हैं परम सुशील हैं का
म क्रोध मद मत्सरता रहित हैं और कोई जीव असाध
हैं काम क्रोध मद मत्सरता रहित नहीं अनेक दोष सों भ
रे हैं और एक जीव जात देवता मनुष्य ब्राह्मण क्षत्री वैश्य
शूद्र चांडाल पर्यंत पशु पक्षी आदि सब कोई
होहु जो श्री ठाकुरजी की सरण है तिनको निश्चय फ
ल की प्राप्ति होइगी या में संदेह नाहीं प्रभु की सरण
यह सर्वोपरि धर्म है सरण प्रभु की भयो सो जीव सर्व
धर्म कर चुक्यो और अनेक साधन करत है सरण
द प्रभु को नाहीं आयो तहां ताई फल की प्राप्ति नाहीं
है तातें प्रभु की सरणागति तें सगरो फल सिद्ध होइगो नि
श्चय यह सिद्धांत भयो अब और हू कहत हैं श्लोक ॥ भ
क्ति मार्गे साधनं च फलं शरणमेव हि सर्व धर्म परित्या
गो स्वतंत्रं चैव फलं स्मृतं १८ याको अर्थ । अब श्री
हरिरायजी कहत हैं जो भक्ति मार्ग में साधन हू श्री कृष्ण
की सरण यह साधन फल न्यारे नाहीं साधन हू फल
पर है तातें सरण हू स्वरूप फल है सो भगवान गीता जी में
कहे हैं सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं सरणं व्रजेत ॥ या लो
क पर श्री गुसांईजी न्यारी टीका स्वतंत्र की ए है तामें स
रण ही की भावना मुख्य करि निरूपण करी है । एक श्री

लकौ आश्रय जाजीव मैं भयौ। तहां सगरे धर्म सिद्धि भये।
तिसर्वते मुख्यफलरूप श्रीकृष्णकौ आश्रय है यह भाव
तानि आवस्य शरणाकरत कहे हैं। याभांति निरूपणकी ए
१८ अवश्योर्हूं कहत हैं। श्लोक। परोहि स्वरणांताऽऽहापु
स्वयोगात: कृपाचैतादृसानाहि तदीनदासके भवेत्
र्दृयाकोऽपि श्रीकृष्णावतार हिसामें प्रसिद्धिस
णासिद्धिहोय श्रीआचार्यजीवि परोहितमें श्रीआचा
र्यजीद्वारा शरणासिद्धिहोय। श्रीआचार्यजीके ग्रंथ
वचनामृतद्वारा शरणहोय तथा श्रीकृष्णके मार्ग
स्वदिसामेंतो प्रसिद्धिशरणहोय। परोहिसामेंम
हापुरुषभावदीयसो मिलिवें शरणादो विचारकै
रै सोयह पुष्टिमार्गकी रीति है। सेवासमय लाहानस
रण। स्नानसामें भावदीयसो मिलिवें शरणाकीभा
वनाकरैं। काहेतें। तादृसी भगवदीयकी कृपातें तोही
भगवदीयद्वारा शरणासिद्धहोय। याके संयोगविप्रयोग
दोइप्रकारकौ शरणासिद्धहोत हैं। सेवामेंतो संयोग
णाश्रयसिद्धिही है। शरणापरसकरनहीं है। तुलसी
नित्यसमर्पनहीं है। यह साहातनशरणभयो। अवस
करि श्रेत: करणमें शरण भगवदीयसो मिलिवें भ
वदीयद्वाराहोय॥ १८॥ अथ श्लोक एक कहते हैं। श्लोक
वामथिनु पारोलेनहुते वैचनेन: स्वत: नस्कामि
मार्गे स्थितो भवति सर्वथा॥ २॥ याकौ अर्थ॥ कप
हैसंयोगमें साक्षात प्रसिद्धिशरणासिद्धहोय। श्री
वार्यजीके परोक्षमें श्रीआचार्यजीके वचनाम
द्वारा शरणासिद्धिहोय। तो श्रीआचार्यजी पुष्टि
प्राकटीरहे। तिनमें स्थितहोय सर्वथा तव
सिद्धिहोय। काहेतें श्रीकृष्णके परोक्षमें श्री
श्रीगुसांईजी वल्लभकुल तिनके परोक्षमें पर

रे तथा आपु भोजन करें पोढें नव उनके वचनकी भावना करें सगरे ग्रंथनकौ भावकरि आपुने उनके पुष्टिमार्गकी री तिमें स्थित होइकें सरणकी भावना सर्वथा करें तो निश्चय सरणसिद्ध होय २० अब आगें कहत हैं श्लोक संसारीणां सदा दुष्टसंगिनां मलरूपिणां बहिर्मुखानां मतानंकुतो मार्गे स्थितिर्भवेत् २१ या को अर्थ अब ऊपर कहे सो लोकान सरणपरोक्ष दिसामें श्री आचार्यजी द्वारा सरणसिद्धि होय श्री आचार्यजीके परोक्षमें उनके ग्रंथ वचनामृत द्वारा भगवदीयसों मिलिकें पुष्टिमार्गमें स्थिति होयकें सरण विचारें परंतु दुःसंग होय तो सरणकी योग्यता न रहे काहेतें संसारी जीव हैं सो सदा तें दुष्ट की है तातें दुष्टके संगतें निश्चय दुष्टता होय तातें संसारासक्त जीव हें तिनको संग करिबे नाही कर्तव्य है तहां कहत हैं जो बहिर्मुख वैसेंजा निर्लौकिक में विषयासक्ति में तनमनधनकौ अंतर है सो भ्रष्ट होय तो दिनकचावे तासों भगवद्धर्ममें मन ही न लगे अभिमान अहंकार मनमें बहुत रहे ऐसें संसारी जीव सबके हृदयमें यह पुष्टिमार्गकी वह स्थिति न होय ऐसे बहिर्मुख होय तो संग करें तो पुष्टिमार्ग तें नष्ट होइ तातें संसारी जीव बहिर्मुखको संग छोडि भगवदीयको संग करि सरणकी भावना करें २१ अब आगे कहत हैं श्लोक आनंदस्थे श्री महाचार्यचरणाब्जमहाश्रयः सदा विधेयस्तेनैव सकलसिद्धिर्भवति २२ याको अर्थ जो कदाचित वल्लभकुलतथा तादृसी भगवदीयको संग न होय और कछु ग्रंथवार्तामें अभिनिवेस न होय तो कहा करें तहां कहत हैं दुःसंग बहिर्मुखको संग छोडि आपने तें जितनी सेवा बनि आवे सो करें और अपने हृदयमें श्री आचार्यजी महाप्रभुको आश्रय दृढ

रवें श्रीमहाप्रभुजीके चरनकमलकी भावना मनमें
र। नित्यनेमकरि श्रीप्रभुपर मनलगाइवेंकें ताकें
वर्कल मनोरथ सिद्धि निश्चय होइगो। काहेतें श्रीआचा
जीमहाप्रभु अलौकिक अग्निरूप हैं सोजो बिह्वलमहा
प्रभुजीके सरणआयकें श्रीआचार्यजीके चरणकमल
कोसदा मनलगाइकें आश्रयसिथल नकरें काहेतें भग
वदीयकेसंगतें आश्रय वेगि सिद्धि वाहीहोत यहजोनि
केसिथल नहोय जो भगवदीयको संगहोइगो तबहीमें
आश्रयकरूंगो ऐसेंन विचारें भगवदीय कृपा जानिये
वन मिले तोहू ताइ आश्रयकी रीतिबिना दुर्बुद्धि होयजो
य तातें मनतें आश्रय नछूटें याभांति सिथल न होय
जो होनहार है सो होइगी जैसो ईश्वर चाहें तैसो होइगो क
हाक सं यह सिथल भाव मनमें न करें जैसेंतैसें अपने
मनकों खैंचिकें श्रीआचार्यजीके चरणकमलमें लगा
वें सो श्रीआचार्यजी विवेकधैर्याश्रयग्रंथमें वर्णनकी
रहे अपराध पिपीलिका स्पर्शसामर्थ्य मादनात् इ
तिवे वचनात इहाँ रहे तो लौकिक सुखदशा है भ
गवद्सेवधर्म आदिकों तनें सिथल दीहें तातें मन
कों सिथल कीयो भगवद्धर्मतें न दाइ दूरि रहे तो यह
चाहनहें तातें जद्यपि अपराध दूरि रहे तें अपने मन
में असुरकी भावना न करें यह जानें जो यह मंत्रकोसु
व्यर्थ है यही जो प्रभुको हृदयमें कर लों ताकोयही
धर्म है सेवाकरनी जहां श्रवणसो भगवद्कथासुन
नी मुखसो भगवद्नाम लेनो हृदयमें आलस न राखे
तत्काल उठनो भगवद्धर्ममें यह जाननो आजुकें
सो करिलेनो कालिकहा जानियेंकहा है याभांति
तानवैराग मनकोहूदाय दूरि रहेंको भगवद्ध
मेंलगाइ सिथलता मनमेंन राखे याभांति श्रीमह

य॰ रेतथाआपुभोजनकरैंपोढै नवउनकेवचनकीभावना
करैसगरेग्रंथनकौभावकरैपुनैउनकेपुष्टिमार्गकी
रीतिमेंस्थितहोइकैंसरणकीभावनासर्वथाकरैतोनि
श्चयसरणसिद्धहोय ॥२०॥ अबआगेकहतहै श्लोक
संसारीणांसदादुष्टसंगिनामल्पचेतसां ॥ बहिर्मुखानां
मतानांकुत्रामार्गस्थितिर्भवेत् ॥२१॥ याकोअर्थ अब
ऊपरकहेसाक्षातसरणपरोसदादिसामेंश्रीआचार्यजी
द्वारासरणसिद्धिहोयश्रीआचार्यजीकेपरोक्षमेंउनके
ग्रंथवचनामृतद्वाराभगवदीयसौंमिलिकेपुष्टिमार्ग
मेंस्थितिहोयकेसरणविचारे परंतुदुःसंगहोयतोस
गरोकीयोएकक्षणमेंजातहै काहेतेसंसारीजीवहैं
सोस्वभावतेदुष्टसंगीहैं तातेंदुष्टकेसंगतेनिश्चयदुष्टताहो
य तातेंसंसारासक्तजेजीवहैं तिनकोसंगकरनोनाही
कर्तव्यहै तहांकहतहैंजोबहिर्मुखवैसेंजानिरालौकि
कमेंविषयादिकमेंतनमनधनकरिउन्मत्तरहे सोअप्र
हरतोदिनकोआवेशहै भगवद्धर्ममेंमनहीनलगे
अभिमानअहंकारमनमेंबहुतरहे ऐसेसंसारीजीव
नकेहृदयमेंयहपुष्टिमार्गकोबहुस्थितिनहोय ऐसेब
हिर्मुखहोयतोसंगकरैतोपुष्टिमार्गतेनष्टहोइता
तेंसंसारीजीवबहिर्मुखकोसंगछोडिभगवदीयकोसं
गकरिसरणकीभावनाकरै ॥२२॥ अबआगेकहतहै
श्लोक ॥ नरस्यैवंश्रीमदाचार्यचरणाब्जसमाश्रयः सदा
विधेयस्तेनैवसकलंसिद्धिष्यति ॥२३॥ याकोअर्थ जो
कदाचित्वल्लभकुलतथाताद्रसीभगवदीयकोसंग
नहोय ॥ औरकछुग्रंथवातोमेंअभिनिवेसनहोयतो
कहाकरै ॥ तहांकहतहै दुःसंगबहिर्मुखकोसंगछो
डिआपनेतेंजितनीसेवाबनिआवेसोकरै ॥ औरअ
पनेहृदयमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकोआश्रयदृढ

राखें श्रीमहाप्रभुजी के चरनकमलकी भावना मनमें
करे. नित्यनेमको त्रिविधप्रहर मनलगाइकें करे तोवे.
सकलमनोरथसिद्धि निश्चय होइगो. काहे ते श्रीआचा
र्यजी महाप्रभु अलौकिक अग्निरूप हैं सो जो वल्लभमहा
प्रभुजी कि सरन आयकें श्रीआचार्यजी के चरनकमल
को सदा मन लगाइकें आश्रय सिथल न करें काहेतें भग
वदीयके संगतें आश्रयकी सिद्धि वाही होत पर जो नि
वे सिथल न होय जो भगवदीयको संग होयगो. तब ही सि
आश्रय करूंगो. ऐसें न विचारें भगवदीय कृपा तो नित्य
पव मिले. तहां तांई आश्रय की रीति विना बुद्धि होय जा
य तातें मनते आश्रय न छोड़ें या भांति सिथल न होय
गो होनहार है सो होइगी जैसो देव चाहे तैसो होइगो के
हा करूं यह सिथल भाव मनमें न करें जो सतसंग अपने
मनको रोकिकें श्रीआचार्यजी के चरणकमलमें लगा
वें सो श्रीआचार्यजी विवेकधैर्याश्रय ग्रंथमें वर्णन की
ये हैं अशरणपिवतादस्यासामर्थ्यभावनात् इ
ति विवेकनात. और हतो लौकिक सुख चाहत हे भ
गवद्संबंध सेवादिकोलतें सिथल दीहें तातें मन
को सिथल कीयो भगवद्धर्मतें तब ही दूरि रहतो यह
चाहत है. तातें जद्यपि असमर्थ ही रहत अपने मन
में असुरकी भावना न करें यह जान जाय हरजेके मु
ख धर्म है यही. जो प्रभुको स्वरूप न छूटतो उपके यह
धर्म है सेवा करनी जहां स्वरूपमें भगवद्सेवामुन
नी जु स्वो भगवदना सेवै तो दरसैं आलस्य न करें तो
तत्काल नष्ट होय भगवत्संबंध जानना आनुकूल
सो कर लेहें का लौकिक समान त्रियवहार है या भांति
तातें वैराग्य निकाइ हृदाय ढूंढी है स्का भगवद्धर्म
में लगाइ सिथलता मनमें न राखें यातें निर्विसहाय

मुजीकोआश्रयकरें ३ अवश्रीरहूकहतहैं लोकमें
स्वार्क गतिकाचेत्यवं चिंतातिमर्द्धहि तो विकलेसम
वंधोहर्येगीहृतनहुर्ण ४ थया कोया थे अथवैलववैल
हृणकहतहैं तोराकअपनेप्रभुश्रीहरितिनहीगतिजा
नेयोस्त्रपाश्रयनवरें यहवैलवकोमुख्यधर्महै सोक
वजानिये जवलौकिकलोगसको संबंधहोय तवमनमें
चिंताकरिपीडितनहोय काहेतेंहरिअपनेजनको ले
किकलोगसंबंधनेकअवारको देतहैं तवयहजीकोअप
नोधर्मनछोडे हरिसरनकरें मनमेंचिंतानहोय यह
अंगीकारवैष्णवकेलहणा जैसें विठ्ठलदासश्रीगुसांई
जीकेसेवकनारायनदासकेपासचाकरीकियां तवना
रायनदासनेविठ्ठलदासकोएकपरगनेपरपठायो ते
हां [illegible] तवनारायनदासनेविठ्ठलदासको
वंदीखानेमेंदीयो नित्यमारतेसो विठ्ठलदासकीपी
ठकीखालउधरगई ऐसोदुखपायो परंतुयहनाहीकही
जोमेंवैष्णवहों पाछेंश्रीगुसांईजीपधारे तवविठ्ठलदा
सदर्शनकोंआयो तवश्रीगुसांईजीपूछेजोतेरीयहदसा
कोंहैं तवविठ्ठलदासनेकहीदेहकोदंडहै सोभुगतिवृ
टैं तवश्रीगुसांईजीनारायनदाससोंकहीजोयाभांति
मारतोभगजीवपरदयाईनाहीआई तातेंवैष्णवकोदु
रिलोसहेनहे पलिंदरिवनाथै सोश्रीआचार्यजी
महाप्रभुविवेकधैर्याश्रयग्रंथमेंआश्रयकेलह्ण
कहें जोइतनेदुखमेंहरिसरनराखे येहिकपरलोके
चसर्वथासरणंहरिः दुखहानौतथापापे भयकामाद्य
पूरणे भक्तद्रोहेभक्त्यभावेभक्तैश्चातिक्रमेकृते अशक्ये
वासुसाध्येवासर्वथासरणंहरि हत्यादिक वचनकोविचा
रिजितनो लौकिकवैदिकदेहसंबंधीदुखहोय तासें
चिंतातुरहोयनहीं एक अपनेप्रभुहीकीसरणरहे य

ह्यंगीकृतवेसवकेनलगाहैंअवश्रीओरहंकहतहैं।लौ
कौ।कोकेस्वास्थमितिश्रीमदाचार्यवचनामृतान्त
हीयस्वामिहारदेहै।तोयःकार्यस्तुतेनहि।२५।या।कौ
श्री।श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनवरत्नग्रंथमेंवच
नामृतकहेहैं।तोकिस्वास्थनथाकेहृस्तुन्कटिष्य
ति।इतिवचनात्अपनेजनहैं।तिनकोभगवान्लौ
किकवैदिकमेंस्थितिनाहींकरनदेतहाछुडायदें। नें
कअपनोहीआश्रयसिद्धिकरतहैं।तवेनदीयजोहैंभ
गवदीयसोस्वामीकिहृदयकोअभिप्रायकोचिंतनक
रतहैंजोलौकिककार्यप्रभुनाहींसिद्धकरि।तो।प्रभु
भलीकरीलौकिकसिद्धहोतेतोमेंलौकिककार्यके
आवेसमेंप्रभुकोभूलिजातोजोवैदिककार्यसिद्धहो
तोमेंवैदिककार्यकेआवेसमेंप्रभुकोभूलिजातो।ता
तेंप्रभुकरीसोवहुतभलीकरी।याभांतिस्वामीकिहृ
दयकेअभिप्रायकोमनमेंभावनाकरिकेतोषकरिम
नप्रसन्नराखें।ताकोनदीयकहिये।२६।अवश्रीरहक
हतहैं।लौ।या।थितौहि।लौकिकलौकीनान्तरःक्रिय
तोकुचित्तवाधतस्तुमकर्तव्योधयदासीनप्रसादना
त्।२७।या।श्री।अवकृपरकहेंजोश्रीठाकुरजीलौ
किकवैदिककार्यनसिद्धकरेंतहांभगवदीयमनमें
संतोषकरिलौकिकनकरें।प्रसन्नरहें।पाछेंलौकिकवै
दिककार्यनकरेंतोगृहस्थाधर्मपहकैसेचलेयामें
तकोईसंदेहकरेंतहांकहतहैंजो।लौकिकवैदिक
कार्यमेंमनलगायोतातेंप्रभुकार्यसिद्धनकीयो
सोभलीभई।अवलौकिकवैदिककार्यमेंमननाहीं
खुगोवने वाहरकृपरतेंलोगनकेदिखा
इवेकेलीयेंकछु रेतो.
हसेवासंवंधी लौ

ऐसें अपने मन कों खेंचि लेय या भांति लौकिक में रहे अ
पनो धर्म काहू कों न जतावे लौकिक वैदिक क्रिया लो
गन में जतावे या प्रकार भगवदाश्रय करे तो प्रभु
प्रसन्न रहें २६ अब बीसहू कहत हैं श्लो० दुःखदु
संगजं चान्यं लौकिकाभिनिवेशजं सत्संगाभावजं च य
त्तथा मार्गस्थितैरपि २७ या को अ० लौकिक को
आवेस करावे ऐसो जो दुःसंग तिन को संग दुःख
प जानि के वाको कछु सोक वहू न करिये यह भक्त की
टेक है जैसे प्रहलाद जी भगवद्भक्त हे सो अपने प्र
भु को स्मरण करे तहां पिता ही प्रतिबंध भयो सो प्रह
लाद कों बोहोत नहीं समझायो तब प्रहलाद ने न माने
तब उन प्रहलाद कों बहुत दुख दीयो जो तुम भगवान्
को स्मरण मति करे तब प्रहलाद अपनो मरनो अंगी
दुख सह्यो परंतु भगवदाश्रय न छोडे तब प्रभु प्र
सन्न होयके प्रहलाद की रक्षा करी हिरन्यकसप
कों मारे तेसे ही वैष्णव कों दुःसंग होय सो तो लौकि
क कार्य में लगावे ताको संग दुखरूप जानि त्याग ही
करें पन संग करे तो भगवद्धर्म में लगावे ताही को
सत्संग करें जो कदाचित् संग को अभाव होय न मिले
तो अपने पुष्टिमार्ग की रीति सेवा स्मरण न छोडे दु
संग को दुखरूप जानि सबतें न्यारो बेठे श्री आचार्य
श्रीगुसांईजी को आश्रय मन में दृढ करिके मार्ग की सि
द्धि न छोडे नित्य नेम सों सेवा स्मरण करे यह सिद्ध
की मन में राखनो २७ अब बीसहू कहत हैं श्लो०
न मत्प्रभुपादाब्जद्वयं सर्वथा मम तदीयानां
संगे न हानिर्भविष्यति २८ या को अ० ता
भु जो श्री आचार्यजी पुष्टिमार्गीय जितने जीव
शरण आये हैं तिन सबन के प्रभु श्री आचार्यजी म

प्रभुहें ऐसें श्रीमहाप्रभुजीके पदकमलकी कृपातें
सर्वथा भगवदीयको संग होय भगवत्सेवा स्मरण सब
अनिश्चावें पुष्टिमार्गको सिद्धान्त हृदयारूढ होय ता
तें श्रीमहाप्रभुजीके चरणकमलकी कृपातें तादृ
सी भगवदीयको संग होय जहां तादृसी भगवदी
यके संग होय तिनके संगतें श्रीमहाप्रभुजी (
करुणा हरि नरहें सो चोरासी वार्तामें प्रसिद्ध
हे। जब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अरव्यामें हती
हो दिखाई कासीमें तब एक वैष्णव कासीतें भग
वानदास वैष्णवके पास आयके सब समाचार क
हे तब भगवानदासने कही तोकों भ्रम भयो है श्रीमहा
प्रभुजी ऐसी कबहू न करें तब उन वैष्णवने कही मैं आप
नी आंखिनसों देखिके आवत हों तब भगवानदासने दि
ये किवाड खोलिके वैष्णवको दरसन करायो आप बै
ठे पोथी वाचत हैं तब उह वैष्णवके मनको संदेह गयो
तातें तादृसी वैष्णव तें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी दरस
न करायें नाहीं रहत हैं ऐसें भगवदीयको संग अवस्य
करें तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु हृदयमें पधारें भग
वदीयको संग ऐसो है। स्वामिचरण कहत हैं सो
क। तेदुःखेन हृतिमनः खिन्नं भवति नित्यशः। यदा प्र
भुः स्वरूपापूर्णः स्वपंथि विस्मृति हेतुतः। एवं यथा कथं
च तब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो ऐसे भगवदीय जाति
दुःखे भये मिलनमें सबको परदा तो मोकों नाहीं मिलता
तें मनमें दुःख वेदको पावत हैं सो तो मनमें दैन्यता
नाहीं आवत जो मनमें अति दैन्यता आवें तउ श्रीआ
चार्यजी महाप्रभु कृपा करें तातें मोकों भगवदीयको सं
ग नाहीं यह दुःख है तातें श्री ओर दैन्यता ना
ख नाहीं है काहे तें श्रीआचार्यजीकी शरण

टि०प०
३५

श्रीभगवदीयको संग होय तैसैंही जब श्री आचार्यजी
श्रीप्रभुकी कृपा होय तब बहुत दिन श्रवण मनन तें दैन्यता
य जैसें भगवदीयके संग तें प्रभु कृपा करि हृदया रू-
ढ होय तैसें ही श्रवण मनन तें दैन्यादिसिद्धि भये ते प्रभु हृदये
मां तें प्रसन्न होय सो श्री आचार्यजी महाप्रभु श्री
सुबोधिनीमें कहे हैं जो प्रभु प्रसन्न करिवेको एक दै-
न्यता ही परम साधन है सो त्रिविधनामावलीमें
पंचाध्यायीके प्रसंग परको नाम कहे हैं दीनहृदयप्रगल्भि
रूपायनमः सगरे साधन व्रजभक्त कीये श्रीठाकुरजी
की लीला करी गुनगान कीयें पाछें निःसाधन होय
रुदन कीयो तब श्रीठाकुरजी प्रगट भये तातें दैन्यता
बडो पदारथ है तब श्री आचार्यजी की पूर्ण कृपा हो-
य तब दैन्यता आवे अब जा प्रकार दैन्यतादि सि-
वे धर्म हृदयमें स्थापक होय सो उपाय कहे लोकमें
कहत हैं श्लो० तदाचार्यपदारविंदानुपस्था
पयिष्यति अस्माकं तु गतिनान्या श्रीकृष्णः शरणं
ममः ३ याको अर्थ अब कहत हैं यह जीव जब श्री
आचार्यजी के चरणकमलमें मनवचन करि
आसक्त होय तब दैन्यतादि सगरे धर्म हृदयमें स्था-
पन होय यह सर्वोपरि उपाय है और कोई नाहीं कारे-
तें जब जीव श्री आचार्यजी को शरणागत मनवच-
न कर्म करि श्री आचार्यजी के पदकमलको आश्रय
कीयो तब श्री आचार्यजी तो कृपानिधि हैं दैवी जीव-
न पर कृपा करनार्थ उद्धारार्थ प्रगटे हैं सो भक्तिकी सर्व
आर्तिको दूरि करेंगे सो श्री सर्वोत्तम ग्रंथमें श्रीगुसां-
ईजी श्री आचार्यजी के नाम कहे हैं स्मृतिमात्रार्तिना-
शनायनमः श्री आचार्यजी को स्मरण करनमात्र ही
सर्व आर्तिको प्रभु दूर करे तातें श्री आचार्यजी की कृपा तें

है न्यनात्र्प्रादि सगरे धर्म द्रव्य में आवै । [illegible]
कहूं साधन नाही है । एवं श्री [illegible]
ही गनि है । सो श्री गुसांईजी [illegible]
तातचरणो श्री [illegible]
न्यै से हि के पोरलो [illegible] श्री गुसांईजी [illegible]
मारे तान चरण श्री [illegible]
[illegible]

प॰ जीकहतहैं जो श्रीकृष्णके दोयस्वरूपहैं क्रियात्मकभा
वात्मकस्वरूप मथुरातेवसुदेवजीलेआये सोक्रिया
त्मकस्वरूप औरश्रीयसोदाजीकेघरप्रगटे सोभावात्म
क सोभावात्मकश्रीकृष्णकीदोयलीला बाललील
औरकिसोरलीलाबाललीलाश्रीगोकुलमेंकिसो
रलीलाश्रीवृंदावनमें तातेंबाललीलाकेभावसे
सेवाकरैं किसोरलीलाकेभावकोस्मरणकरेंसो
श्रीगुसांईजीकहतहैं स्लोक सदासर्वात्मनासेव्यो
भगवान्गोकुलेश्वरः स्मर्त्तव्योगोपिकावृन्दैःक्रीडन
वृंदावने स्थितः इत्यादिवचनकेअनुसारबाल
लीलाश्रीनवनीतप्रियाजीकेस्वरूपमें रासादि
लीलाश्रीगोवर्द्धननाथजीकेस्वरूपसो सोविप्र
योगात्मकस्वरूपश्रीस्वामिनीजीकेहृदयमेंर
तहैं सोजवश्रीस्वामिनीजीकिभावहैं तिनकीभाव
नाकरें जो श्रीस्वामिनीजीप्रभुकोंकोनभांतिलडा
वतहैं कोनभांतिगुनगानकरतहैं प्रभुकेसंगको
नभांतिलीलाकरतहैं यहभावनाकरतेश्रीस्वा
मिनीजीकृपानिधिहैं प्रसन्नहोयभावकोदानक
रै तबभावात्मकप्रभुकोअनुभवहोय औरउपाय
नाही काहेतेंश्रीकृष्णकेहृदयदेसमेंश्रीस्वामि
नीहीस्थितहैं औरकछुश्रीस्वामिनीविनाश्रीकृ
ष्णजानतहीनाहीं तातेंश्रीस्वामिनीजीकोआ
श्रयकरश्रीस्वामिनीजीविरहकरतहैं तिनकीभाव
नाभावात्मकहरिकीकरे तबश्रीस्वामिनीजीकृपाक
रैं प्रसन्नहोय तबप्रभुआपनोअनुभवजतावें १
अबयोरहृकहतहैं श्लो॰ अस्माकंमतिभागेप
नतद्दास्यवोन्हिरुद्धगोः चेतसीतल्लनावोस्मिन्मा
र्गेनैवोपयुज्यते २ या॰ अ॰ यहविप्रयोगभाव

तावाग्नि मे आपमें तो नाहीं हैं। काहेतें। यह भावात्मक
ग्नि तो दास्यधर्म दैन्यता होय। तिनके हृदय में होय
सो दास्यधर्म दुःख आर्ति करि दीन महादुःख भये हैं। और दैन्य
ता आर्ति दुःख ने भये हैं। सो कहत हैं। श्री स्वामिनी जी को सु
ख चाहे। आपनो सुख न चाहे। सो दास। जैसें परमना
मदासकी वार्तामें है। जो श्री आचार्यजी महाप्रभुजी मो
न नको पधारे। तो नाहीं समय व्योपारीको द्रव्य गयो हतो
लोंचायो। तब परमनामदास व्योपारीको बोलन नाहीं
ही। श्री आचार्यजी को अमन करि वेदी दे। ऐसे सो दास्य
धर्म के दिन हैं। और दैन्य को प्रकार रासपंचाध्याई में प
सिद्धि के हैं। अंतरधान समय भगवान ने श्रीकृष्णकी
लीला हवीयो। पुन भांन कीयो। तापीछें निःसाधन
दैन्यता की योग्यता भई। सो मेरमें दास धर्म नाहीं है
और निःसाधनता दैन्यता नाहीं है। तातें भावाग्नि
तिरहे भये हैं। और यह श्री आचार्यजी के पुष्टिमार्ग है
तामें तापहीं न हें। तो सीतल भाव करवे न करनी
जैसें कुंभनदासजी एक रसनके विरहसें कितेदिन
के आरति विनु देखे। या भांति आतुरता होय। तब उ
मार्गके भावको अनुभव होय। २। स्वक और के
तहें। श्लोक। ताप भाव पर हैं तो प्रकाश। सवेरो
दैन्येन स्ययादीन वेधुः प्रादुर्भवत्यसौ। अथा
पै॥ अबजा प्रकार दैन्यता होय। सो उपाय के
पहले तो हृदयमें ताप होय। तो सगरो जन्म वी
पुष्टिमार्गमें साक्षात पुरुषोत्तम विराजत हैं ति
अनुभव कछु न भयो। मेरेमें कछु धर्म नाहीं।
अनुविषयके ताप हृदयमें होय। सो ताप स
ताको इ रिकर नाहीं। काहेतें। अनेक जन्मके प
...नेक मानसिक हृदयमें भरि रह्यो है।

क्रोधमदमछरता करि हृदयमलीन जीवकोहै सो ज
वतापात्रिप्रगटहोय तबसगरे दोषनकोनासहोय
तापीछे दैन्यता आवे काहेते दैन्यता मुख्यधर्महै सो
सुदृढ़ स्थहोय तब दैन्यता आवे तब देहकी और
हिंसाहोयजाय खानपानदेहसंबंधी सुखसब छूटि
जाय याभांति हृदयमें प्रभुको प्रकाश होय काहेते
हीनबंधु यह श्रीठाकुरजीको नाम है सो जीवको
दैन्यताहोय तब प्रभुको दया आवे सो श्रीभाग
वतमें ठौर ठौर निरूपण है द्रौपदीको दैन्य भयो
तब प्रभु कौरलाज राखे गजेंद्रको दैन्यता भई तब
प्रभु पधारे रासपंचाध्यायीमें भक्तनको दैन्यता जब
भई याभांति इति गोप्यः प्रगायंत्यः प्रलपंत्यश्च चित्र
धा रुरुदुः सुस्वरं राजन् कृष्णदर्शनलालसाः
याभावकी सिद्ध भई तापीछे तासामाविरभूच्छौरि
स्मयमानमुखांबुजः पीतांबरधरः स्रग्वी साक्षा
न्मन्मथमन्मथः याभांति प्रभु पधारे तातें अभि
मान अहंकारते प्रभु दूरि हैं और दैन्यता प्रगट है
तातें दैन्यता होय ताके हृदयमें प्रभु प्रगट होय
अपने आनंदको अनुभव सर्वथा करावे प्रथम
तापहोय तापीछे दैन्य होय तहां कोई कहे दैन्य
ताकोनेभांति होय सो उपाय आगे श्लोकमें कहत हैं
२ श्लो तद्दैन्यं स्यात् स्वामिनीनां तापभावबि
भावनात् तद्भावनं भवेदेवं नाम्नाम् चरणाश्रया
त् ४ या अब दैन्यतासिद्धि तो श्रीस्वा
मिनीजीहैं श्रीस्वामिनीजी जब कृपाकरें तब ता
पभावकी भावना होय तापभावकी भावना हू व्र
जभक्तनकी रीति सो करनी सेवाके संयोगमें व्रज
नी सेवा सो पोहो चित्र नो सरमें पहरी तिसो करनी

ग्रे।अपनेमनकीकल्पनासोंविप्रयोगकीभाव
नाकरनी।श्रीस्वामिनीजीकेचरणकमलकोआ
श्रयकरिजाप्रकारश्रीस्वामिनीजीविप्रयोगकीभा
वनाकरतहैं।वेएणीगनग्रगलगीनमेंभावकोवरन
नहैं।ताभावकीभावनाकरेंश्रीस्वामिनीजीकोस्व
रूपज्ञानपात्मकजानें।याभांतिश्रीस्वामिनीजीकेभा
वकीभावनाकरें।श्रीस्वामिनीजीकेचरणकोआश्रय
केसैंसिद्धहोयसोआगेंश्लोकमेंकहतहैं।श्लोक।।
तदाश्रयस्यसिद्धिस्तुतद्भावज्ञपरिनिष्ठया:।तन्निष्ठा
मननेनाड्कंतदीयजनसेवया।।४।।याकोअर्थ।श्री
स्वामिनीजीकेचरणकमलकोआश्रययाभांतिकरै
श्रीस्वामिनीजीकेभावरूपश्रीआचार्यजीहैं।तातेंश्री
आचार्यजीकेचरणकमलहैं।सोश्रीस्वामिनीजीकेजा
नने।याभावसोंश्रीआचार्यजीकेचरणकमलकोआ
श्रयकरनो।ताकरिभावरूपविप्रयोगकोज्ञानहोइ
गो।सोश्रीआचार्यजीकेचरणकमलकोआश्रय
कबहोय।जबश्रीआचार्यजीकेवचनामृतश्रीसु
बोधिनीजीआदिछोटेबडेग्रंथकोभावनामेंनिष्ठा
होय।तबश्रीआचार्यजीकेस्वरूपकोज्ञानहोय
तापीछेंश्रीआचार्यजीकेचरणकमलमेंभावहोय
तबचरनकमलकोआश्रयहोय।सोश्रीआचार्य
जीकेवचनामृतग्रंथसेंनिष्ठानहोय।जबपुष्टिमा
र्गीयभगवदीयकीसेवाकरिये।भगवदीयकृपाक
रिकेंबतावें।तबहीजान्योजाय।तातेंभगवदीय
कीसेवाआवश्यकहीमनक्रमवचनकरिकर्तव्य
हैं।तिनकीकृपातेंसर्वसिद्धहोइगो।।४।।अबचार
हकहें।श्लोक।।तदीयदुर्लभोभावस्तुश्रीभागव
सेवने।अथवादैन्यभावेनकर्तव्य

ईसमाधानेप्रथमपरकहेहैभगवदीयकीसेवातेसिद्धिहोय
सोपुष्टिमारगीयभगवदीयअतिहीदुर्लभहै॥ सोजहां
ताईपुष्टिमारगीयभगवदीयनमिलें तहांताईनित्यश्री
भागवतश्रीसुबोधनीजीकौंसेवननित्यनेमकरि
केंयोंसुन्योकरें॥ तबभगवदीयमिलेगो॥ तबसगरोमे
वदेनावेगो॥ तहांताईआपहीश्रीभागवतवाचें॥ जो
श्रीभागवतश्रीसुबोधनीजीमेंअभ्यासनहोय॥ सो
ननहोय तोदैन्यहोइकेंनिरंतरहरिजोभगवानस
र्वदुःखकेहर्तातिनकोस्मरणकरें॥ निरंतरदैन्यभाव
सोंजबहरिकोस्मरणजीवकरेगो॥ तबश्रीठाकुरजीदु
खनाहीसहिसकेंगेकृपाकरिपुष्टिमारगीयभगवदीय
कोसंगमिलावेंगे॥ तिनकेसंगतेंसर्वकार्यसिद्धहोइगो
ई॥ अबआगेकहतहैं॥ श्लो॥ अष्टाक्षरमहामंत्रोव
क्तव्यः इतिनिश्चयः॥ सर्वदासर्वभावेनतेनसर्वंभवि
ष्यति॥ ७॥ पा॥ अबश्रीहरिरायजीकहतहैंजो
जीवतोस्वभावकरिदुष्टहैजोकछुनबनिआवेतोअष्टा
क्षरकोमहात्म्यनजानि अष्टप्रहरश्रीकृष्णःशरणंमम॥
यहकह्योकरें काहेतेंयहश्रीआचार्यजीमहाप्रभुवेद
पुराणशास्त्रश्रीभागवतमेंतेंसाररसनिश्चयकरिप्र
गटकरीहै सोआपनेदैवीजीवनकेअर्थ॥ तातेंसर्वका
लमेंअष्टाक्षरकोजपकबहूंभूलेंनांही॥ सर्वभावकरि
अष्टाक्षरकोजपजोकरेगो॥ तिनकेसर्वकार्यनिश्चय
सिद्धहोइगो॥ ७॥ अबआगेकहतहैं॥ श्लो॥ ८॥ अस्माकं
न्यूनतोयासीन्मिलतेयदिभूतले॥ एतावतीहरेः
कृपाःपूर्णाप्यातितामपि॥ ८॥ या॥ श्लो॥ अबयाकोअर्थक
रकहैतानेभावात्मविप्रयोगात्मकप्रभुअंसेदुर्लभहैं
तातेंजीवआपनेकोंन्यूनतातुच्छमाने याभांतिप्रभु
केमिलिवेकोजतनकरें तबश्रीहरिसर्वदुःखकेहर्ता

हरिहैं। सोसगरो मनोरथपूरणकरेगो। सोजीवतोस
मादकरिदुष्टहीहैं। परंतु अपनपेकों उत्तम अज्ञान
करिकैं मानतहैं। ताहीतें प्रभु अपनो अनुभवनाहींजु
नावतकाहेतें श्रीभागवतमें पिंगलासारिखीजाकों
महादुःखकियेसो अपनपेकों तुच्छमान्यो याभांतिपिं
गलावचन। संसारकूपेपतितं विषयैर्मुषितेक्षणं
ग्रस्तंकालाहिनात्मानंकोन्यस्त्रातुमधीश्वरः। याभां
तिअपनोदोषस्फुर्यो। तबन्यूनभावहोय प्रभुकी
प्रार्थनाकरी। तबप्रभुकृपाहीकरी तैसेंहीपुरुरवा
कीकथाश्रीभागवतमेंकहीहैं पीछेंअपनोदोष
स्फुर्यो। श्लोक॥ पुरूरवाप्यपिकृतेचित्तेकोन्योमोह
पितुरस्यआत्मारामेश्वरमृतेभगवंतमधोक्षजं॥
याकेअर्थ॥ याप्रकारजबअपनोदोषपुरूरवा
कोस्फुर्यो। तबप्रभुकृपाकरी। सोयहजीवजबश्री
आचार्यजीकेशरणआयोहै। यहतोहैदैन्यमार्गीहै
यामार्गमेंजहांताईंदैन्यनआवै। तहांताईंफलसिद्धि
नाहींहैं सोअपनेकोउत्तमजानैं तहांताईंदैन्यनआ
वै। तातेंअपनेकोन्यूनतुच्छजानिकें प्रभुकेमिलिवेकों
जतनकरैतोप्रभुदुःखकोनाशहीकरैं। हरिस्त्वेंदुःख
केहर्ता। औरसर्वथासबप्रकारमनोरथनिश्चयपूर्णकर
गे। याअर्थकेओरहूकहतहैं। श्लोक। भगवद्भिर्नवक्त
व्यंतोभीमनसिसर्वथा। अस्मिन्मार्गेतथैवास्तिनये
वफलसंनिधिः। याकोअर्थ। अपनेकोन्यूनतुच्छमा
नें औरलोभसहितमनमेंभावसोसर्वथाकरैं। सोश्री
गुसांईजीविज्ञप्तिमेंकहेहैं। त्वद्दर्शनविहीनस्यत्वदीय
स्यतुजीवनं अप्रिमेवयथानाथदुर्भाग्यानवेदयः
श्रीगुसांईजीकहतहैं जोहेनाथतुमारेदर्शनबिना
जोकोईतुमारेचरणसेहायजीवतहैं। सोव्यर्थपुष्टि

मारगीय वैस्नव तुमारे के हाथ। और तुमारे दर्शन बिना
जो जीवत हैं। सो वृथा जीवत हैं वे वडे अभागे हैं। याभां
ति अपने को महा अभागी सबै साधन करी हीन महा दु
ष्ट जानि मन में लोभ करें हा नाथ अब मेरी कौन दसा
होइगी महाप्रभुजी द्वारा तुमारे सरन आयो हूं मोमें
को धर्म नाहीं या भांति नित्य करें। सर्वथा बारंबार वि
हकार उद्वे उसास लेइ। काहेते यह श्री आचार्यजी म
हाप्रभु के पुष्टि मार्ग में जाके हृदय में जितनी आर्ति ति
तनो ही फलसिद्ध जाकों अत्यंत विरह ताकों तत्का
ल सिद्ध। जाकों विरह नाहीं। ताको फलसिद्धि की ढील
जाको थोरो विरह ताको थोरो फल। या भांति विप्रयो
ग की जाको जैसी आर्ति तिनको तैसी फलसिद्धि जै
से रास लीला में जैसी जाको भाव तैसो है ताको रसदान
वृन्दादि पशु पक्षी व्रज भक्त अपने भाव अनुसार अनु
भव तैसें ही पुष्टि मार्गीय वैस्नव कों जैसी आर्ति तैसी
ही फल श्री कृष्ण रसकों अनुभव करावे ९ अब और दू
सरे नरै। श्लोक। यथा कार्य चिंतक तेप्यो विवहारोहि
लौकिकी। अपकीर्तिभयात्तेन बुद्धिशैथिल्यसंभवात्
१० याको अर्थ। अब श्री हरिरायजी कहत हैं जो वि
प्रयोग आर्ति को स्मरण तब होय। जब लौकिक वै
दिक कार्य छूटे। सो संसार में रहिके सबकुछ चाहिए
जो लौकिक वैदिक कार्य छोडें तो लोक में लोक में अ
पकीर्ति होय। लोग बुरो कहैं। तब अपने मन में लोभ हो
य क्रोध नाम सहे है तो बुद्धि अपने मार्ग में सिथि
ल होय जाय। ताते लौकिक नकी अपकीर्ति की भयतें
वस्तु थोरो सो लौकिक वैदिक कार्य करै। जा में अपनो ध
र्म रह्यो परहे मन श्री ठाकुरजी में मन लगावे होय
चार घरी बारे यह सिद्धान्त भयो १०३ श्री ॥ ३

हलन सिद्दा पत्र नाकी टीका श्रीगोपेश्वरजी हृत
से रागे ।५। अब कहा परस्कर्ते ताप भाव मन में राखे तिस
णाहे दुःख है याते जिनकी होय तेसे ही फलको अ
नुभव होय तामे लौकिक जो सबाधक है लौकिक
खमें या भांति ज्ञान राखे तो दुःख न होय भगवद्धर्म
है सो अब कहत हैं श्लोक ॥ सदायत्र लोढा तनुजो द्वि
भुजः सुदुर्वृत्या ॥ समो जास्या स्वबहनान्त स्मये नाम
वेवसज ॥२॥ याको अर्थ ॥ अब श्री हरिरायजी कहत हैं
जो संसार के दुःख लौकिक मन में दृढ़ पावे तो प्रभु वा
लक हैं श्री यसोदाजी के पुत्र हैं द्विभुज और दन
छोटे छोटे हैं मुखारविंद में नेत्र श्रवन हैं ऐसे श्री छल
को स्मरण करनो है और श्री छल बडे हैं जिनको श्री
र्यवंस जो सबते ऊँचो यदुवंस जो चंद्रवंस सबते श्रेष्ठ
तथा वल्लभकुल सबते श्रेष्ठ पृथ्वी पर तीन कुल श्रेष्ठ प्र
सिद्ध हैं और अवतार अनेक हैं तिनमें तीन श्रेष्ठ त्रेता
में दसरथजी के घर श्री रामचंद्रजी तिनको रघुकुल
द्वापर में श्री कृष्ण सो यदुकुल कलियुग में श्री आचा
र्यजी ते वल्लभकुल ए सब में श्रेष्ठ वल्लभ नाम अर्थ है
है तातें हमारो ऊँ वंस में श्री कृष्ण ही बाल भाव सों सेव
नीय हैं तहां लौकिक लोक जो मन में कछु होय तो श्री
ठाकुरजी अप्रसन्न होय जाय तो आपनो धर्म जात है
तातें श्री छल्ल प्रसन्न रहें सोई कर्तव्य है ॥१॥ श्लोक ॥ अ
हंभ्यां समाचारान् श्रुतानु विभाव्य चिन्तां लिखने
किंचित्समाधानाय चेतस ॥२॥ याको अर्थ ॥ अब श्री ह
रिरायजी के छोटे भाई श्री गोपेश्वरजी तिनकी बहुत दीन
गोपेश्वरजी के अनुकूल हती ॥ सो ऊपर वर्णन करे है न
हीं अर्थ श्री हरिरायजी सिक्षापत्र लिखे है सो अब श्री
हरिरायजी भाई श्री गोपेश्वरजी को समाधान होय त

सि॰ प॰ भांतिलिखतहै जो तुमारेग्रहमेंगाको समा
४० ने सो सुनत हीत्र सो दुखभयो मानो हमारे
सघो रिकैपस्यो श्रे सो बुरो लागयो सो दुःख
खे तुमारे मनमे दुखहै तद्र्थ हमकछु सास्त्र
नपत्रलिखतहै तिनको बाचिकै हृदयमे
दे चिंतको समाधांनकरियो काहेतें यासम
तुमारेपास होते तो आछो सो भगवदइछा तो
मनमेदुखजितनो भयो सो पत्रमेकहांतांई
मानो विधहीघोरदीयो यामेंजो लिली जो
सो दुःखमें जब आपने पुष्टिमारगीय धर्मको स
होय तब जानिये जो श्री आचार्यजीकी पृष्टि
हम समाधांनलिखतहैं जो भगवदइछाको ग्र
रनो आपने मूलधर्महृदयमें प्रभुको स्मरण प्रभु
वे सो जा प्रकार मनते बाहर न जाय सो करनो है
तबाचिकै चिंतको समाधांनकरीयो यापत्रमे
कछूक कारनयों भगवदधर्मस्वरूप है जो
सो पुष्टिमारगीय है भगवदइछाविचार सो सर्व
नहि तातें आपनो चित्त न लगाय पत्र बांचि चितको स
धांनकरियो २ श्लो॰ सर्वेश्वरश्च सर्वज्ञः स्वेच्छः स
रूपः स्वल्पः स समर्थो ज्ञानमनो जीवइत्येव निश्च
इयार्थ भगवत्स्वरूपकहतहैं औरजीवको
रूपकहतहैं सो याते जो प्रभुकी इच्छाको जीवके मे
जाने श्रीहरिहैं सो सर्व पर ईश्वर के ईश्वर हैं ईश्वरया
कहेतो मन आवे सो करें कोई ब्रह्मादिक शिवादिक
इच्छाविक कोई श्रीहरिकी आगयाको टारवेको सामर्थ
नाही हे अजामिलके साखिको एक पुत्र के भावना
यत नाममें निश्चयकरिदीयो ऐसे सर्वकरणसामर्थ है
तातें सर्वेश्वर श्रीहरिहै औरते जीवके मनके दुख

जाननहैं।त्याकोटानकोटिब्रह्मांडमेंसर्वत्र।एकश्रीठा
कुरहीसर्वकर्ताहैं।फेरजाननहैं।इननेकछुसृष्टिप्योना
हीहै।औरकरणावंतहो।ऐसेईश्वरहो।सोकाहूकेदुःखसु
खकेसेजानतहोइंगे।सोनाहीं।परमकरुणाकेनिधिहें
अपनेभक्तकोरंचकहूदुःखनाहीसहिसकत।ऐसेअक्षरब्र
ह्ममेंहें।अबजीवकोस्वरूपकहतहें।जीवकेसोईश्वरस
मर्थहें।यहजीवकोकीयोकछुनाहीहोनहें।यहअपनो
कर्ममानतहें।सोसगरोअज्ञानहीजाननो।अपनेप्रभु
कोभूलोहें।मायाकरिकेमोहितहें।हृदयमेंज्ञानशून्य
हें।तातेंअपनोसामर्थ्यजाननहें।सोअननाहीहें।अज्ञा
नीहें।सोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुबालबोधमेंकहेहें।जो
जीवस्वभावकरिदुष्टहें।यहानिश्चयहें।प्रभुगुननिधिहें
जीवदोषनिधिहें।यहनिश्चयमनमेंजाननो।३।अब
औरहूकहतहें।सोकालतस्पष्टतात्रिविधालोकेमूलवे
हृस्वनेदतामूलेछयाग्रहीनानानायाकरनेफ
लभृयाकोयथा।औरश्रीठाकुरजीकीइच्छातीनप्रका
रकीहें।एकप्रवाहीसृष्टिकोहोकिवेकाजपुष्टिसृष्टि
कोभगवत्सेवामर्यादासृष्टिकोदशमसगमेंस्वतंत्र
याभांतिप्रभुकीइच्छातीनप्रकारकीहें।१।मूल।२।वे
द।३।तातेंयहश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकेसंबंधीह
तिहें।सोपुष्टिमार्गीयहें।तिनकोतो।निश्चयभगवा
नकोमनइच्छाहें।सोईग्रहणकर्तव्यहें।जोकार्यहोय
सोएकप्रभुहीकीयो।वहीहोतहें।इनमेंराख्योचहि
ये।औरकर्ममार्गीयहें।सोयाभांतिकहतहें।जेसोक
र्मकरेगो।तेसोफलपावेगो।येएककर्महीकोफलक
हतहें।अबहीमायाकरिजानतहें।जोमायाहीसगरे
कार्यकरतहें।।

वेक तो प्रभु है या भांति जान्यो चहिये अन्यथा और फ
लको न जानन्नो तो कर्म करि फल होइगो कोई साधन
करि फल की सिद्ध होइगी सो सर्वथा और भांति फल के
चिंतन न करनो अब तीन प्रकार की सृष्टि तीन प्रका
की भगवद् इच्छा मानत हैं सो आगें श्लोक में कहत हैं ॥
प्रवाहस्य स्वरूप [illegible] नियत स्तेषु क्लेशस्तव विचारितः मर्या
दया अहीनांसु प्रवर्तेयति कर्म [illegible] ॥ अथ प्रवा
ही सृष्टि सो लिख्यो ही विचार राख्यो है काहेते प्रवाही सृष्टि
के जीव न्यारे हैं देह न्यारी तैसें ही क्रिया हू न्यारी है सो पु
ष्टि प्रवाह मर्यादा ग्रंथ में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे
हैं जीव देह कृतीनां च भिन्नत्वं नित्यता श्रुते रिति
वाक्यात् ताते प्रवाही सदा भ्रमही में है भक्ति मार्ग में
कबहू आवे नाहीं और मर्यादा को ग्रहण करत हैं सो
जीव कर्म में प्रवर्तत हैं काहेतें वरन्न करि आर्ट है न च
सा वेद मार्गी है इति वाक्यात् या भांति वेद में कहे हैं आ
दृष्ट यत्न में सर्व तन मन [illegible] ने क साधन सो फल
मुख्य वता गो है सह ज्ञान मर्यादी को नाहीं है जो आठ
कर्म करें तो स्वर्ग लोक में जात हैं तहां सुख भोग के जब
पुण्य क्षीण होत हैं तब फेर यह संसार में गिरत हैं प्रभु
की प्राप्ति नाहीं है सो कर्म मार्गीय स्वर्गादी को फल जान
त हैं या भांति मर्यादा सृष्टि वेद इच्छा मानत हैं या भांति
प्रवाही और मर्यादी सृष्टि को प्रकार कहे हैं अब पुष्टि
सृष्टि को वर्णन करत हैं सो आगें श्लोक में कहत हैं ॥ श्री
कृ स्वरूपेण [illegible] नानां तु स्वतः सर्व करोति हि । न हि तेषां
हिया पद्म पो तु: सर्व तो हि मुखं यथा [illegible] जो पुष्टि
सृष्टि केवल भगवद् रूप को [illegible] करो ना है ते
भगवत्स्वरूप की सेवार्थ पुष्टि सृष्टि करी है भगवान
भगवद्रूप सेवार्थं तत्सृष्टि नान्यथा भवेत् इति वच

नान तातें पुष्टिसृष्टि यह मनमें विचारें जो प्रभु अपने स्वरूपबलतें स्वतः आपुही करेगो यह चिंता नाही करनेयोग्य है। काहेतें प्रभु तो सर्वव्यापक हैं सर्वठौर प्रभु ही हैं तहां चिंता काहेकी करनी श्रीकृष्णही को कीयो सर्वठौर होत है और श्रीकृष्ण केसे हैं कृपालु हैं अपने भक्तनपर सदा कृपाही करत आए हैं और कृपा करेंगे या भांति प्रभुको चिंतन करनो और श्रीकृष्ण केसे हैं विभु हैं सर्वसामर्थ्ययुक्त हैं काहूको दियो ऐश्वर्य नाही है ब्रह्मादिक शिवादिक इन्द्रादि देवता हैं तिनको भगवान ऐश्वर्य दियो है तातें देवता फलदायी यो चाहे तो प्रभुकी आज्ञा पालें तब होय स्वतःसामर्थ्य देवतामें नाही है तैसे श्रीकृष्ण नाही हैं आपुही सर्वसामर्थ्ययुक्त हैं सो श्रीगुसांईजी विद्वन्मंडनमें कहे हैं। कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ ईश्वर सामर्थ्यं यस्य स्वरूपबलात् न तु परतः इति वचनात् या भांति कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं प्रभु सर्वसमर्थ हैं तातें कछु वैदिक लौकिक कछु अपने को चिंता नाही करनेयोग्य है प्रभु आपुही तें सर्व करेंगे प्रभु सर्वसामर्थ्ययुक्त हैं ६ अब आगें कहत हैं। श्लोक ॥ निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः सर्वेश्वरश्च सर्वात्मा निजेच्छातः करिष्यति ॥ ७॥ और श्रीकृष्ण निवेदन तोहे ताके निवेदनको अपने स्वकीयनको अवश्य निश्चय ही करनो काहेतें करनो निश्चित है तहांको पूर्वपक्ष करे जो भगवान तो समर्थ ही हैं सब प्राणीमात्र पर दया सो दृष्टि है भगवान विश्वंभर सबके भरनपोषण करत हैं सो तुम कहो अपने स्वकीयपर कृपा करेंगे सो और परनको रहो या भांति कोई संदेह करें तहां कहत हैं जो सगरे जगत को प्रभु आनंद देत हैं तासे भक्तनको अधिक आनंद दान करत हैं सो निरोधलक्षनमें श्रीआचार्यजी

सिद्धप्र॰
५२—

महा प्रभुकहे हैं सर्वोनेंइमयस्यापिहृपाने
सर्वेको आनंद हात हैं रूपानें स्तु हो भहे हू
जन ही में हैं सो श्री भागवत में नक्ष स्वेष
हूवे सो प्राति कहे हैं श्लोक ॥ अहं भक्तपरा
धीनोह्यस्वतंत्र इव द्विज ॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्त
इति वचनात् भगवान भक्तन के वस हैं ग्राम
नाहीं भक्तन के अर्थ अवतार प्रभु लेत हैं त
स्वकीयको अनिष्ट वेगिही दूरि करें स कस्मा
यह जीवको स्वभाव है जो देह दुःख क्लेश में
ही रहता चिंतातुर होत है सो यह स्वभाव निव
वे सर्व प्रभुही समर्थ हैं और दूसरो कोइ न
हिं ब्रह्मादिक ईश्वर नहीं है सो अनिष्ट में वसव
लो दूरि करतहिं इहां निष्ठ विवेको हि जीव बु
जो यत्न करे याते आश्रय भाग है अनष्ट को प्रभु
है ताते प्रभु सर्वज्ञ हैं दूरि करि वेमें वलवत हैं
आपुही दूरि करेंगे जैसे प्रह्लादजीको हरणाकुस
गड दुख दीयो ताते हरि प्रथमनाहीं जानत
ते परंतु भक्तनको परीक्षा लेनार्थ प्रभु प्रथम नाहीं
है जब प्रह्लादजी को बहुत दुख हुए तब ही हिरण्यकश्यप
दीयो और प्रह्लादको भगवद् आश्रय छूट्यो नाहीं
तब प्रभु प्रगट होय के अनिष्ट दूरि कीयो हिरण्यकस्यप
को मारे ताते हूं सर्व भाव सो भगवद् आश्रय भक्तन को
नहीं छोड़नो चाहिये और प्रभु गोविंद जो पाके हो ही गये
दूरि करेंगे परंतु जीव बुद्धि ते इष्ट अनिष्ट को विवेक जा
नो नाहीं जाने हैं ताते भगवद्भक्त होइ के अन्याश्रय
करत है लौकिक वैदिक चिंता करत है भगवान तो जो
करत है सो भलो ही करत है मेरे भाग्य तो वहुत हैं सो
प्रभु धारी ही मेंनिवेदन करें सो पर प्रभु आपुनी

ोयहहैडंभयो॥ याभांतिधीरजजीवबुद्धितेंनाहीरहतहैं तातें
दुखपावतहैं॥ अबकोरहैकहतहैं॥ श्लोक॥ इन्द्रियाग्र
हीतानांमनूनांभ्रमसंभ्रमात् अतएवहिसंसारमन्यंते
सुखरूपीणां॥ टीका॥ अथ अबजीवप्रभुकेस्वरूपकोजा
निवेमेंसामर्थनाहीहैं काहेतें अविद्यारूपभ्रमसेआरसे
रीइतनोहीहैं ताभ्रमकोजीवपरिनाहीसकत जद्यपिस
वेजाननहैं जोकामनाकअनुसारहैसबहीपदारथसबमा
ते न्यारोहै ... कालकाहूकोछोड्योनाहीयह
जानहैं मनमेंआवतहै परंतुतऊअहंताममताजीवकी
नाहीछूटतहै कामक्रोधमदमछूतानातेलोकिकदुखसुख
परीचिंताग्रसितरहतहैं तातेंसंसारकोसुखरूपमानिरह्यो
धीजासुखरूपनाहीकेसुखरूपमानिरह्योहैतऊअव
संसारतछोडावेहीगो॥ सोकोनप्रकारसोंआगेकोड
मेंकहतहैं॥ टीका॥ वासनाइन्द्रकरप्रासंसमाकोड
चित्तपिनेसमस्तानिश्चयस्तनिवनेयतनवलानाए
कोग्रंथ॥ जद्यपिजीवसंसारकोसुखरूपमानिरह्यो
नहाप्रभुअपनेभक्तजनकोयाभांतिछुड़ावत
इच्छमेंमनहोयतोद्रव्यकोनासकरैं जोकाहूमेंमनहोइतो
नहोयतोस्त्रीकोनासकरैं जोकुटुंबमेंमनजहांलोकि
कोनासकरें॥ याभांतिभक्तकोमनजहांलगिलावैतहांते
गोसोप्रभुहरिकरतहैं जबयहजीवस्वभावतें
भांतिकिदुखपावतहैं॥ परंतुप्रभुइतनाहैं
किकदृष्टांतकहतहैं॥ जेसेंघरतानेवालेहैं
स्वबकेलीएसर्पकोएकखिकोदोरततहैंयह
जाननजोयहकालहैकाटेगो॥

परंतु प्रभु को सनेह भक्त पर है कृपा करि संसार तें छोडावतो
है। तातें संसार सुख में लागन नाहिं देत ॥ २ ॥ अब और दृ
ष्टांत है श्लो ॥ यथा कृडंति बालानां माता संसारि
णस्तथा ॥ ऐ नष्टवहि सर्वेश [illegible] रमोचक ॥ १ ॥ या
को अर्थ या ॥ पिता सनेह करि सपेते निवर्त करत हैं। तब बाल
क क्रीडा ते न करि रुदन करत हैं जो मेरो खिलोना लेन
नाहीं देत तैसें ही यह संसारी जीव परब्रह्मु अपनी परम
कृपा करी संसार में मन है ता ही वस्तु को हरि लेत है तब
यह मन में चाहे ताम्भुमता करि दुख पावत है प्रभु को गु
ण अर्थ ता न करि के नाहीं मानत जो प्रभु कृपा करी संसा
र तें छुडायो और प्रभु ता सर्वेश है। श्री हरि अपने भक्त के
अवगत जानि संसार सों वचन करत है जैसें पुराणान में
कथा है जो नारदजी को मन व्याह करिवे को भयो सो एक
राजा की बेटी को स्वयंवर हतो तहां सगरे देस देस के
राजा आए सो नारद के मन में भयो जो मैं व्याहूं तब नार
द विचार्यो जो राजा की बेटी जा पर प्रसन्न होय माल
पहरावे ता सों व्याह होइगो सो पारसमय तो सुंदर रूप
चाहिये जो राजा की बेटी रीझे तातें सबन सुंदर भग
वान हैं उनको रूप लाऊं तब नारदजी भगवान पास आ
ए प्रभु बहुत समाधान करि के पूछे जो नारदजी कहो
कैसें तुम आए हो मेरो भलो हो ऐसो करियो अपनो रू
प देहु तो राजा की बेटी व्याहि लाऊं तब प्रभु मुसिकाय
के कह्यो जो तुमारो भलो होइगो सो मैं करूंगो तुम
जाऊ मैं दीयो तब नारद ने माया के भ्रम ते प्रभु के व
चन समुझे नाहीं तहां स्वयंवर हतो तहां आ
ये सो श्री ठाकुरजी ने मर्कट को बहुत बुरो दयो मुख
दीयो और नारदजी जाने जो मैं भगवान को रूप पायो
सो बारंबार जहां तहां कन्या जाय ता सन्मुख आय बै

हे मारे ओपा हस जो कहें टेटो मुखको रिझायो सो नार
दको ज्ञान नारी को भवसों पूछे प्रभु राजाको रूपक
रि याको न्याने माला पहराई तब प्रभु ले गये तब ना
रद निरास भये तब याको नें कही नारद जी अपनो मुख
तो देखो सो नारद जी दर्पन में मुख देखो सो वानर को
देखो तब बहुत क्रोध भगवान पर कीयो जो मेरी हां
सी जगत में कराई पाछे प्रभु समझायो तब ज्ञान नार
दजी को भयो अथ मन नारद जी तपस्या करत हते सो काम
देव तपस्या में भंग करिवे को सहाय सहित गयो सो
नारद जी को मोहन भयो कामदेव हार मानि के फिर ग
यो सो अभिमान प्रभु नारद को याभांति दूरि कीयो
याभांति प्रभु अपने भक्तन को संसारते बलात्कार
छोडावत हैं ऐसे श्री कृष्ण हैं ॥१॥ अब और हू कहत
हैं श्लोक ॥ इत्येवं कृष्यते नाम नथा विध मितः अभी
संसार वैरी धरनी पतिरो योन्यरूपयत ॥२॥ याका
अर्थ अब कहत हैं जो प्रभु को रूप है संसार छोडाव
त हैं व्रजभक्त श्री कृष्णचंद्र को ललित त्रिभंग स्व
रूप है रिक्ता वनिता पति पुत्र धन सब में ते मन छोडि
के प्रभु को भजे ऐसो रूप है और नाम करिके अजामे
लवादि अनेक भक्तन को संसार छूटे और विधि जो
प्रभु की सेवा करत हैं तिन हू के सर्व संसार दूरि हो
है तथा प्रभु लीला अनेक विधि करत हैं ताको
जो कोउ स्मरण करें तिन हू को सकल संसार दुख
दूरि जाय और भांति श्रीकृष्ण के मन में यह रह
त हैं जो भक्तन को संसार जाय मेरे पास आवे भक्त को
भलो होय यही प्रभु विचारत हैं ताते धरनी सेय सर्वा
रसं धरनी जो पृथ्वी पति रोध जो भगवान को नाम द
हे हैं

४· रीहैं तहां संसारभक्तनको होय तहां आपसबकौं
श्रीकृष्णको रूप नाम लीला आदि मनकरि भक्तनको
संसार दूरि करि भलो होय सोई करत हैं ॥ १२ ॥ अब श्लो
क कहत हैं श्लो॰ ॥ मन्यरमेहवय आना:स्त्वलवि
सातिकारणे संसारसुतमेहलेलेतकथस्यापयश्री
॥ १३ ॥ या॰ श्लो॰ को अर्थ॰ यह जीवके हृदयमें अनेक जन्मको
भ्रम है सो गद्य श्लोकमें समर्पणमें कहे हैं जो अन
न्तकालको भ्रम यह जीवके हृद [illegible] सेता
ते अविद्या करिकै श्रीकृष्णको भूलि गयो है तातें
यह संसारको भ्रम जानि यामें मनको लगायो है
संसारमें देह संबंधी सुख दुःखको अनुमान करत है सो
श्रीकृष्ण संसारको संबंध राखे काहेतें हृदयमें है तहां स
ये होय तहां अंधियारो कोन भांति रहे तेसें सं
सार अविद्यारूप तमके सूर्यरूप प्रभु संसार भक्त
नको कैसें राखें काहेतें जीव तो संसार संबंधी सुख विचा
रत हैं जो अब यह कार्य करूं तामें मेरे देह संबंधीकू
दुःख पावें औरमें हू सुख पाऊं और प्रभु यह विचारत
हैं जो अब यामें याको मन है सो हरिलेइ तो यामें तें मन
छूटिके मेरो आश्रय करे या भांति श्रीकृष्ण भक्तनको सं
सार हरत हैं ॥ १३ ॥ अब आगे कहत हैं श्लो॰ ॥ एवं त्वदीये
मनसि निधेयः स्वप्रभोर्गुणाः स्वस्मिन्नपि विनिश्चया
प्रभोरंगीकृता निधृवा ॥ १४ ॥ या॰ श्लो॰ को अर्थ ॥ या भांति तदीय
नो पुष्टिमार्गीय भगवदीय है सो अपने मनमें प्रभु
के गुण धरे सो ऊपरतें दिखाइबेके लीये जो प्रभुके गु
ण धरे सो ऊपरतें दिखाइवेके लीए जो प्रभु करत है
सो भली करत हैं और भीतरतें मन करि दुःख पावें औ
सें न करें अपने मनमें निश्चय यह धारणा करें जो अ
पने अंगीकृत भक्तनके प्रभु रक्षक ही हैं वहां भयो

दुखआयौतोअपनेसेवकीयकोंदंडप्रभुदेतहैंजैसेंस्त्रीक
छुमर्यादातेंऔरभांतिचलैतोपतिदंडदेवैरीतिसोंच
लावैतिसेंहीप्रभुअपनेभक्तनकेदोषहैंतिनकेदूरि
करिवेकेंअर्थदंडदेतहैं।सोश्रीगुसांईजीविज्ञप्तिमेंकहे
हैंश्लोक॥दंड्यत्वकीयतामत्वेत्येवंचेह्यमेवन।अस्मा
सुखीयतामत्वायत्रकुत्रयदाकदा॥इतिवचनात् अ
न्नेसुखीयकोंप्रभुदंडदीयो।सोऊअनुग्रहहमजानिम
नमेंसुखीहैं।तातेंजहांजहांहमतेंअपराधपरेतहांतहां
सुखेनहमकोंदंडदेनोउचितहैं।यावातमेंहमअनमेंसु
खीहैं।याभांतिभगवदीयअपनेप्रभुकोअनुग्रहजानें
यहदुःखहूंअनुग्रहरूपजानिप्रभुकेगुणअपनेहृदय
मेंधरेंवाहीतेंप्रभुपरदोषधरतहैं।सोवहमुखहैंतिन
कोंपुष्टिमार्गमेंअंगीकारनाहीहैं।तातेंनिश्चयमन
वचनकायकरियहजानेंतोश्रीठाकुरजीअंगीकृत
निजभक्तनकेरक्षकहैं।१।अथअन्वयकरिकहतहैंश्लो
कः॥अनन्यास्मदाश्रयैर्भक्तैर्वर्णलक्षणलौकिकसा
ध्यंतथावैदिकंहरिस्तुनकरिष्यति॥१॥याकोअर्थअ
वऊपरकहेजोभक्तनकेरक्षकप्रभुहैं।सोदृढकरतहैं
जोभांतिभक्तसुखहीयहलोकपरलोकमेंपावैसो
कोनाहीकरत।याभांतिकोइहांसहितहोकहतहैं
जोयहजीवस्वभावकरिदुष्टहैंजोलौकिककार्यमें
सुखपावैतोनतहांईमनकीआसक्तिलगिजायजो
वैदिककार्यमेंसुखपावैतोनतहांआसक्तहोयजायतौ
हृदयतेंप्रभुकोआश्रयजातरहै।तोभक्तिकोनास
होय।तातेंश्रीठाकुरजीलौकिकवैदिककार्यकीसि
द्धिकरैंनाहीं।तबदुःखपायकेउहकार्यमेंमननहीं
करैंकेवलप्रभुहीकोआश्रयकरैं।सोश्रीआचार्य
जीमहाप्रभुआपोवचनकेलक्षणश्रीसुबोधनीजी

निबंधमेंकहेहैंजोकोईजीवहोउ ब्राह्मणा
गृहस्थीश्रादिप्रभुकीसरनश्रावेंताकोप्रभु
हेतेछोडायश्रंगीकारकरतहैं श्रौरश्रीनवरत्न
हमेंश्राचार्यनेश्रीवल्लभाचार्यजी वर्णनक
जोलौकवैदमें स्थिति प्रभुभक्तनकोनकरैस
रतेछोडायकेश्रपनोकरायहविचारिकेहरिको
श्रयकरनो यहसिद्धांतसर्वोपरि १५ श्री
ह. सि. प. ती. श्री पे.
ई चक्रूपरसिद्धापत्रमेंकहेजोलौकिकवैदिकप
नासिद्धकरें तोप्रभुकोगुणहीमनमेंधरें जोप्रभुभ
करनहे सोयहधीरजकवहोयातवभगवदीयनसे
गवारिभगावत्स्मरणाभजनकरे सोप्रकारश्रागेसि
द्धापत्रमेंकहतहैं श्लो सदाश्रीगोकुलाधीशः
नेयःसर्वथाजनैर्नृत्यैःमिलितैःसर्वदोषविनाचि
वृत्तिर्नराया पुष्टिमार्गीयभक्तजोजनहेंति
नकोसर्वथायहीधर्महैजोसदाश्रीगोकुलाधीसको
स्मरणकरे श्रवश्रीठाकुरजीकेश्रनेकनामहेंतामे
श्रीगोकुलाधीसकोस्मरणकयोवकहा सोयातेंजोगो
नोगायंतिनकेकुलकेरक्षक यहवाक्यहलतागेजो
निःसाधनगुणस्वरूपकहेगायजोनिःसाधनहैंतिनके
प्रभुरक्षकहें तेसेहीजीवजवनिस्साधनहोयगोकु
लाधीसकोस्मरणभजनकरेतवप्रभुदयालहे
सोश्रनुग्रहकरेंहिंगे तोनिःसाधनभावसोभजन
स्मरणकरनवने तवतदीयभगवदीयमिलेतवहृद्य
मेंश्रनेकप्रकारकेदोषहैं कामक्रोधमदमछरतालो
किकवैदिकचिंतानिवृत्तिहोय विनाभगवदीयके
संगकरनेतेहूंभगवद्धर्मकरे परंतुमनतेदोषचिंता
दूरिनजाय जैसेरासपंचाध्यायीमेंसबभक्तनकोंमद

भयो। तहां एक मुख्य भक्त कौं मद न भयो। तब श्री ठाकुर
जी एक भक्त को ले पधारे। तब सगरे भक्तन को अपने मंद
की खबरि नाहीं प्रभु पर दोषबुद्धि भई जो हम को छोड
गये या भांति सगरे भक्त प्रभु को खोलिबे कों चले पा
छें एक भक्त कों मद भयो। तब प्रभुन हाने अंतरध्यान
भये। पाछें ढूंढत ढूंढत सब भक्त नें हां आय पहुंचे जो तु
म कों श्री ठाकुरजी छोड़ गये। तब उन कौं अपने दोष
को ज्ञान हतो सो कहा जो मैं मद कीयो। ता करि प्रभु अं
तरध्यान भये। यह सुनत ही उन के संग ते सगरे भक्तन को
ज्ञान भयो। अपनो दोष पुरो जो हम कौं मद भयो ताते
प्रभु छोड़ि गये। या भांति श्री आचार्यजी श्री सुबोधिनीजी
में निरूपण कीये हैं। ताते भगवदीय के संग बिना दोष दि
ता कौ नास न होय। ताते भगवदीय सौं मिलिबे कौं स्मरण
प्रभु को करौ। सो श्री आचार्यजी महाप्रभुन वल्लभ ग्रंथ में क
हे हैं। निष्कं नेतु स्मार्ते सर्वथा नाद्दर्शयेन्। इति वचनात्
भगवदीय के संग ते सर्वदोष निवृत्ति ता कौं नास होय प्रभु
वेगि ही कृपा करें यह सिद्धांत मन में जानें॥ २॥ अब के और ए
क हत हैं। लोकाचार लौकिक मति। कार्यो भगवद्भाव
बाधिकः। लौकिके वैदिके चापि स्वयं साधने चिंता प्रभु
स्याऽकार्यः। लौकिक बुद्धि अलौकिक पदार्थ न क
रनी भगवद्भाव में बाधक है प्रभु की लीला में श्री वल्ल
भ कुल में भगवदीय में सेवा में यहां श्री यमुनाजी
श्री गिरिराज आदि वल्लभ ता भाव देवालो ग्रंथ की न
न श्री भागवत रूपा दिक में लौकिक मति न करनी॥
सगरी प्रभु संबंधी जो निर्भय संयुक्त सेवा स्मरण करे
लौकिक बुद्धि आदि तो अलौकिक भाव के में बाधक
है। या और लौकिक वैदिक कार्य की चिंता मन में न
रखे।

वैदिकप्रभुआपुहीप्रकैकीलियेहै। और वह्न
लौकिकवैदिकवाधककरिअपनेभगवदीयसे
नैताविन है जो तुमलोकवेदकी चिंता मतिकरो।
तुमारे अर्थकरतहैं। तुम सुखेनप्रभुकी सेवास्म
करौ। तातें प्रभुतो लौकिक आपुहीतें सिद्धकरेंगो। श
औरहृढकहैतहैं। श्लो। इदानीमीदृशःकाल
निवर्त्तेसमागतो। यथाकथंचित्स्वमनस्थापन
योपद्राजयौ।३।या।औ।स्त्र॥ अवश्रीहरिरायजीक
नहैं। याकालमें जो मिलतहैं सो प्रतिकूल मिलत हैं कौ
हैते भगवदीयकेसंगतें कछूनभयो सो तौ वे विनाहीमि
लनहैं। औरसो मिलतहैं सो लौकिककी कामना आ
हिषायलीगामिलतनहैं। अपनेभलेलोकनसंगभलौ
क्रियारीसतहैं। भीनरष्टेनेकप्रकारकीलौकिकवा
सनाभरीहै। तिनकेसंगतें फलसिद्धिनहोय। ऐसो
संगापहूँकालमें मिलतनहैं। तातें यथाकथंचित जितनो
वनैतितनो अपनेमनको श्रीठाकुरजीके चरणारविं
दमैंलगावे। प्रभुमेंप्रीतिवढीवेकेनीरोवहुतलागत
सोमिलै। तातें औरभगवद्धर्मघटेंसो नकरैं। जितनो
हैतिननेहीवीरलाकरिप्रभुकेचरणारविंदमेंमनको
स्थापे।३।अवऔरहूंकहतहैं। श्लो। सेवायांवम
नस्थापनसाधकंनैयवहिगार्हस्थ्यस्यविवाहेपि
प्रयत्नःत्रियतांद्रुतं।४।या।औ।स्त्र॥ श्रीठाकुरजी
कीसेवाआदिभगवद्धर्ममें मनको स्थापनेकरै
औरभगवद्धर्ममें अपनेमनको स्थापनकरेऔ
भगवत्सेवामें सगरीवस्तुको संग्रहजाने जोवस्तु
भगवत्सेवामें साधक होय। ताकोराखे जो सेवा
कौमन आवै। अथवा वाधक होय ताको त्याग
करै यहगृहस्थाश्रमहूंभगवत्सेवार्थहीजाने और

विवाहादिककौं प्रयत्न भगवत्सेवार्थही करें सो काहेतें
जो गृहस्थाश्रम बिना भगवत्सेवा भली भांति सों न होय
सो तातें सेवार्थही करें ॥ यो नवमस्कंध श्रीभागवत भगवान् में
न दुर्वासा प्रति कहे हैं ॥ श्लोक ॥ मत्सेवया प्रतीतं च सालो
क्यादि चतुष्टयं ॥ नेच्छंति सेवया पूर्णाः कुतोन्यत्कालविप्लुतं
॥ इति वचनात् ॥ भक्तनकी भगवत्सेवासें प्रतीत हैं जे
चतुष्टय मुक्ति हैं जे तिनको नाही चाहत हैं ऐसे सेवाक
रिके पूर्ण हैं तिनको काल कहा बाधक करेगो ॥ या भां
ति भगवत्सेवार्थ गृहस्थाश्रम विवाहादिक कार्य स
ब करें ॥ आगें और हू कहत हैं ॥ श्लोक ॥ तन्मवेत्याय
सो भोगो त्वदीयानां कचिन्मनः तथापि देवधीर्गोनि
वार्यः सर्वथैव हि ॥ या को अर्थ ॥ तदीयन को सो अ
पने भोग के लिये स्त्रीको न जानें भगवत्सेवार्थ जानें
तथा भोग करें सो काम की निवृत्ति के अर्थ तथापि भगवद्
भक्त होय यह कामना करि किंचित् करि ॥ या भांति सगरी ई
श्रीय घर भगवत्सेवा में लगावें ॥ आगें और क
हत हैं ॥ श्लोक ॥ भावोत्र साधनं मार्गे प्रमेयं भगवान् हि
सः प्रमाणं च स्वसेवा हि सेवैव च फलं पुनः ॥ या को
अर्थ यह पुष्टिमार्ग में सगरी सेवा की रीति है सो साधन
रूप दीसत है परंतु सगरी भावरूप है काहेतें याको कारन
कहा जो फलरूप है साधनरूपादि सो तहां कहत हैं जो
फल तो प्रभु अपने प्रमेयबल हाथ राखे जब चाहेंगे त
ब देंहिंगे ॥ यह निश्चय नाही जो इतने दिन में फल होय
और जीव स्वभाव करि फल की मन में चाहत है तातें
सेवा साधनरूप दीसत है ॥ जो सेवाही को फलरूप जानत
हैं ताको फलरूप है ॥ तातें श्रीकृष्ण की सेवा है सो प्रमान
रूप जानें फलरूप जानें ॥ प्रमाण जे कोई जानि हू स्व से
वा करत हैं तिनको साधनरूप भगवत्से

भयरूपयहजानतहैं जोहमैंतोप्रभुसेवादीरहैं सोप्रभु
प्रमेयवलतेंदीरहैं मेरोमेंकछायोगनाहैं याभांतिप्रमे
यफलरूपजानिकेभगवत्सेवाकरतहैं तिनकोंफलरू
पहैं आमनकेहृदयमेंजैसोभावहै तिनकोतैसीप्राप्ति
हैहै यागेंश्रवक्षोकहूकहतहैं श्लो ॥ तस्मात्सर्व
संरक्ष्येनिधिरूपस्तुसर्वथा रानछिद्रतसर्वज्ञात्वाशाले
निवर्तयेत् ७ या ॥ यामांतिअपनेभावकीरक्षा
सर्वथाकरतेंप्रभुकेस्वरूपकीरक्षासर्वथाकरतेको
हतेंऊपरवहीआवेहैं जोकालकठिनहैं रंचदुःसंग
होइतोअपनेप्रभुमेंतेवाछुलताछूटिजाय तथाभग
वत्सेवातेंदूसरेसाधनमेंमनलागेतोसेवामेंसिथ
लताहोयजाय तातेंअपनेभावकोंनिधिरूपजानिलो
किकवैदिककार्यअनेकदुःसंगतेंरक्षाकरिलेहि सो
रक्षाकौनप्रकारकरें सोकहतहैं जोभगवत्सेवा
मेंस्त्रीप्रतिबंधकरेतोवाहकोत्यागकरिये स्त्रीकोभा
वनाशिनियेत्यागहीकरिये औरजोभगवत्सेवामें
मातापितापतिबंधकरें याभांतिदेहसंबंधीतथादेस
मेंराजादिककोप्रतिबंधहोय सोज्ञानकरिविचारिवि
चारिछोडेएकवारनछूटेतोक्रमक्रमसोंसवछोडेअ
पनेभावकीरक्षाकरिलेहि औरपुष्टिमार्गकीसेवास
र्वोपरजोनिश्चय कोभावनिधिरूपजानिगोपराय
याभांतिरहैं ताकोश्रीमहाप्रभुजीकीकृपातेंवेगिअ
नुभवहोय ७ इति श्री हरि इ क्ष स म ला
न की का श्री पे र क्ष सं गो ७ अव
कृपाकहैं तापकारकरिभगवत्सेवाकोंरिभावसहि
तकरैं परंतुमनमेंदृढविस्वासराखे सोतोसर्वसिद्धि
होय सोअवआगेकहतहैं श्लो ॥ एहिकेपरलो
केच सर्वसामर्थ्यसंयुक्त सरवगोकुलाधीश चिंतनी

य:सदाहृदिस्थाप्यः॥३०॥अबश्रीहरिराईजीकहतहैंजो
गोकुलाधीसकोंअपनेहृदयमेंसदाचिंतनकरोंश्रीस्वा
करेंतामेंयहचिंताबाधककहेंएकतोयहकेलौकिककार्य
मेरोकैसेंसिद्धहोइगो।औरमेरोलौकिककौनभांतिसें
सिद्धहोइगो।मेंतोभगवत्सेवाकरतहों।लौकिकमेंनिर्वा
हकैसेंहोइगो।औमेरोअलौकिकपरलोककैसेंसुधरे
गो।यहदोयचिंताहें।ताकोत्यागकरो।यहस्तानमनमेंरा
खें।जोप्रभुसर्वसिद्धिकरिवेमेंसामर्थयुक्तहें।प्रभुलौ
किकहूसिद्धकरेंगे।काहेतें।श्रीगोकुलाधीसहें।सोसर्वसा
मर्थ्यवानहें।यहविश्वासदृढमनमेंकरिसुमरनकरो।
सदानेमपूर्वककरो।आगेंअबश्लोककहतहें।श्लो
क॥विश्वासस्तत्रकर्त्तव्योभक्तिमेवविधास्यति।स्वरोसा
स्वतत्रापिदोषस्पृनीयतोभवेत्॥याकोअर्थअबक
हतहें।जोदृढविश्वासमनमेंराखे।यहमुख्यविश्वास
विभावसेंकाहेतें।विश्वासदृढहोयतोभगवद्धर्मथा
रहवनिआवेतोवाकोकल्याणहोय।औरलोगन
केंदेखावेकोभगवद्धर्मबहुतकरेंमनमेंविस्वा
नहोयतोसोधर्ममेंफलसिद्धिनाहीहें।सोश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभुविवेकधैर्याश्रयग्रंथमेंकहेहें।ब्रह्मास्त्र
चातकोभाव्योप्राप्तंसेवेतनिर्ममः।जबहनुमानजी
सीताकीसुधिलेनकोंलंकामेंगयेहें।तबराक्षसनके
बागउजारेअनेकराक्षसनकोंमारे।तबइंद्रजीतकों
रावननेपठायो।सोइंद्रजीतनेब्रह्मास्त्रचलायो।प
लेतोइंद्रजीतनेबोहोतउपायकीयो।परंतुहनुमा
नजीपकरेनजाय।तबपाछेंइंद्रजीतनेब्रह्मास्त्रच
यकेंपरितीतकीनी।तबहनुमानब्रह्मास्त्रकेवचन
न्यकरनाथेउहब्रह्मास्त्रमेंव

ह्रसो जब लंकतें वानर (कि) तिनने कराहू सनको मारे सोय
ह्र सूत्र के तागा में के से बांध्यो या भांति रावन को अवि
स्वास भयो तब ब्रह्मास्त्र के ऊपर लोह की सांकर सों
बांध्यो तब ब्रह्मास्त्र आपुही छूटि गयो तब हनुमान
जी मोटे भए सो तब सगरी सांकर टूटि गई सो टूटि के न्या
री जाय परी पाछें लंका सगरी जरायो अविश्वास तें ब्रह्मा
स्त्र नष्ट भयो और या तन के ऐसो एक सा (ख्या) ति तें कोवि
स्वास राखत हे औ राज ल ही पृथ्वी ऊपर नाहीं मानत
ता विश्वास तें धन जड हे तो ऊ वाको मनोरथ पूरन
करत हे तातें वे सबको मुख्य विश्वास चाहिये को
हे ते ग विश्वास हे सो आसुर धर्म हे विश्वास हे सो भगव
द्धर्म हे तातें दृढ विश्वास हे सो जाके हृदय में होय ताको
सर्व फल प्राप्ति होय कल्यान होय और अपने दोष को
वारं वार विचारे अपनपे को दोषरूप जाने दोष की स्फु
र्ति करि मन में दोष की भावना करे काहे ते अपनो स्व
रूप हे ताको विचारे तो मन में दीनता आवे जो में महा
दोषवंत हों सो पर प्रभु केसे कृपा करेंगे या भांति दोष
की स्फुर्ति होय तो प्रभु की परम कृपा अपने मन में जानि
ये सो भगवदीय गाए हैं साधो हो पतितन को राजा हो
पतितन को नायक हो पतितन को ईस या भांति अप
ने को सबन में दोष जाने तब जानिये जो दोष की स्फु
र्ति भई तब दैन्यता होय सो तब प्रभु कृपा करें ३ आ
गे आव और हू कहत हैं श्लो आर्ति फल साधन चकुजा
छि पति सेगामे अतः सदा नन्द ता तैवस्थीयतां तत्कृपायु
ते ऊ था ऐ आ आर्ति प्रभु के मिलिवे की हे सो साध
न रूप आर्ति समान कोई नाहीं और फल रूप आर्ति हे हृदय
में आर्ति होय तो भगवत्स्वरूप का सुमरन सब होय और
प्रभु कृपा करें अनुभव करावे ता पाछें और दूसरी आर

ती होय॥ ज्यो ज्यो आर्ति बढे त्यो त्यो अधिक अनुभव आधि
क प्रभु कृपा करें ताते आर्ति है सोई व्रजाधिपति के संगमक
रास्वे में कारण है॥ सदा विप्रयोग आर्ति करन करत्वी
र्ति सूं पहोंच जाइ तव प्रभु कृपा करें जैसे अग्नि के संबंध ते
नवनीत द्रवीभूत होय॥ सो निरोध लक्षण में श्री आ
चार्यजी महाप्रभु कहे हें॥ श्लो॥ क्लिश्यमानान्‌ जनान्‌ दृष्ट्वा कृ
पायुक्त यदा भवेत्‌॥ तदा सर्वं सदानंदं हृदिस्थं निर्गतं व
हिः॥ इति क्लेश संयुक्त प्रभुजी व्रज को है देखत तव कृपायु
क्त होय॥ सो हृदय में ते वाहिर पधारे सन रहि हें ताते
आर्ति ही पुष्टिमार्ग में साधन है आर्ति ही फल है भगव
विप्रयोग में तद्रूप होइ जाय तव प्रभु कृपा करें॥ आर्ति
में अव अंतरहूँ कहत हें॥ श्लोक॥ अन्याश्रयो महान्‌ वि
रोधको भी यत ताते न रहत ताते वस चैतो विमुख ह्वे वि
धास्यति॥ ४॥ याको अर्थ अन्य वरूपर कहे जो विप्रयो
ग आर्ति करो आर्ति ही साधन फल रूप है तहां अ
न्याश्रय बाधक है सगरी आर्ति को दूरि करे सगरी
धर्म में अन्याश्रय तो सब कर न हे ताते अन्याश्रय ते
सदा डरपत रहनो॥ सो ईश्वर जो में कहे हें॥ श्लोक
नान्यदेवं नमस्कुर्यान्नान्यदेवं निरीक्षयेत्‌॥ नान्यप्रसा
दं भुंजीत नान्यदायतनं व्रजेत्‌॥ १॥ इत्यादि स्मृति वि
न विचारि अन्य देव कूं देखने हूं नाहीं॥ नमस्कारादि
प्रसाद कछु न लेइ॥ और अन्य देव को आश्रय करे ता
व हमुख जानिये॥ अपने मन में वाको वे नाहीं न्याय
हीकरें अपने भाव की रक्षा ये काहेतें॥ विमुख को ए
दोष संबंध ते दुःखबुद्धि उपजे॥ सो श्री गुसांईजी वि
धर्मके देहि॥ श्लोक॥ अहं कुरंगी दृगंगी संगी नाग
वृत्तोस्मयं अन्य संबंध गंधापी के धराम वाधते
सततमम को अन्य संबंध या भांति वा

हमुख जीव कों संग छोडि अपने भाव की रक्षा करे यह
निश्चय सिद्धांत है। भाग्य गो अव ओर हूं कहत हैं। श्लो
तदीयैः सुसदा स्थेय सद्भावेन च सर्वथा। तत एव भक्तिमार्ग
स्य सहायत्वे निरूपिता। भाषा। ओर यामें भगवदीय के सं
ग रहे तो वह सुखता न होय। अन्याश्रय हू न होय सुद्ध
र भाव हू प्रभु में बढे। तदीय के संग सर्वथा सुद्ध भाव सो कर
यह प्रभु मिलन के अर्थ कं। ओर खछु अविवेक वै हि
कचाह नान राखें का है ते जो यह भक्ति मार्ग में सहाय ते
भक्ति बढे प्रभु कृपा करें। ताते तदीय को संग करें सो श्री
भागवत प्रथम स्कंध में सो। तव लावे न तुलयाम लवेना
पि न स्वर्ग न पुनर्भवं भगवत्संगी संगस्य मर्त्तो नां किमुता
शिष: भगवदीय को संग एक क्षण होइ ता सुख समा
न स्वर्ग अपवर्ग मोक्ष नाही है। ऐसो सत्संग है ओर ए
का दस स्कंध में श्री भगवान उद्धव जी प्रति कहे है। श्लोक
निरोधयति मां योगेन सांख्य धर्म उद्धव: न स्वाध्यायस्त
पस्त्यागो नेष्टापूर्तं न दक्षिणा। व्रतानि यज्ञश्छंदांसि ती
र्थानि नियमा यमा। यथावरुंधे सत्संग सर्वसंगापहो
हि मां। सत्संगेन हि दैत्येया यातुधाना खगा मृगा: गं
धर्वाप्सरसो नागा सिद्धाश्चारण गुह्यका। याको अर्थ
श्री भगवान उद्धव जी प्रति कहे है। जो मोको सत्संग वस
करत ओर नाही योग न था सांख्य न था धर्म तप त्याग
व्रत नियम यज्ञ तीर्थ इत्यादि मोको वस नाही करत
है। ओर सत्संग के प्रभाव ते दैत्य राक्षस खग मृग गंध
र्व अपछरा नाग सिद्ध चारण मनुष्य को यहीं यत रत्यो
ना ते सुध भाव सो भगवदीय को संग करे तो पुष्टिमार्ग
में भगवदीय को संग करे तो पुष्टिमार्ग में भगवदीय
के सहाय ते भक्ति बढे सो चोरासी वार्ता में प्रसिध व
र्णन है। यादवदास के आसीनो दने वगते माधोरा

कों भक्ति भई। भाग्यों। अब आगें कहत हैं। श्लोक॥ अ
भावे तु तदीयानां प्रसंगोपि सुदुर्लभः। चेतोपि साधना
भावाद्धि सुखं तिष्ठति स्वतः॥ १॥ याको अर्थ॥ अब श्री हरि
राइजी कहत हैं जो हमको तो तदीय भगवदीयके संग तो
महाइ दुर्लभ है। एक लगाइ भगवदीय नाही मिलत एक
तो यह दुःख है। और दूसरे चित्त करि साधन सुमरण भी
बना कछु भगवद्धर्म नाही बनत है। तातें भगवदीयके
संगको अभाव है। यों एकतें चित्त भगवद्धर्ममें नाही
लागत ना करिकें यह सुख हृदयमें होत है। यह दोय उ
पाय हैं प्रसन्न करिबेको। एक तो भगवदीयके संगतें प्र
भुमें मन लगें। तथा संग न होइ तो चित्त स्वरूप हूं भग
वद्लीलामें लाग्यो रहै तो प्रभु कृपा करें। भगवदीयको
अभाव होय। और मन करि साधनको अभाव होय
न होय वह सुख ता होइ सो हमको बनी हो। अब कहत हैं
रें याभांति श्री हरिराइजी दैन्यता करि कें जीवनके अ
र्थ। आगें अब और हूं कहत हैं। श्लोक॥ ततो हि भग
वद्दासस्य कार्यार्थ विदेशके व्रजपालोपि चलितं ते
न मे हृदि तमनः॥ ७॥ याको अर्थ॥ जो एक भगवदीय हमारे
पास हतो भगवानदास सो अपने कार्यार्थ विदेसको
गयो। और श्री व्रजपालजी श्री गुसांईजी सोहू परदेसको
गये सो ताकरिकें मनमें दुःख भयो है। मैं उनके साथ नाय
और तिनको अपने पास राखि सक्यो। तातें सत्संग बिना
मन करि बहुत दुःख पावत हैं॥ ७॥ आगें अब और हू क
हत हैं। श्लोक॥ मयि यद्यपि नाथैव विहि चित्त कृपया पु
ष्टिस्तिन दपि स्वीय साधना भावतो गता॥ याको अर्थ
भगवदीय मेरे पास हते पधारे सो मैं जानत हों। जो मे
घरही में
लेहु हों तो तो तुमारो संग और भगवत्से
हें सो काहेको छुटतो। काहेतें मेरे हृदयमें

पृ॰

परंतु तऊ रावकजु मारीछ पावो वर्नत हैं। जो मो पर प्रसन्न हैं सो में
नस्व परिस्नेह नाही है। मोते लौकिक वैदिक कार्यहू नाही
वनत ताते यह स्याधर्म के कामना को अभाव है सोहू ना
ही वनत सो अव मैं सव ओरते निःसाधन हौं। ओर अ
व ओर हू कहत है। स्लो। एतास्थैर्य संप्राप्त सहरिसरण
ममः एहिक परलोके च ने श्चिंतातन एवनः। टीका। याको
अर्थ। एसो निःसाधन जो मैं सो मेरे हरिसरण एकराहिम
न में विचारिके हरिसरण ही गति मेरे है। सो श्री आचा
र्यजी महाप्रभु विवेकधैर्याश्रय में कहे हैं जो मन मेरा
हि आश्रय करै एहिलोके परलोके च सर्वथा शरण
हरिस्य हलौकिक वैदिक न सिद्ध होइ आवे तो हरिसर
ण सदे या करे ताकरि सर्व सिद्ध होइगो। ताते मैं हरिसरण
करि सर्व ओरते निश्चिंत हौं। अव प्रभु करैलेहिगो। सो
श्री आचार्यजी महाप्रभु सर्व ओरते श्रीकृष्णाश्रय ग्रंथ
में कहे हैं। शरणस्थ समुद्धारं कृष्णं विज्ञाप्ययाम्यहं। जो स
रणस्थ भक्त हैं तिनको उद्धार प्रभु निश्चय करेंगे। साधन
वने अर्थवान वे। सो भगवद्गीता में कहे हैं भगवा
ननें। सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं सरणं व्रज अहं त्वा
सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः। इति वचनात्। इत्या
दि वचनको अभाव जानि हरिसरण ही कीए है। ता
तें या लोक संबंधी कार्य तथा परलोक के। ओरते नि
श्चिंत हैं। टीका। आगे अव ओर हू कहत हैं। स्लो। कृता चि
ल्लिक नैचेत्स्यानुद्धापो न च भेवादृशो नदाकोवद
ञ्चितस्यापराद्धति पुनर्भवेत्॥ १०॥ याको अर्थ। अव श्री
हरिरायजी कहत है। जो हम तो भगवदीय के संग विना
एसो हुरव पावत हैं। ओर जीवनको तो कदाचित कवहूं
भगवदीय मिलत हैं। तव ऊनके भाग्य में भगवद्ली
ला भगवद्सेवा स्वरूप पुष्टिमार्ग के रस को अनुभव

आपमेंनाहीलिष्योहैतातेंसत्संगमेंऊनजीवनकोमन
हीनाहीलागतहैकोहेतैंअवहीपुनरागमनवहु
तजन्मसंसारमेंलेनोहैवहुतअंतरायहैयहकहिके
श्रीहरिरायजीयहजतायोजोपहलेतोसत्संगभगवदी
यकोदुर्लभहैतऊअवतेंभाग्ययोगतेंसत्संगहूमिले
तहैतवजीवकोमननाहीलागततातेंजाकोमनसत्सं
गमेंनलागोताकोयहजानियेंअवहीयाजीवकेंआप
मेंअनुभवनाहीलिष्योहैअवहीयहजीवसंसारमें
वहुतभ्रमेगोअनेकजन्मकोअंतरायजाननो॥१०
आगेंअवश्रीहरिरायजीकहतहैंश्लोक॥ क्रियाच्चिरपमहा
चिंतासमुद्रोहृदिवर्तनेनोस्थितेपिवृद्धेरसिप्राणना
थचिंतेविभेरनःश्रा याकोअर्थ॥अवश्रीहरिरायजीक
हतहैंजोजीवकोस्वभावतथाजीवकीक्रियादेखिकेमे
रमनमेंचिंतावहुतहोतहैसोमेंअपनेमनकीचिंता
कहांताईलिखोचिंताकोसमुद्रमेरेहृदयमेंभर्योहै
यहकहिकेयहजतायेजोअपारचिंताहृदयमेंसमुद्रव
तभरीहैवाग्नेमेंकहांताईलिखोंसोचिंताहृदि
रखिवेकीयेंमेरोसामर्थनाहीहैवेंमनकीहोनीन
करुंतातेंएकमावोभरोसोहैजोमेरेमाथेप्रभु
प्राननाथविराजतहैंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुन
कीकृपातेंसोनाथमेरेचित्तकोसांतिकरेंगेयहवृत्त
मोकोहैतथाइसरोअर्थयेंकहतहैंचिंताकरिकेंमेरे
माथेमेंप्राणआयरहेहैंएसीचिंताहृदयमेंसमुद्रवतहैत
हांश्रीठाकुरजीमेरेप्राणकेनाथहैसोप्राणकीरक्षाप्रभुक
रिकेंतीरमेंयेंदुखचिंताकोसमुद्रहृदयमेंभर्योहै
सोप्रभुहीसांतिकरेंगे याभांतिश्रीहरिरायजीविप्रयो
गकोअनुभवकरतेकरतेअपनेहृदयमेंतन्मयताहो
यगये

अनुभव होइ सो अनुभव कौन प्रकार की है सो आगे सि
द्धांत में वर्णन करत हैं के बल रसात्मक स्वरूप को अ
नुभव ॥११॥

८ अब
और हू कहत हैं जो ऊपर के पत्र में हैं न पत्न करि निसाध
न होइ जो अनुभव कौन प्रकार होइ सो आगे कहत हैं
सो ... वस्था निजप्रभिष्ट सस्वरूपं द्रोत्रिष्यति: वल्ल
भ इति वेंन लावण्याननं ... अब क
हत हैं जो श्री हरिराइजी को विप्रयोगाश्रय है सो श्री
कृष्ण जी के स्वरूप को अनुभव करि विरह करत हैं जो
श्रीकृष्ण हमारे ... को अब हू दरसन देंहिंगे होइगो मे
रमति पाइ के हैं जो व्रजभक्तन के भाव भावित होइ अ
पनपो रह्यो न सावधान भूलि गयो है अपनो स्वरूप अ
लौकिक व्रजभक्त स्वामिनी रूप सो भाव हृदय में है अ
त्यंत विरह तें हमीनन को भाव ना हरन मणि के निक
स्यो तातें अपने पति के है तथा ब्रह्मसंबंध को सुमर
न करि जो श्री आचार्य जी द्वारा ब्रह्मसंबंध भयो है तुल
सी चरणारविंद पर समर्पी है यह भाव तें श्री ठाकुर जी
हमारे पति हैं सो श्री कृष्ण के से हैं सो सिखावत तिन स्वरूप
व्रजभक्त अनुभव करत हैं तैसें ही श्री हरिराइ जी अ
नुभव करि श्री वृंदावन में स्थित स्वरूपन को वर्ण
न करत हैं सो कहा है जो व्रजभक्तन की भावना किसो
र स्वरूपासक्त हैं तातें श्री हरिराइ जी हू स्वामिनी भाव भा
वित हैं तातें किसोर स्वरूप को वर्णन करत हैं श्रीकृष्ण
के से हैं मोर के पंख के गुच्छा करि के नाम मुकुट सवारि
माथे पर धरे हैं ताको अभिप्राय यह है जो मुकुट को
श्रृंगार है सो स्वामिनी जी के रस दान अर्थ है तातें मुकु
ट धरे सो अवतान कबक रो सो वेणि ही दरसन ए

स्पर्शन करो। और नीलकुंतल स्यामरासी अलकावली
मुखारविंदके ऊपर आयरही है। से श्रीकृष्णचंद्र दरसन
देहुगे ॥ ३ ॥ आगें अब और हूं कहत हैं ॥ श्लोक ॥ भ्रूधनुःसे
धितकस्तूरी चित्रकं चित्त। इंदीवरदलादेघ्ये विशाल
नयनद्वयं ॥ ४ ॥ याको अर्थ ॥ भ्रकुटी धनुषकी नाईं तीक्ष्णारस
रूप कस्तूरीको तिलक तथा कपोलनमें कमलपत्र
और धनुषबान लेदरसन हमारे मनको कबमारेगे। औ
रकमलदेपत्रवत्तके नेत्र सोऊ अति विशाल ताकरि
दरसन दे हमारे ताप कबहरेंगे ॥ ५ ॥ आगें अब औरहू कह
तहैं ॥ श्लोक ॥ मौक्तिकाभरणालंबिसुनसंसरसाधरं
त्रिरेखाकंठविलसत्कंठाभरणभूषितं ॥ ६ ॥ याको अर्थ
॥ वेसरिके मुक्तालंबी परम सोभायमान उज्वल सोसौ
अरुण अधररस रूप पर आयरह्यो है सो मानो स्वामि
नीजीको भाव निर्विकार अधरामृतरसको पान करत हैं
कंठ मोतिनरेखा हैं ताकरि सात्वक राजस तामस तीन
प्रकारके भक्तनकी स्थिति हैं अथवा त्रिलोककी सो स्थित है
तहैं और श्रीकंठमें कंठाभरण कंठसरी आदि सोहत हैं
ऐसे श्रीकृष्णजी कब हमको दरसन देहुगे ॥ ७ ॥ आगें अब
औरहू कहत हैं ॥ श्लोक ॥ प्रफुल्लमल्लयुगलचिबुका
भरणसुतं। सौवर्णसन्ममाणिक्यबुकंमाला विराजि
तं ॥ ८ ॥ याको अर्थ ॥ दोऊ गल्लस्थल प्रफुल्लित हैं सो युग
लगीतमवर्णनहैं वरदरूपा स्वरनो मदुगोऊ जैसे पक
वेरसे सुकचो चमारे तैसे ऊही प्रफुल्ल कपोलरसमें स्वा
मिनीके स्नान स्पर्श चुवनादि ऐसे कपोल और चिबु
कभूषण ॥ सो श्रीचंद्रावलीजीको भाव स्वामिनी
अधरामृतको अनुभव करत सारसके आधिक्यते
अधरते भये। सो श्रीचंद्रावलीजी अनुभव करे सो म
धुराष्टककी टीकामें वर्णन है। ऐसो चिबुक विराजत है

सोनेके छोटे मनिकाकी माला सो कंठमें विराजत हैं ऐसे
श्रीकृष्णजी कब दरसन देहुगे ॥ ४ ॥ या गो अब और कहत हैं
श्लो० ॥ गरस्थलल सत्स्वच्छ वक्षवैयाघ्रवाटुंरत्न यव
हित स्थूलमुक्तामाला चितो ८ ॥ पा या को ॥ अर्थ गरस्थल
[illegible] उज्ज्वल वघनखा वक्ष लसत है सो प्रसिद्ध तो पहरा
थे हैं जो श्रीयशोदाजी बालककी रक्षार्थ धराए हैं तथा
श्रीस्वामिनीजीके नखक्षत ऊपर भाव सहित धरे हैं र
त्नकरि गुहित नवरत्न युक्त बडी माला वैजयंती मा
ला ताको कहत हैं सो समस्त भक्तनके भावसों विराज
त हैं और बडे बडे मोतिनकी माला उरपर विराज
त हैं ऐसे श्रीकृष्ण कब दरसन देहुगे ॥ ५ ॥ या गो अब औ
र कहत हैं श्लो० सुवर्णागु श्री समता स्थूलमाला
तिसुंदर गुंजाफलनमहन्माला लसत सुगात्र ई या
सोनेकी कृतिमनिकासी कांटी ऐसे दानश्री
रमणिकी खडी माला गुथी परम सुंदर पहरे हैं गुंजा ला
ल श्वेत सुंदर गुथे तामें चतुर्थ स्वामिनी यूथपतिके भा
वसों पहरे हैं मोहनमाला सो ऊपर जो घोटता पहरे हैं
ऐसे श्रीकृष्ण कब दरसन देहुगे ॥ ६ ॥ या गो अब और कह
त हैं श्लो० अनेक रत्नजटित कर कंकन भूषित बाहुम
ध्य लसत्सुलोभित मितप्रथि तांगद ७ ॥ या ॥ अर्थ ॥ अने
क रत्नकरि जटित ऐसो कंकन दोऊ हस्तमें पहरे हैं श्री
हस्तके भुजानमध्य भाग जो ता ऊपर सोनेके विराजत
हैं ऐसे श्रीकृष्ण कब दरसन देहुगे ॥ ७ ॥ या गो अब और
कहत हैं श्लो० अनेक पुष्प तुलसी वनमालाति
लाछितैर्विचित्र वर्ण विलसत्कटिवासो विराज
ते ॥ ८ ॥ या ॥ अर्थ ॥ अनेक प्रकारके पुष्प तुलसी वनमा
ला तिनकी ठौर ठौर चिन्हे सहित गुथित ऐसी वनमा
ला विराजत है यामें समस्त व्रजभक्तनके

भावसों धरे हैं कटि वास काछनी पचरंग की अतिवि
चित्र कटि पर विराजत है ऐसे सहित चतुर्थयूथपति
के भावसों ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सोनहे हुते यातें आगें श्व
वेत्रार्हक हत हैं श्लोक ॥ कटिभावज्ञापकानि किंकि
नी रवि सोभित पदद्वयगत स्व णमणिनूपुर मंडितं
सो याको अर्थ कटि में किंकिनी के रव सों हनत हैं नार
व करिके जब कनकों अनेक रमणि किंकनी लावे भ
क्कों सचनक रावत है होयचरण कमल की चाल
परम सुंदर है तामें मणि जडित सुवर्णके नूपुर सोहत
हैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र समनहे हुते यातें आगें श्ववेत्रा
र्हक हत हैं श्लोक ॥ नखचंद्र प्रकासैक प्रकासित जे
गत्रयं पीतांबरांतरियव चलदंचल सुंदरं ॥ १ ॥ या
को अर्थ ॥ नखचन्द्रके प्रकासकरि तीनों भक्तकों प्र
कास करत हैं तीनो भक्त सो आकास पाताल भूलो
क गती नो लोकमें भक्तजे हैं तिनके हृदयमें प्रका
स करत हैं औरके हृदयमें नखचंद्र प्रकास नाहीं करत हैं सो
भक्त कैसे हैं एक श्रीठाकुरजी के चरणारविंदही को आश्र
य कीये हैं तिनके हृदयमें नखचंद्र प्रकास करत हैं त
था यह ललित त्रिभंगी स्वरूप श्रीवृंदावनमें स्थित हैं
तिनके अनुभवे व्रजभक्त हैं सो राजसी तामसी सा
त्विकी त्रिगुण भक्तके हृदयमें नखचंद्र प्रकास करत हैं
औ पीतांबर ओढे हैं सो व्रजभक्त स्वामिनीकी उत्तरी
भावसों धारनकीये हैं सो उत्तरीयके दोउ अंचल सुं
गंधवयारि चलायमान है ॥ १ ॥ यातें श्ववेत्रार्हक
हत हैं श्लोक ॥ मस्तमित सिरोभेद चलन्मकर कुंडलं
त्रतान नयनानंद नितां तरतिसंप्रदं ॥ १ ॥ याको अर्थ
मस्तकके दोऊ ओर सुंदर श्रवणमें मकराकृत कुंडल
हैं सो सांख्य योगको स्वरूप हैं ऐसे श्रीकृष्ण नित्य करत

श्री.पु.
१२

है ताकरिकैं व्रजभक्तनकै नैननकों परमआनंद देतहैं
रतिरसकौ अनुभव भक्तनकौं करावतहैं ॥ १३ ॥ आगें अ
ब और हूं कहत हैं ॥ स्लो ॥ का ॥ नितंबिनिवृंदवतीसानु
भवलोलुपा ॥ विहरंतं विशेषेण ॥ रासस्थलीस्थापरायणं
॥ १४ ॥ या ॥ को ॥ अर्थ ॥ नितंबिनि जो व्रजभक्तनके वृंदमें प्र
भु विराजमान हैं ॥ सो भक्तनकौं रसानुभव कराइवेमें
परम चंचल हैं ॥ सो याते जो रासकी स्थलीविषे समस्त
व्रजभक्तनकेसंग विहारकरत हैं ॥ रासादिक लीलाकर
नमें भक्तप्रभु परमचतुर हैं ॥ १४ ॥ आगें अब और हूं कहत
हैं ॥ स्लो ॥ का ॥ त्रिभंगललितं वेणुकलितं भुजयोरपि वृं
दावने कपलितं वल्लितं स्वजनैः सह ॥ १५ ॥ या ॥ को ॥ अर्थ
याभांति त्रिभंगस्वरूपका स्थिर दोउभुजानसों वेनुना
दकरत हैं ॥ सो यह श्रीवृंदावनके फलात्मकस्वरूप
हैं ॥ श्रीवृंदावनमें विराजमानहैं ॥ अपने स्वजन व्रजभक्त
नकरिकैं वेष्टित हैं याभांति स्वरूपको लीलासहित हैं ॥ प्र
भु मोकों अबदरसनदेहु ॥ १६ ॥ आगें अब और हूं कह
त हैं ॥ स्लो ॥ का ॥ वादयंतं मुरलिकां मोहयंतं मनः सतां ज
गज्जडं प्रकुर्वंतं रोधयंतं नभस्तलं ॥ १७ ॥ या ॥ को ॥ अर्थ ॥ सुंद
र समस्त सुरनकौं मुरलिका वजायकें समस्त भक्तनकेम
नकों मोहत हैं ॥ पशुपक्षी चैतन्य हैं ॥ सो जड़वत एक
टक रसनकरि वेनुनाद अमृतरसको पान करत हैं
और अचलादि पर्वत नदी जड़ हैं ॥ सो चैतन्य होय मधुधा
रा वहत हैं ॥ गाय आदि पशु जो अन भक्षन करत हैं नाहीं
॥ १७ ॥ आगें अब और हूं कहत हैं ॥ स्लो ॥ का ॥ पशूणां पक्षिणां
चैव मौनं संपादनं नद्याः तरूणां मंतरानंदमधुधारैक
वर्षकं ॥ १८ ॥ या ॥ को ॥ अर्थ ॥ पशुपक्षी वेनुनाद सुनिकें चंच
लता छांडि मौन है रसपान करत हैं ॥ ये आधिदैविक
श्रीवृंदावनके मुनी हैं ॥ पुष्टिलीलासंबंधी वृत्तादिक

मधुकी धारा वर्षत हैं सो अंतःकरण में भगवदीय के ज
व भगवत्स्वरूप को अनुभव याय तें वर्षा नहू में पुल
कावली हू है मैं होय। सो श्री वृंदावन के वृक्ष हैं सो प
रम भगवदीय हैं सो वे तुनारस अमृत को हृदय में
अनुभव करि अंतःकरण ते आनंद पाय मधुधारा
श्रवत हैं॥ ५॥ आगे अब श्लोक कहत हैं श्लोक॥ हरे
तं व्रजभूताचपदस्थावनतसथा यमुनानीरपात्रे
कृजलक्रीडाकृतिप्रियं रहस्या कुंज श्रेयया भांति रास
दिक लीला व्रजभूमि के तापको हरत हैं तथा व्रज के
भूत जो प्राणी सब वे ताप हरत हैं अथवा व्रज में अपने
चरणारविंद स्थापन करि सगरी गुल्मलता औषधी
आदि इनके तापको हरत हैं अथवा व्रज में सर्वत्र
चरण चिन्ह स्थापन करि यह जतावत हैं जो कोई इ
नको आश्रय करेंगो तिनहू को ताप दूरि होइगो ऐसे
श्रीठाकुरजी को वर्णन करत हैं॥ या भांति रासलीला
अनेक विधिसों भक्तन सहित श्रमजल भयो तब श्री
ठाकुरजी जाने जो यह भक्तन सहित श्रमजलयुत रस कहा दी
यों तातें विचारे जो यह रस के पात्र श्रीयमुनाजी हैं यह जा
नि भक्तन सहित श्रीयमुनाजी में पधारे सो अपनी प्रि
या स्वामिनीजी संयुक्त जलक्रीडा करन भरे या भांति
श्रीयमुनाजी को पात्र जानि सगरे रसस्थान की यों ज
लक्रीडा करि श्रम को निवारन भयो ऐसे श्रीठाकुरजी
कों वर्णन करत हैं॥ ६॥ आगे अब श्लोक कहत हैं
श्लोक॥ रसात्मके रसात्मस्य भक्त स्वस्वमत्स्थित निज
नुभव संवेद्य प्रकटित लीलाय तस्मै॥ १७॥ या [illegible] अब
रसात्मके स्वात्म ऐसे रसात्मक व्रजभक्त तिनको करा
वत हैं लीला तामें अधिक अधिक रसदान प्रभु कर
त हैं ताकरि भक्तन को भाव दृढ होय ये

५· धिकप्रगटहोतहैं॥ऐसेप्रभुरसदानकर्ताश्रीकृष्णचं
द्ररसनदेहुगे॥१७॥आगेअबश्रीआरहूकहतहैं॥श्लोक॥
विरहाद्युपायत्सर्वेनिजलीलानुभावक।साकारानंद
रूपेणव्रजभक्तहृदिस्थित॥१८॥याकोअर्थ॥ऐसेभावा
त्मकरसात्मकश्रीकृष्णसोकेवलशुद्धविरहकरितव
अपनीनिजलीलाकोअनुभवकरावैसोजोवसा
रदिनरात्रिकेवलविप्रयोगआर्तिकरिशुद्धहृदयहो
य॥तबहीनिजलीलाकोअनुभवहोय॥सोनिजभक्त
स्वामिनीजीहैंतिनकोविप्रयोगहै॥तिनहीकोय
हानिजलीलाकोअनुभवहैऐसेभावात्मकश्री
कृष्णसोव्रजभक्तनकेहृदयमेंसाकारआनंदरूपस
वेलीलासंयुक्तविराजतहैं॥काहेतेंरसकोअनुभाव
हैजोपात्रविनारहेनाहीं॥सोरसात्मकसाकारआ
नंदरूपश्रीकृष्णतारसकेपात्रव्रजभक्तहैं॥तातेंव्रज
भक्तनकेहृदयमेंरात्रिदिवसस्थिररहतहैं॥१८॥आगे
अबश्रीआरहूकहतहैं॥श्लो॥एवंदिदृक्षासततस्था
पनीयानिजहृदि॥सेवाश्चात्मप्रेमभावेनपरागवि
निवृत्तके॥१९॥याकोअर्थ॥ऐसेश्रीकृष्णचंद्रकेदरस
नकीइच्छामनमेंजाकेहोय॥सोनिरंतरअपनेहृदयमें
यहस्वरूपकोध्यानकरिस्थितिकरै॥तहांकोईकहेजो
तुम्हारेहृदयमेंतोऐसेप्रभुस्थितिहैंध्यानकरितुम्ह
रेस्थितिकीहै॥याभ्रांतिकोकहेहैसोतहांश्रीह
रिरायजीकहतहैं॥जोमेरेहृदयमेंप्रेमकोअभावहै
मेरेमेंप्रेमनाहींहै॥औरयहस्वरूपतोप्रेमकरिधार
नकरेतबहोय॥औररमाकोतोऐसेश्रीकृष्णकेचरनक
मलकोजोपरागसोअत्यंतदुर्लभहै॥तामेंमतो
चरणकमलकीपरागाकरिकेरहतहैं॥तहांकोईक
हेजोतुम्हारेमेंप्रेमतोनहींसतहै॥स्वरूपकोवर्णन

कीरोहें प्रभुमेंआसक्तिहूहें। भावहूहें। प्रभुमेंव्यासक्तहें पुष्टिमा
र्गकीसगरीरीतिहें ताप्रमाणकहेंनहीं। तुमकोकहावा
धकहें याभांतिकोईकहें तहांकहतहें श्लो०॥ ततःसे
वापरिताधिकागेहेहेद्रिकवाधिका। व्यासक्तिःसेवमार्गे
स्मिनग्रहस्थस्वास्थ्यकारिका॥२०॥ याकोअर्थ॥ भक्तकीह
रिराजीकहतहें जोहमकोलौकिकआसक्तिहें ग्रहदेहसंबंधी
सोयहभावऔरभावमेंबाधकहें काहेतें देहसंबंधीहरता
मेंलौकिकसवेंद्रिकअनेककार्येनाआसक्तिमनमेंरहतहें
सोबाधकहें औरव्यर्थपूनेपुष्टिमार्गमेंआसक्तहें सोप
रमधर्महें। सोजाकीआसक्तिप्रभुमेंहें। सोग्रहस्थग्रहमेंके
सेंस्वास्थ्यरहेंगे। ग्रहमेंस्वास्थ्यजाकोमनहें। सोयहपुष्टि
मार्गमेंकोनभांतिस्वास्थ्यरहेगो। यहकहिवेपहेल
ताऐजोनाकीआसक्तिप्रभुमेंहें। तासोंदेहसंबंधीलो
किकवेदिकक्रियाभलीभांतिसोंनवनेगी॥२१॥ आ
गेअवओरहूकहतहें श्लो०॥ परितापोऽस्यतस्मात्त
वेविस्मृतिकारकः॥ सर्वव्यसनंतत्रप्रपंचस्फूर्तिना।
राने॥२१॥ याकोअर्थ॥ ऊपरकहेंताभांतिप्रभुमेंआस
कहोय। तबप्रभुव्यापकआसक्तिदोनकरें सोतबविप्र
योगहोयसोविप्रयोगभयो तबजानिये प्रभुसंबंध
विनादेहसंबंधीसर्वकार्यकीविस्मृतिहोय तबविप्र
योगभयोतापाछेंप्रभुमेंव्यसनहोइ सोप्रभुविदुरहो
नेजाय। एककालकहलायगुपासमानजाय गृहस्थसनको
स्वरूपतावयसनकरिकें प्रपंचकीस्फूर्तिनाशनहोइ
मेंकेवलप्रभुपरतन्मयताहोय॥२२॥ आगेंअवकौरह
कहतहें श्लो०॥ एवंविधस्तुत्रिविधोभावोनिःसाध
नोमतः॥ अनेकजन्मोंकेनतर्पाप्तिभजतांन
णां॥२२॥ याकोअर्थ॥ याभांतिभावजबमनवचनकर्म
करितीनोप्रकारभावसिद्धहोइ

न

प॰

जाय सो या भांति निसाधन है तो या लोक में बहुत दु
ख भये हैं। निरंतर स्वरूप भजन जो श्रीकृष्ण की सेवा कीये क
रें तब निसाधन होइ २२ आगे श्लोक में स्वरूप नहीं ले
खा बेते करणाया है सो भावार्थ सो तथा विधं मति
मद्भाव संबंधात्माप्नोति वै ध्रुवं २३ आगे या को अर्थ
हमारे विधि पूर्वक भाव सिद्धि होइ तब श्रीकृष्ण भावात्म
क प्रभु की कृपा होइ तथा श्रीकृष्ण भावात्मक प्रभु की
कृपा होइ तथा श्रीकृष्ण भावात्मा के आस्य मुखारवि
दरूप श्री आचार्य जी महाप्रभु की कृपा होय तब भाव
सिद्ध होइ भाव सिद्ध भये पाछे बजा [illegible] श्रीकृष्ण स्वरू
प में निवेदन में यह भाव सिद्धि रहे जो येई प्राप्त तन श्री
कृष्ण भावात्मक रूप प्रति है यह मन [illegible] क्रम को भाव है
इतन प्रा [illegible] सिद्ध होइ यह वेद के वचन है ता को [illegible] श्री
कृष्ण के स्वरूप में प्रतिभाव ऐसे होइ सो उपाय आगि
लो श्लोक में कहत हैं श्लोक [illegible] प्रमेय बलतो नान्य साधनं
सन्ति भाव्यतो यतः सर्व प्रकटितो निजाचार्य पदाश्र
यः २४ या को अर्थ यह भाव श्रीकृष्ण स्वरूप में प्रतिभा
व यह जीव के साधन ते न होइ यह श्रीकृष्ण प्रमेय बल
ते भाव को दान करे तब ही भाव होइ श्रीकृष्ण प्रमेय
बल के वश गत करे सो उपाय कहत हैं जो पुष्टि मार्ग
की रीति सों तन मन धन सों प्रीति सहित सेवा करे श्री
पन्नी [illegible] श्री आचार्य जी के चरण कमल को आश्रय
करे तब श्री आचार्य जी महाप्रभु भावदान प्रमेय ब
ल ते करे ता ते मार्ग रीति सों सेवा श्री वल्लभाचार्य जी
के चरण कमल को आश्रय दृढ मन निश्चय लगाइ
के करनो यह सिद्धांत सर्वोपर है २४ आगे श्र्व
लोक में कहत हैं श्लोक ॥ तदा भावेन वै भावि फल
मेतन्न संशयः। अंतराया स्मदीयोस्तु ग्रंथ श्री वल्ल

भावको ॥२५॥ याको अर्थ ऊपर कहे सो तिन्हीं आचार्यजी
महाप्रभु भाव दान करें तब भावात्मक रसमें तद्रूप होय
जाय सो तब यह पुष्टिमार्गीय फल की प्राप्ति होय निश्च
य संसय नाहीं सो हमारे श्री गुसांईजी वल्लभाष्टक में क
हे हैं ॥२५॥ अब और हू कहत हैं श्लोक ॥ स्वामिन्श्रीवल्ल
भेन्यत्तदथो दिव्य मुखी रीति नरास्ते यो नवलेन विज्ञातुम
यो निहय्या ॥२६॥ याको अर्थ ॥ श्रीवल्लभाष्टक को सप्तमश्लो
क ॥ स्वामिन्श्रीवल्लभाग्र क्षणमपि भवतः सन्निधानेन
पातः प्राणप्रेष्ठव्रजाधिपवरवदनदिदृक्षार्तितापो जनेषु
यत्प्रादुर्भावमात्रमेव चित्ते न रमितस्यन्तु स्वास्यान्यदृष्ट्ये
यस्मिन् मुखे रोम श्रुते न रमते न्यत्र चित्तं सतता मन्यादि
वचन कारिय स्व वचन के अनुसार आश्रय यह पुष्टिमा
र्गमें नेष्ठा होय तब सगरी लीला को अनुभव होय सो
आश्रय और मार्गमें नेष्ठा को न प्रकार होइ ॥२६॥ आगे
अब और हू कहत हैं श्लोक ॥ मार्गनिष्ठां न बोधे विज्ञाता
ह्यगुरु रितै गुरूक्तौ निवाक्यानिनस्त्वो ह्यनुवाद्यतः
॥२७॥ याको अर्थ ॥ अब कहत हैं जो पुष्टिमार्गमें नेष्ठ वि
ना गुरु के बोध की रीति बिना न होय जब गुरु प्रसन्न होइ कृ
पा करिके बोध करें तब यह जीव को दृढ विश्वास गुरु के व
चनमें होय विश्वास करि बारंबार गुरु वचन को अर्थ
सहित भावना करे अपने मन सों अवभावना न होइ
तो ताद्रसी विश्वनसों मिलिके गुरु के वचन को अनु
वाद करें बारंबार अनुवाद भावना करे तब वचन अनु
सार है तो कृपा करें आगे अब और हू कहत हैं श्लो
अनुवादोनस्त्वबोधात्किंतु मूलक्रमागतः अथापि
रचनायां श्रोत्रगुरु
धनेकल्प

नांकारनदरे जैसैं मूलक्रम

प॰ श्रीसुबोधनीजी निबंधादिक भाव दिखावै तहां श्रीमहाप्र
भुजी की कृपा तें श्रीसुबोधनीजी में जान्यो जाय सो श्री
आचार्यजी महाप्रभु कृपा करि करें जब हृदै चरणारवि
दको आश्रय होय ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभुके
चरणकमल को दृढ़ आश्रय करि श्रीसुबोधनीजीनि
बंध में जा प्रकार सों भाव है ता भांति अपने हृदय में भाव
ना करै सेवा करै। २। वाक्यायोगश्च वर्णो हृत् कल्पहो हालो
एतादृशो न गुरु नावगत्या ति खिन्नजनो आश्रितप्रच
निजाचार्यान् अन्य प्रसन्ने हृस्व सदा भजेत्। २। श्रीयाकोआ
या भांति गुरु को आग्य प्रमान अनुगत्य करि ता निखि
लको देव सब है। ३। श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपनो
आश्रय निश्चय करि रहि। यामें संदेह नाहीं काहे तें श्री
आचार्यजी महाप्रभु को मन में आश्रय करि गुरु आ
ग्या प्रमान वर्तेत। श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्री
गुरु करि आश्रय अपनो रहि। सदा आनंदरूप श्रीआ
चार्यजी महाप्रभु हैं यह भाव सों भजन करें। अलौकि
क वो लौकिक में आनंद तुच्छ है सदा नाहीं लौकिक में वि
षयादिक सुख तातें करि निकम लगो हिक सुख सो प
रिपूर्ण भये संसार में परे दुःखी होइ। श्रीआचार्य
जी महाप्रभु सदा एव स्वआनंदरूप हैं सो श्रीगुसांई
जी सर्वोत्तम में कहे हैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को
म आनंदाय नमः परमानंदाय नमः इत्यादिक वचन
के भाव सों जानने। सो श्रीआचार्यजी की नामाव
ली में नाम है आनंदाय नमः मूर्ताय नमः। यह श्रीआ
चार्यजी को स्वरूप है सो मूर्तिवंत आनंदमय है सदा
कर सब भांति भाव सों प्रेम सहित भजन करें तहां
ई कहे है जो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी के पद पुष्टि
मार्ग में है सो सरारजीव श्रीआचार्यजी महाप्रभु

कोआश्रयकरिभजनसेवाकरतहैं औरजुमनहेभाव
सोंभजनकरोसोकह्यों याभांतिकोईकहे सोनहींव
कहनहैं श्लोक॥ भजनंभावरूपस्यभावोनैवोपपद्यते
चेतस्तत्प्रवणंसेवाभावोनैवोपपद्यतेस्वतएवनिरू
पिता॥ ३॥ याकोअर्थ॥ अर्थकहतहैंजोभजनसोसे
वाभावसोंकरैकहितैभावविनाओमानसीफल
रूपनहोइ॥ तातेतनुजावित्तजाभावसोंकरैतवमान
सीफलरूपसिद्धिहोइ॥ सोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुसि
द्धांतमुक्तावलीग्रंथमेंकहेहैं॥ कृष्णसेवासदाकार्यामा
नसीसापरामता॥ सर्वश्रीकृष्णकीसेवाकरौ तिनको
मानसीसेवासिद्धहोइ कोनभांति॥ चेतस्तत्प्रवणंसे
वातत्सिद्धैतनुवित्तजा॥ तेसेनसीकोप्रवाहरात्रिदि
वसएकरसचलेंताभांतिअष्टप्रहरचित्तसुमानसी
तिनकीसाधनकहेतनुजावित्तजाकरैभावक
रितवहीसिद्धहोइ॥ तनुजावित्तजाहूभावसहितम
नलगाइकेंकरैतवहीवनेतवभावसिद्धहोइया
भांतिश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनिरूपणकीएहैं॥
मानसीसेवासिद्धभईहोय॥ तिनकेलक्षणकहेहैंकेसेंजा
नियेंसो आगिलेश्लोकमेंकहतहैंश्लोक॥ तस्यात्
विस्मृतिर्भाव्याजगतःसर्वथाध्रुवं॥ तद्भावेमानसी
तुसेवनान्नैवसिद्धतिः॥ ४॥ याकोअर्थ॥ तनुजावित्तजा
सेवामनलगाइकेकरैसदातवसगरोजगतदेहसंवं
धीपदार्थकीविस्मृतिमनमेंसववरिजाय॥ मानसी
सेवाकोयहीभावहैंजोसगरेजगतकोभुलावेसर्वथा
यहनिश्चयजाननो॥ अपनीदेहानुसंधानकोभूलि
जाय॥ खानपाननिद्रादियाभांतिभावाविष्टहोय म
नमेंसेवाकारिस्वरूपानंदकोअनुभवकरै तवजा
नियेजोभावरूपमानसीसेवासिद्धभई॥

प० नुजा वित्तजा सेवा होते दुःख भयें तो मानसी कहते सि
द्ध होइ तनुजा वित्तजा सेवा में बाधक बहुत है सो क
हत हैं श्लो० नन्वाधिकानीन्द्रियाणि विषयाश्चालौकि
कानि प्रतिबंधस्तथोद्वेगो भोगो प्यत्रैव लौकिके ३ या
को अर्थ तनुजा वित्तजा सेवा मन लगायकें करें तामें
सो इंद्री बाधक हैं काहेतें इंद्रीके देवता हैं तिनको वि
षय प्रिय है सो भगवत्सेवा में इंद्री बाधक करत हैं या
को भांति सेवा करत में विषयादिकनकी बुद्धि होइ लौ
किक बुद्धि तो यह जो सेवा तो नित्य ही करत हैं घर को लौ
किक कार्य हू करनो है सुखहू बहुत है या भांति बुद्धि लौ
किक मानि होइ तब सेवा में तें मनको उद्वेग होइ सो जि
सें बनें तैसें वेगि करि श्रृंगार करावें तब श्रीठाकु
रजी तो मनकी लौकिक बुद्धि जानें सो सेवा में प्रति
बंध करें ऐसो लौकिक वैदिक कार्य तथा विषयादि
कके कार्य मन में प्रेरें जो सेवा में प्रतिबंध होइ मन उ
द्वेग तें प्रतिबंध होइ तब भगवत्सेया देहतें तनुजा वि
त्तजा न बनें पाछें खानपानादि विषय भोग में मन वे
लें पाछें विषयादि करें पीछें केवल लौकिक होइ जा
इ सो सेवाफल में श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे हैं उ
द्वेगः प्रतिबंधो वा भोगो वा स्यात्तु बाधकं इत्यादि व
चनसों जाननो जो इंद्री को विषय में मन होइ ताकरि
प्रथम उद्वेग पाछें प्रतिबंध पीछें भोग पीछें केवल लौ
किक नहीं कोई कहै जो इंद्रियको विषय बुद्धि सेवा में क्यो
होत है न होय ताको कहत हैं श्लो० दुष्टानामेव वा
पि दुःसमार्गेण भवेदेवासत्संगात्सर्वथाहि भाव बाध
क इष्यते ३ याको अर्थ अब कहत हैं जो इंद्रियादि
कन में दुर्बुद्धि विषयादि होत है एक तो दुष्ट प्रानीकी
सनाकी ... ताको भजन करें अथवा दुष्ट क्रियाकं

रिअन्नखावैभलगावरी।तथाअसमर्पितखाइ।तथाअ
सत्वहमुखकोसंगकरैयेतीनोसर्वथाहीबाधककरै
निश्चयासोनारत्यारेव्हतहै।दुष्टअन्नवहुतबाधक
है।सोपद्मपुराणमेंकहेहै।अवैष्णवानामन्नंचपति
तान्नंतथैवच।अनर्पितंतथावैष्णोसमांसमहशांभ
वेत्।।गृहनिवेद्यपयोमुक्तेहस्यपरमात्मने।पूतानिपुन
रत्तस्मिनरवैसात्वतीयमा।।इतिवचनात्।।अवैष्णवको
अन्नहोइ।तथापतितचांडालादिकनकोयोधोबीनीच
कोअन्नतथाअसमर्पितअन्नयहमांससमहशानहै
एसोअन्नखातेंइंद्रीबुद्धिसबैनष्टहोयजाय।असुर
वतहोइ।तथाअसमर्पितअन्नकोखायतोपितर
सहितनर्कमेंजाय।तातेंश्राद्धहूमेंसाहीअन्नसौंक
रै।औरकूर्मपुराणमेंकहेहै।अनर्पयित्वागोविंदेयो
भुंक्तेधर्मवर्जितः।श्वानविष्टासमंचान्नंनीरंचसुर
यासमं।।इतिवचनात्।गोविंदजोश्रीकृष्णकोअर्प
विनाअसमर्पितजोअन्नखातहैसोतसकलधर्मक
रिरहितहै।उहअन्नश्वानकेविष्टासमानहै।उहखान
हारोअसुरहै।निश्चय।सोदुष्टसंगतेअसमर्पितअन्न
खाइ।तातेंयहतीनबाधकहै।एकतोदुष्टकोअन्नतथा
असमर्पिततथाअसत्संगतो।अदुष्टसंगयाकरिअ
न्नसंबंधहै।अतवरेंद्रीसबबहमुखहोइजायवि
षयकेध्यानमेंतत्परहोइ।तातेंवैष्णवहोइमनमेंवि
चाररावैजोदुष्टकोअन्नअसमर्पितअन्नसंबंध
कबहूनकरी।।४।।अथागेअवअपरहेहै।श्लो।
तस्मात्प्रयत्नाद्दुष्टसंगस्त्याज्यवाचा।निश्चयनरीयज
नसमगोस्थितोमार्गेतथागुरौ।३४।याकोअर्थ।अव
कहतहैजोदुष्टकेसंगकोत्यागकरैक्यूंहैतोदुष्टके
संगतेबुद्धिविगरैअसमर्पितहूदुष्टकेसंगतेखाइ

शि.प. सैन्याश्रय दुःष के संगतें होइ तातें दोषकोमू

५८ गको त्याग करे। औरश्री आचार्यजी महाप्रभूके
विंदको आश्रय करे। और पुष्टिमारगीयकी रीति
मैं स्थिति होइ गुरुके हैता प्रमान क्रियासर्व करे
पाचो प्रकार से युक्त करे। प्रथम तो दुःष के संग के
ग। १ और श्री आचार्यजी महाप्रभु के चरणकमल
आश्रय होइगो। तीसरे भगवदीयको संग। सो श्री
चार्यजी महाप्रभु की कृपा तें मिले। पुष्टिमार्ग में स्थित
३ भगवदीय के संगतें गुरु के हैता प्रकार सेवा अपने
तें करी तिन ताही। यह पांच प्रकार भगवदीय वैष्णव के
... हैं ३४ औ गोच वचारह वइ न है। सो ...
विषय वैराग्य परितोषं विभाय वा सदानंद सदानं
पू तथा तैं सदा भजेत् ॥ २५ ॥ या ... विषयमें वैराग्य
होइ तब ही सर्व धर्म बनि आवै। सो श्री आचार्यजी म
हाप्रभु संन्यास निर्णय में कहे हैं। विषया क्रांत देहानां
नावेशः सर्वथा हरेः इति वचनातें जा जीव के हृदय में
विषय को ज्ञान होइ देहसों विषय की कामना होइ
ताके हृदय में श्रीजी भगवान को आवेश सर्वथा न होइ
तातें विषयादिक देह संबंधी कार्य वैराग्य होइ और मन में
संतोष होइ यथा लाभ संतुष्ट जो भगवद इच्छातें प्राप्त
होइ ताही में संतोष होइ जब विषयादिक में
वैराग्य होइ तब ही संतोष होइ और लौकिक वैदिक
देह संबंधी की चिंता छोडि सदा आनंद में रहे
जो या हृदय में संतोष होइ तब हृदय में आनंद प्रा
वे चिंता न होइ तब भगवद धर्म में मन लागे ताही
तें श्री आचार्यजी महाप्रभुन ने रत्नग्रंथ में कहे हैं चिं
ता कापि न कार्या निवेदितात्मभिः कदापि निवे
दिन भक्त हैं सो चिंता न करे सदा आनंद में रहे

तवसदाआनंदरूपजोश्रीकृष्णरूपफलहै।श्रीवृंदावनमेंव्र
जभक्तसंयुक्तवेष्टितफलरूपतिनकीसेवाकरैसदा।सर्वो
परफलप्राप्तिहोय।२५।इतिश्रीहरिरायजीकृतसिद्धां
तताकीटीकाश्रीगोपेश्वरजीकृतसंपूर्णं।।६।।अपो
चवश्रोकअपरकहेजोविषयमेंवैराग्यकरियथालाभ
संतोषकरिप्रसन्नतासोसुखरूपभगवत्सेवाकरै
तौफलप्राप्तिहोय।।सोश्रीकृष्णफलरूपहैंवेकोजव
विचारकरैतवहीवनेकृष्णकेमनकोअभिप्रायताको
जानिवेकोजीवसामर्थनाहीहैकौनभांतिकहाफ
लदेंगे।सोआगेसिद्धांतमेंकहतहैं।श्लोक।।कोवे
दकीदृशकृष्णाभिप्राय:स्वजनेमनाक्।स्वानंदसिद्ध्यै
रातिनिजानिर्दर्शनादिषु।।१।।याकोअर्थ।।अवश्रीकृष्ण
केअभिप्रायजानिवेमेंवेदहूसामर्थनाहीहैंतौअन्न
नपुकारनहैंजद्यपिभगवानकीस्वासतेप्रगटहैंभग
वतस्वरूपवेदहूहैं।सोश्रीकृष्णकेअभिप्रायजानिवे
मेंनाहीसामर्थहै।तोश्रीआपनीमेंसुबुद्धितेकहाजा
नूंगो।तऊश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकीकृपातेकछु
मेंआपनीमतिअनुसारकहतहौं।काहेतेवेदहैंसो
प्रभुकेवंदीजनहैं।सदागुनगावतहैंवाईश्वरता
कोमाहात्म्यकहतहैं।औरमेंतोश्रीकृष्णकोजनदास
हूं।तातेंप्रभुकीकृपासोपरहें।तातेंकछुआपनीम
तिअनुसारकहतहौं।श्रीकृष्णआनंदरूपहैं।सोआप
नेआनंदजवनखिजोपुष्टिमार्गीयनिजसेवकहैंतिन
कोअनुभवकराइवेकीइछाकरतहैं।तोफलतेभक्त
कोप्रभुआनंदसिद्धिकोविचारतहैं।तवऊनभक्तको
श्रीकृष्णकेदरसनकीआर्तिहोतहै।तवउहभक्तकी
रतिजोप्रीतिसवओरतेछुटिकेश्रीकृष्णकेदरसन
मेंहोतहै।तातेंयहजाननोजोश्रीकृष्णआनंददान

से.प.
५८

कोविचारसेवककों तिनसोंअपनेदरसनकीआर्तिसिद्ध
रावें। तहांसेवककेहृदयमेंतापहोय जोमेंकबश्रीकृस्नके
दरसनकरूंगो। वाहीमें सुमरनकीर्तनसेवासबैजानने
ताकोंभागवतधर्मकहिवेमें प्रीतिहोइ प्रभुकेदरसनवि
नारह्योनजाइ॥ याकोंअबऔरकहतहें॥ श्लो॥ सं
सारभावरागायलौकिकार्तिस्तथापुनः॥ महाभावायव
स्वार्तिश्रीशस्तांप्रयच्छति॥ अर्थ॥ अबकहत
हें जो यहसंसारदेहसंबंधीजितनोपदार्थहे तिनमें
अनुरागकोअभावहोइ॥ तिनमेतेंरागकोअभाव
होइ सोऊश्रीकृस्नकीकृपातें लौकिकसंसारतेंजब
छूटे जबश्रीकृस्नकरुणाकरें औरलौकिककार्यकी
आर्तिछूटे सोऊश्रीकृस्नकीकृपातें औरमदकोअभाव
होइ अभिमाननहोइ जोमेंहीसेवककर्ताहों पेहश्रीकृस्न
कीकृपातेंहोइ औरअपनेसरीरकीआर्तिदुखसुख
खानपानकीआर्तिनहोइ येहश्रीकृस्नकीकृपातेंजा
नियें॥ याकोंअबऔरकहतहें॥ स्लो॥ संगाभा
वायबंधवार्तिर्दैन्यासिद्ध्यै॥ महाभावायभग
वान्साधनार्तिंददातिहि॥ अर्थ॥ अबसंगकोअ
भावहोइ भगवदीयकोसंगनहोइ तऊबंधुजोदेह
संबंधीकुटुंबकीआर्तिनहोइ सुतहोअपनेहृदयते
ज्ञानउपजे जोयेदेहसंबंधीनकहासंबंध हेमेरोतो
संबंधीभगवानहें॥ कामतोअनत्योहें याभांतिस
त्संगविनाहीसुतहबंधुआर्तिनहोइ॥ येहश्रीकृस्न
कीकृपा सत्संगविनासबठौरजीवआर्तिकरतहेंके
सतनसाताते छूटेवे भगवत्कृपाते छूटेऔरदेहार्ति
जोअपनेपरेसमेकुटुंबतथाअपघरमित्रतथाआप
जहांरहतहोइ सोदेशहूकोदुःखसुखनहोइ मनमेंआ
र्तिनहोइ सोश्रीकृस्नकीकृपातें औरदैन्यतातेसिद्धहो

इसोउ श्रीकृष्णकीपरमकृपातेजानने।।काहेतें प्रभुप्रसन्नक
रिवेको दैन्यनाहीसाधनहै सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु
जी सुबोधनीजीमें लिखे हैं आचार्य चरणौ जो दैन्यं त्वतो
साधनं दैन्यतारूपसाधनतें प्रभुप्रसन्न होइ सो दैन्य
तो श्रीकृष्णकीकृपाते सिद्धहोत है। औरसो हे कोऊ भाव
होइ परंतुश्रीकृष्णबिना औरहू न सोहु होउ। औरउत्प
त्तिमित्रपाइ नहेपरलोकयह लोकमेंयह सो हेन
होइ येह श्रीकृष्णकीकृपाते होइ। औरभगवानके मि
लिबेके साधन भगवत्सेवा स्मरणकीर्तन जपपाठ भ
गवद्वार्ता दिपुष्टिमार्गकीरीतितें साधवेंनसोऊ आपुश्री
भगवान कृपाकरिके दानदेकरावें न तब ही बनिआवें
३ आगें औरहू कहत हैं श्लोक प्रारब्धभोजनो
र्थवा परीक्षार्थ विलंबनात् निर्वाहार्थं तथावैरसाध्या
योनिश्चयःतुनि[illegible]धारणमातिप्रसाने पिपानं ददायनः स
माश्रयेनमोनकुयोहृदआचार्यसमाश्रयो।।पश्चाक[illegible]
परकहेतापक्रार लौकिक आत्मिक रायभगवत्संबंधकी
आर्तिश्रीकृष्णजबकृपाकरिदानकरेंतापाछें श्रीकृष्णचे
द्र परमानंदरसात्मकस्वरूपकोदानकरें जहांताई इतनी
आर्तिसिद्धि न भई होइ नहांताई परमानंदको दाननिश्च
य नहोइ सो सगरेसाधनमें जीवके हाथ एकहू नाहीहै
श्रीहरसेही सर्वसिद्धि करि पाछे पुष्टिमार्गको परमफल प
रमानंदरस प्रभु दानकरतहैं तहांकोइ कहै जो यह आश्र
यतु सबकाहेतें कहो जो सबै श्रीकृष्णही करत है सो तहां
श्रीहरिरायजी कहत हैं जो यह आश्रयमें अपनी युक्ति
तेनाहीकह्योहै। सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके चरणक
मलको दृढआश्रयकीयो है ताकरिकें महाप्रभुकी कृ
पाकरि अपनो अभिप्रायजनायो है सो अभिप्रायसहित
मैं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके चरणकमलको दृढआश्र

५॰ य अपने मन में करि यह आश्रय निरूपण कीयो है यह क
रि अपने भक्तन कों यह जतायो जो श्री आचार्यजी महाप्र
भू के चरणकमल को दृढ आश्रय करेगो तिनको श्री ठाकुर
जी अपनो आश्रय देके अपनो परमानंद को दान करेंगे
तातें मुख्य श्री आचार्यजी महाप्रभू के चरणकमल को आ
श्रय करनो यह है॥ ५॥ आगे अब चौथो कहत हैं॥ श्लो॥ अख
ण्डः कृष्णसम्प्रदानदो निजानंदो प्रदास्यति॥ मदाश्रयेवस्था
नयं सर्वेश्वातकः पतिवत॥ ४॥ याको अर्थ॥ श्रीकृष्ण
जे हैं स्वतः आपुही सदा आनंदरूप हैं परम दयाल हैं
सर्व प्राणीमात्र को आनंद ही देत हैं॥ सो श्रीकृष्ण सो
अपने दास को आनंद दान करें सो उचित ही है दास
परतो और अधिक दान कृपा करिकें देइंगे यह निश्चय
श्रीकृष्ण को भरोसो है॥ श्रीकृष्ण के नाम ते सगरो कार्य सि
द्ध होइ॥ यह श्रीभागवत द्वादश स्कंध में श्रीशुकदेवजी
कहे हैं॥ श्लो॥ कलेर्दोषनिधे राजन्नस्ति ह्येको महा
न्गुणः॥ कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तबंधः परं व्रजेत्॥ इति
वचनात्॥ जद्यपि कलियुग दोष को स्वरूप है तऊ श्रीकृष्ण
नाम ते संसार दुख तें छूटि जाय भक्ति प्राप्ति होइ सो भ
गवदीय गाइ हैं॥ राग॥ बिलावल॥ करिहें कृष्णनाम प
हाइ अधमता रे आनि अपनी मरत विनत कला
य॥ १॥ अधम अग्नि तउ थोरे सो कहा तेरो भार कौ न उ
द्धिम आपने निज करि सकी तो निस्तार रानेक हू धोवे
रे भरोसो बसत जाके गाव सो क्यों मम ता छोडि दे
जीवन नाको नाम॥ २॥ बिरध विविध बुलाइ वाको रि
हरि निधरि दे लाज॥ तो पे गदाधर निगम आगम व
कत कित वे कागज धरासेप भुकी नाम स्याल हैं॥ तहां प्र
भु दया करि अपने भक्तन कों आनंद देहें॥ सो कहा
कहनो॥ तहां दृष्टांत कहत हैं जो चात्रक पलीवतू द

२विश्वासकरिहैं।काहेतेचात्रकपक्षीजडकोस्मर
णकरतहै।सोमेघवाकोमनोरथपूरनकरतहै तो
श्रीकृष्णतोपरमआनंदरूपहै।स्याकरिसवकरेंगे
ईश्वरागेंश्रवणऔरसूलकहतहै।स्लोक।।लौकिकानेर
णाननपरमानंदचिंतनात् यथानगणायेद्वागीतिकंभे
षजनभक्तणांथयथोऽर्थ।लौकिकार्तिवृहदेहसंबंधीसं
सारकीआर्तिकरिविहपावोतहोंप्रभुकोचिंतानहोइस
गुणार्थजवयहजीवआर्तिकरैं तवप्रभुकोचिंताहोइता
तेलौकिकार्तिविस्मयवोंसर्वथाहीनाहीकरतव्यहैप्रभु
कीआर्तिविप्रयोगकरैं सोऊपरकहेजैसेचात्रकपक्षी
रात्रिदिवसरचात्कैजलकोलीयेरटतहैं तैसेहीपुष्टि
मार्गीयवैस्नवरात्रिदिवसविप्रयोगरसकप्रभुकेऔ
रेपरमानंदरूपभगवानकेगुणविचारिविचारित्र
पनेदोषविचारिविचारिचिंतनकरैं तवप्रभुकेहृ
दयमेंदयाआवे सोनिरोधलक्षणग्रंथमेंश्रीआचा
र्येजीमहाप्रभुकहेहैं।क्लिश्यमानानजनानदृष्ट्वाकृपा
युक्तोयदाभवेत।अपनेजनकोजवविप्रयोगकेस
प्रभुदेखतहैं।तवप्रभुकृपाकरतहैं तवअभिमान
देखतहैं।तवदंडदेतहैं।सोश्रीभागवतरासपंचाध्या
ईमेंवर्णनहै।जोव्रजभक्तनकोमदभयो।तवअंतर
ध्यानप्रभुभए।पाछेंभक्तनकोअत्यंतक्लेशविरह
देखें।तवश्रीठाकुरजीकृपाकरिप्रगटभए।तैसेही
यहपुष्टिमार्गमेंव्रजभक्तनकेभावकरिमनमेंक्लेश
होइ।तवप्रभुकृपाकरैं।तातेंलौकिकार्तिछोडिप्र
भुकोविरहकरिपरमानंदकोचिंतनकरनो।प्रभुकृ
पाकरैं नहोइस्थांतदेतहैं।ताकेरोगहोइ।सोपतिकौऔ
षधीकोपानहै।रोगजायवेकेअर्थ।यद्यपिऔष
धवहुततिक्तकडुईहै।सोरोगीप्रीतिसोंखातहैं।जे

सेंहीनावेंसेंसंसाररूपकामक्रोधमदमत्सरनादिदुख
रूपरोगसहूमजानभयोहै सोरोगनिवर्त्तकरणार्थप्र
भुकौविप्रयोगरूपऔषधखाइ तवप्रभुकृपाकरै
सगरोदुखमिटिजाइ तातेंविप्रयोगप्रभुमेंहोयत
वहीप्रभुप्रसन्नहोइ अवआगेंकहतहैं श्लोक॥
आहितंनिजभक्तानांविदधातिहरिर्नहि समस्ता
नांसखास्वीयभक्तानांनकथंभवेत् ॥ याकोअर्थ
श्रीहरिसकैसें अपनेनिजभक्तनकौं अहितजोवुरो
कवहूंनकरें सदाहितहीकरेंगे सोमहाभारथमेंभी
आपरकृपाहीकरी जैसेंनंदरायजीअंबिकापूजनगये
अन्याश्रयकीयो ताकौंसुदर्शनसर्पनेंग्रसलीये
ये पाछेंप्रभुके निजभक्त हैं नंदरायजी तातें कृपा
करिसुदर्शनसर्पनेंछुडाये तैसेंहीपुष्टिमार्गीय
भगवदीयकौंकछुदोषनिवर्त्तकरनार्थेदुखप्र
देहितोमनमेंचिंतानाहीकरनी सोपाछेंप्रभुहित
हीकरेगे काहेतेंसमस्तजीवकेपालनकर्त्तासखाभ
वानहैं सोअपनेभक्तकेऊपरकृपाकरैयामेंकहाआ
श्चर्यहै निश्चयअपनेभक्तकेऊपरकृपाकरतआए
हैं सोअवहूंकृपाकरेंगे याभांतिपुष्टिमार्गीयवैष्ण
प्रभुकेगुणविचारिस्मरणभजनकरें पदसिद्धि
भयो ॥८॥ इतिश्रीहरिरायजीकेरचेशिक्षापत्र
टी॰ श्री पत्ररो कृत संपूर्ण ॥१०॥ अवऊपर
कहिआये तो प्रभुअपनेभक्तनकौं वुरोकवहूंनकि
ो हितहीकरेंगे परंतुभक्तिमार्गकीरीतिकौंनष्ट
सोलोगवर्णनकरतहैं जोयाभांतिभक्तरहैं लौ
सर्वदासर्वभावेनहेतुभूतेप्रभुसेवया श्रीमदाचा
र्यचरणैःस्थाप्यतांनश्रयमनेः ॥१॥ याकोअर्थ अव
भगवद्भक्तकेलक्षणकहतहैं सर्वदासर्वकालमें

ारसर्वभावमेंव. रिवें भूतजो प्राणीहैं तिनकोंसर्वथाहि
हीकरनौ प्राणीमात्रकोंसुखहीहैनो मनकरिवचनक
रिक्रियाकरिइत्यादिककरिजितनोअपनेमेंसामर्थ्यहोइ।
वनिश्चावेंतहांताईजीवमात्रकोहितकरनौ।ग्याराहकनी
एकयहभक्तजनकेलक्षण।।औरश्रीमहाचार्यजीश्रीवल्ल
भाचार्यजीअपनेआचार्यकेचरणकमलमेंअपनेमन
कीस्थितिकरनी।एकतौआचार्यजीकेचरणकमलको
दृढआश्रयकरनो।।सोअपनेमनसोंतनत्ययनाहोइका
रनौमनवचनकायसर्वप्रकारश्रीआचार्यजीमहाप्रभु
केचरणकमलमेंहीमनराखें।।यथाआगेंअबऔरहृकेहृत
यें।श्लोक।।नतएवकृतार्थस्यनिश्चयःक्रियताहृदि
श्रीसुखत्वंविनिश्चियमन्यत्सामवादिश्रु।भयाकोअ
थें।।कृपरवहैजोप्राणीमात्रऊपरस्यारारखें।औरश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभुकेचरणकमलमेंअपनोमनराखेंसोकृ
तार्थरूपहैनिश्चय।परमभगवदीयहैं।तातेंहृदयमेंप
हृदीजु।क्रियाविचारिनिश्चयकरनो।प्राणीमात्रपरदया
औरश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकेचरणकमलकोआश्र
यहनिश्चयकृतार्थहोय।यहसिद्धांतवेदसास्त्रगीताभ
भागवतमेंप्रमानहैं।तामेंविश्वासनहोइ।ताकोनि
मत्रसुहीजाननो।आगेंग्रंथऔरहूकहतहैं।श्लो
श्रीकृष्णसर्वदाध्येयःसर्वलीलासमन्वितः।भनेस
यस्थापीसवलःपुरुषोत्तमनम।।श्यायाकोअर्थ।।श्रीथ
फलात्मकतिनकोस्मरणसदाकरनो।।लीलास
भक्तनसहितसुमरनकरें।काहेतेंरसात्मकश्री
कृष्णभक्तनकेसंगअष्टप्रहरलीलाकरतश्रीह
सुमरनकरिगातावरिकेभक्तकेहृदयमेंस्फु
यहरीतिहैजाकोआ
तमास्थितिरहें।काहेतेंहृदयमेंसंसारभयोश्री
लौकिकमें

भुकों सुमिरन करैं तो प्रभु तगरे न्यु पिटैं॥ तहूं भक्त के हृ
दयमें लीला सहित प्रभु स्थित हैं॥ अब यों रूं वाद् तहैं
श्लो॥ गुनगान तथा दुखभावने दैन्यमें वचः तथात्या
गः सिद्धहस्ताः कृत्यमे तद्वृतुं प्रयं मया॥ श्लो॥ ४॥ श्रीमत्प्रभु
रनों की लीला को गुनगान करें॥ १॥ विप्रयोग दुःख की
भावना करै॥ २॥ दैन्यता करै॥ ३॥ ताकरि सब लौकिक
वैदिक त्याग करै॥ ४॥ यह च्यारों कृत्य आवश्यक हैं॥ क्यों
कारैं तें जो प्रथम गुनगान नहीं करैं॥ ताकरि कें॥ तन
दोष हैं॥ तिनके भस्म होइ जाय॥ शुद्ध हृदय होइ त
ब अपने दोष पुरें॥ अपने को तुच्छ जाने प्रभु को सर्वो
परि जानें॥ तब दुख हृदय में होय॥ जो मैं तो कछु साधन
नाहीं कीयो॥ मेरो श्री प्रभु के सें कैसो॥ या भांति वि
चारि कें निःसाधनता की भावना मन में होय॥ तब दैन्य
ता होइ॥ तब कछु प्रभु बिना और सुहाइ नहीं॥ सो लौ
किक वैदिक सब त्याग होइ॥ यह चतुर्थ प्रकार करै॥ ता
को पुष्टिमार्गीय फल होय॥ प्रथम साधन ए च्यार करै॥
पाछें यह च्यार फल रूप सिद्ध होइ॥ सो आगें श्लोक में क
हत हैं॥ श्लो॥ गुनगाने भगवतानुसेवया दुखभा
वने तु दैन्यभावनादैन्ये त्यागो विरह भावना॥ पू
र्वो॥ ५॥ अपरस्तु गुनगान सो साधनरूप ताकरि सर्वदा
बहिर होइ॥ ओर फल रूप गुनगान भगवान के दरसना
र्थे जैसें व्रजभक्त वेणुगीत युगलगीत गायकें निवाह क
रत हैं॥ तैसें ही विप्रलंभ सेवा के अनोसर में गुनगावत हैं
जो कछु समय प्रभु की सेवा को होय॥ यह दुःख की भाव
ना होइ॥ यह गुनगान तें सें ताको दुख मन में होइ ताक
रि निःसाधनता सिद्ध होइ॥ कि न नीं हूं सेवा करे परंतु
मन में यही दुखा है॥ जो जन्म सगरो वृथा ही गयो॥ क
छु भाव सों सेवा न बनी॥ यह दैन्य ता सिद्ध होइ॥ या भांति

दैन्यताकीभावनाकरतकरतसर्वदेहसंबंधीपदारथमेंत्या
गउत्पन्नहोइ॥ तबविप्रिसुद्धविप्रयोगविरहकीभाव
नाहोइ॥ तबवेंभगुस्वफलपाछेंसर्वलीलाकोअनुभव
होइ॥ येहचतुष्प्रकारफलप्राप्तिहोइ॥ ॥ आगेंअव
औरहकहतहैं॥ श्लोक॥ एचतुष्टयंसिद्धयहिनान्यदपे
हितं॥ लदेस्यमूलंसत्संगात्तदभावेनसिध्यति॥ ॥ या
कोय॥ ॥ अपरकेंयहचतुष्प्रकारजाकोंसिद्धहोइ॥
ताकोंओरसाधनकीअपेक्षाकछूनाहीं॥ जातेंप्रथ
मगुनगानकरें औरभगवत्सेवाकरिदुःखकीभाव
नाकरें दैन्यताहोइ भावनाकरों॥ सर्वत्यागकरिविप्र
योगविरहकीभावनाकरें॥ यहसाधनपरमफलरूप
है॥ सिद्धभयेपाछेंइनसबसाधनकीअपेक्षानाहीहै सो
यहचतुष्पदार्थफलसत्संगातेंसिद्धहोइ सबकोमू
लसत्संगहै॥ सोश्रीभागवतमेंकहेहैं॥ प्रथमस्कंध
सोनकवाक्य॥ तुलयामलवेनापिनस्वर्गंनपुनर्भवं
भगवत्संगीसंगस्यमर्त्यानांकिमुताशिषः॥ एकलगाइ
भगवदीयकोसंगहोइ॥ तासुखकेसमानस्वर्गलोक
तथाअपवर्गसुखमोक्षपर्यंतसबतुच्छहें॥ औरएका
दसस्कंधमेंभगवानउद्धवजीप्रतिकहेहें॥ निरोधयति
मायोगोनसांख्यंधर्मउद्धवनस्वाध्यायस्तपस्त्यागोन
चापूर्तेनदक्षिणा॥ व्रतानियज्ञश्छंदांसितीर्थानिनियम
मायमा॥ यथावरुंधेसत्संगः सर्वसंगापहोहिमां॥ २॥
सत्संगेनहिदैतेया यातुधानाखगामृगा॥ गंधर्वाप्सर
सोनागाः सिद्धाश्चारणागुह्यकाः॥ ३॥ इत्यादिवचना
त भगवानकहेहें॥ उद्धवमोकोंसांख्यधर्मःस्वाध्याय
तपत्यागयज्ञतेंछंदतीर्थेनियमयमः इत्यादिमोकों
वसनाहींकरतहें॥ औरसत्संगाकरिजीवमोकोंवसक

हैं नारायणदास ब्राह्मण गंधर्व के पुष्टि सिद्ध वासना मनुभाव
सिद्ध नाथजी नीचान तें सर्व साधन को मूल सत्संग है सत्संग
तें इह प्रभाव हृदय आरूढ होय भाव की सिद्धि होय तातें म
दैवी जीव को सत्संग अवश्य ही करनो यह सिद्धांत मर्यादा
मार्ग की रीति सिद्धान्त तातें यह ... पेख्यो
जतन श्री हरिराय जी कृत सिद्धान्त ... चतुष्प्रकार साधन
रूप ... श्लोक ... भक्ति चतुष्प्रकार भाव
कह्यो सो फल ... गुनगान प्रभु को तातें भाव
सेवा स्वरूप की भावना पाछे स्वरूप ताकी भावना
पाछे चतुष्टय ... पद चतुष्टय सिद्ध भयो पाछे को
... यह जीव को है सो
मर्यादा ... भयो ... कहा ... उहर जीव को है सो
आरती पत्र में कहत है सो ... भाव की ...
तें स्वामिनी जी ... मुहुर्मुहु ताप क्लेश ... श्रीमद
... पुष्टिमार्गीय भगवदीय
... श्री कृष्ण के वियोग में श्री
... भावना चित्त में करे श्री कृष्ण के वियोग में श्री
स्वामिनी जी को नप्रकार वारंवार जल्पना करत हैं सो
भाव की भावना करे सो प्रेमामृत में कहे हैं ...
कृष्ण विरहात् ध्यायंति प्रियसंगमम् मनावास्य निरा
सायं जल्पती है मुहुर्मुहु श्री स्वामिनी जी श्री कृष्ण
को मिलन अर्थ विप्रयोग करि वारंवार जल्पना करत
हैं सो भाव की भावना करे सो प्रेमामृत में कहे हैं ...
कृष्ण विरहात् ध्यायंति प्रियसंगमम् मनावास्य
निरासाय जल्पती है मुहुर्मुहु श्री स्वामिनी जी श्री कृ
ष्ण जी के मिलन के अर्थ विप्रयोग करि वारंवार जल्पना
करत हैं यह भाव सर्वोपरि है तैसे ही यह पुष्टिमार्ग
... ताप क्लेश श्री स्वामिनी जी
... तें इन को प्रागट्य
श्री आचार्य जी महाप्रभु ... ताप क्लेश
पुष्टिमार्ग ... ताप क्लेश रूप ... तातें विरह करि
यह मार्ग को फल सिद्ध है तातें विरह को ...

मिनीजीप्रकारभावना।सहित अनुभव करत हैं स
भावकीभावनाकरनहि श्रीस्वामिनीजी जा भांति व
रतहैं सो आगे कहत हैं॥१॥गोवर्द्धनेरे हे गोपीर
गोकुलानंदनायक।गोविंद गोपवनिताप्राणाधिप
यानिधे॥२॥ अर्थ॥ अब श्रीस्वामिनीजी कहत
हैं गोपीजनकेईस हमको दरसन देहु काहेते तुम
गोपीविषेईश राजा हो तातें राजा अपनी प्रजाको
दुःख न देहि सुखही देतहैं यह मर्यादा है तिसेही हम
हम तुमारी प्रजा हैं तातें हमको दरसन देहु दुःख
खिरो। और तुम गायनके मूल तिनके आनंददाता
हो। सो गायहू तुमारे दरसन बिना बहुत व्याकुल हैं
तातें गायनको दरसन देहु तथा वनमें गाउ चरा
गायनको आनंद दीजे। अब वेगीपधारि हमको आ
नंद देहु। काहेते गोविंद हो। तुम जैसे इंद्र हो इंद्र भाग
गनको वरहने है तैसेही तुम व्रजभक्तनको सुखदेहु
काहेते गोपवनिताके प्राणाधिपति तुमारे द
रसनके मिलेते गोपवनिता जीवत हैं।तासूं श्रीस्वा
कृपानिधि हमको वेगिही दरसन देहु यों भांति स्वामि
नीजी लासहित प्रभुके नाम लेके विलाप करत हैं ना
म पांच भये॥२॥ अब औरहू कहत हैं श्लोक॥ गो
पालपालित निजव्रजव्रजजनसुखाम्बुधे परमानं
दनंदादिरूचिरोत्संगलालित॥३॥ अर्थ हे गोपा
ल तुम गायनके पालक हो। और यह व्रज तुमारो है तिन
सबनको पालन करि सगरे व्रजके सुखदाता हो तुम सु
खके समुद्र हो यह व्रज निज जो तुमारो नाम है व्रजभ
क्तपंथी। मायगोपालऊ चैतन्य सबनको सुखदाता
हो। एसे सुखके समुद्र हमको दरसन देहु। तुम परमा
हे

से॰प॰
६४

रक्षनपालनकरतहोंगसेश्रीकृस्नहमकोंरक्षनदेहु
गो॥नाम॥४॥भगो॥३॥श्लो॥ सर्वानंदनिजानंदसमुदा
यमहाशय॥ श्यामोदरस्याद्वैदिननाथस्यापराध
या॥ हे श्रीकृस्नतुमतोसदाहीआनंदरूपहोयजमें
समुदायजीवमात्रकेआनंददाताहो औरयसोदाज
नेदामउदरसोबांधेहैंएसेभक्तनकेवसहोदयाकरि
तुमारोहृदयआद्रभीजिरह्योहै औरदीनानाथहो
जोअतिदीनहोइअनंतहैं जिनकेकोईनाहीहैतिन
केतुमहो औरस्यापराधहो सर्वपरतुमारीदयाहैतो
हे श्रीकृस्नदयाकरिहमकोंरक्षनदेहु नाम॥१०॥भगो
४ श्रीगोधवश्रोरक्षनहोश्लो॥ पुरुषोत्तमसर्वा
गरुचिरसरिता॥ अनंगरूपपरमप्रियगोपवधू
पते॥ प्रया॥ श्लो॥ हे पुरुषोत्तमसर्वनेपरे गएसर्वो
पसतेअंगतुमारेरुचिरहें सुंदरजाअंगकोदरसनदे
नहैनाथजिनकेअंगरहतहें सोभगवदीयसागर
रूपानंदरसरूपहे इनेनापलककोअंगनही श्रीगोव
र्द्धनमेंगापनकोगामातिनरायनेनमनरहतनहिनदिया
मातिसर्वांगरुचिरहैं औरप्रेमकरिपूरितहो सर्वांगमें
प्रेमरसभरिरह्योहै योधिदेवक अनंगरूपपरमसुंद
रहो गोपीजनकोतुमपरमप्रियहो तुमकोंगोपीज
नपरमप्रियहैं गोपवधूकेपतितुमहीहो औरगोप
वधूके गोपकेसे हैं जैसे भूज्योअन्न सो खेतमें
डारेतोउपजेनाहीं नातेवीजकेकाम भुजोअन्न
नआवे देखिवेकोअन्नहैं तैसेंहीगोपहैं तिन
कीवधूनकेपतितुमहीहो ऐसेश्रीकृस्नहमको
रक्षनदेहु नाम॥१२॥भगो॥५॥ श्रीगोवर्द्धनधा
रक्षनहो श्लो॥ व्रजकेअवलंवनतुमहीहोसंसा
रकेजनतुमारेआश्रयहो इहएकतुमहीकोजानत

हैं।औरतुमारेकैसवडेलंवेकुटिलहैंमानोमधुप
पंक्तिआइरहीहैं।औरकमलनिधिहौ।हृदयमेंकोउ
सकलकलानिकोइतनो।सनापहै।औरतुमनेनाकल
निधिसमुद्रहौ।सोकहांलोंइतुमारोप्रतापवर्न
नकरनेंकोंइसामर्थनाहीं।अपनेस्वीयनिजभक्तनकों
विरहव्यथातिकेहरनवारेव्रजभक्तनकेमनहरिवे
मेंतत्पराअपनोसुंदरमुखश्रीअंगदिखाइतथा
अनेकलीलाकरिसमस्तव्रजभक्तनकेमनकेहर
नमैंपरायनऐसेश्रीहमसूमनकोंअवरसनदेहु
ना।सो।२४।भरोधा।आगेयवऔरहूकहतहैं।सो
मनोविनोदभावाद्भावायहृद्यास्थितिवंचली
कृतचित्तस्वभावाद्विलितरूपभक्ता।२५।याकोअर्थ।व्र
जभक्तनकेमनकों।विनोदजो।आनंदकेदानतुमही
करिहवजभक्तआनंदपावतहैं।औरभावकेसमुद्रहो
जाभावसोभजैसोईसिद्धिहो।ईभावकेसमुद्रहो।यापर्व
भावकोपारनपावें।सगरेभावनगतलेंहैं।सोतुम्हारो
कनिकातुमभावकेसमुद्रहो।औरभावहीकरिभक्तनके
हृदयमेंस्थितिविराजतहैं।जोभक्तकेहृदयमेंजोभावतं
होतोईरीतिसौंविराजतहौ।जहांजाइभावनाहीनहोत
ईभावनाहीतहांतोईकछुवस्तुकीसिद्धिनाहींभाव
कीभक्तकेहृदयमेंस्थितिहो।औरअपनेभक्तनकेचि
त्तमेंचंचलतकलायमानकरतोहै।यातुंचंचलहो
भक्तकोअभिलाषकाजगस्नेहकरतेहौ।इतोनहोतेचित्त
कोचलाइदेंअपनेमेंलगावतहो।भावकेस्वभाव
भरेहो।जैसेपात्रमेंथोरोजलहो।इतोडोलायमान
हूलदे।औरपात्रमेंभरोसहूतोहोइतोडोलेनाहीं
सोतुमभावरसकरिभरेहो।तातेंसमस्तभक्तनकेमन

सि॰ प॰

पसैभरिराखोहैं ऐसेश्रीकृष्णमोकोकबदरसनदेहु
नाम ॥ ३४ ॥ भेदो ॥ आगेअवश्रोरहूंकहतहैं ॥ श्लो
कः ॥ महामुग्धमद्भुतस्तन्यपानतत्परमानसः नवनीत
लिप्तमुखपद्मोदिदुग्धार्थसमु ॥ या ॥ को ॥ ३६ ॥ अथपद
पदै लिख्यते ॥ नवनीतमहामुग्धहैं ॥ आपकछुज्ञानरा
खतनाहीं ॥ भोलेभक्तकहैंसो ईश्वरो ॥ प्रभुको प्रेमयसोदा
जीकेदुलाररवत्यातिहीमुग्धमानोकछुमानतहीना
हीं ॥ आश्चर्यसदा दुग्धपानमेंतत्परमनकरिराखत
मेंश्रीयसोदाजीकेस्तनकेदूधपानमेंतत्परमनकरि
राखतराखतहैंश्रीयसोदाजीकेदूधपानमेंलगेहैं मन
॥ आहीमेहैं ॥ मुखमेंनवनीतलिपटिरह्योहै नाकरि
परमसुंदरसोभितहैं ॥ इधकी दुग्धअधरपरलागीहै
ताकरिपरमअद्भुतसोभितहैं ॥ ताकरिअधरसोभायमा
नहैं ॥ ऐसेश्रीकृष्णहमकोकबदरसनदेहुगे ॥ नाम ॥ ३६ ॥ भ
दो ॥ आगेअवश्रोरहूंकहतहैं ॥ श्लो ॥ का ॥ चलत्कुन्तवद
नमदनाधिकसुंदरः ॥ कपोलविलसद्गाकस्तुरीतिल
कोचितः ॥ टीका ॥ अर्थ ॥ सुंदरअलकनकरिआवृतऐसे
वदनकमलसोभायमानहैं ॥ औरसबगरोमीत्यंगामद
नजोकामदेवतेहूंअधिकसुंदरहैं ॥ कोटिकामवारनेयह
सुंदरतापरकरिये ॥ हे ॥ कपोलनपरकमलपत्रला
लघुमकरमादिरागसोसवारेहैं ॥ औरकस्तुरीकोतिल
कभालमेंविराजमानहैं ॥ ऐसेश्रीकृष्णहमकोकब
दरसनदेहुगे ॥ नाम ॥ ३० ॥ भेदो ॥ आगेअवश्रोरहूंक
हतहैं ॥ श्लो ॥ सिंजन्नूपुरसोभाढ्यनखभूषण
भूषितः ॥ सघोषमल्लमुकटविलसत्क्षुद्रघंटिका
॥ ३८ ॥ अर्थ ॥ हे कुंवरणकमलमेंस्वर्णनूपुरसो
सोभावतीयाहूएसीसोभात्रीयलोकमेंनाहीं इसो
नखपरनखभूषणनखावलीविराजतहैं सोको

हिचंद्रसूर्यकीकांतिलजावतहैं।औरसहस्रकटिपरक्षु
द्रघंटिकाविलासकरतहैं।सोवारवारसुखसुंदरहोतहैं
ऐसेश्रीलक्ष्मणकोंकवदरसनदेहुगे।नाम।४८।अभ
गो१।अबऔरकहतहैं।श्लोक।राजद्दृश्यवैयाघ्र
नखभूषणसोभितं।कंजलोचनलोलालविसाला
क्षविलक्षणं।१।यार्थ।हृदयकेऊपरवाघकेनख
खचितमेंजटितकरिनखभूषणश्रीयसोदाजीपहरा
तेहैंजोमेरेपुत्रकोंकाहूकीदृष्टिनलगे।सवरूपस्थल
मेंनखभूषणसोभितहैं।नेनकमलसमानअतिलोल
चंचलहैंजेसेंकमलसीतलहैंतापहारकहैंतैसेंही
श्रीठाकुरजीकेनेत्रकमलसरणागतभक्तनकेहृदयकेता
पहारकहैं।औरनेत्रनकीस्निग्धताभक्तनकोंरसदान
करतहैंसंकेतसूचनकरतहैं।ताकोंरसोलचंचलहैं
औरनेत्रकमलवततबडेविसालहैं।चूर्णायमानअ
क्षविलक्षणहैंजाकीउपमाकाहूसोंकहीनजाइ।
अनिर्वचनीयहैं।ऐसेंश्रीलक्ष्मणकोंकवदरसन
देहुगेनाम।४९।लेरी।१।अभंगो।अबऔरकहतहैं
श्लोक।।दीनैकसरणंस्वीयसर्वसामर्थ्यसंयुतं।व्रज
राजसुतंस्वीयजननीकंठभूषणं।१।याकाअर्थ।
दीनहैं।निजभक्तनकेसरणीयहैं।अपनेस्वीयभक्त
हैंजेहोयसरणाकरिरखेहैं।तिनकोंसबभांतिप्रचुर
लाभकरतहैं।काहेतेंजोश्रीकृष्णचंद्रहैं।सोसर्वसाम
र्थ्ययुतहैं।सोनवमस्कंधमेंश्रीभगवानदुर्वासाप्र
तिकहेहैं।श्लोक।।येदारागारपुत्राप्तान्प्राणान्वि
त्तमिमंपरं।हित्वामांसरणंयाताःकथंतांस्त्यक्तुमुत्से
को।१।इतिवचनात।श्रीठाकुरजीकहैंजोऐसेभक्तस्त्री
घरपुत्रप्राणवित्तसर्वसोंकोंसमर्पेन कमेरी
सरणहोइरहेहैं।तिनकोंछोडिवेकोंसेंके

हूकरें मेंउनकी अष्टप्रहर रक्षा ही करन हो ताते री
...होइ मेन सरण हैं तिनकी रक्षा प्रभु आपु करन हैं सर्व
...सामर्थ्य युक्त श्री कृष्ण हैं व्रजराज जो श्री नंदराइजी के पु
...त्र अपनी श्री यशोदाजी के अंक के भूषण हैं ऐसे
...श्री कृष्ण हमको अवदरसन देहुगे ॥ नाम ॥ ५० ॥ भये ॥ ४
...नामनि श्री स्वामिनी जी वियोग विरह में लीला सहि
...प्रभु के नाम वर्णन करत हैं अनुसंधान भूलि गये महा
...लाय के गिरी विरह में तन्मय होइ बोली सो आगे कहें
...हैं ॥ श्लोक ॥ हा कृष्ण हा सदानंद हा वृंदावन भूषण
...हा नंदराजतनय हा यशोदा वर वल्लभ ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ अथ
...श्री स्वामिनी जी कहत हैं हा कृष्ण हा श्री कृष्ण नाम
...फल ... हैं ॥ सर्व वेद के स्मृति को सार सो व्रजभक्त श्री
...कृष्ण देवकी नाम को सुमिरत जप करत हैं ताही ते श्री आ
...चार्य जी महाप्रभु जू अष्टाक्षर पंचाक्षर में यही सर्वोपरि
...हैं ... आनंद बढ़ावत हैं हे कृष्ण सदा आनंद रूप हा स
...दानंद तुम तो सदा एक रस हो सो हमको आनंद देहु स
...हा वृंदावन के भूषण हैं और हे तुम तो श्री वृंदावन ते एक
...पग हूं बाहिर नाही जात भूषण रूप हो ॥ हा नंदराज
...नंदन ... हा यशोदा जी के अंक में खेल के वत्सो
...ऐसे श्री कृष्ण हमको अवदरसन देहुगे ॥ नाम ॥ ५५ ॥ भये
... आगे अब और हूं कहत हैं ॥ श्लोक ॥ हा गोपिकेश
हा नाथ हा गोवर्द्धन पुरंदर ॥ हा हा व्रजजनार्तिघ्न हा ह
...नि साधनाधिप ॥ २ ॥ व्याख्या ॥ अथ अब कहत हैं जो
हा गोपीजन के ईश्वर प्राण हा नाथ तुम तो हमारे नाथ
हो यह हमारी रक्षा वेगि ही करो जैसे पंचाध्याई में वि
...रह करि भक्त कहे हैं हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि क्वा
सि महाभुज ॥ दास्यास्ते कृपणायामे सखे दरसनसं
निधिः ऐसे ही इहां कहे हैं ॥ हा नाथ हे गोकुल के पति यु

[illegible] जैसें एक छिन भोग नाहीं छोड़त तैसें तुम गो
के उदे होय या तुमको तो ठि रहे हो । हमकों ध्यानें र
[illegible] जनके आति के हरन हारो तुम [illegible] भगतें
विना हीं सहे हो । फा हैनो [illegible] छोड़ि तिरि गनवा
जन [illegible] कूपि तवृ [illegible] सगारे व [illegible] रहो
[illegible] सोगो [illegible] नजठाय सगारे व जनके [illegible]
[illegible] हस [illegible] मडवत हो । सो तुम हीं का [illegible]
[illegible] विरहे आदि [illegible] सोनु [illegible]
[illegible] सामर्थ हो । तातें [illegible] अधिपति हो । सो [illegible]
[illegible] साधन भगत [illegible] हीं [illegible]
[illegible] साधन [illegible] साधन हो [illegible]
[illegible]

याभांतिसमस्तस्वामिनीविप्रयोगकरतहैंनाम॥६४
भयो॥आगेअवछठोश्लोककहिफलपूर्णकरतहैं॥
श्लोक॥एवंविधानिसततंजल्पिताविमुहुर्मुहुरव
गत्यचभावेनभावनीयान्यहर्निशं॥६॥याकोअर्थ॥या
प्रकारहैजोनिरंतरश्रीस्वामिनीजीवारंवारज
ल्पनाकरतहैंतिनकेश्रीठाकुरजीपधारिकेसमस्तश्रीस्वा
मिनीजीकेदरसनदेकेअनेकलीलाकरिरसदानक
रिउनकेमनोरथपूरणहीकरतहैं॥सोयामें६४नाम
कहे॥ताकोअभिप्राययहहैजोचतुर्थयूथपतिहैंसो
एककयूथकीस्वामिनीषोडसनाम॥षोडसश्रृंगार
रमकसर्वोपरसकोअनुभवलीलासहितकरतहै
ताते६४नामकहेहैं॥अवश्रीहरिराइजीपुष्टिमार्गी
यभगवदीयसोंकहतहैंजोतुमयाभांतिस्वामिनीके
विरहभावकीभावनाअहर्निसकरो॥तवश्रीस्वामिनी
जीकीकृपातेहृदयमेंभावस्थितहोइगो॥तवप्रभुआप
नोअनुभवकरावेंगे॥यहसिद्धांतसर्वोपरहै॥६॥
श्रीहरिराइजीकृतसिद्धांतपद्धति॥ ॥टी
का ॥श्रीगुसांईजीकृतासंपूर्णो॥१॥अववीरहकहत
कहियारी॥जोयाप्रकारविप्रयोगकरेंतो
भावसिद्धश्रीस्वामिनीजीकीकृपाहोइपरंतुयहका
लमहाकठिनहैसत्संगनहीहैदुःसंगवहुतहैसोवु
द्धिसवकीभ्रष्टहैताते यहविप्रयोगवाधकहै॥तातें
आपनेश्रीआचार्यजीविचारिकैनिश्चयकरिकेप्रभुप्रसन्नहोय
सोउपायकहतहैं॥कालःकरालसमुपागतोयंमति
मतांप्रागाहरत्समस्तां॥तौश्रीवल्लभाचार्यजीसमाप्ति
ताताय॥कालवालःसरसंसरावा॥१॥याकोअर्थ॥य
हकालमहाकरालकठिनहै॥सोसवपुरुषनकी
मतिहरिलेतभयो॥तोश्रीआचार्यजीकहाकहतहैं

समतस्सेकीवुद्धिकोंपस्कलियुगाश्रायच्छपते
तैंसर्वहरिलीलाहैं तहांकोस्कहै जोकोउकोयह
लछ्योग्यौहीपरकाला तहांश्रीहरिरायजीकहते
जाकोजीवश्रीआचार्यजीमहाप्रभूकोआश्रय
नमनधनकरिकेरहे हैं तिनकोनाहींवाधकन
ता सोतउनकोसहायकहैं सासहावेगिहीथोरे
दिनमेंपकासिद्धिहै सोताकोदसलेकधर्मकाविलहै
हांस्लोकोकोयये नवाचामनसे दृष्टवांछुधान्यना
वाउसतस्वभावात् करोति यद्युत सकलं परस्मैनाथ
यायेतिसमर्पयेत् याभातिप्रभुकोसमर्पियेश्री
आचार्यजीधरापाउ तिनमें तहांइश्रीआचार्यजी
महाप्रभुकोआश्रयकीयो तिनकोयहकालनाहीवा
धकहै यहस्लोकवचनेश्रीसुकदेवजीकहे हैं स्लोक॥
कलेदोषनिधेराजन्नास्तिह्येकोमहानगुणः कीर्तना
देवकृष्णस्यमुक्तबंधः परंव्रजेत्॥ यद्यपिहैराजाकलि
गुणपहकालदोषको निधिहै परंतुएकयामेंमहागु
तहश्रीकृष्णकेनामसंकीर्तनतैं सोसवदुखके
दुर्स्विप्रभुकोपावतहै ताते श्रीआचार्यजीकोआश्र
जावेस्यकोभयो तिनकोयहकालपरमसुखद
१ तहांकोपूर्वपक्षकरेजो तुमारेसेवकनकोदुख
ल्वाधकहोतहै स्विपतहैं याभांतिकोउकहे तो
श्रीहरिरायजीकहे तहांस्लोक॥ नसेवानकथा
भावननापिसंश्रयो॥ नित्यमुद्गमनसोकथ
प्रश्यास्याति॥१॥ याकोअर्थ॥ अथश्रीहरिराय
नहींजो एसोजीवहैं तिनकोतो कालवाधकहै
जोपुष्टिमार्गमेंप्रथमभगवत्सेवामुख्यपु
कीरी तिसा भगवत्सेवा नाहीकरत न
नाथजीके प्रथमादिके साधुनन

५८

मैं भगवद्धर्म आवै सो कथाहू नाहीं सुनन कोई आवै
तो है इत्यादिक सहाय नाहीं है तथा अंगभंग रोगी है
भगवद्सेवा न बनी तो कथा को कोई भगवदीय कहै
सोहू न मिलै तो मन ही करि प्रभु के नाम स्वरूप लीला के
स्मरन की भावना है लीला की भावना मन में भाव वि
चारै यह न बनै तो लौकिक वैदिक दुख सुख सों वैरा
ग्य करि सर्वथा श्री आचार्यजी महाप्रभु के चरण कमल को
आश्रय राखै या भांति कहूं भगवद्धर्म में मन लगा
वै है सम्बन्धी संसार में दुख सुख नाहीं मिलै गाइके
नि [illegible] जैसे कष्ट सहत दुख सुख में हाय हाय करे तो ति
नकूं इहां कालकृत दोष कहा करैं उनको बाधक ही करै तहां
कोई कहै जो सेवा एक तथा कथा तो कहा होइ कलि के
दोष तो बहुत हैं या भांति कहैं तहां कहत है जो नव
मस्कंध में श्री भगवान आपु कहै हैं जो दुर्वासा प्रति
श्लोकु मत्सेवया प्रतीतं च सालोक्यादिचतुष्टयं ने
च्छन्ति सेवया पूर्णाः कुतोऽन्यत्कालविप्लुतं इति वचना
त् भगवान कहत हैं जो जा जीव को मेरी सेवा में प्रतीत
है विश्वास है तिनको मैं चारयो मुक्ति देत हौं सालोक्य
१ सामीप्य २ सायुज्य ३ सारूप्य ४ सो नाहीं लेत हैं
ऐसी सेवा करि पूर्ण हैं तिनको काल कहा करि सकै
मेरी नाहीं चलत है ज्यों भगवान की कथा कैसी है
सो सलनस्कंध में श्री शुकदेवजी कहै हैं श्लो० तस्मा
[illegible] नारात्म्यमानेरससमुद्रं [illegible] यान्कीर्तयन्नि
त्यं सकृत्ता [illegible] न संशय २ इति द्वितीयस्कंधे शुकवाक्यं प्रवि
ष्टः कर्णरंध्रेण स्वानां भावसरोरुहं धुनोति शमलं कृष्ण
सलिलस्य यथा शरत् २ इति वाक्यात् शुकदेवजी
कहत हैं जो श्रीठाकुरजी की कथा मन सुंदर सुनत हैं
नित्य सो कृतार्थ रूप हैं तिनके कर्णरंध्र में श्रीठाकुर

जीकीकथामनकोंधिक्कारहृदयमेंजानहें। तिनकेस
गरेदोषहृदयतेजानहें तिनके सगरेदोषहृदयमेंहें
तिनकेहृदयतेंनहीं। कथाकहेसुनेंसुनेंपाछेंओसे
अनुवादवैरासोतीनोंजीवकोंछुतातेंदेहजसेंगंगा
जलल्यावेंनायसगरेंआसपासकेंपवित्रहोइ। ऐसी
कथाकहेंतातेंभगवद्धर्ममेंमनहोयताकोंयहका
लबाधकनाहींहें औरसबकेकोंबाधकहें। रस्यागोंत्र
वश्योंरहेंकहतहें श्लोक॥ सत्संगदुर्लभोदृष्टसंगस
चिन्तावृतेअनायाचेनसंसिद्धकोगतिमेंभविष्य
ति॥ अथ्याकोअर्थ॥ येवश्रीहरिरायजीकहतहेंजोस
त्संगतोमहादुर्लभहें। औरदुष्टसंगविनायहजीव
तोस्वभावकेंहिंदुष्टहीहें। तामेंसत्संगदुर्लभहे
औरदुःसंगविनाचिंतानाहीं आपतेंविनजतनदूसो
दिसतेंआवतहें सोजीवकोंभगवद्धर्ममेंलगनना
हीदेतहें दुःसंगकोगंधहूसोइसोबाधकहोतहें यह
तोऐसोदिसातेंदुःसंगहोइजोंबाधकहोइ यामें
कहाकहनो। सोश्रीगुसांईजीविज्ञप्तिमेंकहेहें। अहंकु
गीद्रगभंगीसिगीनाभाग्नतोस्यायास्त्वनपसंबंधगंधोपी
वंधरामेंसबबाधनेयाभांतिअन्यसंबंधहोइगंधहून
गरावरुलेआरमरीतोऐसोदिसातेंदुःसंगविनाचि
तनआवतहें सोमेरेंअबकहागतिहोनहारहेंस
मोकोंजानिनाहींपरतहें। ऐआगेअबयोरहके
नहींश्लोक॥ संग्राहीयेनुमतिवर्तनेकोंदुःयनुमें
चारांकलीकनुमधुनांप्रभोबालविकीधितथ
याकोअर्थ॥ ऊपरकहेहेंजोदुःसंगहेहसंबंधीसस
रोलोगअहंतामनताकोंभिरतिनकोंग्रस्तकीं
पासरोखि एसेअनेकभांतिविरहोय खिलो
मेंकोहत

कारे जगतमें ऐसेही मनुष्य मोकों मिलतहैं सो हे प्रभु
यह स्वाधुनीक जीवकों तुम दर्शन द्यावत हो काहेकी
पुनीत करिवेतें रत मोहे हो [illegible] थेरे सगरो जंत्र है तुम जंत्री
हो जा भांति बजावो तेसेही बाजतहैं और तुम तो वा
[illegible] नारिकी भांडरत हो ख्याल करत हो सहजमें
[illegible] या सगरो जगत यह माया करि भ्रमत है या भां
ति करे है अब श्रीहरिरायजी कहतहैं जो अब हम पर
कृपा करो में अत्यंत दैन्य होय प्रार्थना करत हो ताते
अब मोपर क्षमा करो यह माया करि के अति दुखसु
[illegible] या भांति प्रार्थना करि अब दैन्य ता प्र
[illegible] करत हैं ४ आगे अब और कहतहैं सो
[illegible] नाथ हा कृपानाथ गोपीनाथ दयानिधे [illegible]
[illegible] रमानाथ त्रिभुवननाथ जगन्नाथ ५ या [illegible] श्री
श्रीहरिरायजी कहत हैं हा नाथ हमारे तुम नाथ
हो स्वामी हो ताते तुम विना और हम कौन सो दु
[illegible] कहें अब यह संसार दुखना ही सह्यो जात
है तुम अपने जानि दया करो हा कृपानाथ तुम आ
गे तें अपने जीवन पर कृपा करत आए हो सो अब ह
म पर कृपा ही करो काहे ते तुम गोपीनाथ गोपीजन के
नाथ हो गोपीजन निःसाधन तिनपर सदा कृपा करें उ
[illegible] करो तैसें हम हूं निःसाधन हैं हमप
र कृपा करो और तुम व्रज के नाथ हो कंस सैं धीने
[illegible] सबको मारि अग्नि तें जल तें काल तें वि
[illegible] सर्व प्रकार अपने व्रजन की रक्षा ही कीनी तैसेही
हमारी रक्षा करो रमा जो लक्ष्मी तिनके नाथ हो ऐसे
प्रभु हमारे पर प्रसन्न होउं और अपने भक्तन के निज
भक्तके नाथ हो भक्त वत्सल हैं सुख पावें सो एकतरे
सो नवमस्कंध श्रीभागवत में भगवान दुर्वासा प्रति के

हैं॥ श्लोक॥ अहं भक्तपराधीनो ह्यस्वतंत्र इव द्विज॥ साधु
भिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः॥१॥ मैं भक्तनके पराधी
न हों स्वतंत्र नाहीं हों॥ हे विप्र भक्तन मोकों बहुत प्रिय
हैं मैं भक्तके सदा हृदयमें रहत हों॥ याभांति तुम अप
ने निज भक्तनके नाथ हो ताते कृपा करो॥ और जगत्प
ति हो॥ सगरे जगतमें तुमही विराजत हो॥ सो इहां तें नाते
तुम कृपा करोगे॥ तब यह काल तुमकों देखि वनिश्चय यह
नाहीं है॥६॥ याके आगे अब और कहत हैं॥ श्लोक॥ गो
कुलाधीश गोपीश व्रजाधीश व्रजप्रिय॥ व्रजानंद निजा
नंद गोकुलानंद गोप्रिय॥७॥ याको अर्थ॥ हे श्रीकृष्ण तु
म गोकुलाधीश गोकुलके राजा हो॥ सगरे गोकुलवासी
तुमही करिके भिन्न हैं॥ गायनके रक्षक तुमही हो॥ गो
पीजनके ईश तुमही हो॥ और सगरे व्रजके राजा तुम
ही हो व्रज तुमको प्रिय है तुमकूं व्रज प्रिय है परस्पर
सो इहां सब धर्म व्रजस्तानेके थोहैं॥ अहो भाग्यम् अहो भा
ग्यं नंदगोप व्रजौकसाम्॥ यन्मित्रं परमानंदं पूर्णं ब्रह्म
सनातनं॥ इति वचनात्॥ व्रजके जननके यह सो इह गो
प गोपीके परम भाग्य हैं जो तिनके मित्र श्रीकृष्ण पर
मानंदरूप हैं सगरे व्रजको आनंद देत हो॥ और
अपने निजानंदमें मग्न रहो॥ निज भक्तनको अप
नो आनंद दान करत हो॥ गायनके कुल तिनको आ
नंद दाता हो॥ काहेतें गाय तुमको बहुत प्रिय है॥ गो
भगवदीय गाय हैं॥ आगे गाय पाछें गाय इत गाय उ
त गाय गोविंदाको गाइनमें रहिबोई भावे ऐसी
गाइ प्रिय हैं॥ ऐसे श्रीकृष्णचंद्र ऊपर कृपा करो॥ ई श्री
गोस्वामी ये रहै ॥ श्रीकृष्णदास्यासिद्धा

याको अर्थ

हत नहीं। हाहा तुमही मेरे हो। निःसाधन फलात्मक हो
सो हे प्रभु कृपा करो। और तुमने तो कृपा ही करी है य
ह निश्चय है परंतु हमको धीरज नाहीं रहत है तातें
विज्ञप्ति करत हैं। सो श्रीगुसांईजी विज्ञप्ति करत हैं। ए
वं दासस्य स्वभावोयं समये वारि मुञ्चति। तथापि चा
तकः खिन्नो रटत्येव न संशयः। १ मेघ को स्वभाव है त
षा तें तिन कूं समें पर मिलें समय आये जल सो वर्षत
है परंतु चातक धीरज नाहीं रहत। वर्षा दिनन और दिवे
... तैसे श्रीकृष्ण अपने भक्तन पर निश्चय कृपा क
रें। भक्त को आर्त्ति कर्तव्य है। इत्यादि धीरज तुमवे
गि ही दया करो। काहे तें तुम दया करो तो सगरो जग
त अनुकूल होइ माया बाधक नहीं होय और तुम जहां ताईं द
या में ढील करत हो तहां ताईं माया करि हम दुख पाव
त हैं। सो श्रीगुसांईजी विज्ञप्ति करत हैं। श्लोक। नाथेन
नुकूलता याते सर्वो यात्यनुकूलताम्। तस्मिंस्तद्विपरीते
तु सर्वमेव भवेत्तथा। १ हे नाथ तुमारे अनुकूल तें सर्व
अनुकूल है। तुमारे विपरीत तें सर्व जगत विपरीत
भयो है। तातें तुम दया [illegible] तुम कैसे हो श्रीस्वा
मिनीजी राधिका के वर पति हो। परम सुंदर हो और ह
म बहुत दीन दुःखी हैं। तातें कृपा करो भली मेरे दोष
देखि कृपा में ढील करत हो। तामें निरंतर अपने श्री
वल्लभाचार्यजी की आश्रित हों। यह जानि कें श्रीआ
चार्यजी महाप्रभुन की कानि करिकें कृपा करो। या भां
ति दैन्यता करत करत अपने दोषन की स्फूर्ति होइ
प्रथम विरह करिकें प्रभु के नाम लीला संबंधी कहे
ता करि अपनी दैन्य महाप्रभुजी को आश्रय पाछें अ
पने दोष स्फूर्ति सो श्लोक कहत हैं। ७ श्लो। हृष्टे
स्तु दोषहर्षे स्वभाग्यं मम मन्ये भो। निःसाधने सुन्म

को यश्यो।सबश्रीहरिराइ
गुरयाकुरस्याकूसोनायाको यथोरीहरुषकोरिइष
कहतहैंजोमैवडोइदुषहो।सोथोरीकवायकूक
हीहो।अपराध्नेनइभांतिकेमानसीकरिषुछिहो।
कवचनकरिअपराधषताइछताकरिपुछियोहै
गुरश्रभागवतधर्मकरिपरभागवतसोसमुझायोहै
आपमेंभागवतधर्मनाहींलिष्योवांगुरुइताइ सो
हो।हिमेंरसपुइनसोंभरोसोहैजोतुममेंमनहीं
नेसाधनहीं मोतेंसाधननावैंनाहींवचनतहैंभांति
करिहैनहीअन्यमतिहो।एसोजोमेंतिनपरविषनी
श्रीचवनुमइयाकरीकाइंमेंसप्रभुहो मोहोयर्क
औरभांतिदेषो।तहांवृन्दावनप्रभुसेजोहोयकोन
इंदवगुणाहोयवहोश्रीआज्ञ्यावाहिंयोयाभांतिकहो
तहश्रीगुसांईजीविनसकोयहासोनहमकहनईश्री
क।। वलिष्ठाअपिमदोषाःसर्वंकृपाग्रतिदुर्वला।।न
माईश्वरधर्मत्वेदोषाणांजीवधर्मना।।पायपराधेपि
गानांवेवकायाश्वजाधिपःहइजोश्वर्यभावेनस्वस
तुइतयाचनानार्यद्यपिमेंदोषबहुतहीवलिष्ठ
हनकतुमारीकृपाकेआगेंदुर्वलहैंतुमारीकृपाईश्वर
धर्महैदोषजीवधर्मनेकहांतोश्रीगाहातादि
श्रीगोपाल प्रभुजनकेअधिपतिनि:साधनाःफला
महो तातनष्पापधर्मसोहे।तिनकीगानतानुसव
तोउहितनाहैश्रीहैनो।सबजानहीमनसारागसोइ
श्रीहो।जीयहरोसमहाकृहुनहैपुनकेभावना
मेलनारायनने नामलीयो।सोवाहलगवधनतो
नुमनोश्रीहरिंसेहो।सोतिथिरवनहीनाहीं।ताते
रस्यावकरो।आमाश्रवश्रोरहतोहतन्हो।श्लोप
वतसवेतत्वंतोनिरुप्यवारिराइ।ईश्वीहस्प
नैतसमजनै:सहइ।ईयादान्तयो।ईश्वीहस्प

सि.प्र. ऐसेहेंदसंबंधीनामग्रहैनामनताकरिमेरेचिंनपरी
७१
हो सोयहसंसारतेंमेरेहीतनकोंनिवर्तकरों निरोध
श्रीरनेकरिअपनेमेंलगावोजेसेंश्रृजभक्तनकेचित
करलीनाकरिअपनेमेंलगायहेंश्रीकृष्णमारवनइ
मेंव्रजभक्तनकेचित्तहरतो सोप्रभुचोरिकरिअपने
लगायेनेंसेंहीहेंश्रीयहसानिरोधयोरिनकरिहेंसोरे
नश्रपनेमेंलगायों अपनेहदयमेंविचारीजोये
प्रभुहेंअपनेमननसेंजानिश्रावश्यकृपाकरतभ
अपनेमेंउनकेभक्तके हृदयमेंसदास्थितिहें सो
परकृपाकरोंगे आपआवबश्रीरकहतहें सोव
श्रद्धचित्तसुखानुभवतसुखनहादुखनाति
हराःश्रीकृष्णसपणमम[illegible]यस्य श्री हरिश्री
गुनदेसेंहैं अपनेभक्तजोदुखलगकरिपीडितर
हे सोतुमनाहीदेखसकतभक्तमनमदुहें सोतुमको
भावनाहें भक्तदुखीहें यमनलीनसुखदेहौ सोतुमन
हींदेखिसकत काहेतें सर्वभक्तप्राणीमात्रकेसुख
दाता सोभक्तनकोदुखदेखकेसहेंखोगे यहविचारिकेह
मकोंबडीचिंताहोतहें जोभक्तनकोकेसेंश्रवसहह
लागोंगे विनामेंश्रीगुसांईजीकहेंहें सोकाजानो
निरंसभागवाहेंएयोगानुलेश्रवभक्तकेशास्त्रहितुल्य
स्वभावंकुलेनयाश्रयहजानतहो जोमेरेग्रवदी
मदभागहें हेंगोवलेश्रवतुमवमेरा भक्तलेसकत
हूनाहीमेंहीसोस्वभावमेंरहीयैनग्रवसहनहोतो
मकहावरे सर्वभृतप्राणीकतुमहीसुखदानाहो श्री
रअपनेनिजभक्तकोंदेखिकेअत्यंतकरुणाकरि
सीकरतहो एसेभक्तनकेकरुणासिंधुश्रीकृष्ण
सोमेंसराहोंसोअवकहाकरेंकोआपही
करतहें ७ श्रागेश्रवश्रारहैकहतहेंश्री

का। असंरूपध्यानेहैं निजानंदाश्रयस्थित। स्वरूपानं
ददाता व श्रीकृष्णशरणं मम। २ याको अर्थ हे श्रीकृष्ण
तुम वैसे हो। अपार बहुत आनंदकरि पूरि रहे हो। पर
मानंदरूप ही हो तुम आपने निज भक्तन के आनंद दा
ता हो जो कोउ तुमारे आश्रित हैं तिन के आश्रित तु
म ही हो तिनको स्वरूपानंद को दान करत हो सो ह
म सब के धर्म श्री नंदराय जी के हैं मन सों हू तयानें सुरू
ल पायो वृजाश्रययो। लाज्ञा सिद्धा दिनी नाम्ना कायेन
रुक्मणा हि। मन वचन काय करि श्री वृंदावन के पदाम्बु
ज के आश्रय नाहे तिनको यो स्कन्ध के कछु नाही कृतेथ
है सर्व सिद्ध भयो तातें जो भक्त तुमारे आश्रय को याहे
तिनको स्वरूपानंद के दाता हो। ऐसे जो श्रीकृष्ण तिन
की मैं शरण हों। सो नंदनंदन श्री गुसांई जी महाप्र
भु कहे हैं तातें सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं
मम। तिन श्रीकृष्ण की शरण की भावना करनी
है और भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहे हैं सर्वधर्मान्परि
त्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्ष
यिष्यामि मा शुचः। ४ जो नर सर्व धर्म छोडि एक शरण
आय मेरी सो पापन को नाश करूं। ऐसे दिव्य ने
क वचन हैं तातें श्रीकृष्ण तें कछु धर्म नाही व नि
साधन तातें तुमारी सरन की भावना करें तो फल सिद्ध
होय। इति श्री हरिराय जी कृत शिक्षापत्र ना टीका श्री
गोपेश्वर जी कृत संपूर्णं। २३। अब आगे कहत हैं जो
कृष्ण की शरण की भावना करें। श्रीकृष्ण के चरणा
रविंद की शरण है बहुत दुःख भये हैं। पोको नप
कार सिद्ध होय सो आगे वर्णन करत हैं जो या भांति रहे
तो शरणागति सिद्ध भयो। श्लोक। श्रीमत्प्रभुप
दयुगलस्याश्व चिन्त्यमन्या सिनदृतु

शि०प० ३ भवति तदीयममसर्वतः सर्वलोकयाको अर्थ
७२ महिनगये जो मेरे प्रभु श्री आचार्यजी महाप्रभु तिन
श्री कृष्ण शरणागति के अपनो चिन्त्य
सोश्रेइत्य शरण मन्त्र परमधर्म त्यागी है भक्तिरूप
अनुभवसम्बन्ध है तासे बाबा नरमाके आश्रय
पुष्टिमार्गी अनुभव होत है इत शरणके आ
शये मर्यादा भक्ति को अनुभव होत है सो श्रीगुसां
ईजी लिखित वेभूपाने कहे है पुष्टि भक्ति स्थिति हृदय
में प्रयति तो है इत्यादि वचनन सोयाही मर्यादा पु
ष्टि भेद लिखके भी सोइ प्रभु के नाम धरत है श्री वेदव्य
सिद्धचरण शरणागति है ताके आश्रत मर्यादा भक्ति
रूप से चरण ट्टेश्वर हैं ऊपर उक्त महाप्रभुजी के
तिनके आश्रय शरण मन लगायो ताको तुम अन्तर
स्थलीय है श्री कृष्णदेव तुम्हारे तदीयके सर्वस्वरूप
है तो ताके तिन समग्र भेद तिनको मरूपस्वरूप प्रभुके सिद्ध
करतो है प्रेमलक्षणा भक्ति मन तो है जो कोई श्री कृष्णदेव
शरणमें चित्त को लगावे तिनको कल्याण होय
तनको समर्पण करके लोक वेद सब
आत्मा प्राणन ते अधिक सिद्धि पर हित मान संतमार्ग याते
अपनो हित पुष्टि मार्ग पर स्त्री पुत्र प्राण है सर्वलम
जीको देहतो सो श्री कृष्ण श्री आचार्यजी है तिनको प्रभुको जाने
तिन सबकुं भये शरण पुष्टि के निश्चय उद्धार ही है
तासो श्री आचार्यजी के तीर्थरूप दास्य विशेष
करत है सर्वस्व ते तायाको गान करत नाहु नेह
जीको श्री गोवर्धन स्वरूप जो श्री कृष्णदेवके चरणमें
नन्दनन्दन तो सब ही है ताते हिय न होय अन्याश्रय

महाबाधक है अन्याश्रय ऐसो बाधक है जो तदीय
भगवदीय को हू चरणकमल के आश्रय सों विरोध ही
करे तो और जीव के हाथ सुने सो तो गिरे ही अन्य देव
मनुष्य राजा इनकौं आश्रय न करें तहां कहत हैं भग
वत्पदपद्मपरागयुक्तानहि युक्तिर्नरं मरणं विना
इतराश्रयणं गजराजगतो नहि रासभमण्डुरीक
हतोथि भव्यांन्वे चरणकमल कौ छोडि अन्य देव
कौ आश्रय जो सो है जैसे हाथी की असवारी छोडि गा
धा पर चढे सो ताते महाहीनता है तो नान्यदेव
नमस्कार्यान्नान्यदेवं निरीक्षयेन्नान्यदेवनम
स्कार्यान्नान्यं देवं निरीक्षयेन्नान्यप्रसादमश्नीया
न्नान्यदायतनं व्रजेत् ॥ अनन्यशरणायेनु तृयेवानो
न्यसाधनान् अनन्यभोगप भोगपायेनतु सर्वेधिकारि
णाः ॥ इति वचनात् ॥ और देव कौ नमस्कार न करें अ
न्यदेव को प्रसाद न ले अरु अन्य प्रभु की सरण है सा
धन सेवा स्मरणादिक औरन सों न करे प्रभु प्रसन्न हो
इ अन्याश्रय करे ता के ऊपर प्रभु उदासीन होय जाइ
सो जैसे वसुधा समर्थ है वे मैं नाही हूं तो अन्याश्रय
करत हैं जैसे रामदास सेमल बोरवी स्त्री ने रंच
क अन्याश्रय कीयो ताते पुत्र मलेच्छ भयो बहुत रं
द्र पायो ताते वैष्णव भगवदीय को अन्याश्रय नि
श्चय ही सों अन्याश्रय ऐसो बाधक है ॥ अथ गर्व
और हू कहत हैं ॥ श्लो ॥ अस्मन्स्यात् चन्याणा भाव
बाधकनाय नः यथा व्याघ्र बाधकस्याद् शरीरादेस्ता
ही गर्म ॥ याको अर्थ ॥ अन्याश्रय छोडे को है तो भग
वद्भाव के असक बाधक है ताको कहा तिलक हैं यो
न कहत हैं जो जैसे व्याघ्र जो नाहर के आगे मनुष्य जा
य तो सरीर को विघ्न होइ ताकी देह को नास है

पा० ३ ते सें हीं असत्संग होइ तौ भगवद्भाव को निश्चय ना
स होइ । असत्संग तें जड भरथ को तीन जन्म लेनो भ
यो । द्विविद्वान को नरकादि दुःख के संग तें श्री ठाकुरजी ति
नसों । ताते असत्संग महा बाधक है । ताते निकाल छो
डनो । आगे अवधो रहत न हि सो । असत्संग
तस्यागेन श्री महाचार्य पंडित अध्यासे स्वशरीर
सों न दीय । प्रकार त । धया । श्री आचार्य श्री हरि
रायजी कहत हैं जो असत्संग महा दुःखरूप है जो अ
सत्संग महा दुःखरूप है तो असत्संग बाधक सो हम श्री
श्री आचार्यजी महाप्रभु महापंडित वेदशास्त्र पुरा
णभी सांगायन सर्वे मारिये श्री सुबोधनीजी आ
दि ग्रंथन में रसको रीति तहां अन्याश्रय और असत्
संग महाबाधक ठौर ठौर निरूपण कीये हैं । ताते अ
पने शरीर को यह ही अध्याय करनो जो भगवदीय के सं
गही रहे । भगवदीय के संग ते छुटे तो न वही बाधक है
यो । भगवदीय के संग ते सगरो असत्संग छूटि जाय
निश्चय मायं तिशरीर को अध्यास कुविज्ञ नाश्रय ते
बंधे । आगे अवधो रहत न है सो । विधायत
वेदार्थ नविधेयतः स्यागतः सत्संग नेत्राकं निःशत्वे
नचरूपे आप स्थाने अथा । आ मा तिक्षत्संगा लाभ
सा भयसा रूप यह निश्चय सिद्धांत मन में जानिये जी
व को यही योग्य है यही करनो है । ओर भगवद्धर्थ
मे सब न तो । कियो नाही परंतु असत्संग न करे सत्संग
करे तो असत्संग छोडे तो भगवदीयकी निष्ठा
ये न जाय यह पुष्टिमार्ग में निष्ठा होइ ना ही को सग
करे सर्वथा ओरको संग न करे कहा है ते एतन्मार्गी
य भगवदीय के संग ही अपने पुष्टिमार्ग की मर्यादा री
ति जाने मार्ग में पूर्ण निष्ठा होइ । भाव बढे सर्वथा स

वसिद्ध होय॥ आगें अब और हूं कहत हैं सो ज॥ सम
र्पेन ताके अनुसंधान विशेष मिलिनै: सर्वः इदमेवा स्मदा
चार्य मार्ग साधन मनसो हि याको अर्थ॥ भगवदीय के
संग मिलिकें यह करनें यह लोक हतनें॥ श्रीठाकुरजी
कों सर्व समर्पन श्री आचार्यजी महाप्रभुनें समर्प
न कीयो है सो भगवदीयसों मिलिकें विचारो॥ कहा सम
र्पन कीयो॥ अब कैसें कहा कीयो चाहत हो॥ कि तनो वस्तु
प्रभुमें अंगीकार होत हैं कोन सी॥ इन्द्री वहे सुख है तथा
कितनेक दिन तें प्रभु ते बिछुरे हतें॥ सो अब श्री आचा
र्यजी महाप्रभु कृपा करिकें दीये हैं सो कोन प्रकार स्मर
ण करें इत्यादि भाव भगवदीयसों मिलिकें विचार
ने॥ भगवदीयसों राखें जो देह कृपा करिकें बतावे यही
श्री आचार्यजी महाप्रभुके पुष्टिमार्ग में उत्तम साध
न है॥ भगवदीय संग निवेदन को स्मरण ताहीतें नवर
लग्रंथ में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहत हैं॥ निवेदनं तु
स्मर्तव्यं सर्वथा ताद्रशैर्जनैः॥ सर्वथा सर्वदा दोऊ पाठ
हैं॥ भगवदीयको संग सर्वथा करनो॥ तथा सर्वदा नि
त्य करनो उनसों नित्य निवेदनको प्रकार सुनिकें अ
पनें मनमें भाव राखनों॥ यह सत्संग ही श्री आचार्य
जी महाप्रभुके मार्ग में उत्तम में उत्तम साधन है॥ सो
ई करो॥ यातें विरोधी साधन न करें॥ ऐसें आगें कथ
रहे हैं नहे॥ श्लोक॥ स्वाचार्य चरणाद्वन्द्व दास्यपरा
णा हेता॥ विधेयं तेन सकल मखिल भाग भविष्यति ७
याको अर्थ॥ अपनें श्री वल्लभाचार्यजी के दास कहवाय
कें उनकों इष्ट आश्रयमें की रहे हो॥ और जो कोई
पुष्टिमार्गीय जीव करें आदर प्रवेश तिनको हृदयमें

अस्य पुष्टिमार्गको सकल सिद्धांत जानें

चार्यजी महाप्रभु के चरणकमल को आश्रय दैवी जीवन
कों निश्चय दीनो है ताही करि कें सकल कार्य सि
द्ध होइ सो । यह हमारे मार्ग को फल सिद्धांत जाने यह
हमारे मार्ग को अनुभव होइ । यह सिद्धांत सबों पर ॥७॥
इति श्री हरिरायजी कृत शिक्षापत्र चतुर्दस ता की टी
का श्री गोपेश्वरजी कृत संपूर्ण ॥ अथ पंचदस कहे जो
भगवदीय को संग करत श्री आचार्यजी महाप्र
भु के चरणकमल को आश्रय करे तौ यह पुष्टि
मार्ग को फल सिद्ध होइ आपह श्री महाप्रभुजी को आ
श्रय कौन भांति करें तहां आगें सिक्षापत्र में कहत
हैं ताको या भांति श्री आचार्यजी महाप्रभुन के गुणके
आगे है निरूपण करत श्लोक ॥ यदंगीकृत जीवानां
दुर्दैवेनागतोऽपि हि । सदानंदः स्वतं तेरान तस्मात:क्रि
यतां सदा ॥ याको अर्थ । आपने अंगीकृत जीव जो यह
पुष्टिमार्ग में सरणागत हैं तिनको दुःख संचय कहा है
दुःख को नाश करे है सो श्री आचार्यजी महाप्रभु ताही
सहित रूप आपने जीवन को सकल दुःख दूरि करि कें
सदा आनंद को दान करत हैं ॥ श्लोक ॥ ये निजानाति
संततानि सुखानि वीरप विस्मृतं श्रा हुर्भवति चिरत
नं स्मातिन्ति यत्नास्सदा सर्वथा ॥ श्लोकार्थ ॥ यह जीवकी
कहा है सो है जा दिन तें भगवान तें बिछुर्यो ता दि
न तें यह चौरासी लक्ष योनि में कोटानकोटि वार भ्रम
त है जन्म मरण अनेक प्रकार दुःख पायो है तिनही
में परयो पावत है संसाराग्नि में महासंतप्त है जद्यपि
दैवी जीव है तोहू आपनो दासपनो भूल्यो और प्रभु के
स्वरूप को भूलि गयो है ता करि कें महादुःख है संसार
में या भांति जीव आपनो जनम करि महादुःखी होत है श्री
ठाकुरजी तें बिछुरि कें विस्मृत भये मन में खेद पावे कहे है

मारे दैवीजीव बहुत दुखी हैं। यह करुणा करि श्रीलछमनभ
ट्टश्रीआचार्यजीको स्वरूप जैसें श्रीहरिप्रगटे नाहीभा
ति गर्भमें प्रादुर्भूत होय। अपने दैवीजीवनके अनेक चि
रकालके संसारदुख दूरि कीने। सो श्रीआचार्यजी
महाप्रभुजी भक्तवत्सल परमदयाल तिनको स्मरण
सदाही करतव्य है। याते सर्वकौ यह कहत हैं। श्लो
क। यः स्वसेवकानाहि पराश्रयनिवारकः। कृपा
सरित्पतिहस्तस्मृतिः प्रियतां सदा।३। याको अर्थ
जैसें श्रीहरि संसारें व्रजभक्तनकों अन्याश्रय छोडाये इ
द्रयज्ञ छोडाय गिरिराज धराय आपु आरोगे। अरु विप्र
जनमें श्रीनंदरायजीको देह देके छुडाये। तैसें ही श्रीआ
चार्यजी महाप्रभु अपने सेवकनको पराश्रय अन्य
देवको भजन छुडाये। एक श्रीकृष्णहीको भजन बता
ये। सर्व और ते निवृत्त करि एक श्रीकृष्णहीकी सरणाग
ति। सो श्रीहरि कैसे हैं। कृपाके समुद्र हैं। ताको अंगीका
र करत हैं। फेरि कबहू छोडत नाही। भक्तपक्षपाती क
रत हैं। सो नवमस्कंधमें भगवान कहे हैं। श्लोक। अ
हं भक्तपराधीनो ह्यस्वतंत्र इव द्विज। साधुभिर्ग्रस्तह
दयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः।१। भगवान कहे हैं। हे द्विज दुर्वा
सा मैं तो भक्तके वस पराधीन हों। स्वतंत्र नाही हों। साधु
अपने हृदयमें धारि लीनो है। मोको बहुत प्रिय हैं। भ
क्तजन ऐसे कृपाल श्रीहरि हैं। तिनकी नाई श्रीआ
चार्यजी अपने भक्तनको करात जीवनको करात हैं
ऐसें श्रीआचार्यजी महाप्रभुके चरणकमलको सु
मरण अरु तिन सेवकनको कर्तव्य है।३। याते अब
और हू कहत हैं। श्लोक। हृदयस्थः समस्तानां धुनो
:क्रि
ति विषयाहराहया। समोदरः श्री
यतां सदा।४। याको अर्थ। श्रीहरि

सि॰फु॰
१५॥

गोपीजनके हृदयमें स्थिति है। सो भक्तनके हृदयमें
ऐसे कहा कहनो। परंतु जीव विषयादिक खानपानादि
संसार सुखमें आसक्त होय मनको लगायो। ता
यसें प्रभु इनको भूलि गयो है। अनेक विषयन
रूपमनहू हाथते दूर रहे। जैसो ठाकुरजीपर आपु हृदयको
ग्रंथ प्रसंग सो भागवत श्रीकृष्ण श्री आचार्यजी
पतिनको सुमरनवे सबको करनको है। श्री आ
चार्य कहत है। श्लोक। यः प्राणप्रेष्ठ गोपीन
गोपयति स्वतः निलायना स्थितो लाभितन
पतो सदा। पयो श्लो अर्थ। श्री आचार्य श्री लछमनके से ह
जनसो मिलीके संगमको रस ताकु न गायो। गोप
[illegible] नामें नहीं [illegible] जैसो [illegible] श्री अनेक गो
मैं नाहीं। यामें निज भक्तनको रस दान करन
गोपीजन श्रीठाकुरजीके प्रानप्रिय हैं। सो गोप
कैसी है सो कहत हैं। सो भगवानके है ना मन
प्रान प्राण [illegible] देहिका। येनान लो
[illegible] तन मन प्रान देह प्रभु
आपने कीयो है। लोक वेद धर्म तिन श्रीकृष्णके
समान प्रिय है। सो [illegible] धर्म कहे है। सो
[illegible]
[illegible]
तो। श्रीकृष्णके [illegible]
विषय [illegible] वन [illegible]
[illegible] भक्त [illegible]
[illegible] सामग्री [illegible] भावत है। ऐसे जो भक्त ति
[illegible] यामें कहा [illegible]
प्राणप्रेष्ठ गोपीको रस दान छिपायवे सवतें
[illegible]

श्रीकृष्ण तिनकों सुमरन सदा ही करनो योग्य है ॥ आगें स्व
रूप कहत हैं ॥ श्लोक ॥ यत्र:माहात्म्यबोधाय प्रादुर्भा
वितृवान्स्वतः ॥ भूतश्रीवल्लभाचार्यान्तस्मात्ते
त्रियतां सदा ॥ ६ ॥ याकौ अर्थ ॥ श्रीकृष्ण उद्धवजीकों अप
नो निज भक्त जानि कैं अपने स्वरूप कौ आपुन की रि
गोपीजन पास पठायो ॥ तहां यह मनोरथ जो भगवान्स्वरूप
करो ना ॥ ताकौ साधक भगवदीय द्वारा स्वरूप कौ बोध है
य सो सबै पर ॥ तैसें ही दैवीजीव संसार में प्रभु कों भूलि
गयो ॥ तब श्रीठाकुरजी अपने स्वरूप माहात्म्य बोधा
र्थ श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों पठायो ॥ तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभु पृथ्वी ऊपर प्रादुर्भूत प्रगट भए ॥ पृ
थ्वी पर स्थित होय दैवीजीवन कौ स्वरूपानंद कौ अनु
भव करायो ॥ तैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभु सर्व सामर्थ्य यु
क्त हैं ॥ तिनकौ चरणकमल कौ सुमरन सदा करनो योग्य है
॥ श्लोक ॥ यत्र उद्धवेन भक्तेन स्वस्वरूपम्बोधयन् ॥ गोपिका
नां हृतस्वरतस्मातिः त्रियतां सदा ॥ ७ ॥ याकौ अर्थ
श्रीकृष्ण उद्धवकौं निज भक्त जानें ॥ तब विचारे जो उद्धव ने
बहुत सेवा करी है ॥ अब ब्रजलीला कौ अनुभव उद्धव
जी कौ होइ तौ आछौ ॥ सो ब्रजलीला कौ अनुभव तौ श्री
स्वामिनीजी के हाथ है ॥ भावात्मक स्वरूप तौ श्रीस्वामिनी
जी ब्रजभक्तन के हृदय में स्थित है ॥ तातें योग कौ सिखव
रिकैं उद्धवजी कौ भगवान ब्रज में पठायो ॥ अपने निज
स्वरूप बोधायो ॥ तब गोपीजन भगवान कौ स्व
जानि अपनी सगरी लीला उद्धवजी कौ दिखाई ॥
तब उद्धवकौ अनुभव भयो ॥ तब जो गाथा भक्ति गाए
है ॥ नायक रन लाभ ॥ नायं श्रियो ग उनितांतरतेप्रस
दःस्वर्योषितां नलिनगंधरुचां कुतोन्या ॥ रासोत्सवे
भुजदंडगृहीतकंठलब्धाशिषां य ब्रजव

प॰ वीनां॥ श्री आसामसे श्रीगारेगा नुवा महंस्यो वद्राव
नेविमपि गुरुमलनो श्रीनांथ्या हल्या जेस्वजन
स्यस्थं स्वाहित्वा भेजे मुकुट पदवीश्रुति सिद्धि भूपा
पूर्वहे स्मर्द सर्वस्त्रीनां पादरेणु मभीलाभः यासांह
रिकथो कीर्तिपूर्ना त्रिभुवनत्रयं॥ यह स्लोक
वजी की भक्ति सो गोपीजन के चरणकमल की रज
की श्रीआसकारि गुरुमलना श्री उद्धव को प्रीथनाक
री सो भाव॥ सकल भगवान निज भक्त के हृदयमें स्थि
ति हैं तामे अनुरूप श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी हैं ता
तें श्रीआचार्यजी महाप्रभुके चरणकमल को सुम
रन सब श्री निस्वहिन करो॥ श्लोक॥ अथ श्लोक॥ यह
नहे स्लो॥ यस्य स्मरणमात्रेण सकलार्ति विनाश
नं नलभ्यते श्रवति स्मृतिः निमनो सहसा दया
॥ अर्थ॥ अपल है जो ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्र
भुजी श्रीवल्लभजी स्वभाव सकल तिनके चरणारवि
न्द को सुमरण करत मात्र ही सकल आर्ति संसार के दु
ख सब दोषको नाश होइ और अनंत कालनाही छि
नहे वनके है श्री वल्लभ के देव श्री हरि स्वरूप प्रसन्न वा
जीव के ऊपर होइ तातें यह पुष्टिमारगीय वैष्णवनको
निश्चय यही धर्म है जो ऐसे श्रीमहाप्रभुजी के चर
णकमल को सुमरण मनलगाइ अहर्निस करनो
ऐसे निजभक्त रात्रिदिवस सुमरण करत है तैसे ही करे
॥ यह सिद्धांत भयो॥ इति श्री हरिराय जी कृत सि
द्धान्त पं॰ [illegible] सीताकी [illegible] श्रीनाथ [illegible] सं
हे॥ [illegible] अब कहे है ता भांति श्रीमहाप्रभुजी
को सुमरण करे तो प्रभु प्रसन्न होइ तब अपने स्वरू
प को ज्ञान होइ ओर सोको नभांति सो आगे सि
द्धान्त में कहत है॥ श्लोक॥ सदा सर्व भक्त हृदया वास

स्वाचार्यभावित।।यशोदाति प्रिय.श्रीमद्व्रजस्तु
व्रजेश्वरः।। याको अर्थ।। सदा श्रीठाकुरजी आपने भ
क्तनके हृदयमें वसत हैं।। तहां संदेह होइ सो कोन से
भक्त तहां रहत हैं।। जो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको
भावका भावित श्रीआचार्यजी को प्रसन्न कीये हैं
श्रीआचार्यजी महाप्रभुको भक्तभाव हैं।। ऐसे पुष्टि
मार्गीय भगवदीयके हृदयमें श्रीआचार्यजी महा
प्रभु सदा विराजत हैं।। सो प्रभु कैसे हैं।। श्रीयशोदोत्संग
लालित श्रीयशोदाजीको अतिप्राणप्रिय श्रीसोभा
सहित नंदसूनु नंदरायजीके पुत्र हैं समस्त धर्म नंद
महोत्सवमें प्रकट व्है जीव हैं।। नंद स्वात्मज मुन्यते
जाता न्हादो महामना।। नंदरायजीकि आत्मा तें उत्पन्न
भये।। ऐसे श्रीकृष्ण सो व्रजके राजा सो सदा व्रजहीमें भ
क्तनके संग विहार करत हैं।। ऐसे श्रीकृष्ण पुष्टिमार्गमें
सव हैं।। सो एतन्मार्गीय भगवदीय श्रीआचार्यजी
केकृपापात्र तिनके हृदयमें वसत हैं।। तथा श्रीठा
कुरजीके हृदयमें भक्त वसत हैं।। सो श्रीभागवतमें न
वमस्कंधमें भगवान्ने कहे हैं।। सो श्लोक।। साधवो
हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहं।। मदन्यत्ते न जानंति
नाहं तेभ्यो मनागपि।।१।। भगवान् कहे हैं भक्तके हृद
यमें मैं हों मेरे हृदयमें भक्त हैं।। और को मैं जानत न
ही।। ऐसे श्रीकृष्ण हैं।। पश्चात आगें अब और हू वरनत हैं।। स
व.स्मरणीयो यथा साति सेवनीयस्तथा पुनः।। तादृ
शो सहसंगेन कथनीय प्रभु सर्वथा।।२।। याको अर्थ
सो व्रजमें सदा विहार करत नंदयशोदाके पुत्र तिन
हीको स्मरण करनो।। का हेतें।। ऐसे भावात्मक प्रभु
व्रजभक्तनके वस हैं।। तातें व्रजभक्तन सहित सुमर
न करनो।। ज्यों सेवा हू ऐसी ही भक्तनके भावसहित

श्रीकृष्णहीकी करनी। औरताहीसों भगवदीयसों मिलि
कैं रहै भक्तनके हित श्रीकृष्ण तिनहीकी कथा कहनी सु
ननी सब वैष्णवनितें मैंसों २ आगें अवश्य आरहू कै हन
है लोक। अहनिस ब्रजाधीसों प्रपंचास्मृति साधक
स्वकीय पक्षपाति च निजास्तपा निरोधक [illegible] या
[illegible] अरपासकी कथावाती अहनि भगवद्ब्रजा
धीसकौं करतो होइ ३ यह प्रपंच रहहै अवधि [illegible]
[illegible] सबकी विस्मृति होइ प्रपंच विस्मृतिकौ
साधन यही पुष्टिमार्गीय भगवद्धर्म है। और ताही
[illegible] ब्रजाधीसके से हैं आपने भक्तनके पक्षपाती
हैं [illegible] सामर्थ्य करि भक्तनको सब ठौरते निरोध
सिद्ध करत हैं। और जो मर्यादामार्गके साधन हैं जप
तप यत्त होम तीर्थ व्रतादिक यत्यादिकमें अनेक
कालको देशप्रतिबंध होत है। तहां प्रभु रक्षा हीक
रत हैं। और भगवद्धर्ममें प्रभु रक्षा ही करत हैं जैसे
प्रह्लादको अनेक भांति प्रगट भक्तकी रक्षा कीनी। ता
तें श्रीकृष्णको सुमरन सेवा इत्यादि मन लगाइकै
करनौ। तहां कालादिक कछु बाधक न होइगो। आप
ने भक्तनके पक्षपाती भगवान हैं। आपनी सामर्थ्य
सों भक्तनमें धारि सब ठौरते निरोध ही करत हैं २
आगें [illegible] करत हैं। श्लोक। नारायणीय [illegible] पापा
[illegible] विछिन्न रूप [illegible] चिंता
[illegible] यह आगें [illegible] श्रीकृष्णको स्म
रण ही सदा करत हैं श्रीकृष्ण परमकृपाल हैं सो
[illegible] श्रीभागवतमें प्रसिद्ध है षष्ठस्कंधमें कहे
हैं सांकेत्यं पारिहास्यं वा स्तोभं हेलनमेव वा वैकुं
ठनामग्रहणमशेषाघहरं विदुः॥ [illegible] नारायण
[illegible] नाम [illegible] कीर्तन [illegible]

सो है यथानल॥ इति वचनात्॥ और श्री आचा
र्यजी महाप्रभु कहत हैं नवरत्न ग्रंथ में कहे हैं॥ श्लो
तानादथवा ज्ञानात्कृतमात्मनिवेदनं॥ यैः कृष्ण
सात्कृतप्राणैस्तेषां का परिदेवना॥ इत्यादि वचन
सो जानने॥ सो भाव दृढ़ मन में जानि कें करनो आवे
अनजाने करें प्रभु कृपा ही करें सो श्री महाप्रभुजी
की वातें सब कहे हैं॥ नागा राधोदास ने साव की कही
तब माधोदास सों कह्यो [illegible] ना करि भक्ति माधोदास
को भइ या भांति प्रभु सेवा मानि लेन होय या भांति
प्रभु की कृपा स्यासो हमें विदित प्रसिद्ध है तातें प्र
भु ही हमको अपने जानि सर्व कार्य सिद्ध करेंगे तातें अपुन
नें भगवदीय को लौकिक वैदिक चिंता तथा अपुन
उद्धार की चिंता नाही करनी है॥ ६॥ आगें श्री आ
[illegible] कहत हैं श्लोक॥ [illegible] चिंता [illegible]
[illegible] कृपानिधि करिष्यति [illegible] ताहि जो
मन विहि भायाको अर्थ॥ प्रभु की [illegible] ताहि सो अति दास
भक्त के अपराध कृपा ही करत हैं सो अति [illegible]
त्य है मन वचन क्रिया तीन्यो [illegible] कृपानिधि ऐसो प्रभु को
य निज भक्तन पर कृपा है॥ कृपानिधि ऐसो प्रभु को
नाम है॥ त्रिविधि नामावली में श्री आचार्यजी महा
प्रभुन के नाम कहे हैं॥ भक्तजनन के [illegible] सो प्रभु आपु
कार्यी नाम कहे हैं॥ इत्यादि वहुत नाम हैं॥ तातें अपने को कछु
ही स्वेच्छा [illegible] करत हैं॥ तातें अपने को कछु
चिंता नाहीं करनी है॥ ५॥ आगें अब [illegible]
है श्लोक॥ सत्संग भावनो नित्य [illegible] सत्संग [illegible]
वन॥ [illegible] विषय [illegible] हृदय [illegible]
या को अर्थ॥ [illegible] श्री हरिरायजी [illegible] प्रभु
[illegible] करें॥ ऊपर कहे जो

भगवदीयके संगको अभाव है काहेते जो सत्संग होय
तो दुःसंगको ध्यान करे सो सत्संग तो यह कालमें दु
र्लभ है सो सत्संग बिना जतन यह कलिके स्व
भावते सिद्ध है सो हृदयमें विषयावेस करावत है
जद्यपि भगवद्धर्मादिक लौकिक वैदिक सब ही कारि
यत है और विषयके आवेस हृदयमें रहत है सो
श्री आचार्यजी महाप्रभु संन्यासनिर्णयमें कहे
हैं नहीं ताते विषयको आवेस होउ नहीं विषयाक्रांत
देहानां नावेश: सर्वथा हरे: इत्यादिवचनात् ताते अ
सत्संगते विषयको आवेस होत है ताकरिके मेरो म
न चंचलकी नाई ऐसो दिसा फिरत है प्रभुमें विश्वास
नाहीं है सो बिना होउ केवल नेक संसारको दुख ही आ
यत मानत है ताकरि बुद्धि मलीन है ६ आगे श्लोकको अ
र्द्धं कहत हैं श्लो ॥ नैतस्मिन समये कोपि सहायो
मम विद्यते बिना श्रीवल्लभाचार्यचरणांबुरुह
आश्रयात् ७ ॥ याको अर्थ ॥ अब श्री हरिरायजी कह
त हैं जो दुःसंग करि विषयावेसते मन भ्रमत है अ
नेक दुःख पावत है भगवदीयको मिलन नाहीं
ताते या दुःखमें मेरी सहायको करेगो या समयमें
यह कालकरालमें मेरी सहायको न करनवारो है
एक श्रीवल्लभाचार्यजीके चरणकमलको आ
श्रय कीयो है सो ई मेरो सहाय है और कोई सहायक
रिवेमें नाहीं सामर्थ्य है यह कहिके श्रीहरिरायजी
जनावत हैं जो यह कलिकालमें श्रीआचार्यजीके
चरणकमलको आश्रय कीये हैं तिनको तो स्वप
हायकी सिद्धि फलकी सिद्धि है जिनके श्री
आचार्यजीके चरणकमलको आश्रय
न साधन करो परंतु संगदोष

रत होयते विषयावेशा करि चुकी नाई भ्रमेगो॥ तन
का छु फल सिद्धि नाही है॥ तातें श्री आचार्यजी मह
भृके चाणाक मरन को आश्रय महप्रभु श्रीमारगीयवै
मनको निश्चय ही करत यहै॥ आगे अवधारै
हत हैं॥ श्लोक॥ नतस्तु नामतिः कालव्यालाच्चेवे
लौकिको॥ नित्यस्थिनाततो भीतिर्भूयसी जायते
हरिदास॥ याको अर्थ॥ अव श्रीहरिरायजी कहत हैं॥ जो मैं
आपने अवतासों कालको दुख सुने हैं॥ जो जन्ममृत्यु
दुःखसमान दुःख कोई नाही है॥ यह अनेक वार ख
हुनसो मुखसों सुन्यो हैं॥ सो मनहू में कालदुख आ
वतहैं तऊ यह कालसो कठिन हैं बलवान का स्करिस
गरो ज्ञान धर्यो रहत हैं वेलत लौकिक ही वनिआव
तहैं॥ सो याभांति नित्यही लौकिक कार्यमें स्थितिहैं॥ ता
करि अपने हृदयमें बहुत भय वा संसार पावत हैं जैसे प
रीक्षत राजाको कालको भय भयो तब शुकदेवजी भ
गवदीय प्रभु की कृपा ते आये॥ सो वह कालभय नि
वर्त कीये॥ सो अब मैं मनमें हू तन भय भयो हैं॥ सो श्री
आचार्यजी महाप्रभु के कृपापात्र भगवदीयके संगतें
राह भय इरिहौं॥ सो मोको इहने भये हैं॥ तातें भय करिवा
रवार हृदयके पायमान होत हैं॥ ८॥ आगे अवधार क
हत हैं॥ श्लोक॥ विवेको वेद भगवान करुणात्मा चि
कीर्षितः॥ न जानीते न मच्चेतः खिन्नं भवति सर्वथा॥
याको अर्थ॥ वेदको तथा भगवानके अभिप्राय
को ज्ञान न होय जैसे ही कोटिन वरससों वेदाभ्या
स पाठ करो ग्रन्थ वा शास्त्र पढो॥ परंतु वेदको अभिप्राय
को ज्ञान न होइ काहेतें॥ भगवानकी करुणा होय तो
सबै जान्यो जाय भगवदीय मनवचनकर्मकरि
भगवदसेवा स्मरण वनिआवै॥

सदुदनाही होत तातें मैं अपने चित्तमें निश्चय ही विर
पावत हों । तहां ताई प्रभु की कृपा नाही न होत तोइ सर्वथा
सर्वकार्यमें दुःख ही है । याको अब औरहू कहत हैं श्लो
क ॥ विरोधप्रेमजापत्राद्युद्धैर्यं सर्वलोपिहि ॥ अनेन
वर्क्यं किंचित्स्वास्थ्यमन्यामहे हृदि ॥१०॥ याको अर्थ ॥ श्री
विरोधसमाचार प्रेम जो वृन्दावनके पात्रमें लिखि पठा
ये है ॥ सो यह पत्रते बोध न होइ तो वामें दृढ़ ऐके मन
लगाइके वाचि बोध धर्यो तातें किंचित करुणा सो प्रभु
हे यह जानि हृदयमें स्वास्थ्य धीरज है जो प्रभु कृपाक
रैंगी सो काहेतें भगवद्धर्म जानिके करिये ॥ अथवा
अनेजानें कछु वनि जाय तोऊ प्रभुजी कहे हैं अज्ञा
नात्स्थलूत्या नाल्प... निवेदन ॥ तातें सो निवे
दन तो कोइ प्रकार भयो है । तातें मनमें स्वास्थ्य है जो
प्रभु करुणा करेंगे ॥१०॥ श्री हरि ...
... सिद्धांत ... ताकी टीका श्री ...जी कृत सं
... ॥१॥ अब ऊपर कहे हैं के भगवानके अभिप्रा
यको नाही जानत तातें मनमें खेद है । तहां प्रभु करु
णा मोहि ताकरि कछु मनमें धीरज है सो प्रभु करुणा
कौ जब उत्तम मध्यम भगवद्धर्म बनि आवें तहां
को ... उत्तम मध्यम कहा भगवद्धर्म तो रूप
सो है तहां याको सिद्धांतमें कहत हैं श्लोक ॥ प
...मेव ... चार्याणां नमुख्या मेदनः ... ग्रहध
नादिनामथवा ... प्रयोजनं ॥१॥ याको अर्थ ॥ अब
श्री हरिरायजी कहत हैं । अब श्री आचार्यजी महाप्र
भु भक्तिवर्द्धनी आदि ग्रंथमें उत्तम मध्यम प्रकार कहे
हैं अव्यावृत्तो भजेत्कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः व्यावृत्तो
पि हरौ चित्तं श्रवणादौ यतेत् सदा ॥ इति वचनात्
श्री हरि की कथा सेवा स्मरण अव्यावृत्त होइके कर

यह मुख्य औरयावृत हूकरें। परंतु मन हरिमें राखे यह
गोण सो ई श्री हरिराइजी कहत हैं जो घरधन लोकिके
वेदिक सब सब त्याग करि प्रभुको भजन करें जे सेग
राधरदास आवृताहे तिनकी लोटी भारि पूछन
भराय छोतो धरे यह मुख्य प्रकार यह तिनने तो स
वहूसवेत्यथ त्यागायोतऊ प्रभुहू पाकरें। आगे
अवकयें रहत होहें श्लोक॥ वैराग्यपरितोषाद्दे
रत्यागोपी निरूपितः। तथा विषयभोगस्य त्यागो
पि विनिवेधतः॥ श्या०॥ अर्थ॥ वैराग्य औरसंतोष
कोत्याग न करें काहेतें यह लोकिक संसार में वैरा
ग्य होइ तो देहसंबंधी दुख सुख हृदयमें बाधक न
करें। भगवद्धर्म बनी जाय और संतोष होइ सह
जमें आय प्राप्ति होय। ताहीकरि आन देपा इहै
लो भक्ति पाप आचरण न करें काहेतें जो श्रीआचा
र्यजी महाप्रभु श्री सुबोधिनीजी निबंधादि ग्रंथमें
कहेहें श्लोक॥ अचौर्यं नाश पापानां। चोरी करि
पापकछु न पावे ताद्रव्य अन्न प्रभुके सें आगें आरो
गा नाते वैराग्य संतोष आदि धर्म न छोडनो और
विषयभोगको त्याग करें काहेतें विषय बहुत कीये
तें हृदयमें विषयको ध्यान होइ जाय पाछें विषयावे
स समारी रहेसें होइ तो प्रभुको आवेश न होइ सोस
न्यासनिर्णयमें श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं विषया
क्रांतदेहानां नावेशः सर्वथा हरेः ताते विषयभोगहू
त्याग आवश्यक करनो॥ आगें चूकि और हूकहत हैं
श्लोक॥ तथा सत्संगमत्यागः सर्वत्रैव विशेषतः
अन्याश्रयपरित्यागस्तथा बाधकरूपतः॥ श्या० अ
र्थ॥ भगवदीयको संग न त्यागे सदा सत्संग करें। भ
दीयको संग न त्यागें सदा सत्संग करें। भ

१० संगावहतवडोहैंसर्वोपरकतत्वहैंसोश्रीभागवत
प्रथमस्कंधमेंसोनककवाक्यं तुलयामलवेनापिनस्व
र्गंनपुनर्भवं भगवत्संगिसंगस्य मर्त्यानांकिमुताशि
षः सत्संगकेसुखसमानस्वर्गलोकअपवर्गमोक्ष
हूनाहीहैं तातेंभगवदीयकोसंगछोडनोनाहीजहां
भगवदीयहांमनतांश्रापुजायवेंस्वयाहीसंगकरत्रो
रअन्याश्रयकोसीघ्रहीत्यागकरेयहभावमेंबाधक
हैं नंदरायजीअंबिकापूजनगएतेजयएंतेंग्रसेतबतें
छोड्यो श्रीगुसांईजीकीसेवकनीडोकरीनेकहीतु
मनेकांजिवाडं ततनांकुहतप्रभुअंतरध्यानभएहां
मोरस्यासवीकरसीनेकीयो सोपुत्रमतेंछभयोनाते
अन्याश्रयकोसर्वथात्यागकरनोयहबडोबाधकहै
३ आगेंअवश्रीरहवकहतहैं श्लो॰ एवंनिरूपितेतमा
र्गात्यागोसर्वत्रसर्वदा: नजीवात्यक्ततांकिंचित्
दुरापवर्तेस्वतः ४ या॰ अर्थ याभांतिनिरूपणश्री
आचार्यजीमहाप्रभुनेंश्रीसुबोधनीजीआदिग्रं
थनमेंकहेहैं सोजातेंविचारकरत्यागकरनोहैहुतां
कोत्यागअत्यागकरनोहोहतांकोसघ्रहभगवद
धर्ममेंसाधकनाकोसवको अत्यागयहविचारम
नमेंराखे परंतुजीवकीवलनाहींहैं तत्पागसकेन
रापविस्तके ब्रह्मादिकविनाहीनाराहीक्तोकछुवस
नाहींचलततवबडेन्यागीहें तोजीवतुछकहावे
याकोकछुनाहीहेतेजीवतेमायाकेवसस्वभाव
करिदुष्टहाद्दरहोहें ४ आगेंअवश्रीरहवकहतहैं
श्लो॰ अतःकथंकमार्गस्थितिजीवेषुसर्वथा
फलसाधिकयकार्येनजनैस्तत्राऽस्थितेपुनः ५ या
अर्थ एसेदुष्टजीवनिपात्रदृष्टेंकारणवारंसोय
हसर्वोपरतुष्टिमार्गमेंस्थितिसर्वथानहीं अब

प्रहरसेसारलौकिकविषयासंग होइ सो पुष्टिमार्गमें कोनभांति स्थिति होइ। सर्वथा न होइ। सो जीवयह पुष्टिमार्गीयकौ फलताकौ प्राप्त होइ। यहस्थिति नाहीं तो फलकहांतें सिद्ध होइ। जोनहोइ कहेंजो जीवनतो दुष्ट है इनसों कोई प्रकार फलसिद्ध होइ। लौकिकतो जीवनतो नाहीं छूटत नहोवक हतहैं। पै श्लोक। तथापि श्रीमदाचार्यचरणाश्रयणादपि अस्याकमपि यद्धर्वंन इवेतसदैवहि॥ याकौ अर्थ अवश्री हरिरायजी कहतहैं जद्यपि जीवअनेकदोषसों भर्योहै। याजीवसों दोषनाही छूटतहै ऐसेजीवश्री आचार्यजी महाप्रभुनके चरणकमलको आश्रय मनमें दृढ राखके दोउन दिनमें समर्पके नउ। वाकों फलसिद्ध होइ। यद्यपि पुष्टिमार्गको फलसर्वथा सिद्ध होइ। आगें सोई जीविजसकल है। जितनहुँ हैं वासौं विद्रुपहोय नहुँ तिनको वहु ज्ञानेन हृदये भजने नहुँ ममापराधविनधाविचार्य। ऐसौ रस्यो। परमं जीवो :आश्रयात्वत्पदांभोजयु
हवो श्रीआ
रणाश्रयसमुद्धारं इतिवच
सर्णाहरि। याभा
नु..
तिनि: प्रभुनके चर
णकमलको दृ कोयहपुष्टि
मारगीयफलनिश्चय है। याग्यवचार
हृकहतहै समर्दोषेपानभवेच्छिथ
लेमनः यद्विकाल गाविश्वासोपि भवेत्त
हि। ३। याके भू ऊपरकहे केतोनि
श्रेयफलसिद्ध होय तामें दोषमहाबाध तिनसौ
वचनतो फलसिद्ध होय, एकजो दुःखगहै।

अतें मोक्षपर्यन्त मनसिद्ध न होइ जाइ तो आश्रय जा
तर है । भरथ को मृग ही दुःसंग तें तीन जन्म भये । हु विद
वान राम भक्त हतो । ते नरकासुर के संग तें प्रभुनो त्यज्यो
छोर दियो है । तजीव दुःसंग तें गिरै । तथा कालदोष ते वि
श्वास न रह्यो । तहां अविश्वास भयो । तहां आश्रय छूटयो
सो तो विवेक ही आश्रय गिरयो ॥७॥ आगे अवश्य कहत
हैं श्लोक । अविश्वासो न कर्तव्य इत्युक्तो ऽनुवाद
कः । अथ मे वास मार्ग सम्बन्ध माश्रय साधक । याको
अर्थ । अविश्वास कबों न करै सो श्री आचार्य जी महाप्र
भु विवेकधैर्याश्रय में कहे हैं । अविश्वासो न कर्तव्य स
र्वथा बाधकस्तु सः । ब्रह्मास्त्रचातकौ भाव्यौ प्राप्तं सेवे
त निर्ममः इति वचनात् । अविश्वास सर्वथा न करै
रामन को अविश्वास भयो । तब ब्रह्मास्त्र छूटि गयो । ह
नुमान ने लंका जराई । चातक को विश्वास है सो मेघ
ही मनोरथ पूरन करत है । ताते अविश्वास आसुर ध
र्म है । ताते सर्वथा न करै यह श्री आचार्य जी महाप्र
भु पुष्टिमार्ग में मूल सर्वोपरि आश्रय ही साधक है
॥८॥ आगे आश्रय कहत हैं श्लोक । आश्रयेनैव सर्व
लो सिद्धिमेति न संशयः । पृथक् शरणमार्गोक्तिरत सर्व
प्रभो रूपिणि । याको अर्थ । जा जीव को दृढ़ आश्रय प्र
भु में भयो तिनको सकल कार्य सिद्ध भयो निश्चय या
में संशय नाही व [illegible] । गो पुष्टि श्री आचार्य जी
महाप्रभु सब तें न्यारो प्रगट कीयो है । श्री कृष्ण फला
त्मक पुष्टिमार्ग [illegible] शरण अपने हैं वो जीवन
के आश्रय सो आगे कहत हैं ॥ श्लोक । शरणस्थ समु
द्धारं कृष्णविज्ञापनादिपि । विवेकधैर्यभक्त्यादि साध
नाभाव बाधना ॥१०॥ याको अर्थ । श्री आचार्य जी महाप्र
भु कहत आश्रय ग्रंथ में कहे हैं । शरणस्थ समुद्धारं कृष्णवि

तापनादिक विवेकधैर्यभक्त्यादिसाधनाभाववा
१॰ याभांतिश्रीमहाप्रभुनैंश्रीकृष्णजीसोंकहीजो अ
पनेपुष्टिमारगीयसेवकनकोंसरणासिद्धकीरी औ
रविवेकधैर्याश्रयमेंवर्तेंहैंनाकरिकेंजीवनमेंसा
धनकोअभावहैं तिनकोंसरणाकीरीहैं औरविवेक
धैर्याश्रयमेंवर्तेहैंनाकरिकेंजीवनमेंसाधनकोअभा
वहैंतिनहूकोंसरणाकीनेहैं। विवेकधैर्यभक्त्यादिर
हितहैंदुखसुखमेंअसमर्थवासुस्थिबासर्वथाशरणं
हरि: याभांतिपुष्टिमारगीयसरणाश्रयमेंविना
साधनकेजीवतिनकोसिद्धकीनेहैं औरमर्यादामेंभ
गवद्गीतामेंभगवानशरणमार्गकीनेहैंसर्वधर्मान्
परित्यज्यमामेकंसरणंव्रज। अहंत्वासर्वपापेभ्यो
मोक्षयिष्यामिमाशुच:॥ भगवानकहेहैंसर्वधर्मछोडि
कैहेअर्जुनतूमेरीसरणआवमैंसगरेपापनकोदूरि
मोक्षकरूंगोयहमर्यादाजोपापदूरिकरिकैंमोक्षदे
सोफलऔरश्रीआचार्यजीमहाप्रभुअपनेजीवन
कोंसाधनरहितहैंतोऊसरणासिद्धकीनेहैं। जेवि
वेकधैर्याश्रयकोअभावहैं तिनकोंहूसरणासिद्ध
कीनेहैं॥१०॥ याकोंअर्थकहेंहैंकेहतहैं। श्लो० कृ०। सन्या
सविरहसततंहृत्प्रभुपदाश्रये। नचुतावानभावा
विभावनपरायणो॥११॥ याकोअर्थ। अवश्रीहरिर
जीकहतहैंजोपुष्टिमार्गमेंजीवनश्रीआचार्यजीम
हाप्रभुहरासरणआयेहैंसोतिनकोंश्रीआचार्य
निश्चयनिरंतरअपनोसरणप्रभुकेपदकोआश्र
हीसिद्धकरोंअपनेजीवनकेअर्थनोंपदस
। तातेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभु
साधनकी
निता

भाष्यमें अष्टमस्कंधपरायणमें है इहलिख्यासराखे॥ श्रीकृष्ण
के सनमुख वह साश्रयग्रंथको पाठ करै तो सकल कार्य
सिद्ध होय॥१॥ आगें अब ओरहू कहत हैं श्लोक॥ यथास
क्ति स्वमार्गीयप्रभुसेवापरैरपि॥ निरंतरस्वमार्गीयस
त्संगः सम्पादितोस्ति॥१॥ याको अर्थ॥ अब श्रीहरिरायजी
कहत हैं जो सरणकी भावना करें॥ और यथासक्ति पुष्टि
मार्गीय भगवत्सेवा करें॥ जितनी बने तितनी करें
अशक्त होय तो बाहु कालौ ना चिकार तो बाया भांति तीनों
वचन श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे हैं श्रीभागवतअ
ष्टमस्कंधमें एक श्लोक है हैं श्लोक॥ यथा हि स्कंधशाखा
नां तरोर्मूलावसेचनं॥ एवमाराधनं विष्णोः सर्वेषामा
त्मनश्च हि॥१॥ भगवान की सेवा करै॥ सो वृक्षके मू
ल में जल डारै॥ सो शाखापत्र सब हरे होय॥ और देवन की से
वा एकपत्र सा ख्यात है तातें प्रभु की सेवा करनी॥ पहपु
ष्टिमार्गी भगवदीयवैष्णवको मुख्य धर्म है॥ और पुष्टि
मार्गीयको संग निरंतर करै॥ सो भक्ति वढे नीमि श्रीआ
चार्यजी महाप्रभु कहे हैं सेवायां वा कथायां वा यस्यास
क्तिर्दृढा भवेत्॥ सेवा ते पोहि चि वें भगवदीयके मुखतें
सुनको कहा है जो निरोधलक्षणमें कहे हैं॥ महतां कृपया
यद्वत्कीर्तनं सुखदं सदा॥ न तथा लौकिकानां तु स्निग्ध
भोजनरूक्षवत्॥१॥ भगवदीयकी कथा सो स्निग्ध सुंद
र है महाप्रसाद भोजन तातें सब देह पुष्ट होय॥ लौकि
क जीवनके मुखतें रूखे आसुरी भोजन तातें स्वमार
गीय वैष्णवनको संग करनों है॥१॥ आगें अब ओरहू
कहत हैं श्लोक॥ स्थेयं संसारविमुखैः स्वगुरुप्राणते
रपि॥ निरुद्धस्थितिसंदेहहा हनोद्योगानन्तरं॥१॥ या
को अर्थ॥ अब लौकिक संसार ते विमुख रहें॥ अपने गुरु
की सरण रहि दैन्य होय॥ प्रा[illegible]तेसरहें॥ श्लोकको त्री

यस्वभोजगनाथगुरोर्संसारवन्हिनाहृग्रंमाकाल
चत्त्वरीयंशरणागतः ॥ १ ॥ याभावकरिकें गुरुकीसरणा
नरहें।कोहैतोगुरुकीकृपाहोइतोप्रभुकृपाकरें गुरुः
सन्नहोइतोकोईसहायकरनसामर्थनाहीं ॥ औरप्रभुश्र
प्रसन्नहोइतोगुरुरक्षाकरें तातेंगुरुनेप्राणपत्यरहें प्र
पुष्टिमारगमें जिननोंहै ताकोअखिवतजाने जोजरूपो
याभांति [illegible] मानिकें छोडिदेहत्यागादी ग्रहिमराखें जोम
तन्मार्गसोंविरोधीहू तिनसों त्यागहीकरनो याभांतिवे
स्वरहे ताकोपुष्टिमारगीयफलको अनुभवहोइ श्री
आचार्यजीमहाप्रभुकीकृपातेंयहसिद्धांतभयो १३३
श्रीहरि ॥ [illegible] सप्त [illegible] सिद्धांत [illegible] नाहीं [illegible] श्री
[illegible] पे [illegible] भाष्ये संपूर्ण ॥ १२ ॥ अवकुपरणिकोप्र
कारकहे औरसेवाकोप्रकारकहे [illegible] स्वरूप साधन तामें
यहकालबाधक है, सोजीवनाहीजानत सोजीवकोया
भांतिज्ञानहोइ नो साधन वनिआवें सो आगे सिलापत्र
मैंकहतहें ॥ [illegible] कालस्वकार्यकरतनजा नातिजनो
[illegible] तः प्रमाद्यतिहरेः कार्येष्वात्मकार्येजनोयनः प्रमाद्य
[illegible] तिहरेकार्यस्वात्मकार्येविविक्तं ॥ १ ॥ या [illegible] अर्थवश्री
[illegible] रिराइजीकहतहें जोयहकालहे सो अपनोकार्यकी
[illegible] नातहे [illegible] जीवकी आयुकोहरतहें औरजीव
[illegible] हीजानतहें जो मेरी आयुदिनदिन घटतहे कालते
[illegible] जातहे, यहसोनजीवको नाहीज्ञानहे सोकहा
[illegible] अनेककार्यमें प्रमादयाजीवको होइरह्यो है, सो
[illegible] विदिवासंसारको कामदेहइंद्रीको पोषण विषया
[illegible] अनेकभांतिके कार्यकी चिंता ग्रसितहें तातेंप्रमा
[illegible] अवयहमाकोकरनोहें, मे
[illegible] कार्यमें प्रमादहोइरह्यो है, ताकरिज्ञान ति
[illegible] री आयुको भक्षणकरतहे मेरी न

५. मोकों कहा करन आवे है। यह ज्ञान नाहीं होत अनेक कार्य में
६२ प्रमाद होय और अपने स्वामि के कार्य में विकल नहीं है। इस
संबंधी स्वामि को कार्य में ह्न तो अनन्य है। या संबंधी भ
गवद्धर्म में सदा सुमरन करे। तैन वार्ता कथादि इत्यादि का
ये में विकल है नाहीं सवकन है। या योग्य वकार है कहत
है। श्लोक।। केवलो हरि किंचनु नहीं यानां नत्वो चिंतान
प्रयति मुहः सेवका नो कृपानिधि।।१।। याको अर्थ। अप
ने स्वामी तो विना कार्य में प्रमाद है। स्वामि कार्य विक
ल है। सो केवल हरि भगवान के कार्य में व्यग्र है। निरंतर
है। सोय हृपुं स्मरण।। ये वैष्णव कोउ चिंता नाहीं है। काहे
ते श्री कृष्ण तो कृपा के निधि हैं। सगरी जगत के भरण पोष
न करत हैं। सो कहा अपने सेवकन को पालन नाहीं कर
ंगे सेवकन के उपर तो सदा कृपा करत ही आये हैं। या भां
ति वैष्णव श्री ठाकुर जी को विश्वास मन में राखि भगवद्
धर्म आचरन करे सगरे दिन तथा व्योहार विना न च
लै तो अपनो समे प्रहर एक तथा घड़ी ४ व्योहार हूं करे
और मन में यह जाने जो जितनो मिलनहार होयगो
सो पहर एक चारि घड़ी में स्वामि मिलि रहेगो यह विचा
र वैष्णव राखे भगवान को माहात्म्य विचारे जो प्रभु सर्व
सामर्थ्य युक्त है सर्व सिद्धि करेंगे।। आगे श्री आचार्य जी क
हत हैं।। श्लोक।। चिंता कापि न कार्याति प्रभु वाक्य विधि
पत।। याको अर्थ। निवेदितानि श्रपदिस्यात्संमना लौ
कुयाकायत्र्य मन में चिंता न करे सो अन्वय में श्री आ
चार्य जी महाप्रभु कहे हैं।। चिंता कापि न कार्या निवेदिता
त्मभिः कदापि भगवानपि पुष्टिस्थो न करिष्यति
लौकिकीं च गतिं।। इत्यादि वाक्य को चिंतन भावना
अहर्निश मन में करे। यह न जाने जो मैं तो कछु सम
नाहीं प्रभु कृपा के सेवक रंगे यह विचार तो प्रभु को

अज्ञानीभक्तज्ञानीभक्तबराबरिहैं सोनवरत्नमेंश्री
आचार्यजीमहाप्रभुकहेहैं अज्ञानादथवाज्ञानात्
कृतमात्मनिवेदनं बहुनिवेदनश्री आचार्यजीमहाप्र
भुद्वाराज्ञानकरिकीयोहै अथवाअज्ञानतेकाहूकीदेखा
देखीकीयो नऊ चिंतानाहीकरनीहै काहेतेअग्निके
यहस्वभावहैजो अनजानेहाथधरे अथवाजानिकेहा
थधरे सोहाथिभस्महीहोय यहलौकिकअग्निमेंहूतो
सामर्थहै तोयहतोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुद्वारानिवेद
नकीयो ताकोलौकिकगतिकवहूनहोइ श्रीभागवत
केअष्टमस्कंधमेंकहेहैं अज्ञानादथवाज्ञानादुत्तम
श्लोकनामयत् संकीर्तितमघंपुंसोदहेदेधोयथानलः
१ अज्ञानतेज्ञानतेभगवन्नामलेहतोसकलदोषभस्म
होइजाइ इत्यादिवचनकीभावनामनमेंराखिचिंता
न करनी नाहीकरनी एकप्रभुकोआश्रयमनमेंराखे
३ आगेश्रवणकीयोहै कहतहे तदातुसाधनाभावान्
कि इति ज्ञानतः फलतो विरहेनहूविसनौसर्वत्रके
राभावनानं ४ या को अर्थ जोजीवबुद्धिनेयहचि
ताहोइतोसाधनमेरमनमेंकछुनाहीहै फलसिद्धके
सेंहोइगो सोयहचिंताहूनाहीकरनीहै काहेतेका
हूजीवमेसाधनकोअभावहै साधननाहीवनिआव
तो केहूसाधनवनेऐसानहेजोमेंनिवेदनकीयोहै सो
ताकेफलश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकेअंगीकारतेफ
लसिद्धिहै साधनतेफलसिद्धिनाहीहै फलसिद्धिकरजा
नियेजवश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीयेकोविप्रयोगरसान
ुभवविरहदुःखमेंहोय तैसकीभावनाहोइ इहिजो
सर्वेदुःखहरनातिनहीकोविर रहोइ श्रीठाकुरजी
केसंबंधविनाऔरवछुनसु तादृश
तैसकीभावनाहोइ या भां

अग्नि हृदयमें प्रगट होत हैं तिनहीको पर पुष्टिमारगी
यपन को अनुभव होइ ॥ ४ ॥ यव और हू कहत हैं श्लो
क लीलातिरिक्तसृष्टौहि निरानंदत्वनिश्चयात् यथा
कथंचिद्विस्मृत्य प्रपंचं हृदयेन्यसेत् ॥ ५ ॥ टीका ॥ अब
श्री हरिरायजी कहत हैं जो लीला संबंध तें रहित प्रवाही
सृष्टि हैं सो निरानंद है तिनको प्रभु अपनो आनंद कब
हूं दान नाहीं करत हैं वे चर्षनी नाइ सदा संसारमें भ्रम
त हैं तिनको यह संसारही प्रकृत हैं भगवल्लीला संबंध
के छल्यो आनंद नाही हैं आनंद कारहित हैं यह नि
श्चय जानने ओर भगवल्लीला संबंधी हैं वो सृष्टि हैं
तिनको कहा लक्षण हैं महाप्रभुजी द्वारा शरणागत हैं
गव कोरि कहीवार यह प्रपंच ग्रहि तिनको नाहीं छूटतो सो
थोरो थोरो मनमें छोडत हैं यह निरमल अपने मन
में विचार करिकै कि प्रभुको स्मरण करत हैं यह ज्ञान है
दृयमें होत हैं जो हम तो सदा प्रभुके दास हैं अरु तान और
प्रभुको भूलि गये हैं हमारे तो प्रभु धर्म ही है जो प्रभुकी
सेवा सुमरन करू या भांति देवी जीवको ज्ञान होत है आ
सुरी जीवको नाही होत है ॥ ५ ॥ आगे अब और हू कहत हैं
श्लो ॥ क ॥ हृदगतं सत्संगे तथा लीला पुनः सदा स्मरेत्
श्रीमदाचार्य भक्तभावात्मकं पुनः ॥ ६ ॥ टीका ॥ अब श्रीह
रिरायजी कहत हैं महाप्रभु सर्वोपर हैं जिनको वेद शास्त्र पार
नाहीं पावत हैं ने सिनेति कहत हैं बुद्धि वाली तें अगो
चर हैं ओर सदा आनंद स्वरूप हैं कर सजिनको आन
न्द हैं सो आनंद श्रेयमें श्री आचार्यजी महाप्रभु कहत हैं
प्रकट भक्त सेवा शरणि तानंद कंद हैं न पूरण आनंद हैं
तिनको आनंद हू सोहत हैं सो लालन हृदय आनंद की
गान नाम हैं अपार नाही हैं श्री हरि पूरण आनंद हैं

जो आनंदको हू पारनाहीहैं जैसे हू सबको हू पारनाहीहैं तातें
श्रीहंससदा आनंदरूपहैं सोश्रीहंससदा वे न भक्त
के हितरसरूप लीलामें रसवेष करतहैं आपुरसरूप
भक्तन सों मान करतहैं हैन्यहोयमान मनावतहैं सो गीन
रूपरन वमुदार याभांति श्रीस्वामिनीजी सों प्रार्थना करतहैं
जो अपने श्रृंगार विर मेरे मस्तक ऊपर धरो तुमारो पदप
न्यप्रभु करतहैं व्रजभक्तनके भावात्मक हैं श्रीहंस के रस
सो व्रजभक्त भाववर्णिके अनुभव करतहैं ६ अब और
प्रपंचवैरिणालाध है तु लौकिकनाशने ७ या
श्रीहंसजीके सेहै श्रीयसोदाजी अपने उत्संगमें ली
खिलावतहैं सो याभांति परमसोभाहेतहैं मुग्धवा
ककीनाई श्रीयसोदाजीके कंठमें वेष्टितहैं प्रपंच जो यह
संबंधी स्त्रीपुत्र पति घर लौकिक वैदिक कार्य ताके
हैं श्रीयसोदाजीरूप द्व भूमिमें प्रभुको धरिके दूध
नेतहतो सो स्वादन गई सो श्रीठाकुरजीन साहैस
धिके मारफोरि डारे और माखन हतो सो हूसबनें व्रद
वारखवाइ दीयो यह करिके यह जेनाए जो मोको
ध्वंग रस जकरेगो ताको प्रपंच हम तें दूरि करेंगे
हैं निसिद्ध होयगो और यह प्रपंच के वैरी हैं जो जो भक्त प्र
याप्रियकी यो तिन सबनको प्रपंच नास भयो प्रपंच
के हैं लौकिक कामक्रोध मद हमरतानाम
सो ल्हतें लौकिक सब के नासक तो भक्तनको प्रपं
लौकिक सबै सुंदर करत हैं ७ आगें अ
स्वप्रवेशायकामादिसबैते
रवीलं धीयं परमाति मही त्सवं ८

सो श्रीकृष्ण जब भक्तनें हृदय प्रवेस करनेको विचार करत हैं ता
समय जु भक्त के हृदय में काम क्रोध मत्सरता आदिक के
बहूरि करत हैं पर कहिकें उह जननारो जो जहां तोंई भक्तके हृद
यमें कामादि माया के दोष हृदयमें भरे हैं नहां तांई श्रीकृष्ण हृ
दसें नाही पधारे जानियें जबा होय बहूरि होय तब जानिये
प्रभु हृदयमें निश्चय पधारे भक्तके हृदयमें श्रीकृष्ण पधा
रिकें कहा करत हैं उह भक्त अपनो लौकिक देह संबंधी
पे छोडिकें श्रीकृष्णके दासनकी आर्ति चिंति विरह होत हैं
सो तद्रूप स आर्ति विरह दुख हैं सो महामहोत्सव रूप है
सो हम भक्तनको सिद्धि है श्रीकृष्ण हृदयमें भावात्मक वि
राजत हैं तातें यह कारज नाहीं वनि आवत सगरो छि
वेरागी तयुगलगीत गान करिकें निरवाह करत हैं श्री
रासपंचाध्याई में अंतरध्यान प्रभु भये पाछे भक्तनको
महा विरह भयो तो प्रभु फेर प्रगटे रसदान कीये विरहन
होने तो प्रभु वेसे प्रगटे तातें श्रीकृष्णमें विरह आर्ति जित
नी अधिक होय सो महत्स्वरूप आनंददाता हैं दयागोप्र
व श्रीभक्त कहत हैं सो कों श्रीमदाचार्य हृदय श्रेय पूर्णपक्ष
यें अनेक भावरूपात्मा गोपी रमण तत्पर [illegible] याको अ
रस भावात्मक श्रीकृष्ण श्री आचार्यजी महाप्रभुके हृदयमें
भक्तन सहित केली लीला करत हैं सो काहेते जो सो क्षीर
सागरमें शेषसाई भगवानको दृष्टांत देकें कहत हैं जैसे
क्षीरसागरमें सेषसायि न्यारे हैं तैसेही श्री आचार्यजी महा
प्रभू को हृदय पासिज्यारूप नहीं सेषसायिरूप पर श्रीनारायन
कों है इहां श्रीकृष्ण भावात्मक रसात्मक पोढे हैं उहांए
क श्रीलक्ष्मीजी संग विहार हैं इहां अनेक भावात्मक
व्रजभक्तनकी टानको स्वामिनी तिन संग रमण कर
त तत्पर सो श्री आचार्यजी महाप्रभुन के हैं अपने हृद
कों भाव जनाये हैं ताकरिकें जान्यो गयो हैं सो कान

मानिहृदयारो येलीलाहीराधिकायने लक्ष्मीसहस्रली
लाभिसेव्यमानकलानिधि ९ याभांतिश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुं अपनेहृदयमें प्रभुलीलाकरतहै सोतिनकोनमस्का
रमंगलाचरणकरिश्रीसुबोधनीजीनिबंधप्रगटकीरी
हैं याभांतिश्रीआचार्यजीमहाप्रभुंअपनेनिजभक्तनको
अपनेहृदयकीलीलाप्रगटकरतहैं सोभक्तयाभांतिली
लासहित श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकोस्मरनकरतो अनु
भवहोइ ९ आगेंअवऔरहूंकहतहैं श्लो मधुपालि
नवाधुकरीमालिसुविराजितं प्रसन्नवदनांभोजकरु
णारसवहूरी १० या श्लो . करहाजोमोरकेपक्षकोस
वौरिकेमाथेमैंमुकटधरेंहें श्रीकृष्णकेसहैं रामावलीहै
नाभिकमलपास सोमानोमधुपजोभ्रमरकीपंक्तिमाला
कीनाई अत्यंतसोभातहैं मुखारविंदअत्यंतप्रसन्नहैं ता
कोभावयहजो अनंतकोटिव्रजभक्तनकेसंगलीलाकरि
अधरामृतपानकरतहैं हृदयमेंमहाआनंदभयोहै
ताकरिवदनकमलअतिप्रसन्नहैं करुणारससंयु
क्तहैं भक्तनकेऊपरकरुणादृष्टिकरिरसपानकरावतहैं
१० आगेंअवऔरहूकहतहैं श्लो . बर्हिपिछशिरो
भूषंशृंगाररसरूपिणं एवंविधानंतगुणंनिधायहृदये
सदा ११ या श्लो . कहाजोमोरकेपक्षकोसवारिकेमा
थेमैंमुकटधरेंहैं सोशृंगाररसरूपहैं जेसेंमोरजबरसदां
नकरतहैं तबनिर्तकरतहैं सोतैसेंहीश्रीठाकुरजीमोरमु
कटकोशृंगारकरिभक्तनकोरसदानकरतहैं तातेंमोरमु
कटकोशृंगारहैसोशृंगाररसरूपहैं तातेंमोरमुकटको
शृंगारहैं याभांतिरासादिकलीलामेंअनेकलीलाव्रज
भक्तक्रीडामानादिकसर्वलीलासंयुक्तऐसेश्रीकृष्णको
अनंतलीलासंयुक्तअपनेहृदयमें
दरसनकरिहृदयमेंसदाहीधारनकर नि

१०१· रिबू कहूं केवल हूं नाही ॥ ऐसें न करें ॥ १ ॥ श्रागें श्रव श्रोर हू
कहत हैं ॥ श्लोक ॥ न स्वसेवा प्रवृत्तीनां आजीवन्त्वधर्मतः ॥ न फलार्थं
न लोभार्थं न प्रतिष्ठान प्रसिद्धये ॥ २ ॥ या श्लोक को अर्थ ॥ ऊपर कहे ए
से श्रीकृष्ण श्रृंगार स्वरूप तिनको सदा हृदय में ध्यान करे
मानसी सेवा सो केवल सिद्ध होय ॥ सो कहत हैं ॥ जो प्रथम तनु
जा वित्तजा मूल लगाइ के सेवा करें ॥ सो सिद्धान्त मुक्तावली
में श्री आचार्य जी महाप्रभु कहे हैं ॥ तो कृष्णसेवा सदा कार्या
मानसी सा परा मता ॥ श्रीकृष्ण की सेवा सदा करें तिनको
यह मानसी सेवा सिद्ध होय ॥ ताते यह पुष्टिमार्गीय वैष्णव
को धर्म है ॥ जो श्रीकृष्ण की सेवा करें सदा ॥ जैसें ब्राह्मण गाय
त्री न पै तो ब्राह्मणपनो जाइ शूद्र बनत है ॥ तैसें ही वैष्णव होइ
के भगवत्सेवा न करें तो वैष्णवता जाइ ॥ ताते श्रीकृष्ण की
सेवा करें ॥ अपनो स्वधर्म जानि कछु फल की आस करि से
वा न करें जो मैं कृतार्थ होऊंगो ॥ कछु लौकिक वैदिक मो तें
भक्ति कछु हूं फल की वासना मन में न राखे ॥ कछु लोभ मन
राखे जो मैं सेवा करूं तो कछु वैष्णव जानि के मो को कछु दे
नाय ॥ कछु हू मन में अपने में लोभ न राखे ॥ और प्रतिष्ठा
र्थ न करै जो मेरी वडाई होइगी ॥ लोग भलो वैष्णव जानेंगे
या भांति अपने को प्रसिद्ध न करै जो मो को कोऊ जानें
सोऊ न करै गोप्य रीति सों करे ॥ सो श्रीभागवत नवमस्कं
ध में भगवान कहे हैं ॥ नोऽद्वैवापात्रति ॥ मत्सेवया प्रतीतं च
सालोक्यादि चतुष्टयं ॥ नेच्छन्ति सेवया पूर्णाः कुतो ऽन्यत्का
ल विप्लुतं ॥ १ ॥ इति वचनात् ॥ श्रीभगवान जी कहत हैं जो भ
क्त सेवा मेरी करि पूर्ण हैं यही प्रतीत हैं ॥ तिन को मैं चार प्र
कार की मुक्ति देत हों ॥ सालोक्य ॥ सामीप्य ॥ सायुज्य सारूप्य
सोऊ नाही लेत हैं ॥ ऐसे पूर्ण निष्काम हैं ॥ तिनको काल के
हा वाध करे ॥ या भांति मन पूर्वक वैष्णव को स्वधर्म जा
सेवा करे ॥ अव और हू कहत हैं ॥ श्लोक ॥ श्रीमदाचार्य मा

गेणान्येनापिकस्यचन: नुकल्पितप्रकारेणनदुर्भाव
समन्वियात् १३ या [illegible] वैस्नवसेवाकरेसोंश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभुकेपुष्टिमार्गकीरीतिहैताहीअनुसारकरेंक
दाचितभूलिकेंअन्यमार्गकीरीतिहैसोनकरेंऔरअप
नेमनतेंकल्पितप्रकारहूनकरेंजोनजानेंसोपुष्टिमारगी
यभगवदीयसोंपूछिलेइमननकल्पितसर्वथानकरेंदु
र्भावसोंन [illegible] जोकेहाभयोजैसेंलौकिककार्यहैंतैसेंय
हूकरियेहैंयाभांतिअग्रहदुर्भावसम्पर्कनकरियेंप्रीति
पूर्वकसर्वोपरपरमफलरूपजानिकेंसेवाकरियें १३ आगें
अवऔरहूकहतहैंश्लो० तत्वेविदित्वापरमेयसोदोत्सं
गलालितःश्रीमदाचार्यतत्पुत्रौहित्वास्वस्वामिनीरपि
१४ या [illegible] वैस्नवभगवदसेवाकरेंऔरयेचारोपदा
रथकोपरमतत्वजानेंश्रीयसोदोत्संगलालितप्रथमतत्व
श्रीगुसांईजीकहतहैंजोजानितपरमतत्वयसोदोत्संगला
लालितंनत्वन्यद्वितीयेप्राहुरासुरास्तांनहोबुधायाभां
तिप्रथमतत्वयसोदोत्संगलालित १ दूसरेश्रीआचार्य
जीमहाप्रभुअपनेआचार्यजीश्रीवल्लभाचार्यजीपरम
तत्व २ तीसरेश्रीगुसांईजीश्रीमहाप्रभुजीकेपुत्रश्रीवि
ट्ठलनाथजीपरमतत्व ३ चौथेअस्मत्स्वामिनीव्रजभक्तसे
परमतत्व ४ येचारोपरमतत्वअपनेमनमेंजानें १४ आगें
अवऔरहूकहतहैंश्लो० नतुल्यबुध्यनादराःस्यात्
सर्वथेतिविनिश्चयःएतावतीसतीसिद्धासंस्थितास्त्वधी
यतां १५ या [illegible] ऊपरकहेजोश्रीस्वामीश्रीआचार्य
स्वामिनीजीइनचारोंकोपरमतत्व
जानैंइनचा
नऔरकोएकनजानेजोकोई
किनमेंकाहूकोजानेंताकोसीघ्रहीना
महोइ
जाननेसोवोनामें
हैकेघरहूनें

नैंकहीजोकछुश्रीठाकुरजीकेंपरगावों यहसुनतहीरा
म्हारानेंकही।रांणीतेंयहपदतेरेसमकेहें आगुपाछु
तेरोमुखदेखवा।पाछेमीयांवाईनेंवोहोतमनुहारकरिकें
गाखे।परंतुयननेंतोउहांगामकोछांडिदीयो।श्रीजीनस्वामी
वीरवलकेडेहागगोहतो।वरसोदीलेननहोंगमागोछीतस्वा
मीगिरिधरनश्रीविठ्ठलयेइतेंनेंपृथ्वीकछुनसंदेहयह
सुनिकेंवीरवलनेंकही।देसाधिपतिपूछैगोतोंकहाजुवा
वदेऊंगो।यहसुनतहीछीतस्वामीकहेंजोमेरेभाग्यतोतुम
हीमिलेहो।तातेंआगुपाछेतेरोमुखनदेखोंगो।पाछेंव
रसोदीछांडिकेंचलेआये।एसीटेकवैस्नवराखेंवावारीत
त्यकोंतोविवस्नवकोईहनसमानजानें।तावातेंअयही
नासहोइ।अवश्रीहरिरायजीआपनेंमोंह श्रीगोपेश्वरजी
सोंकहतहें।जोयाप्रकारमेंसिलालेपमेंलिख्योहेंसोतु
मआपनेंहृदयमेंआवस्यकहीकरीयो।१५।आगेंअवकथ
रहेंकहतहेंश्लोक।।चरन्तिवीपरेषुयायाइस्युराधिक
रिता।।मिलंतिस्वेछयाश्रद्धायुतापुंसिचेतसा।१६।धाय
कोश्लोकौ।।यहऊपरसिलोककहीहें।सोश्रीआरकेंआगेंमति
कहियो।कोईयासिलाकेंअधिकारलायकहोय।ताके
आगेंकहियो।सोभगवदस्थानेंआपुहीआयकेंप्राप्त
नावरेंअहोहोइपृथ्वीचितलगाइकें।तासोंकहियो।
पनीइछातेंमानिंबुलाइकेंकहियो।यहसवोपरसिद्धांतहें
अधिकारीपात्रविनाइसकहेंनाही।पहजानिकेंश्री
आगेंमतिकहियो।।१६।।आगेंअवश्रीरहेंकहतहें।।सि
जीवनतत्परतासिद्धोपूर्वानुलोकतुष्यति।।पथाविष
तोबाइतिकासुनंथ्याहरेः।।१७।।पाकोश्लोकौ।।ऊपरकहे
कारयहजीवभगवदधर्ममेंजवतत्परहोइतबयह
माणीयफलसिद्धहोइ।जेसेंप्रहलादकोहरणाकु
नहुरवदीयो।परंतुप्रहलादआपनीतत्परताभगव

मैंतवतत्परभगवानकोंआश्रयनछोडेतोनृसिंहजीप्रा
रहोइ प्रतिबंधदूरिहोकीकेफलसिद्धभरोतेसेहीपुष्टिमार
गीयभगवदीयतत्परहोड प्रभुपुष्टिमार्गमेंतोफलसिद्धिहोइ
काहेतेंप्रभुकृपालहें संतोषपावें प्रसन्नहोइ जेसेंविष
ईकोंइतीमिलेंनेसंतोषहोइ तेसेंश्रीभगवान आपने
भक्तकीश्रम न्यतारेखिकेंमनमेंबहुतसंतोषहोतहें प्र
सन्नहोइ तातेंकार्यअपनेदासके पूरनकरतहेंसदाकृ
पाकरतहें प्रतिबंधदूरिकरिकेंफलदेतहें यामेंयहसि
द्धांतनिश्चयभयो ॥ १७ ॥ इतिश्री हरिराइजीकृतशिक्षा
पत्र नाम टीकाश्रीगोपेश्वरजीकृत सम्पूर्ण ॥ १८ ॥ अबकु
परकहेतोअथावेसमहनतत्परहेतोफलसिद्धहोइ सोयहक
लिकालमहाकठिनहें सोप्रतिबंधकहें यासोंबचेतोफलसिद्ध
होइ सोआगेकहतहें श्लोक इदानींवर्तनेकालः काल
कलिरीदृशः । यस्मिन्नपि न स्यातिमति सतामपि कुसंगतः १
याकोअर्थ ॥ अबश्रीहरिराइजीकहतहें जोपहअबजो
कालवर्तमानप्रसिद्धिहे सोमहाकरालहे प्रसिद्धहस्य
मानहें प्रसिद्धियाकोप्रवाहदेखियतहे काहेतेंजोसत
पुरुषहें निश्चयतिनहूकीमतिकुसंगतितेविनसजेभ्रष्ट
भईहे यहकहिकेंयहजनतायेजोयाकलिदोषतेंसत्प्राणी
कीवुद्धिभ्रष्टहोतहें तोअपानीनेंभ्रष्टहोइ यामेंकहा
कहनो एसोकठिनकालआयोहे तहांकछुकहेजोस
तप्राणीकीवुद्धिभ्रष्टहोतहे तहांकहतहें श्लोक
सत्संगोदुर्लभोयत्र सततंसतप्रसंगतः कृपालवश्चरि
त्रैकयुतानित्यंभजतिहरिं २ याको अबश्री
हरिराइजीकहतहें जोसत्संगतोबहुतदुर
ही निरंतरदुःसंगतेसत्प्राणीकीवुद्धिनास एकल
एकसंगहू भगवदीयको दुर्लभभयो
कहाहोइ काहेतें जोजवनिरें

नें कही जो कछु श्रीठाकुरजी के प्रसंग आवो। यह सुनतही रा
मदास नें कही। राग गौड। यह पद तेरे रस मके है आगु पाछे
तेरो मुख देखणो। पाछें सो या बाई नें बोहोत मनुहार करिके
राखे। परंतु ये न रहे। तु हारा मन को उदे दीयो। आचार्य श्री तस्वामी
वीरवल के डेरा गोरे हते। वर सो टीले न न्हारा मम रो श्री तस्वा
मी गिरधरन श्रीविठ्ठलराय हते। नें स्य है कछु न संदेह। यह
सुनिके वीरवल नें कही। देसाधिपति पृथ्वी गोसाईं वहां जुवा
वरे सुनि यह सुनत ही श्री न स्वामी कहे जो मेरे भागि तो तुम
श्री महल के ठाकुर आगु पाछे तेरो मुख न देखणो। पाछे व
र सो टी छोडि के चले आये। एसी टेक वे रामदास की चारोत
र की ब्रिज वासी की भाई इन समान जाने। ताको निश्चय ही
नास होई। अब श्री हरिराइजी अपने भाव में लिख्यो है। सो तु
सो कहत है। जो या प्रकार में सिद्धांत के लेख। पाय आगे के
मे अपने हृदय में आवस्यक ही कीयो। १५। आगे अधिक
रहे कहत है। सो कोई चित्त के विचार पर पृथ्वी पति है सुराधिप
रिता। मिले तिस्य स्वच्छ या प्रवृद्ध युत्ता पुरुष ति चेत द्वार ध्याय
कोइ श्री। यह कथा सिद्धांत ही है। सो श्री आचार्य के आगे मति
कहियो कोई या सिद्धांत के अधिकार लायक होय ता को
आगे कहियो। सो भगवत स्थान में आपुही आय के प्राप
ना वरे अद्या होइ पृष्ठ चित्त न लगाई के ता सो कहियो
पनी इच्छा तें मति कहो। यह सब पर सिद्धांत है
अधिकारी पात्र बिना रस न होनाहीं। पद जानि के
आगे मत कहियो। १६। सो आगे अब और हु कहत हैं
जीवन तत्पर ता सिद्धो हूपा तु तेषु तु व्याप्ति। पया विष
तो बोइ ति का सु नया हरे। १७। पा कोइ अर्थ। ऊपर कहे
कार यह जीव भगवद धर्म में जब न तत्पर होइ तब यह
मा सी यपल सिद्ध होइ। जैसे प्रहलाद को हरणाकु
नहु रवदीयो। परंतु प्रहलाद अपनी तत्परता भगव

भजनतत्पर भगवानकों आश्रय न होइ तो नृसिंहजी प्रा
गट होइ प्रतिबंध दूरि करीको फलसिद्ध भयो तैसेही पुष्टिमार
गीय भगवदीय तत्पर होइ पुष्टिमार्गमें तो फलसिद्ध होइ
काहेतें प्रभु कृपालहें संतोष पावें प्रसन्न होइ तैसे विष
ईकों इतौ मिलें तें संतोष होइ तैसेई श्रीभगवान अपने
भक्तकी अनन्यता देखिकें मनमें बहुत संतोष होतहें प्र
सन्न होइ भक्तके कार्य अपने दासके पूर्ण करतहें सहाय
पाव करतहें प्रतिबंध दूरि करिकें फलदेतहें यामें यह सि
द्धांत निश्चय भयो ॥ १७ ॥ इति श्रीहरिराइजीकृत शिक्षा
पत्र मांहि टीका श्रीगोपेश्वरजीकृत संपूर्ण १८ अबकु
पर कहेतो प्रकारसें भजनतत्पर हेतो फलसिद्ध होइ सो यह क
लिकाल महाकठिनहें प्रतिबंधक है यासों बचे तो फलसिद्ध
होइ सो आगे कहतहें श्लोक इदानीं वर्त्तते काल काल
कलिरीदृशो यस्मिन्छिन्नत्याति मति सतां मथिकुसंगात: १
याको अर्थ श्रीहरिराइजी कहतहें जो यह अबजो
कालवर्तमान प्रसिद्ध है सो महाकराल है प्रसिद्ध स्व
मानतहें प्रसिद्ध याको प्रवाह देखियतहें काहेतें जो सत
पुरुषहें तिनकी मति कुसंगातितें छिन्न जो भ्रष्ट
भई है यह कहिकें यह जतायो जो या कलिदोषतें सतप्राणी
की बुद्धि भ्रष्ट होतहें तो अपानी तो भ्रष्ट होइ यामें कहा
कहनो ऐसो कठिनकाल आयो है न होकुइके जो स
त्प्राणीकी बुद्धि भ्रष्ट होतहें न हा कहनो है श्लोक
सत्संगो दुर्लभो यत्र मननं सन्प्रसंगतः कथा कथंचि
त्रैकपुनानित्यं भजनं तर्हि २ याको अर्थ श्रीहरि
राइजी कहतहें जो सत्संग तो बहुत दुर्लभ है मिलतनो
ही निरंतर दुःसंगतें सत्प्राणीकी बुद्धिनास भई है एक स
त्प्रसंगोई भगवदीयको दुर्लभ भयो है जो सदा निरंतर
कहा होइ काहेतें जो जब निरंतर भगवदीयको संग हो

सि.प. ३ कृष्णकी कथा कृष्णकी लीला सुनै प्रीति सों ॥ नित्य श्रीकृष्ण
८८ की सेवा करै ॥ और भगवदीयन की कथा लीला सुनै भगवत्सेवा
आपु करत हैं ॥ ऐसे जो भगवदीय होय सो आपु द्वैतीय औरन
को नवतावें जैसें भी जो कपरा होइ सो आपके कपरा को भिजावें
तैसें ही आपु औरनकों करत हैं ॥ जो भगवद्धर्म में तत्पर है उन
उत्तम औरनकौं तन्मय करत हैं ॥ आगें अवश्य और कहत हैं सो
का ॥ निजाचार्यपदाम्भोजसेवन सुदुर्लभं मता ॥ ऐसें भन
ः कृष्णसेवाकथाचिंतनतत्पराः ॥ ३ ॥ या को अर्थ ॥ और भगवदी
यनके सो हैं ॥ अपने श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीवल्लभाचा
र्यजी हैं सो तिनके चरणकमलकी सेवा में अहर्निस जा
को मन है ॥ ऐसो अनन्य पुष्टि मार्गीय भगवदीय बहुत
दुर्लभ है ॥ ढूंढें भी हाथ पावें नहीं ॥ श्रीकृष्णजी की ली
ला लीनोनिस तत्पर है ॥ काहेकें दिखावें देखें भगवद्
धर्मन कर है ॥ शुद्ध नहीं ॥ ऐसो भगवदीय होय सो तो
या कालमें बोहोत दुर्लभ है ॥ ४ ॥ आगें अवश्य और कहत
हैं सो ॥ श्लोक ॥ अहं तु सर्वथा नित्यं तथा सत्संगवर्जितः ॥ लो
कामिमनसा नूनं निरानंदेन नित्यशः ॥ ५ ॥ या को अर्थ ॥ श्री
रके सो हैं ॥ सर्वथा नित्य सत्संग करिकें वर्जित हैं ॥ मोको
तो सत्संग मिलत नाहीं ॥ तातें मनमें बहुत [illegible] सेपाव
त हैं ॥ जो मोको भगवदीयको सत्संग न भयो काहेतें भगव
दीयको संग होतो तो श्रीकृष्णस्वरूपानंद प्रकटे तिनकथा
नको अनुभव होइ ॥ भगवदीय विना आनंदकारि है
नहीं ॥ ६ ॥ आगें अवश्य और कहत हैं ॥ श्लोक ॥ वाप्य
निःशरणो पापेन परामिमर्दितः ॥ श्लोकको अर्थ ॥ वा मदीय हृ
दयदुःखं हरिः करिष्यति ॥ ७ ॥ या को अर्थ ॥ अब श्रीह
रिरायजी निःसाधन हैं हृदयमें भरोसा लाय के समें
कहत हैं जो मैं यह महीतल पृथ्वीमें आयके वास कीयो
सो पृथ्वी ही भयो काहेतें हरिशरण को उपाय जब

न्वनिआयो ताकोजन्मयहपृथ्वीपरवृथाहै सोप्रहलादजी
श्रीभागवतमेंकहेहैं जोकौमारआचरेत्प्राज्ञोधर्मान्भा
गवतानिह दुर्लभोमानुषंजन्मतदप्यध्रुवमर्थदं १ औरए
कादसस्कंधमेंजनकजीकहेहैंजोदुर्लभोमानुषोदेहोदेहीनां
क्षणभंगुरः तत्रापिदुर्लभंमन्येवैकुंठप्रियदर्शनं इति
वाक्यात् यहमानुषदेहमहाउत्तमहै कौमारअवस्थाते
प्रभुकीसरणागतिभगवद्धर्मकरनौउचितहै काहेते
क्षणमेंभंगहोइजाइतो अन्तःकालसमयकछुनाहींवनि
आवेगो फेरियहदेहीमिलनीदुर्लभहै तातेभगवानकोध
र्मभागवतकोदरसनयहमहादुर्लभहै आवस्यकयहदेहपा
वनेसोकरनैयाहै सोमोसोंकछुभयो पाछेयहकोमहासो
चहै जैसेचिंतामनिपायकेकोडीदेपलटेलेइ पाछेचिंता
मनिकेगुनसुने तबअनेकदुखआवे पाछेयहदेहपा
इकैलौकिकमेंलगावे ताकोजन्मवृथाहै तातेमैंहरि
सरणकोउपायनाहींकीयो तातेंहृदयमेंमहादुखीहौं
यहमेरेहृदयकेदुखकोदूरिकरेगो ऐसोकोनहै पश्चा
त्तापऔरहूकहतहैं श्लो॰ व्रजवासस्तथाश्रीमद्यमु
नादरसनंगतं दूरेगोवर्द्धनंहरि दूरेनाथस्तोनेइया
[illegible] अबश्रीहरिरायजीकहतहैं जोश्रीहरिकेचरण
कमलकोसाधनकछुनवनिआयो सोव्रजवासहूनभयो
काहेतें व्रजहेमहेसोमहाउत्तमहै प्रभुकेचरणारविंदको
स्थलहै तहांपरिरहिएतो मनुष्यपलोजानिकेहपावरि
सोउमोकोनभयो औरश्रीयमुनाजीकोदरसननाहींहै
कैसीहैंश्रीयमुनाजी जोदुष्टप्राणीअनजानेएकवारहू
जलपानकीयोसोइतोअहजीवकोयमयातनानहोइयय
हप्रतापहैं जोश्रीयमुनाजीकोआस्रयकरें तिनकोंश्री
यमुनाजीश्रीठाकुरजीकीलीलाकोअनुभवकरावेंस
र्वकार्यसिद्धकरेंहैं अलौकिकदेहसिद्धकरें ऐसीश्रीयमु

नाजी को दरसन न होत है ॥ और श्री गिरिराज हू मोते दूरि है सो
श्री गिरिराजजी हू के सेहे ॥ तिनके संग ते भीलनी जो पुलिंदी
तिनको हू भक्ति भई ॥ ऐसे श्री गिरिराजजी हू मोते दूरि है ॥ औ
र श्री गोवर्द्धननाथजी को दरसन हू मोको दुर्लभ भयो है ॥
सो मैं परदेस में या भांति हौं ॥ अब मैं कहा करूं ॥ तातें कोई कहै
मन करि भावना करो ॥ जा वस्तु को स्मरण करे सो पास ही है सो
तातें मन करि भावना सों ब्रज श्री यमुनाजी श्री गिरिराजजी
श्रीजी को दरसन सब करि लेहु ॥ इनको दरसन मन में को
पावन है या भांति कोई कहे ॥ तहां कहत हैं ॥ घृष्टा का ॥
विषयाक्रांतत्तो हि भगवद्भावसंतति ॥ देसांतरस्थितिस्या
धु ह्रसंगसत्तामपि ॥७॥ याको अर्थ ॥ अब श्री हरिरायजी कह
त हैं जो विषयाकों तदेह में भरी रह्यो होइ ॥ तिनको भगवद्भा
व बहुत दूरि है ॥ मन करिके भावना सिद्ध तो तिनको होइ
जिनको शुद्ध हृदय होइ ॥ और दुष्टप्रदेश तो कितनपु भगव
द्स्मरण में भग्र है ॥ तिनको संगावितु सिद्ध है ॥ और सो को
विषयावेश को भगवद्भाव दूरि ही है ॥ अनेक देसांतर में
स्थिति है ॥ अनेक प्रकार के लौकिक सवादी सृष्टि को संग
है ॥ भगवदीय को संग मोते दूरि है ॥ भगवदीय मिले तऊ उन
सों मिलिके भावस्वभाव विचारियो सो ऊ मोते दूरि है ॥ तातें
मन में बहुत खेद होत है ॥७॥ आगे अब औरहू कहत हैं श्लो
क ॥ तदभावात्कथायां हि लनो विमुखता इदा ॥ एवं विधस्य
सततं श्रीकृष्णः शरणं मम ॥८॥ याको अर्थ ॥ अब श्री हरि
रायजी कहत हैं जो भगवदीय होय भावात्मक कथा श्री
सुबोधिनीजी आदिक है ॥ तथा सुनिवे हृदय में भाव उ
त्पन्न होय सो भगवदीय मोते दूरि है ॥ ता करि भावात्म
क कथा हू मोते दूरि है ॥ तातें हृदय में विमुखता छाय रही
है ॥ सो या भांति मैं सर्व साधनन करि रहित हों ॥ यह देसांतर
में स्थिति है ॥ ऐसो जो मैं निरंतर श्रीकृष्ण की सरण है

औरमैंकहाकरों जबवस्तुनकोंतवसरणकीभावनाकर
तहौं सोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुश्रीमुखआश्रयमेंकहेहें वि
वेकधैर्यभक्त्यादिरहितस्यविशेषतः पापासक्तस्यदीन
स्यश्रीकृष्णःशरणंमम ॥ १ विवेकधैर्यभक्त्यादिसर्वधर्म
करिरहितहोय पापासक्तिहोय अतिदीनदुखीसोऊ
श्रीकृष्णहीकोसरणकरें तातेमेंसर्वसाधनकरिरहित
हों निरंतरश्रीकृष्णहीकीसरनलीयेहों आगेअवओर
हूकहतहे श्लोक कोवेदहस्यविंकनोंनजानेइहपालि
धि तथापिश्रीमदाचार्यशरणंकुरुवेमनः ॥ या अ
सोयहमेंनाहीजानतजोश्रीकृष्णकहाकरिवेवारेहें
मेरीकहागतिकरेंगेसोजानीनाहीजातहे काहेतेंअव
रहूश्रीकृष्णकेअभिप्रायकोंनाहीजानतहें तोमेंकहा
करूं परंतुइतनोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकीकृपातेजा
नतहों जोश्रीकृष्णकृपानिधिहें अपनेनिजभक्तनपर
स्नेहकरतहें निश्चयकृपाकरतहें तातेमेंएकश्रीआ
चार्यजीमहाप्रभुनकेचरणकमलकीसरणअपनेम
नमेंकरिरहोहों ताकरिश्रीकृष्णकृपाकरेंगे औरसवा
रोकार्यसिद्धहोइगो यहकहिकेयहजतावेजोश्रीआ
चार्यजीमहाप्रभुकीसरणकीएहेंजीव तिनकोंश्रीकृ
ष्णकृपाकरेंगे सवकार्यसिद्धहोइगो श्रीव्रजश्रीयमु
नाजीश्रीगिरिराजजीश्रीजीसगरीलीलाकोअनुभव
होइगो जोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीकीसरणना
हीकीयोहे तिनकोंकछुफलसिद्धिनाही तातेंमें अ
पनेश्रीवल्लभाचार्यजीकेसरणमनकरिलीयोहे या
आश्रयकरिअपनेमनकोसमझायकेराखेंहें आगें
अवओरहूकहतहें श्लोक विशेषप्रभजीपित्राद्यैध
यः सर्वेहतेयुक्त अनेनकेवलेनेवाकिंचित्स्यम
नोमम ॥ १० ॥ या अवश्रीहरिरायजीकहतहें

१०५ सो श्रीगोपेश्वरजी सों कहत हैं जो विशेष समाचार प्रेमजलि
१०॥ पत्र में जानोगे श्रीमहाप्रभुजी की सरण करि किंचित मन
में स्वास्थ्य है तो प्रभु कृपा करेंगे आपनी ओर देखिवे ॥ १०६
॥ ते श्रीहरिरायजीकृत सिक्षापत्र ...नविंसो ता की टीका
श्रीगोपेश्वरजीकृत संपूर्ण ॥ अब श्रीगोपेश्वरजी को प
त्र आयो है सो ताको प्रतिउत्तर श्रीहरिरायजी लिखत हैं
तातें सगरी पुष्टिमार्ग की रीति सों रहेंगे तो फलसिद्धि होय
सो सब लिखत हैं ॥ श्लोकः ॥ समाचारागत्येव संतोषो
जनितो महान् ॥ स हेयोपि हरिर्जीवेनुग्रहं कुरुते स्वतः
॥ यथा ॥ टीका ॥ अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो तुमारो पत्र आ
यो सो बांचि के मन में संतोष भयो काहे तें जद्यपि ग्रह मां
को बडो दुःख हतो सो दुःख तुमारो निवृत्त भयो तुमारे हृद
य में संतोष भयो ताकरि हम हू मन में संतोष पायो आगें
यह सिक्षा कहत हैं सो मन में धारण करियो ॥ हरि जो भगवा
न् हैं सो हैं जद्यपि जीव के दोष को जानत हैं तऊ आपनी
ओर तें जीव पर अनुग्रह ही करत हैं जीव की ओर नाहीं
देखत हैं सिसुपाल श्रीकृष्ण की निंदा ही करतो ऐसो
दुष्ट ताहू को गति दीनी इन्द्र ने जलवृष्टि करि द्वेष कीयो
तऊ वापर प्रसन्न भये ऐसे श्रीकृष्ण हैं तातें श्रीकृष्ण ही
को भजन स्मरण आश्रय करतव्य है जो सदा ही कृपा
करत हैं अनेक प्रमेयबल तें यही जीव पर अनुग्रह
करत हैं ॥ २१ ॥ आगें अब ओर हू कहत हैं ॥ श्लोकः ॥ प्रमेयब
लमासाद्य किमसाध्यं तदा भवेत् ॥ अतः प्रथमदोषा
णां चिंता नैव विधीयतां ॥ २२ ॥ टीका ॥ अब श्रीहरि
रायजी कहत हैं जो यह पुष्टिमार्ग में तो केवल प्रमेयब
ल ही तें सब कार्य सिद्ध हैं जीव के साधन तें सब कार्य
सिद्ध होत नाहीं ओर जीव कहा साधन करेगो ता
तें जीव तो परम दोषवंत है सो अपने दोष की चिंता क

तो। याके साधन ने ये यह रिद्धि नाहीं होइ सकत। तातें र
ता चिंता को करत हैं। श्रीमहाप्रभुजी कहे हें जो जीव को स्व
भाव तो दुष्ट। जीव तो स्वभाव ने दुष्ट है निश्चय परंतु अ
नि मनमें ते अज्ञान करि अन्तस जानन नहीं सो है पर सदो
षवंत है। सो देहकी चिंता नाहीं करनी सो तातें चिंता की
रचना सो कहे हैं चिंता बाधक को अनभाति है। सो अवश्य
आगे कहत हैं श्लोक। संजात भगवद्भावे मण्यथ मिव
त्कुणां लौकिकं निंद्यं भव दुखं न श्रम क्षाहि मानसो इया
ख्या। लौकिक चिंता ते भगवद्भावना सहे न हे सो अव
काहे शांतक दुत हें जैसे सुंदर सो पदरखा या ताके ऊपर अ
पथ्य करे खाटो खारो खाय या भांति कुपथ्य करनो विनाप
थ्य है औषदको गुण जाय औ रोग बढे सो तैसे मनमें
कछु भावरस भाव होइ सुमरन भजन सुंदर औषदकी ना
ईं करि तामें यह लौकिक चिंता रि कुपथ्य करे तो भगवद
भाव उलटो जाय सो ताहीतें श्री आचार्यजी महाप्रभुन नव
रत्न ग्रंथमें चिंता निदान करी हैं चिंता का पिन का यो पि
निवेदिता त्मभि कदापि निवेदन जो जीव कीयो है तिन
निश्चय ही चिंता नाहीं करनी है और यह लौकि
जीवबुद्धि ते निंदा करत हैं सो कछु महा दुखरूप है सो
ही धरनी काहे ते जो लौकिक में जीवबुद्धि
रत है सो कछु महा दुखरूप है सो अपने मनमें
काहे ते जो लौकिकमें अनेक भांति की जो
हैं न करि यें तो भगवद्भाव जाय ता
तें नि ही उचित है सो श्रीभागवत में कहे हैं
सो लौकिक व्यवहार छांडि के प्रभुको भजन
निंदा माता पिता कीयो सो न धारन की
नातें किन निंदा भाव हीय को ध
त

प॰ यो सो तातें लौकिक निंदा भगवदी को सहनो यह परम धर्म है
१ आगें और श्लोक कहत हैं श्लो॰ अग्रेतु सावधा नित्य विधे
यः सर्वथा पुनः दुःसंगात् महादोषान्नाश्यंते वर्तन लक्षण
तु ४ या॰ अत्र श्रीहरिरायजी कहत हैं जो श्री गोपे
श्वरजी सों आगें और सावधान रहियो सर्वथा सो काहे तें
जो दुःसंग महाबाधक महादोष है जो जन्म जन्म ने भगव
द्भाव को छिनक ठौर रोवत है सो एक क्षण में होत ताको ख
खारे भाव को नास दुःसंग तें होत सो श्री भागवत पुराण
में लिख्यो है और बडे बडे भगवदीय दुःसंग तें गिरे हैं तातें
दुःसंग तें निश्चय लक्षण में सावधान रहियो इतनी
हमारी बात सर्वथा हृदय में धारन करियो जो दुःसंग तें
बचे रहियो सर्व भाव को लक्षण में नास करत है ४ आगें औ
र श्लोक कहत हैं श्लो॰ असज्जन कृता निंदा तुष्टं सत्व
विनिश्चयात् यतस्तेषां नरो चेतेस्मरत एव हि सर्वथा ५
या॰ अत्र श्रीहरिरायजी कहत हैं जो असज्जन जो
वैष्णव तथा अन्य मार्गीय तथा बहिर्मुख जो निंदा करें तो
उनकी निंदा सुनिकें मन में दुःख मति पाईयो मन में प्रस
न्न संतुष्ट पाईयो जो ये निश्चय सत्य ही कहत हैं में तो दो
षवंत निश्चय ही हों या भांति मन में ज्ञान करि विचारि
निंदा सहनो सो या तें जो संतजन हैं सो उन दुष्टन की
वानी में सर्वथा रुचि नाहीं राखत जो जैसें प्रह्लादजी
साहजीयो नामें प्रह्लादजी को कछु बिगार्यो नाहीं
हिरण्यकशिपु को प्रभु मार्यो सो तातें संत जो हैं सो दुष्ट
की बानी में सर्वथा मन न ही राखत ५ आगें और श्लो
क कहत हैं श्लो॰ मार्गे विश्वासरहिताः पूर्वदोषैक दुष्ट
याः यतो नाम वहि हरेः सर्वदोषनिवर्तकः ६ या॰ अ
त्र कहत हैं जो वे दुष्ट वैसे हैं जो यह पुष्टिमार्ग में
विश्वास करि रहित हैं सो काहे तें जो पूर्वजन्म में दोष

हीदेखतहैं।सोयहजाननौ।तयामार्गमेंसगरात्याग्योहै त
ऊप्रथमकीदुष्टताहीजातैदोषहीदेखनदैं।दुष्टिमार्गको
प्रकारसगरेजगतमेंप्रसिद्धहै।सोदेखतहैं तऊअपनीकु
टिलतानाहींछोडतहैं सोकाहेतेजोपूर्वजन्ममेंवैश्र
सुरहैं।तातेमार्गमेंउनकोविश्वासनाहीहै।सदातेदुष्टहैं ना
तैदुष्टताप्रगटकरतहैं।याभांतिजाननो।औरभगवान्को
नामसाधारनमेंहूंपरसोहैं ताकोनामलेतमात्रसर्वदोष
दूरिहोतहैं।सोषष्ठमस्कंधश्रीभागवतमेंकहेहैं।श्लोक।अज्ञा
नानादथवाज्ञानादुत्तमश्लोकनामयत् संकीर्तितमघंपुं
सोदहेदेधो यथानलः।१।सांकेत्यंपारिहास्यंवास्तोभंहेल
नमेववा।वैकुंठनामग्रहणमशेषाघहरंविदुः।भ्रातमोचा
रणमासाद्यहरेपस्यातिपुत्रकं।।अजामिलोपियेनैवम्
त्युपासादमुच्यतो।।२।।ब्रह्मवैवर्ते।मंत्रतस्तंत्रत
श्छिद्रंदेशकालार्हवस्तुतः सर्वंकरोतिनिःछिद्रंनामसं
कीर्तनंतव।।४।।तिष्ठभागपामनुष्येषुहनाथोनृपनिष्वि
ते स्मरंति स्मारयंती येहरेर्नामकलौयुगे।।द्वादसस्कंध
शुकवाक्यं कालेर्दोषनिधेराजन्नस्तिह्येकोमहान्गुण
न्कीर्तनादेवकृष्णस्यमुक्तबंधपरंव्रजेत्।।६।।ब्रह्महा
पितृहागोघ्नोमातृहाचार्यहाघवान्।श्वादःपुक्कसको
वापिशुद्धेरन्यस्यकीर्तनात्।।७।।इत्यादिठौरठौरनामको
माहात्म्यहै।।तातेसहजहींभगवन्नामप्रख्यातजनजा
नैनिकसिजोयतीउहनामसर्वदोषदूरिकरतहैं।तातें
हरिभगवान्कोनामहैं।ताहूतेअधिकश्रीआचार्यनामहै
सोआगेंकहतहैं।श्लोक।।तत्रापिश्रीमदाचार्यवन्नो
वुजनिःसृतोतन्प्रकाशितमार्गस्यसर्वसंपादनात्समः।।८।।
याकोअर्थ।जद्यपिश्रीभगवन्नामसर्वगु दाताहैं
संसारदुखनछोडावे।ताहूंसेंपरु हलस
रणमा।।यहनामश्रीआचार्य

य॰ दमलीलानि निकस्यो है सो पुष्टिमार्ग में स्थिति करत है काहेतें य
ह पुष्टिमार्ग है श्रीआचार्यजी महाप्रभू द्वारा नाम प्रगट भयो
तिनकों सर्वसिद्धि होइगी सो श्रीगुसांईजी विज्ञप्ति में कहे
हैं श्लोक ॥ यदुक्तं तातचरणैः श्रीकृष्णः शरणं मम । ततस्तु स्थिति
नैश्चिंत्यं मे हि लौकिकी ॥ १ इत्यादि वचनके भाव सों पु
ष्टिमार्ग में न को जप वे अवतार यह सर्वसिद्धि करन में समर्थ है
आगें अब और हू कहत हैं श्लोक ॥ ततो निवेदने स्वेषु सर्व
दोषनिवर्तकः । निर्दोषानंदसेवापि दोषभावप्रसाधिके
... अपार करि नाम में सर्व दोष नास होते नहीं तो
ब्रह्मसंबंध जा जीवको होइ तिनके सर्व दोष नास होय यत
हत्वा नहीं है सर्वदोषनिवर्तक स्वार्थ तो ब्रह्मसंबंध जी
जीवको होइ सो आप प्रभु रीनी है सो सिद्धांतरहस्य में श्री
आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं श्लोक ॥ ब्रह्मसंबंधकरना
त्सर्वेषां देहजीवयोः सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषाः पंचवि
धाः स्मृता ॥ २ इत्यादि वचन सों जानने । जो ब्रह्मसंबंध
श्रीआचार्यजी द्वारा जा जीवको भयो तिनके सकल दो
ष दूरि भये काहेते भगवान निर्दोष हैं सो भगवान की
सेवा ऊ जीव निर्दोष होइ ताकों अंगीकार होय तातें ब्र
ह्मसंबंध महाप्रभु जी कराये अपने जीवन कों निर्दोष
कीये पाछें सेवा में लगाये सो भगवत्सेवा केसी है जो जा
में दोष होइ नाहीं निर्दोष आनंदरूप है सगरे दोष प्रति
बंधक तिनको नाश ही करतो हैं सो काहेतें जो दोष नास सर्व
ब्रह्मसंबंध तें नास भये पाछें सेवा करें तें प्रभु की लीला
प्रागट्य में प्रतिबंधरूप दोष सो सब भगवत्सेवा तें दूर हो
य स्वरूपानंद कों अनुभव होइ यह भाव दिखायके
ब्रह्मसंबंध और भगवत्सेवा करे ॥ आगें अब और
हू कहत हैं श्लोक ॥ गुनगानं तु सर्वेषां दोषाणां विनि
गुणगानं ज्ञानमार्गी इत्यर्थः प्रणोदितः ॥ ३

याको अर्थ॥ अब श्रीहरिराईजी कहत हैं।जो भगवद्गुन
न हैं।सो सगरे दोषको निवृत्त करे हैं।तामें दोय प्रकार को
गानहै।एक पुष्टिमारगीय जेमे गुनगान एक मर्यादा मार
य जेमे गुनगान एक मर्यादामारगीय गुनगान सों होउके भे
कहत हैं जो पुष्टिमारगीय जेमे ब्रजभक्त गुनगान गावत
हैं श्रीठाकुरजीके संयोगमें सेवा रसानन्द करत हैं।और श्री
प श्रीठाकुरजी गोचारनको पधारत हैं।सो नव विरहकरि गु
नगान वेणुगीत युगलगीत गायगाय संध्यापर्यन्त विता
वत हैं।पाछे श्रीठाकुरजी संध्यासमय पधारे ब्रजभक्तन
के विरह दूरि करिके सकल मनोरथ पूरन करत हैं।सो तैसे
ही श्रीआचार्यजी महाप्रभूके पुष्टिमार्गमें विरहकरि गुन
गान विप्रयोगकी भावनायें पुष्टिमार्गमें याभांति गुन
गान संयोगविप्रयोगकी दोऊ रसको अनुभव।और
मर्यादा ज्ञानमार्गमें केवल गुनगानही करत हैं।नहीं
सेवा नाहीं।विप्रयोगे अव औरहू इनसे हैं।श्लोक॥ज्ञानं
सकलदोषाणां दाहकं परिकीर्तितं तथापि तत्प्रमोप
पुभावे यत्प्रतिबंधकं॥१०॥याको अर्थ।ज्ञानमार्गसों गु
नगानके सो हैं।जो सकल दोषसारके हैं।सो भस्म होय
ानहैं।पाछे निविद्ध स्वराहइतो मोक्षकी प्राप्ति होइ तो
ानमार्गके गुनगानते प्रभुको प्रादुर्भाव स्वरूपानन्दको
ानुभव होइ।प्रभु प्रगट होइके दरसन न देहिं।तातें गुनगा
ज्ञानमार्गको हैं।सो भक्तिमार्गमें प्रतिबंधरूप हैं।सो बाद
ापभुको दरसन नाहीं लीलाको अनुभव नाहीं।स्वरू
रको अनुभव नाहीं है तातें ज्ञानभक्तिको प्रतिबंधकी
नो।सो श्रीहरिरायजी श्रीगोपेश्वरजीको वरजत हैं जो
ज्ञानमार्गकी नाईं गुनगानही मुख्य मति जानियो।सो
्यागे कहत हैं।श्लोक॥ननिवर्तेयितुं श्रोतस्मनेनस्पूने
पितां ततः स्वाचार्यसान्निध्यं
दायकं॥११॥

सि.प्र.या [illegible] अबश्रीहरिरायजीकहतहैंजोताज्ञानतुमसा
६२ करियो अपनेभगवत्सेवाहीमुख्यहैं यहज्ञान नो काहे
यहज्ञानभक्तिमार्गयहपुष्टिमार्गमेंसन्यहैंयाभांतिश्री
चार्यजीमहाप्रभुनिरूपणकीरोहैं संन्यासनिर्णयमेंकहेहैं
जोज्ञानार्थेमुत्तरांगत्वसिद्धिजन्मसतैःपरं सोजन्मकेनार
नमार्गकोसाधनसिद्धिहोइ प्रतिबंधनहोइ तबज्ञानावे
लोकजाय पाछेंजबब्रह्मासोंलयहोय तबवोहूकोमो
क्षहोय तातेंज्ञानमार्गीयजीवभक्तितेंन्यारोहै तातेंतुम
पुष्टिमार्गकीरीतिमेंतत्परहियो श्रीआचार्यजीमहा
प्रभुको यहपुष्टिमार्गहै सोहैं।एकक्षणहूश्रीआचार्यजी
महाप्रभुकोसानिध्यहोइतो एकक्षणभगवद्भावको
दानकरें स्वरूपानंदकोअनुभवहोइ तातेंसर्वोपरफल
रूपभगवत्सेवापुष्टिमार्गमेंहै जामेंभगवत्स्वरूपकोअनु
भवहोइ यहभावविचारिकेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी
रीतिसोंसेवामेंप्रगटकरेहैं ताभांतिकरियो श्रीआचा
र्यजीमहाप्रभुभावदानकरेंगे यहनिश्चयसर्वोपरिसि
द्धांतहै ॥ आगेंअबआरहूकहतहैं श्रीआ[illegible] तहृदता
[illegible]तापानांक्रमादेवहसंभवात् ततउत्तरभावस्यभाव
नेवर्द्धिरूपता [illegible] याकोअर्थ [illegible] पुष्टिमार्गकोजोजीमन
लगाइकेभगवद्सेवाकरेंगे त्योंत्योंश्रीस्वरूपकीहृदय
कीतापक्लेशक्रमसेंबढेयाभांतिजबअधिकतापहो
य ताकरिकेंसगरोदोषभाजिकरितेंदूरिहोयजाय
तबदैन्यसिद्धहोय दैन्यसिद्धिभयेंपाछेंताकोउत्तरभा
वसिद्धहोय भावजबहृदयमेंसिद्धहोय सोतबहूजभक्त
नकेभावकीभावनाकरें जाकोमानसीसेवाकरतहैं
तबोपरि सोव्रजभक्तनकोभावकेसोहैं अग्निरूपहै
भावअग्निरूपहृदयमेंहोय तबजानियेजोश्रीआचा
र्जीमहाप्रभुहृदयमेंपधारे भावअग्निरूपश्रीआचा

ऐसो महाप्रभु हैं ॥ १ ॥ आगें और वर्णन करत हैं ॥ श्लोक ॥ दु
र्गेन दोषसंगस्यैनाशके सर्वथा मतः ॥ सर्वं भूतेष्विह मार्गे
मूले येषां स भाव्यतां ॥ २ ॥ याको अर्थ पुष्टिमार्गीय वैष्णव को
एक क्षण हू दुःसंग दोष को संग होय तो क्षण में भाव को ना
स होय जाय ॥ श्री आचार्यजी हू स्थल पधारे हामेर स्थल को
स्त्री को स्पर्श अन्याश्रय भयो ॥ तो श्री आचार्यजी अप्रसन्न
भये ॥ तातें अन्य संबंध गंधोपी धरामें बाधते ॥ या भांति
दुःसंग तें भाव जाय ऐसो पुष्टिमार्ग है तथा ये हू अर्थ है जो
ऐसे कहू भाव आश्रित को हृदय में संग है तो एक क्षण में संग
दोष को सर्वथा नाश करे ॥ या भांति पुष्टिमार्ग सर्वोपरि है
यह पुष्टिमार्ग को मत है ॥ एसे कृष्णभक्तन के भावात्मक यह पुष्टि
मार्ग में भक्त जो प्राणी स्थित हैं तिनको जो कोई न्यून कहत
हैं निंदा करत हैं तिनके बड़े अभाग्य हैं ॥ अथवा पुष्टिमा
र्ग में स्थित जीव है है और पुष्टिमार्ग न जानत हैं तिन
को महा अभाग्य है उन को पुष्टिमार्गीय फल नाहीं सिद्ध
होनहार है ॥ २ ॥ आगें और वर्णन करत हैं ॥ श्लोक ॥ अवि
श्वासवतः तेषां न गतिः कापि विद्यते ॥ अतः स्वयं श्रुति
पद्मा भाग्य हरिं समागतं ॥ ३ ॥ याको अर्थ ॥ तातें अ
विश्वास यह पुष्टिमार्ग में है तावत कहूं गति नाहीं है को उ जी
व होउ अविश्वास सब को बाधक है सो अविश्वास सब को
बाधक है ॥ तो अविश्वास के दोष ॥ न दोष कहत हैं जो अवि
श्वास के कारन हैं या भांति अविश्वास होत है ॥ एक अपने
मन में स्वयं कल्पित विचार किये जो यह मार्ग में तो कछु मो
को सिद्धि नाहीं दीसत एक तो यह ॥ २ ॥ दूसरे काहू शास्त्रमार्गी
य के सम मार्गीय मर्यादा मार्गीय तें सुनि के काहे तें अन्य मा
र्गीय मर्यादा मार्गीयतें सुनि के काहे तें अन्यमार्गीय हू
यह पुष्टिमार्ग को उत्कर्ष नाहीं देखि सकत हैं ॥ तातें उनको
हू संग महा बाधक है ॥ उनके मुख ते मार्ग की निंदा सुनि के

अविश्वासजीवको होइ यह दूसरो कारन तथा पुष्टिमार्ग को
फलस्वरूप है सो भाग्यमें न होइ जीवही भीतर प्रवाही है
इमर्यादामार्गीय होइ पुष्टि न होइ तो वह कहां ते पावे वा
कों अविश्वासही होय यह तीसरो कारन ३ तथा हृदयमें
नेक अनेक भांति के विषय की तरंग क्लेश वैदिक की उर
तो पुष्टिमार्ग मेंते विश्वास छूटि जाय औरही क्रिया करन
लागे यह चतुर्थ प्रकार ४ तथा काहू वस्तु के अभाग मे ते
दुःसंग ते होइ तो अविश्वास होइ ताको पुष्टिमार्ग को फल
सर्वथा न होइ ५ आगे अब और हू कहत हैं श्लो० … तद्वै
…दृढस्याप्यसर्वथा जीवनं बाधि: ना… वचनावा
…बुद्धिरापातसुंदरान् १५ या … ऊपर कहे इत्यादि
दोषन ते अविश्वास हृदयमें दृढ होइ जाय ताकरि के सर्वथा
उह जीव को बाधक ही करे जैसे जल अग्नि को नाश ही करे
तैसे दुःसंग दोष भाव के बाधक हैं अन्य जीव अज्ञानी जी
वके वचन चातुरी ते बुद्धि जो पंडित भगवदीय बुद्धि सुंदर है
सो वह मुख के आगे न चले सो कहत हैं जो पंडित भगवदी
य मर्यादा सों वेद शास्त्रोक्त बोले शील स्वभाव संयुक्त यो
… अन्य जीव अज्ञान कारि निंद्य वचन मन न होय तैसे
ही बिना मर्यादा बोले ताको अच्छो जानकरी तो तें अज्ञा
नी के संग वाद सर्वथा ही नाही करनो चाहिए १५ आगे अब
और हू कहत हैं श्लो० सत्व निष्पृयन संगः साधको न
हि संत्यजा … यत्र वै विपरीतेवहंति तत्र भमं कथं १६
या … तातें यह निश्चय मनमें जाननो जो या भी जीव को
सत्संग ही भगवद्धर्म को साधक है यामें संशय नाही सो
श्रीभागवत प्रथमस्कंध में सो न कथा को तुलयाम लवे
नापि न स्वर्गं न पुनर्भवं भगवत्संगी संगस्य मर्त्यानां कि
मुताशिष: एकादश में भगवद्वाक्य न रोधयति मां योगो
न सांख्यं धर्म उद्धव: न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तं न

हैक्षणा॥व्रतानियज्ञछंदांसितीर्थानिनियमायमा
थावरुंधेसत्संगःसर्वसंगापहोहिमां॥१॥इत्यादिवच
नैजाननो।जोसत्संगहीबडोजीवकोसाधकहै।नातेंय
हवैष्णवपुष्टिमारगीयहैं।सोयहनिश्चयसत्संगहैंकरो।
ओरपुष्टिमार्गतेविपरीतिहैं इनजीवनकोसंगजोअन्य
मारगीयतिनकेसंगतेवैष्णवकोइनिश्चयभ्रमहोइता
तेंयहविश्वासकरिकैपुष्टिमार्गतेंविपरीतिइनकेरेना
वैष्णवहोयतोवाहकोसंगसर्वथानकरो।ओरअन्यमा
रगीयकोसगाईसंगनकरे।धर्मोप्यत्रमोव्यवस्थोरहूवेस्तरै
श्लोक॥नत्रभ्रातोपरमहद्भासत्संगःखलुनाधिवंःअत
सत्संगमहिमनितिष्ठोत्सर्वत्रसर्वदा॥२॥याकोअर्थ।जेजी
वभ्रातहैं।यापुष्टिमार्गमेंविश्वासकरिरहेंहैं।सोम
हमरुचंशानीहैं।इनकोखलकहियेदुष्टहीजानियें
उनकोसंगमहाबाधकहैं।तातेंयहवैष्णवतहांजाइ
नहींस्वकीयपुष्टिमारगीयकेसंगस्थितिमदारहैंसो
नवहीदुसंगतेवचो।तातेंसर्वथासत्संगमेंरहोताहीतें
नवरत्नग्रंथमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेंहैं।निवेदनं
स्मर्तव्यंसर्वथाताद्दशैर्जनैः।यहनिवेदनकोस्मरणस
दासर्वदाताद्दशीसोमिलिकैकरेसोतातेंसत्संगहै
भावरुद्धिकरताहैं।तातेंनित्यपुष्टिमार्गीयभगवदीयसों
भावस्नो।श्रीगोकुलेशअरहूकहतहैं।श्लोक॥सेवाचैन
सदाचारोधर्ममार्गस्थितेपिचा।भक्तिरूद्रवचोवनकेपदवि
वैचोवैको गतिःप्रिया॥१८॥याकोअर्थ॥अवश्रीहरि
नीकहतहैंजोपुष्टिमार्गीयवैष्णवयाभांतिरहैं।नि
नश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनहाराकरिपाछेंभगवद
करपुष्टिमार्गकीरीतिसोंआचारसहितको ने
शास्त्रमेंकहेहैं।आचारप्रथमोधर्मोआचार
वकोप्रथमधर्महै।तातेंआचारवि

साम [illegible] सेवा [illegible] खरचु मखडी नहनको जानराखे धर्म
में [illegible] तथा [illegible] धर्म [illegible] अपने तवनेनरहानाइ भ्रेख
कोरी लिये [illegible] ओर पापा चरणको पुष्टिमा
र्गने अविरुद्ध वचन कहे सो जो कोउ पुष्टिमार्गसो अवि
रुद्ध सुंदरसिला दृय ताको मानि लेइ अविरुद्ध याग्मा
र्गरीतिकी सेवा है सो मन में धरिय जाने १८ आगे अ
व ओर कहत हे श्लो० [illegible] स्वाचार्यमान्स वाक्ये के निष्ट
सततः भाव [illegible] नदीयजनसंग [illegible] सर्वसंगाविवर्जितः
१६ या [illegible] एक अपने श्री वल्लभाचार्यजी के वचनप
र निरंतर नेष्ठा राखे श्री आचार्यजी महाप्रभुके किये ग्र
थ श्री सुबोधनीजी निबंधादिक रातनमारगीय ग्रंथके व
ह [illegible] नेताहीके नेष्ठा राखे जो जो किया भाव कहे ताहीमे
मन लगाइ देव [illegible] नो ताही भाति रहनो ओर जो भगवदी
य श्री आचार्यजी महाप्रभुके वचन अनुसार चलत है
श्री आचार्यजी महाप्रभुके वचनमें जिनकी प्रीति नेष्ठा है
ऐसे भगवदीय भावकरि भावित है तिनहीको संग करे औ
र सबको त्याग करे जो ऐसे पुष्टिमार्गीय भगवदीय मिल
तो संग करे नाही तो सब साथ छोडिके भगवत्सेवा स्मर
ण मार्गरीति प्रमान करे परंतु अन्यको संग सर्वथा ही न
करे या भांति वे स्थव रहते पुष्टिमार्गको फल श्री आचार्य
जी महाप्रभुकी कृपाते पावे यह सिद्धांत भयो १९ [illegible]
श्री [illegible] र [illegible] कृ [illegible] सि [illegible] प वि [illegible] ता [illegible] टी [illegible] श्री [illegible] पे
[illegible] भा [illegible] में [illegible] पृ [illegible] २० [illegible] अब ऊपर कहे सो तो प्र
कार वे सब रहेतो फल सिद्ध होइ सो यह कलिकाल दो
षते भक्तिमार्गको भ [illegible] वक्ता सते मा तिरोभूत है याको दे
से फल होइ सो आगे लिखापत्र में कहत [illegible] श्लो० [illegible] भ
क्तिमार्गस्तिरोभूतस्तथा संगासनाम [illegible] री
थिल्यं नदमावे दिले व या १ या

रिसाइजी कहत हैं जो भक्तिमार्ग यह काल महा कठिन ते
रो भूत भयो है और पुष्टिमारगीय भगवदीय यत्नो साहूं ति
भूत है नाही मिलत तो ना करि के पुष्टिमार्ग को भाव हू सि
थल भयो है सो भाव बिना सब वृथा कहा है तें यह पुष्टिमा
मै सगरो भाव ही है भावात्मक ही है सो भाव तो पुष्टिमार
गीय में स्थिति होय भगवदीय को संग होय तब ही जाने
अन्यथा कैसे जानें कहा है तो भक्ति मार्ग में केवल प्रभु को सु
ख अष्टप्रहर विचारें अपनो देह संबंधी सुख रंच हू न
विचारें या भांति सेवा करें सो दुःख मन ना करि भाव सिद्ध
नहा रयो है ताते भाव बिना सब वृथा है पायाग अक्यो
सं कहत हैं श्लोक भक्तिमारगीय नाभावे क्रियामात्रे हि
धर्मवत्यपि न मनःस्थैर्य विक्षेपाद्यवहारतः याको
अर्थ भक्ति मार्ग की रीति यह जो अष्टप्रहर भाव में रहें सो तो
कहीं नाम भक्तिमार्ग को लीयें परंतु क्रियावत कर्म सेवत जे
सेव में मारगीय कर्म करें तहां ताई तो प्रयोजन पाछे करें
नाहीं भगवत्सेवा में संयोग को सुख भयो न अनोयो
विप्रयोग भयो ताते क्रियावत्सु ए यत हैं सो क्रियावत
हू मन लगा सके नाहीं तहां सेवा में हू मन एकाग्र नाहीं
थने क भांति के विक्षेप मन में होत हैं नाना भांति के अव
र तरंग मन में उठत हैं ता करि मन थिर नाहीं विक्षेप
नहीं सो क्रियावत हू भगवत्सेवा नाही बनत है या
थके और हू कहत हैं श्लोक हारोप्य सिद्धे हि
घस्लोभ केमतः तद्भावे तु गा प्रकारसे
ऊ या को अर्थ ॥ अब श्री
सेवा में विवहार की
हो इतन मन में और
जात है तब भाव ग्रहस्थ को
के सेवा ताते यह पु

वी.प. २ जीवतुच्छ्य हु का तुम हा कठिन है सेवा करन में व्यवहार के
स्मरणात्स्वतः अपने काल है पवने होय. तो व्यवहार खातीप
रेन सिद्धि होइ. तब धीरज कैसें रहे अति ही दुख मनमें पावें
तब मन्नमें भगवद्भाव ल्लोकिक चिंता तें कैसें रहे और यह
स्याश्रममें सर्व ही माथे है लौकिक वैदिक सो करनो कुटुंब
को भरणपोषणादि इत्यादि वैसें भगवद्सेवा करें मनमें तो चिं
ता नै आइ रह्यो है तहां कोउ कहे जो व्यवहार मति करो प्रभु
तो सर्व समर्थ मान है लौकिक वैदिक सर्व कार्य सिद्ध करेंगे
तुम भगवद्सेवा करो मन लगाइकें या भांति कोई कहे है त
हां कहत है ३ श्लो [illegible] चात्मभावपदस्तु विद्धिरा [illegible] दु
र्लभः बुद्धिरायाति सततं निवेदन विचिन्तनैः ४ या
[illegible] श्री हरिरायजी कहत है जो व्यावहारिक को अ
भाव है सो करें जद्यपि व्यापार होय भगवद्सेवा करे सो
तो सर्वोपर है परन्तु [illegible] नाही है पूर्ण विश्वास प्रभु
को सो तो दुर्लभ है या भांति या कलि में तो है विना पूर्ण
विश्वास व्यापार ते होय तो बहुत ही दुख पावे श्रीयदु
जी में दोष बुद्धि होय जाय जो सह नव के आश्रय सेवा कर
तहां मेरो लौकिक हू नाही सिद्ध करत है या भांति होइ
तो अपराध होय पराभाव जात रहे तातें व्यापार के सनें
इ एसी तीव्र बुद्धि जन मन दी है विश्वास पूर्ण सो दुर्लभ
है तहां कोई कहे जो बुद्धि जन में होय पूर्ण विश्वास जा भांति
होइ सो उपाय करो तहां श्री हरिरायजी कहत हैं जो बुद्धि
प्रबल जनमें विश्वास पूर्ण तो तब होय तब निवेदन को
चिंतन अष्टप्रहर करें अथवा स्मरण की भावना करें
साधके सो कैसें कहा निवेदन कीयो है अब कैसी क्रिया
करत हैं कितने क दिन भये सो अब श्री आचार्यजी म
हाप्रभु द्वारा सम्बंध भयो है प्रभु कैसे हैं जीव कैसो है जी
वको कौन प्रकार दास्य करनी है या भांति पंचाक्षर

मेंएकाग्रबुद्धीगति।याभांतिनिवेदनकौंचिंतनहोइतौबुद्धि
प्रबलहोइतौतवविश्वासदृढ़होइ।तवकोईकहेजोंनिवे
दनकौंचिंतनप्रथमकरौं।पाछेंभगवत्सेवाकोविचारकरि
यें।याभांतिकोईकहैतहांकहतहैंश्लोक।।तत्रापिसहभा
वस्तुसतामेवनिरूपित:मेदुर्लभोदुरगाश्चततोबुद्धिर्मता
हरौ।।५।।याकोअर्थ।।अवश्रीहरिरायजीकहतहैं।निवेद
नकौंचिंतनअपुनीबुद्धिनेंनाहीहोयसकतहें।सोनव
रत्नग्रंथमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभूनिरूपणकीएहें।।
निवेदनंतुस्मर्तव्यंसर्वथाताद्रशैर्जनै।।तातेनिवेदनको
चिंतनभावसहिततादृसीपुष्टिमारगीयभगवदीयसोंमि
लिकेंकरौ।तवभावसिद्धहोइ।तहांकोईकहेजोंभगवदी
यसोंमिलिकें,चिंतनप्रथमकरिलेहुं।तहांश्रीहरिरायजी
कहतहैं।जोपुष्टिमारगीयभगवदीयतोमिलनेंवहुतही
दुर्लभहैं।कहूंहेसोंदूरिहैं।तिनकेसंगकोनभांतिसोंहो
इ।उनभगवदीयकेसंगविनातादृसीबुद्धिकैसेंहोय।।५।।
आगेंऔरआज्ञाकरतहैंश्लोक।।चिंतापिशायेनैनि
त्यपोषकाभावतोमम:।चिन्त्यजायतेचित्तवातेंध्रुव
।तोन्यथा।।६।।याकोअर्थ।।अवश्रीहरिरायजीकहतहैंजो
औरभावकहेसोतोपरमदुर्लभहैं।कछुकभावआगेंतेंहृ
दयमेंस्थितहैं।सोऊछिन्नहोतहैं।दिनदिनघटतजातहैं
काहेतेंपोषणभावहैं।भगवदीयकोमिलापहोइतौभा
वकोपोषणहोइ।भाववढैविनासतसंगभावसिथल
होतहैं।तहांकोईकहेजोजितनोभावहैतितनेकोंचिं
तनकरौ।भावतोरंचकहूहोइतौंसर्वकार्यसिद्धहोइ।तहां
श्रीहरिरायजीकहतहैं।जोमेंचिंतनकोनभांतिकरूंलौ
किकमनुष्यनकोसंग।याखन्योहें।सोज्योंकिकवानोंश्र

.प.कौतहूं भांति स्मरण करि भावको राखनो अरु निंद्राअन्यवा
र्तासू अन्यश्रवण मैं रु कर्णमें होत है ताकरिकें हृदयते भा
व सिथल होय जात है सो मैं किनलौक हू मनमैं खेद होत है
है आगें अब और हू कहत हैं श्लो० श्रुतोत्तमप्रकाराश्च
भगवान्मानसान्यपि अस्मदीया लौकिकेषु प्रतिष्ठा
मात्रसाधका ७ या श्लोक को अर्थ याभांति मैं आपने मनमें दु
खी होंय भगवद्भाव दिन दिन सिथल होत है और मैं आ
पने श्रवणपैं उत्तम प्रकार आपनी वडाई सुनत हो कोई तो
भगवान कहत है कोई कहत है अष्टप्रहर इनको मन भग
वान मैं ही लगो रहत है इत्यादि अनेक वडाई मैं अपनी स
क्ति मैं सुन्यत हो ताकरिकें कहा सिद्ध है एसो जो मैं लौकि
कमैं वडी प्रतिष्ठा भई है सो प्रतिष्ठामात्र यही साधक भई
लौकिकमैं यह फल और तो मोको कछु दीसत नाही यह
प्रतिष्ठा तो भगवद्भावमैं वाधक है ७ सो अब यो नि
रूपण करत हैं श्लो० चित्तमर्थं प्रकुर्वती वृथा देहवञ्च
नः भगवन्मार्गनिष्ठा तु लोकनेष्ठा विरोधिनी ८ या
श्लोक को अर्थ श्रीहरिरायजी कहत हैं जो यह चित्त भग
वान के चरणारविंदमैं न लग्यो और यह मनुष्य देह दई
ही भगवान मैं विनियोग भई जो यह देह वृथा ही जात
है सो जब वृथा जात है जो यामैं देह उत्तम भगवत्का
र्य मैं विनियोग भई सो श्रीभागवत एकादस स्कंध मैं राजा
जनक कहत हैं श्लो० दुर्लभो मानुषो देहो देहीनां क्ष
णभंगुर तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुंठप्रियदर्शनं १
और प्रहलादजी कहत हैं कौमार आचरेत् प्राज्ञो ध
र्मान् भागवतानिह दुर्लभं मानुषं जन्म तदप्यध्रुवम
र्थदं इत्यादि वचनसों जान्यो जात है जो मनुष्य देह
दुर्लभ है क्षणमैं याको नास है ताते भगवानको
६ सेवा यह परम दुर्लभ है सो वनते तो आपयो य

हकौमारअवस्थाभगवद्धर्मकरणयोग्यहैं।क्षणमेंनास
होयजाय।तातेंभगवद्विनियोगविनाहैं।यौवनसर्व
थाहीहैं।औरभगवद्मार्गकीनेथहैं।सोलोकनेथावि
रोधिनीहैं।काहेतें।अपनीवडाईसुनिकेआनंदभयो।वडेम
नैसोभगवानकोवुरीलागेमदहोइगो।भगवानहृदयमेंतेंजा
तरहैं।तातेंयहलोकनकीवडाईहैंसोभगवद्धर्मकीविरो
धिनीहैं।निश्चया।८।यागेअवऔरहूकहतहैं।श्लोक।संसा
रवैरीकृष्णोपिमूढतेनानुपेक्षते कालेनामपिहरत्यसो
मंप्रतिमन्मार्गि।८।याको अर्थ।संसारवैरीयहतोश्रीकृष्ण
कोनामहै।जहांश्रीकृष्णहृदयमेंआवें।तहांसंसारनास्क
रैं।निश्चय।वासौलौकिकहैहसंबंधीनवनें।सोयहजीवम
स्वज्ञानीहैं श्रीकृष्णकोचाहतहैं।औरसंसारहूकोअपेक्षा
करतहैं संसारहोइगोंतहांतो।श्रीकृष्णकहां।जवश्रीकृ
ष्णकृपाकरेंगे तवसंसारकहां।सोयहकारतेहोयतेप्रभु
कोंज्ञाननाहीहोतहैं।एसोकालकठिनआयोहैं।सोस
त्याणीकीस्मृतिजोवुद्धिताहूकोहरिलीनीहै।सोता।तेवार
वारसंसारकीअपेक्षा चाहतेहैं जद्यपिसंसारीकोतुच्छ
जानतहैं भगवानकेगुणहूसंसारनासकयहूजानतहैं
तऊयहकालकरिवुद्धिहीनहोइजातहैं।सतपुरुषन
कीसी।आगेंअवऔरहूकहतहैं।श्लोक।कालदोष
पराक्रांतानसमाप्तिसतामपिअनःस्थेयसावधा
समस्तेमोऽजयंतिभिः।८।याकोअर्थ।अवश्रीहरिरा
ईसगरेपुष्टिमारगीमेंस्थितिजोवेसवहैंतिनको
नाहनतहैजोसावधानरहियो।काहेतेंजोकालदोष
हैसोयहमहादुष्टहैं।सवधर्ममेंप्रतिवंधकहैं।सो
हूयहकालकेदोषकोनासनाहीं।करिसकतहैं।
काहेतें।सत्संगनाहींमिलतहैं।सो।भगवदीयकों
मिलेतोकालदोषवाधानकरे।सो

सि॰प॰भ॰ हैं तातें हवे सब तुम समस्त सावधान रणलणमें र

१८ हियो यह पुष्टिमार्ग सर्वोपर हैं तामार्ग तुम स्थिति

हो सो दुःसंगतें बचे रहियो यह पुष्टिमार्ग सर्वोपर है

तामार्ग तुम स्थिति हो सो दुःसंगतें बचे रहियो भग

वदीयको संग करियो और श्री आचार्यजी महाप्रभु

नके चरणकमलको आश्रय अपने चित्तमें धरियो

यामें यह निर्णय भयो १८ इति श्री हरिरायजी कृ

त [illegible] सि[illegible]प [illegible] टीका श्री [illegible] संपूर्ण

श्री [illegible] कपर कहें जो यह सत्संग बिना जीव कालसे

खहरि नाहीं करि सकत तातें समस्त पुष्टिमार्गीय भ

गवदीय सावधान रहियो काहेतें यह भावात्मक मा

र्ग है ताको प्रकार आगें कहत हैं श्लो॰ भावात्मसाध

ने मार्गे प्रमेयं भगवान हि सः प्रमानं कृष्णसेवा दो

सत्वं च फलं पुनः १ या [illegible] यह पुष्टिमार्गमें य

ह क्रम नाहीं है जो इतनी सेवा तें फल होइ तलप्र

मेय विचार नाहीं प्रा फल हू नहीं होइ सो श्री कृष्णकी

सेवा है सोई प्रमान है सोई फलरूप है ज्ञानमार्ग

में कर्ममार्गमें साधन फल न्यारो न्यारो है फल पारपा

कै साधन करै सो यह पुष्टिमार्गमें नाहीं है साधन हू

श्री कृष्णकी सेवा फल हू में श्री कृष्णकी सेवा तातें फल

रूप जानि सेवा करनो यह है श्री कृष्णकी सेवा उपरांत औ

र फल कछु नाहीं सो नवम स्कंधमें श्री भगवान कहे हैं म

त्सेवया प्रतीतं च सालोक्यादि चतुष्टयं नेच्छंति सेवया

पूर्णाः कुतोन्यत्कालविप्लुतं १ ऐसे भक्त मेरी सेवामें

विश्वास रा[illegible] हैं जो चार प्रकारकी मुक्ति हू नाहीं जानत

सेवा ही करि पूर्ण हैं तिनको कछु नाहीं बाधक तातें

प्रमान हू कृष्णसेवा फल हू कृष्णसेवा आगें अब श्री

रहूं कहत हैं श्लो॰ तस्मात्सर्वसंरहा निधिरूपतु

सर्वथा यतेन्द्रियः इतस्सर्वं ज्ञात्वा ज्ञात्वा निवर्तते ॥ ३ ॥ याको अ
र्थ ॥ ताते निधिरूप श्रीकृष्ण जो जाननें तैसें ही निधिरूप
भगवद्भाव को जानि जो दिक दुःसंग ताते निश्चय रक्षा करन
चहे । पर पुष्टिमार्ग तें जो विरुद्ध होइ सो विचारि विचारि
कें सर्व को त्याग करें जो अनुकूल होय ताको संग्रह प्रतिकू
ल को त्याग है श्री आचार्यजी महाप्रभु की आज्ञा है ॥ त्या
ग अवश्य करि रखवें वरतन सैं ॥ श्लोक ॥ हरौ कृष्णे यथापूर्णो स्नेह
स्याप्यो विशेषतः ॥ गोष्ठी च ताद्रशी कार्या ध्रुवमस्मत्प्र
यत्नतः ॥ ४ ॥ याको अर्थ ॥ हरि जो श्रीकृष्ण सर्व दुख के हर्ता
हैं तिनकी सेवा फलरूप जानिकें करनी ॥ सो ऊपर कहे हैं तो
तिनही श्रीकृष्ण में सर्व ओर तें मन खैंचिकें इनही में विशेष
करिकें लगावें औ पुष्टिमार्गीय ताद्रशी वैष्णव होय तिन
ही सों गोष्ठी प्रश्नोत्तर करिकें करो ॥ जासों मिलिकें पुष्टिमार्ग
को भाव विचारें तो हृदय में भगवद्भाव अचल होइ ता
तें अवश्य भगवदीय को संग करनो यह है ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ एत
स्यान्तः स्थितिप्राय समीचीनां विलोकृतं । नान्यच्च लौकि
कं चित्ते विधार्यमिह सर्वथा ॥ ५ ॥ याको अर्थ ॥ भगवदीय संग गो
ष्ठी में नित्य करत करत अंतःकरण में भाव की सिद्ध होइ तब
हृदय में सदा भगवान स्थिति हैं तिनको दरसन होय चित्तें लौ
तब यह जीव को चित्त लौकिक में सर्वथा न लगें ॥ नाना प्रकार
के लौकिक विचार मिथ्या ध्यान मिथ्या क्रिया मिथ्या वानी
सब निश्चय छूटि जाय ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ विशेषस्तु समग्रोपि भंडा
गारिकपत्रतः विज्ञेयः सर्वथा शीघ्रं लीख्यतो न तदुत्तरं ॥ ६ ॥
याको अर्थ ॥ विशेष समाचार भंडारी के पत्र तें जानोगे पत्र
वांचि सर्वथा वेगि ही प्रतिउत्तर लिखोगे ॥ ६ ॥ इति श्री हरिरा
इजी कृत द्वाविंसो सिक्षा पत्र ताकी टीका श्री गोपेश्वरजी कृ
त भाषा में संपूर्ण ॥ २२ ॥ अब ऊपर कहे जो भगवदीय संग गो
ष्ठी कीये तें हृदय में भाव सिद्ध सिद्ध होय ॥ तब

प. कोईवे नवलौकिकविचारमें चिंतन जाय परंतु यह चिंताजी
वकोछुटेतो भावहृदयमें आवे सो चिंताकोन भांति छूटे सो
सर्वप्रकार आगे वर्णन करत हैं श्लो० भवंतः श्रुतिसिद्धां
ताः कथमुद्यंति लौकिके अलौकिके तु चिंतायां विषयाभा
वतो नसा १ या० श्लो० अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो
अपने छोटे भाई श्री गोपेश्वरजी सों कहत हैं जो तुम कैसे
हो श्रुति जो वेद पुराण स्मृति सास्त्र श्री भागवत सर्वके
सिद्धांतको जानत हो ऐसे तुमसों यह लौकिकमें मोहको
काहेको पावत हो यह तुमको उचित नाहीं है अब में क
हत हों जो यह पुष्टिमार्गको सिद्धांत सो तुमको उचित लगा
वो सुनियो जहां ताई लौकिक विषय हृदयमें नाहीं जा
नें तहां ताई लौकिक विषय हृदयमेंते नाहीं जात हैं त
हां ताई अलौकिक चिंता नाहीं होत लग हृदयमें लौकि
क चिंता होत है जब हृदयतें विषयको अभाव होइ
तब अलौकिक चिंता होत है यह सास्त्रकी रीति है याभां
ति कहत हैं सो अपने पुष्टिमार्गीयको लौकिक अ
लौकिक दोऊ चिंता नाहीं कर्तव्य है सो आगे कहत हैं श्लो०
यतः सर्वसमर्थोस्ति प्रभुः सर्वकरोतिहि पतिर्यतिर्निजदासा
नां मे हि के पारलौकिके २ या० श्लो० श्रीकृष्ण अपने प्रभु
अस्मत् प्रभु वे सेहैं सर्वसामर्थ्ययुक्त है सो श्री गुसांईजी वि
ज्ञप्तिमें कहे हैं श्लोक कर्तुं पुनर्यथा कर्तुं मनुष्या कर्तुमी
श्वरे सामर्थ्यं यस्य भाव्यं हि त्वयि वार्तानसंशयः १ श्री कृष्ण
के सेहैं कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं सर्वसामर्थ्ययुक्त हैं सो लौ
किक अलौकिक सर्व प्रभु आपुही सिद्ध करें चिंता भगव
दीयको नाहीं कर्तव्य है सो दृष्टांत कहत हैं जो लौकिकमें
औ पिता अपने पुत्रकी रक्षा करत हैं सो अपने निजदास
नको लौकिक अलौकिक सर्व सिद्ध करेंगे निश्चय यह जा
नो २ श्लो० अनन्यवासस्य दा चायेव चनवे विराज

तौ।भगवानपिपुष्टिस्थोनकरिष्यतिलौकिकींचगतिं।३॥
याकोअर्थ।अबश्रीहरिराइजीकहतहैंजोपुष्टिमारगीय
वैस्नवकोंचिंतारंचककरनीनाहीकर्तव्यहै।काहेतेंयस्मान्श्री
आचार्यजीमहाप्रभुकेवचनामृतविराजमानहैं।नवरत्नग्रं
थमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहतहैं।भगवानपिपुष्टिस्थोन
करिष्यतिलौकिकींचगतिं।इतिवचनात।यहपुष्टिमा
र्गमेंश्रीकृष्णभगवानसाक्षातविराजमानहैं।सोआप
नेनिवेदनीयजीवकोंलौकिककवैंतोगतिकबहूंनकरेंगे
यहनिश्चयवैस्नवमनमेंविचाररखें।तातेंयहपुष्टिमार्ग
समानऔरदूसरोमार्गकोईनाहीहै।तामेंसरणआएणा
हूंलौकिकगतिकबहूनहोइ।तहांकोऊकहेजोवैराग्य
करिलौकिकगतिनहोइ।औरजोलौकिकमेंरहेंसगरे
लौकिककार्यकरेंतो।तिनकोंलौकिकगतिकैसेंनहोइ
सास्त्रमेंतोंयाभांतिकहेहैं।याभांतिकहेंतहांकहतहैं।४॥
मर्यादामार्गकीयहीरीतिहै।जोज्ञानवैराग्यकरिकेंसेगति
होइ।जितनोसाधनजीवकरें।तितनीगतिउनसबाकोंमि
लें।सत्यलोकब्रह्मलोकमेंजातहैं।ज्ञानमार्गकरियहम
र्यादामार्गसेंप्रमानमार्गकीरीतिहै।सोयहपुष्टिमार्गहै
यहमार्गमेंप्रमेयबलतेंफलहै।साधनयामार्गमेंनाहीहै
सोएकादसस्कंधमेंभगवानकहेहैं।केवलेनहिभावेनगो
प्योगावो:खगामृगा।येन्योमूढधियोनागा।सिद्धामामी
युरंजसा॥ब्रजमेंश्रीकृष्णभगवाननिसाधनहूंतोसोंप्रभु
अपनेप्रमेयबलतेंफलदानकीयेहैं।तैसेंहीयहपुष्टिमार्गमें
श्रीकृष्णविराजतहैं।सोसाधनकीअपेक्षानाहीरखतप्रमे
यबलतेंविनासाधनहीफलदाननिश्चयकरेंगे।तातेंपुष्टि
मारगीयवैस्नवकोंलौकिकअलौकिकचिंताकबहूंनाही
करनीहै।औरश्रीगुसांईजीनवरत्नकीटीकाकरीहै।सो
तहांप्रथमसंगलाचरणकीयोहै।चिंतासंतान नारोय

 त्पादांबुजरेणवः स्वीयानां तान्निजाचार्यान्प्रणमामि मुहुर्मुहुः ४ श्रीआचार्यजी महाप्रभूके चरणकी रेणुके प्रसादतें सगरी चिंता आपुतें नास होत हैं ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभुके चरणकमलकों में वारंवार नमस्कार करत हों ४ आगे आवश्रो रहू कहत हैं श्लो॰ यतस्तदीयाः किंभाताश्चिनां विदधते जना ज्ञानिनोपि न वै दुःखं चित्ते दधति लौकिकं ५ या॰ऽत्य॰ ऐसे पुष्टिमार्गीय वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुके सेवक तदीय भ्रांत होइ चिंतन्निमें कोपरे हैं काहेतें ज्ञानमार्गमें जीव हैं ओसे ज्ञानी सोऊ लौकिक दुःख मनमें नाही धरत अन्यकों तो लौकिक दुःख मनमें अग्नि चिनकों नाही रहत है यह तो पुष्टिमार्ग जहां साक्षात भगवान सों संबंध श्रीआचार्यजी महाप्रभू द्वारा भयो है सो ओर ज्ञान करि चिंतामें रहत हैं सो न करनो चिंता प्रभु नवें सामर्थ्ययुक्त है ५ श्लो॰ सेवारसादिरहिताश्चिंताकथानथाः येष्वस्पस्पसेवायां दरसन स्पर्शनादि भि: ६ या॰ऽत्य॰ ऐसे पुष्टिमार्गीय भक्तजन सो श्रीकृष्णकी सेवारस अनुभव विना सेवारसकों चिंतामें आवेस विनाके पारहे हैं साक्षात श्रीकृष्णके स्वरूपकी सेवा करत है दरसन करत है चरणस्पर्श करत है नऊ चिंतामें भगवद्रसनारिके रहित है सो क्यों रहित हैं जातें यह जान्यो जात है चिंता चित्तमें भरी है जातें रसकों अनुभव नाही होत है ६ श्लो॰ अनुभूतं सदानेषां चित्तं दुःखयुतं कथं परमानंदसंबंधेद् रवं निश्चितिनै वाहि ७ या॰ऽत्य॰ ऐसो पुष्टिमार्ग जामें भावात्मक सर्वोपर पदारथकों अनुभव तिनकों चित्तमें दुःख कोहोत है सो यह लौकिक चिंता हीतें अज्ञान करि दुःखी है भावात्मक रसकों अनुभव नाही होत है और श्रीकृष्णरूप परमानंद रूप भावात्मक तिनकों संबंधी श्रीआचार्यजी महाप्रभू द्वारा भयो है साक्षात परमानंदसों संबंध है ओसे

निवेदनीयवैस्नवके हृदयमें दुखके सें तिष्ठत हैं सो अज्ञा
न करिके लोकिक चिंतानें दुख होत हैं ७ श्लोक ॥ पितास्य
स्तु सर्वेपि संबंधा वस्त्र हेतव: । वहिर्मुखजनस्यैव वहिर्मुख
ततस्त्यजेत् ॥ ८ ॥ याको अर्थ ॥ लोकिकमें पिता हैं सो अप
नें पुत्रकों सर्वस्व देत हैं काहेतें पुत्र आत्मज अपनी आत्मा
हैं यह संबंधतें सर्वस्व देत हैं । सो तो यह पुष्टिमार्गमें श्रीकृ
ष्णसों संबंध भयो है तहां कहा सिद्ध होइ सर्ववस्तु सिद्ध ही
है अज्ञान करि चिंता करत हैं अपनो संबंध तो विचारें
और वहिर्मुखके संगतें वहिर्मुख जीव होत हैं तातें सीघ्र
ही वहिर्मुखको त्याग करें उनको संग न करें ८ श्लोक ॥
वहिर्मुखस्य बाधंते दोषा देहिकमानसा ॥ सीघ्रधातो
रिवातस्य रोगा वातिकपैत्तिका ॥ ९ ॥ याको अर्थ ॥ वैस्नव
को वहिर्मुखको संग बाधक है संगतें देहिक दोष मान
स दोष निश्चय ही आइ लागे सो दृष्टांत कहत हैं जो रो
गी होइ ताकी क्षीन धातु होइ तिनको वायु पित्त सब आइ
सें या भांति वहिर्मुखको संग होइ तिनको सर्व दोष आ
य लगें १० श्लोक ॥ न निवर्त्तिस्तुसपाध्यस्तासंगेन सेव
या श्रीभागवतपाठेन तत्स्थश्रवणादपि ॥ १० ॥ याको अर्थ
सो रोगी सुंदर औषद खाय तो वाको रोग जाय तैसें ही वैस्न
व तादृसी वैस्नव भगवदीयको संग करें उनकी सेवा करे
तो वहिर्मुखता जाय भगवदीयके संगतें देहिक मानसिक
दोषादि सब दूरि होइ ॥ तासों कहें हैं करें जो तादृसी भग
वदीय मिलनें तो दुर्लभ हैं वे मिलें तो कहा करें तहां क
हत हैं जो श्रीमद्भागवतको पाठ करें काहेतें जो श्रीभागव
तको पाठ अभ्यास न होइ तो पुष्टिमार्गीय भगवदीयके
मुखतें श्रवण करें तो सगरे दोष नास जाय ११ श्लोक ॥
निवेदनस्मरणात: सद्भि: सहकथादिभि: सदा नाम
ग्रहणात: सदा स्मरण भावनात् ॥ ११ ॥ याको अर्थ ॥ जो भी

प० भागवतश्रवणकरिवेकौंसंयोगनवनिआवैंतोंनिवेद
१ नकोस्मरणअहर्निसकीयोकरैंतथासदाभगवदी
यकेमुखतेंपुष्टिमार्गीयश्रीआचार्यजीमहाप्रभुश्री
गुसांईजीकेग्रंथतिनकोकथाभावसोंसुनेंआपुनेंच
नेंतोंसदाश्रीकृष्णकेनामकौंस्मरणकरेंयामेंतोक
छुश्रमनाहीहैंनामहीस्मरणकरेंपरंतुनामकेस्म
रणयहजीवकोदुर्लभहैंसोश्रीगुसांईजीविज्ञप्तिमें
कहेंहैंत्वन्नामोच्चारणेप्यार्तिनजीवेस्वधिकारिताऽत्र
लौकिकत्वात्त्वन्नाम्नस्तदुच्चोलौकिकत्वत १ इतिवि
वनात्श्रीगुसांईजीश्रीगोकुलनाथजीसोंकहतहैं
जोतुमारोनामउच्चारकरिवेकोयोग्यनजीवकोनां
हीहैंकाहेतेंजोतुमारोनामतोमहाअलौकिकहै
सोकैसेंनमलेहिंसोनामहूनवनिआवेतोंस्मरण
हीकीभावनाकरैंसोविवेकधैर्याश्रयमेंश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभुकहेंहैं श्लो० यहिकेपरलोकेचसर्व
थाशरणंहरिः दुःखहानौतथापापेभयेकामाद्यपू
रणे १ भक्तद्रोहेभक्त्यभावेभक्तैश्चातिक्रमेकृते अ
शक्येवासुशक्येवासर्वथाशरणंहरिः इत्यादिवच
नकेअनुसारशरणकीभावनाकरें श्लो० अष्टाक्ष
रमहामंत्रकीर्तनेनविशेषतः पंचाक्षरेणमंत्रेण
तदीयत्वविभावनात् १ यथा० अष्टाक्षरमहा
मंत्रहैश्रीकृष्णःशरणंमम यहीमंत्रकोएकाग्रचि
त्तव्हैकरकीर्तनकरेंतोसर्वसिद्धिहोय सोद्वादसस्कंध
मेंश्रीशुकदेवजीकहेंहैं कलेर्दोषनिधेराजन्नस्ति
ह्येकोमहान्गुणः कीर्तनादेवकृष्णस्यमुक्तबंधःपरंव्र
जेत् १ जद्यपिकलियुगदोषनिधिहै परंतुयामेंएक
बडोगुणहैंश्रीकृष्णनामकोकीर्तनजोकरतहैंसो
यहकालबंधनतेंछुटिजातहैंतातेंअष्टाक्षरमंत्रको

।तिन करैं तथा पंचाक्षर मंत्र कौं भावना करैं तदीय
स्वरूप के संग मिलि के करैं सो श्री आचार्य जी महाप्र
भु नवरत्न में कहे हैं। निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशै
र्जनैः कहेतें पंचाक्षर मंत्र भगवदीय के संग विना भाव
प्रगट होइ नहीं॥ निवेदन के स्मरण में भगवदीय की
अपेक्षा है।१२। श्लोक। वैराग्यपरितोषाभ्यां हस्तसंनि
हितास्थितैः। लौकिक क्लेश जो हास्यात् पुत्राद्यनुरा
गतः।१३। याको अर्थ। संसार यह देह संबंधी पदार्थ लौ
किक में वैराग्य राखनो। संसार में वैराग्य होइ तो लौ
किक दुख सुख चित्त को बाधा न करैं तातें वैराग्य राखें
और यथा लाभ संतोष होइ जो सहज में बनि आवे सो
मिलि होइ ताही में संतोष होइ तो मन में विलेपन होइ
और श्री हस्तज हो विराजत होइ पुष्टिमार्ग की सेवा
होइ तिनके पास स्थित होइ तो स्वरूप सेवा बनि आ
वें सो भक्ति वर्द्धिनी में श्री आचार्य जी महाप्रभु कहे
हैं यदि स्यात् विप्रकर्षे वा यथा चित्तं न दुष्यति निकट
रहिके सेवा करें तो चित्त के सगरे सों ठनाम होइ बहुत
निकट में चित्त को रोध होत है तो न करि रहे परन्तु नि
त्य सेवा रस स्नवन ने सो करें लौकिक क्लेश तें अपनो
मन उदास राखें अपने चित्त में लौकिक क्लेश न करें
और देह संबंधी पुत्रादि स्त्री बंधु का हू में अनुराग न
राखें।१३। श्लोक। ग्रह चिंता पुनारात्पात् हीय अनुराग
तः नवरत्नस्य पाठेन सर्वा चिंता निवर्तते।१४। याको
अर्थ। गृहादि धन इत्यादिक में आसक्ति न राखें ये सग
रे चित्त के मल हैं, तातें इन में प्रीति न करें पुष्टिमार्गी
य भगवदीय में अनुराग राखें, तथा नवरत्न ग्रंथ को
पाठ नित्य नेम सों बने तितनो करें तो सगरी चिंता
मन में ते निवर्त होइ चिंता नाम के अर्थ श्री आचार्

जीमहाप्रभुनवल्लभग्रंथप्रगटकीरोहैं ॥ सोगोविंददुबेवै
ष्णवकेमिसपुष्टिमारगीयसवनकेअर्थ ॥ तातेंनवल्लभग्रं
थकेपाठतेंसर्वचिंतादूरिहोय ॥ निश्चय ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ए
वंनिवर्तमुख्येजनदुःखेनेत्राधतो ॥ अत: त्वमात्रयत्नेस्तु
भवितव्यंभवादृशै: ॥ १५ ॥ याकोअर्थ ॥ सवश्रीहरिरायजी
कहतहैं जोऊपरसगरेभगवद्धर्मकहेहैं ॥ उनमेंतेएककूं
दृढकरिकेजोवैष्णवधारनकरेगो ॥ सोतिनकोंसबदुख
लौकिकनिवृतनकेअनेकभावसोंदूरिहोइगो ॥ इहमन
मनमेंपरमसुखपावेगो ॥ याभांतिदुखनिवृतनकेअनेक
यत्नहैं ॥ सोभावीकवैष्णवकोंकर्तव्यहैं ॥ येयत्नभावके
वर्द्धकहैं ॥ ताकेभागपर्मेवेगिफलदानहैं ॥ तिनकोभाविक
वनिश्चावेगो ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ दुखेननरथानेयकाल: प
रमदुर्लभ: कूलसेवानुकूलमनुनिजायायोश्रयात्रने ॥ १६ ॥
याकोअर्थ ॥ सवश्रीहरिरायजीसमस्तवैष्णवनसोंकहते
हैं ॥ जोयहकालपरमदुर्लभहै ॥ जोयहकालपरमदुर्लभहैं
केरिवेसोसमयनवनेगो ॥ यहमनुष्यदेहश्रीकृष्णसेवाके
अनुकूल ॥ सोयहलौकिकदुखचिंताकरिकेवृथानखोवे
काहेते यहीदेहतेंश्रीकृष्णकीसेवावननहैं ॥ औरयुगमें
यहपुष्टिमारगीयसेवानाहीं ॥ त्रलाहिकनकोदुर्लभहैश्री
आचार्यजीमहाप्रभुद्वाराब्रह्मसंबंधऔरयुगमेंकहां ॥
श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकोआश्रयफेरिकहां ॥ तथा
श्रीआचार्यजीमहाप्रभूकेआश्रितजोताकुंश्रीनिजसे
कूतिनकोंआश्रयफेरिकहां ॥ याभांतिमनमेंविचारिकें
यहकालपरमदुर्लभजानिदु:खलौकिकमेंमन
लगाइवृथानाहींखोवनो ॥ भगवदीयकोआश्रयअपने
श्रीवल्लभाचार्यजीकोआश्रयकरश्रीकृष्णकीसेवाय
वस्यकहीकर्तव्यहैं ॥ यहदेहकालसबसेवाअनुकूलहै
यहजानिकेंसफलराहूसेवाविनानटे

तेईयारथ्याचिंताप्रासापिनिजदोषतः चिंतोद्वेगंविधा
यापीत्येतद्वचनचिंतनात ॥७॥ याको अर्थ श्रीहरि
राइजीपत्रप्रगटकरतहैं यामेंसबोपरयहीसिद्धांतहैजो
हृतसीघ्रहीचिंताकोत्यागकरो एकचिंतातें अनेक
दोषकोप्राप्तिहोय तातेंनवरत्नकोवचननिश्चयक
रिचिंतनकरियहीचिंताकोत्यागकरैनवरत्नमें
कहेहैं चिंतोद्वेगंविधायापिहरिर्यद्यत्करिष्यति:
तथैवतस्यलीलेतिमत्वाचिंताद्रुतंत्यजेत ॥९॥ इति
वचनातयाभांतिसीघ्रहीचिंतात्यागकरिकैपरम
गवद्धर्मकहेहैं तामेंप्रवर्तहोइभगवत्सेवासुमरन
ताद्रसीकोसंगकरो यहनवरत्नग्रंथकोमननलगाइ
कैनित्यचिंतनकरैपाठकरैभावविचारेतोचिंता
दूरिहोय ॥९॥ इतिश्रीहरिराइ जीकृत नवरत्नटी
[illegible]ताकीटी काश्रीगोपेश्वरजीलिखितसंपूर्ण ॥२॥ अथ
[illegible]करणपरकहेजोचिंतातजेभगवत्सेवादिभगवद्धर्मक
रैजोजीवकोकहासामर्थ्यहैकालदोषतेंग्रसित
हैं तातेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकोदृढआश्रय
होयतोप्रभुकृपाकरैसोआश्रयकोनभांतिकरैं सो
आगेसिक्षापत्रमेंकहतहैं [illegible] भक्तिमार्ग [illegible]
मंत्रकारणपरमुख्यते नैवमार्गेसकल [illegible]
नसंशयः ॥१॥ याको अर्थ यहश्रीआचार्य [illegible]
सुनके पुष्टिमार्गयहभक्तिमार्गतें [illegible]
लकोकारणहैं साधनतेंफलना [illegible]
लसिद्धिहैतातेंश्रीवल्लभ [illegible]
तातेंयहपुष्टिमार्गमेंजोवै [illegible]

ननतेंकहाभयो पुष्टिमा [illegible]

प्र॰ पृ॰ १०२

सर्वसिद्धि इनको करेगो सर्वथा यामें संसय नाही ॥ ३ ॥ श्लो॰ ॥ आचार्यचरणाब्जानि तोते ज्ञोपिनः प्रभुः यदेव त्वं रूनेन्द्र लभ्यते सर्वथा ॥ ३ ॥ या श्लोकको पुष्टिमार्गमें सरणाचार्यरूप ते श्री वल्लभाचार्यजी के सरणागत होय हें तब श्री आचार्यजी महाप्रभु दया करिकें श्री कृष्णसों शापना करे जो यह जीव सरण आयो है सो तब श्री कृष्णको वह जीव बहुत भावे सर्वथा ऊह जीव पर श्रीकृष्ण कृपा करें ॥ ३ ॥ श्लो॰ ॥ अनन्यदाश्रयो जीवे दूराव विधीयते यथावत्तरे लीला यो नासां श्री यमुनाम ना ॥ ४ ॥ या श्लोकको तात्पर्य यह पुष्टिमारगीय जीव श्री वल्लभाचार्यजी के चरणकमलको दृढ आश्रय निश्चय हीकरें तब फल प्राप्ति होइ जेसे व्रजनारी हे सामें यमुना जीद्वारा कुमारिकाको प्रभु प्राप्ति भए तेसे ही श्री आचार्यजी महाप्रभुके आश्रयते श्री आचार्य जीद्वारा

॥ ४ ॥ श्लो॰ ॥ यथावा

दासादि पुलिन्दी ॥ यथावाग्निकुमाराणां वृत्तकात्यायनी मता ॥ ४ ॥ या श्लोक ॥ यासमयमें तो एक श्री आचार्यजी महाप्रभु द्वारा है और श्री नारलीजामें हरिदास गिरिराज परम भक्त हैं तिनके संगते पुलिंदीको भक्ति सिद्धि भई लीला प्राप्ति भई और अग्निकुमारिका नको कात्यायनी मिसतें श्री यमुना जीद्वारा लीलामें प्राप्त जेसे ही अब श्री आचार्यजी द्वारा उहां पुलिंदीकी सेवा गिरिराजद्वारा प्रभु अंगीकार करी कुमारिकाकी सेवा श्री यमुना द्वारा तेसेंही महावैष्णवकी सेवा श्री आचार्यजी द्वारा अंगीकार श्रीजी करत हें ॥ ४ ॥ श्लो॰ ॥ प्रादुर्भूतस्वयं कृष्णो यथा स्वरूपायनमनः यथावाहेन्यभावा

न्मा प्रादुर्भावे स्वयं मतः ॥५॥ याको अर्थ श्रीलक्ष्मणके
प्रादुर्भाव प्रगट दसामें स्वयं प्रभु आपुही द्वारा फल प्र
करण पंचाध्याई में यति हैं तिनकी भावना करि स्वयं प्र
भु आपुही प्रगट हैं या तें ॥ श्लोक ॥ इति गोप्यः प्रगाय
न्त्यः प्रलपन्त्यश्च चित्रधा । रुरुदुः सुस्वरं राजन् कृष्णदर्शन
लालसा ॥१॥ तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः पी
ताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः ॥ या भांति हैं या तें
प्रगटे ॥५॥ श्लोक ॥ तथा परोक्षे जीवानां पुष्टिसंबंधसिद्ध
ये श्रीमदाचार्यसंबंधो नान्यदस्ति हि साधनं ॥६॥ याको
अर्थ ॥ साक्षात् दसामें हैं या तें तैसेंही अब परोक्ष दसा
में जीवनकों पुष्टिसंबंध भये तें ताकाहू ने जो यह क
लिमें और साधन नाही । यह हैं या कहा । तातें श्रीआ
चार्यजी महाप्रभु अपने तिनके संबंध ते निवेदन होइ
तब ही तो और दूसरो साधन नाही ॥ एक श्रीआचार्य
जी महाप्रभू के संबंध ते प्रभु फल दान करत हैं ॥ श्लो
क ॥ अतरा वो न माचार्यैस्तोत्रे हस्ताश्रयमिथे स
राणस्य समुद्धरदृष्टि विज्ञापयाम्यहं ॥७॥ याको अ
र्थ । अब श्रीहरिराइजी कहत हैं जो हमारे श्रीवल्ल
भाचार्यजी हस्ताश्रयमें श्रीहस्तसो जीवकूं लीए वि
जमकीरे हैं । तो मेरे सरणा जीव हैं । सो तिनको उ
द्धार करो यह लौकिकतें निकासि अपनी लीला
में अंगीकार करो याभांति प्रभुसों कहत हैं और प्रति
ज्ञा करि जीवनको विश्वास कराय धीरज दीए
जो उद्धार होउगो चिंता मति करो ॥ सो अब कहत
हैं ॥७॥ श्लोक ॥ विश्वासार्थं वरं दाद्दिति श्रीवल्लभो
द्वीतना अन्नो नान्यप्रकारेण फलं स्वहृदि चिन्तयन्
ना याको अर्थ ॥ श्रीहस्ताश्रयमिदं स्तोत्रं यत्पठेन्नरः
रमसन्निधौ न स्यादाश्रयो भवेत् हस्त

से.प.
०४

वीनु ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु प्रथमश्रीकृष्णजीसों
कहीजोअबअपनेपुष्टिमारगीयवैस्नवसोंकहतहैं
जोयहश्रीकृष्णाश्रयग्रंथकोपाठश्रीकृष्णकेसनमुख
करियें ॥ ताकरिकैं श्रीकृष्ण अपनो आश्रय निश्चय
करैगो यहमेरीप्रतिज्ञा हैं ॥ याप्रकारप्रतिज्ञा श्रीम
हाप्रभुजीकीरी ॥ नोजीवनको विस्वासहोय जो हम
कोपुष्टिरसमिलेगो जैसेंचीरहरणमेंठाकुरजी भक्त
नसोंकहे ॥ जोराससरदरितुमेंकरिहौं मोरमनोरथ
पूर्णकरैगो यहकहैत वभक्तनको विश्वासभयो ना
हीतोसरदरितुपर्यंतविस्वासनरहतो ॥ तैसेहीश्री
आचार्यजीमहाप्रभु प्रतिज्ञाकरिअपनेनिजसेव
कनको विस्वासदीरे ॥ तातें एकश्रीआचार्यजी
महाप्रभुद्वाराफलसिद्धिहैं ॥ औरप्रकारफलको चिं
तननकरनो ॥ श्लोक ॥ विश्वासेनयथाप्रीतिचा
तकः स्वातिजंजलं ॥ तथा चेत्कृष्णजलदः स्वांत
रपयेचिषति ॥ टीका ॥ याकोअर्थ ॥ विश्वासकरिचात
कजैसेंस्वातिकेजलको अपेक्षा राखतहै ॥ औरपृ
थ्वीपरकूवातलाव नदीसमुद्रपर्यंतभर्यो हैं ॥ तामें
आसनाहींकरत यहविस्वासदेखिघनहीमनोर
थपूरनकरतहै ॥ तैसेंहीजो वैस्नव एकश्रीकृष्ण
कों आश्रयमनमेंदृढकीयोहै ॥ यो अवतारतथ
देवतासोंफलकी अपेक्षानाहीं हैं ॥ तिनकोंश्रीकृ
ष्णजलदरूप अपनो आनंदवरखैगो ॥ निश्चय आ
नंददानकरतहैं ॥ श्लोक ॥ एवंविश्वाससद्भावसर्वो
वभविष्यति यतःपरिहृढोस्माकं सर्वकर्तुतमोस
नः १० ॥ याकोअर्थो ॥ याभांतिपुष्टिमारगीयवैस्नव
विश्वासशुद्धभावसोंकरे ॥ तिनकोंसर्वसिद्धहोय
सोश्रीहरिरायजीकहतहैं ॥ ऐसेहमारेप्रभुसर्वकर

ण मैं सामर्थ्ययुक्त हैं तातें कृपा करे हींगे ॥२०॥ श्लोक ॥ सहि
स्वतः समर्थत्वान्न साधनमपेक्षते कालकार्यविलो
कात्तत्तदीयानां विशेषतः ॥२१॥ याको अर्थ ॥ श्रीवल्लभीहरि
राइजी कहत हैं जो श्रीकृष्ण आपुही स्वतः सामर्थ्ययुक्त हैं
कर्तुं अकर्तुं अन्यथाकर्तुं आपुही हैं सो आपने सेवकन
के साधनकी अपेक्षा नाहीं करत हैं सो यह इतनों साध
न करे तो फल होय यह तो अन्य देवतान में है जो जितनो सा
धन करे तितनो लों तिनको फल देइ सो श्रीकृष्ण में नाहीं
है यह काहे तें हु तम हा ... विपरीत धर्मयुक्त हैं
देखिकें आपने न दीयूपर दया करी विना साधनही वि
शेष कृपा करत हैं ॥ श्लोक ॥ निसाधनत्वं स्फुरणे इदं
नन्यदाश्रयः ॥ प्रेम ... भावविकासीतच्छान्तत्संगि
नामपि ॥२२॥ याको अर्थ ॥ याभांति जब जीव साधनक
रतकरत पाछें निसाधन होइ जैसें व्रजभक्त रासपंचाध्या
ई में अंतरध्यान समय अनेक साधन कीये लीला
कीये गुनगान करि पाछें निसाधन भई तब प्रभु ही
को आश्रय ह्यो तब प्रभु प्रगटे तैसें ही जब वैष्णव मन ते
निसाधन होय तब दैन्य करि श्रीआचार्यजी महाप्रभु
के चरणकमलको आश्रय होय तब श्रीप्रभु कृपा करे
और जिनके मनमें अविस्वास है सो केवल असुर ही
हैं तिनको संग जो कोई करे तिनहूको आसुरावेस
अविस्वास होइ तातें इनको संग न करनों ॥ श्लोक ॥
मतिमोहो महादोष निधानं संभविष्यति यथापूर्वं
कथं प्रत्याभगवत्पदसेवनः ॥२३॥ याको अर्थ ॥ श्रीवल्लभी
हरिराइजी कहत हैं जो याजीवकी मतिको मोह भ
यो है तातें दोषरूप होइ रह्यो है तातें निसाधन
ता नाहीं आवत है अहंता दोष रहित होइ आपनके
यह जानत हैं जो मैंही करत हों यह अ ... मोह

ी.प. कवहूं नहीं रहि होइ जब पूर्व जो प्रथम स्कंध भक्त श्री भागवत में
०५ कहे है प्रह्लाद जी तथा ध्रुव भक्तादि तथा पुष्टिमारगी
य श्री आचार्य जी महाप्रभू के चोरासी वैष्णव की वार्ता
यह कथा सुने तो प्रथम या भांति सेवा कही है में हू कहा
हत हों या भांति रैन पहीये भगवत्सेवा करे तब निसाध
न होय सर्व दोष दूरि होइ ताते श्रवण मुख्य सेवा को
पोषण है ताते श्री आचार्य जी महाप्रभू भक्ति वर्द्धनी
में कहे है सेवायां वा कथायां वा यस्यासक्तिर्दृढा भवेत् तव भग
वत्सेवा प्रीति सो करें १३ श्लोक ॥ यस्मिन् न सन्ति सम
मुत्पन्नस्तथा साधन ना ज्ञान ॥ न दोषा ग्ना सर्व मार्गे
सर्वा न द्रावु भाविना १४ या श्लोक श्री गासे भागवदीय
की कथा सुने तो है न दोय सो दैन्य उत्पत्ति ते आदि नार
प साधन जो मे करत हो सो नास होइ तब न दोय भक्त
हैं सो तिन के भावन होइ न जो भाव ते करत हैं सो ता
भाव में यह लगो तब फल सिद्ध होइ ताते श्रवण आ
वश्य है सो गोपिका गीत में कहे है तव कथामृतं तप्त
जीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहं श्रवण मंगलं
श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ये भूरिदा जनाः ९ ताते श्रवण ते
सर्व दोष दूरि होइ और भगवद्भाव बढे १४ श्लोक ॥ ६
नरेश्वाकालिकानां कालेन निखिलेगति यतः कालस्त
द्विभूतिः काल कलय नाम है १५ या श्लोक के बच न
श्री हरिराइ जी कहत हैं ऐसो जो यह ॥ १५ ॥ रात सर्वा
र कर्ता सो निखिल नाम समस्त गति को खात है सो का
ल कैसो है जो यह श्रीकृष्ण भगवान की विभूति है सो य
ह कलि में महा प्रलय तीन सृष्टि सर्व काल में लय होत है
या भांति सगरे जगत काल में लय होत है या भांति सगा
रे जगत का काल में लय होत है श्लोक ॥ मुख्याधिकारी
पि हरि रिच्छा शक्ति स्वरूपवान तदेतं गदा में सुनत सो

नथ्ये मिष्यतो। १६ याकी अर्थ। काल के सोहे जो सु ख्या
भगवान को अधिकारी हैं इच्छा सक्ति को स्वरूप है ताते
ब्रह्मादिकन को नारी छुडत है। ऐसो जो काल सो उग्र
है सब के अंतरंग दास को जहह काल को सामर्थ नाही है
भगवदीय को बाधक नाही है इसकल है। एसी लो क।।
सहित ब्यो यथा न्येयमारको पिनद्दिलस। पीता मृत
जनेजातु अपू मा घातु मेवच। १७। याको अर्थ। पद
काल सर्प है सो सगरे जगत को खात है। परंतु भी
कृष्ण के चरणारविंद तथा अधरामृत जिन पान की
पोहे ऐसे भगत को परस ह ना ही करत है और सुघत
नाही है। सो श्री गुसाई जी सप्त लोकी मे कहे हे। ये
घो घत मसाक्ष्य कलिभुजंगमस्या दिन ज्मादि प्रय
सागरे पतित मखधमे रत्नपदी तत्सुधा निधिम
भुरते तु कं पामताद मत्युम करोत लु णा हरण
मे मुमेत त्पदं। १। या भांति श्री आचार्य जी महाप्रभु
के चरणामृत जो कोई पान की पोहे तिनको काल
वे परसह ना ही करत है और घुघत हू नाही। १७। तो का
तथा कसो पिमनु जमहापुरुष न्यैन। भक्ति पीयुष
पातास्न विंचित [illegible] तु मी। १८। याको अर्थ जो मनु
[illegible] महापुरुष श्री आचार्य जी महाप्रभु [illegible]
थ भगवदीय पुष्टि मारगीय तिनके [illegible]
पुष्टि भक्ति रस [illegible] को पान [illegible]
तंचक काल सो बाधक नाही [illegible]
या मासे [illegible]
था का [illegible]
दीयको करत सो वा ना सं [illegible]
वे पलट मुक्ति दीनी। [illegible]
को का लक [illegible] १८ [illegible]

ये प्रभु नको लक्ष्वित पतो हवि तथैव तस्य लीलेति वचन
तैसेव चिंतपतो १४ या को अर्थ श्रीहरिराइजी आप
ने छोटे भाई श्री गोपेश्वरजी सो कहत हैं जो तुम तो तरी
यहो सर्वे काल भागवद्धर्म में निपुन हो तातें तुम आ
पने मन में काल की चिंता मति करियो कोई काल में
तुमको चिंता नाही करनी है श्री आचार्यजी महा
प्रभुन वल्लभ ते हैं जो तथैव तस्य लीलेति मत्वा चिं
ता दुर्तत्य जेत यह वचन को चिंतन हृदय में करि
के चिंता नाही करनी यहे सगरी श्री कृष्णजी की लील
ही जाननी १५ श्लो को अर्थ लीला करें च्यारि ले चि
त्तता दूर से प्रभो विवेकोप्यमवाम्न सहितं वै विधा
स्यति १० या को अर्थ श्री भागवत में सर्ग विसर्ग
आदि लीला दस विधि लीला के कर्ता या भांति ता
हु श्री प्रभु को सगरे जगत में लीला जाने ऐसो जा
के मन में होइ सो हुं विवेकी कहिये सो विवेक धैर्या
श्रय में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहें है विवेकस्तु ह
रिः सर्वं निजेच्छातः करिष्यति यही विवेक जो सब के
र्थ में निजेच्छा माने १ श्लोक स्वकीया नो निजेच्छ
तस्मात् चिंता न कार्या भवेत् भवंतः श्रुत सद्धानो:
सत्संगस्य तयोपि हि २१ या को अर्थ या भांति भगवा
न के स्वकीय निज भक्त हैं सो निजेच्छा भागवद् इच्छा
सर्व कार्य में जानत हैं और तुम तो भगवान के सब धी
हो भगवद्भाव सुनत हो पुष्टि वानी सुनते हो और ऐ
से साइं बहुत की ये हो तातें तुम को चिंता कोई प्रकार
नही कित तव्य है २१ श्लोक प्रभु पादे के नित्य स्ते
यां को पापर्टि है हि नो धर्म संस्थापन नायस्य प्रागट्यम
जनि २२ या को अर्थ श्री हरिरायजी कहत हैं जो
तुम के से हो प्रभु जो श्री कृष्ण तथा श्री आचार्यजी

महाप्रभुनिनकेपदकमलमेगतिनामप्राप्तहोय
सोतुमसों॥सोपरिवेदनो॥चिंतासर्वथानाहीकरनेयो
ग्यहै॥धर्मकेस्थापनकेलीयेमहाप्रभुजीकोतथातु
मारोप्रागट्यसो उचितहै॥प्रभुसदाधर्मकीरक्षा
करीहै॥सोभागवतीयगाएहैं॥ब्रह्मगुणवेदवचन
प्रतिपाल्यो धर्मगिलानभईजबहीजबतबतुमअव
तुधार्यो॥सतयुगस्वेतवाराहरूपधरिहिरन्य
नाकुसमार्यो॥त्रेतारामरूपदसरथकेरावनकुल
जोसंघार्यो॥द्वापरव्रजवूडततेराख्यो॥सुरपति
पाइनपार्यो॥कंसादिकदानवसबमारेवसुधा
भारउतार्यो॥अबकलियुगश्रीवल्लभयहप्रगटे
मायावादनिवार्यो॥मानिकचंदप्रभुश्रीविठ्ठल
पुरुषोत्तमरूपनिहार्यो॥याभांतिश्रीवल्लभ
पुरुषोत्तमरूपहैंधर्मस्थापनार्थप्रागट्यहै॥२२
श्लोक॥येनुविरोधीधर्मसदिधर्मननिवर्तसह
हैसदनेकथं॥टीका॥येनुविप्रेगावेदधर्मकेप
रलक॥२३॥याकोअर्थ॥श्रीवल्लभहेंजोजेकोइवेद
धर्मकोअतिक्रमकरे॥अपनेमनमानीक्रमकरे
तिनमननहोइ॥सोप्रभुकोरनसंभवे॥सोकहतेजो
प्रभुविलसायहैं॥येनुविप्रवेदधर्मकेप्रतिपाल
कहें॥२३॥श्लोक॥सकथंसहतेल्स्मत्तद्विरोधसं
जनैःकृतं॥परमानंदसंदोहोदयाळुसुतरामपि
२४॥याकोअर्थ॥श्रीवल्लभहें॥२४॥सोजोभगवान
सोबहसुखजीवकेसविरुद्धकर्तवकरनामनुष्य
सोश्रीकृष्णविरोधकर्तवकेसेसहें॥श्रीकृष्णकेसे
हेपरमानंदस्वरूपहें॥परमदयालहें॥काहूकोदुख
नाहीदेखिसकतहें॥२४॥श्लोक॥सकथंसहतेह

दोषेणसर्वथा ॥२१॥ याकौ अर्थ ॥ यव कहत हैं जो ॥
कृष्णप्राणीमात्रके आनंददाता सो अपने स्वकीय
जे भक्तनके दुख कैसें सहेंगे ॥ सर्वथा न सहेंगे ॥ तातें
स्वभगवदीयकौं यह लक्षण है ॥ जो लौकिक वैदि
क दुकाम नासिद्ध होइ ॥ काहू वस्तुकी हानि होइ
तौं अपनौ ही दोष विचारनो ॥ ऐसें वैधी अनेक
ख मैं अपनो दोष विचारनो ॥ प्रभुतो भक्तहीवरन
मेरा दोष है ॥ तातें यह लौकिक भयो है ॥ या भांति जाने ॥२
श्लो० ॥ निर्दोषपूर्णगुणता हरी नित्यविराजते ॥
कदाचित्स्वप्रभो दोषान्नानेय सर्वथा हृदि ॥२१॥ या
कौ अर्थ ॥ सो आपु श्री आचार्यजी महाप्रभु बालबो
धमें कहे हैं ॥ निर्दोषपूर्णगुणता इत्यादिक वचन
नें यह निश्चय मनमें जानियें जो श्री कृष्ण निर्दोष
सदा हैं ॥ सकल गुणकरिकें पूर्ण है ॥ ऐसें श्री हरि दुख
हरता हैं ॥ सदा विराजमान हैं ॥ तातें कदापि कोई प्रका
र सो प्रभुकौ दोष हृदयमें सर्वथा नाही लावनो यह
सर्वोपरि सिद्धांत भक्तिमार्गमें है ॥२२॥ श्लो० ॥ केवाव
वराका यवराकाय उद्धवाय अपि प्रभो ॥ सुनवे तो वि
महरुशी लीलापश्चात् स्थितायपि ॥२३॥ याकौ अ
र्थ ॥ अब श्री हरिरायजी कहत हैं जो मैं अपनेकौ कहा
कहुं महारंक तुच्छ हौं ॥ उद्धवादिक भगवद्भक्त कीय
ह गति है ॥ जो अपने अपने प्रभुकौ अंतरध्यान सम
य सुने जिनकी लीला सुनी देखी अनुभव करी सो
उद्धव जैसे समय स्थिति रहे ॥ प्रभु बिना तो मैं कहा कहुं
२३॥ श्लो० ॥ कुंतीवदी हरौ भाग्यं करप भागवतोभ
वेत् ॥ सपुत्राण विमोकोत्र श्रीकृष्णविरहेण हि ॥२४
याकौ अर्थ ॥ कुंती बडी भक्त परम भगवत हैं ॥ जो श्रीकृ
ष्णजी के अंतरध्यान सुनतही श्रीकृष्ण विरह करिकें

अपनेमनमेंतत्कालमारछोडिदीयो।तातेंकुंतीमहा
भाग्यवांनभक्तहें।१८।श्लोक॥ अस्माकंतुप्रभुर्नित्य
मत्रैनाव्याहतोधुना॥विराजतेततोदुःखंनविधेयं
मनस्यपि।१९।याकोअर्थ॥अबश्रीहरिरायजीकहत
हैंजोहमारेप्रभुतोनित्यहीप्रतिलविराजमानहें॥
जेसेंलौकिकमेंआधुनीकजीवहैंयाहकारपतिपास
रहेंतैसेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुद्वाराश्रीप्रभुजीसोंया
हसंबंधभयो।सोप्रभुसदाघरमेंविराजमानहें।ताते
मनमेंदुखधारनसर्वथाहीनकरनेयहें।१९।श्लोक॥अ
वद्धिमिलीतेसर्वैरियंसिक्षाविचार्यतां॥ततःसंदेह
जातंयद्दूरस्थंतद्भविता।२०।याकोअर्थ॥अबश्रीह
रिरायजीआपुअपनेछोटेभाईश्रीगोपेश्वरजीसोंक
हतहें।जोयहमेंसिक्षापत्रनुमकोंलिखिपठाइहें।सो
ताकोंसगरेपुष्टिमार्गीयभगवदीयसोमिलिकेंवि
चारकरियों।समस्तवैष्णवनसोंमिलिकेंवासिक्षाकेभा
वविचारकरेतेमनकोचिंतारूपसकलसंदेहदूरिहो
इजाइगो सुखबुद्धिकोपोषकरोइगो॥श्लोक॥औरह
मारेतोसाधनहूसिद्धहूएकश्रीकृष्णःशरणंममःय
हगतिहें।सोयहश्रीवल्लभाचार्यजीअष्टाक्षरमहामंत्र
प्रगटकरिश्रीकृष्णहीकीशरणासिद्धकीरीहे।तातेंहम
तोएकश्रीकृष्णहीकोआश्रयहृदयमेंकरिकें।श्रीकृ
ष्णहीकीशरणमनक्रमवचनकरिकेंसबभांतियही
साधनसाध्यजानतहें।तातेंसंपतिअनेकसुखहूमेंश्री
कृष्णकीसरणहें।औरआपत्तदुखहूमेंएकश्रीकृष्ण
कीसरणकीरीहें।क्योंकेंहमारेंआचार्यचरणनप्र
गटेहेंयहमंत्रसोंश्रीगुसांईजीविचहमेंकरेहें।श्लो
क॥यदुक्तंतातचरणैःश्रीकृष्णःशरणंममः।ततस्तदेवा
स्तिनैश्चित्यमैहिकेपारलौकिके।

नी

सि.प.
१०८

अष्टाक्षरमंत्रही हमारे साधन साध्य है यह सिद्धांत भयो
॥३॥ इति श्रीहरिरायजीकृत सिद्धांत पत्र [illegible] सो ताकी टीका
श्रीगोपेश्वरजीकृत संपूर्ण ॥४॥ अब कृपा कहे जो चिंत
नादीक नेय है अथ लरी परम गति है सो कोटानको
टि साधन करो मगारे धर्म होइ औ श्रीवल्लभाचार्यजी
के चरणकमल के आश्रय होइ तिनको फल दान नहीं
सो फल दान आगे सिद्धा पत्र में निरूपण करत है
श्लोक ॥ श्रीवल्लभपदाम्भोजभजनोद्धरणादपि दया
परः करोति चिंतन जनाति जने हरिः ॥१॥ याको अर्थ ॥ या
पुन्य श्रीहरिरायजी श्रीमुखते कहत है जो वैष्णवको
श्रीवल्लभाचार्यजी के चरणारविंद को भजन आदर
पूर्वक करत है एक श्रीमदाचार्यजी के चरणकमल में
अनन्य भाव है जैसे सूरदासजी कहे हैं जो भरोसो दृढ
इन चरणन केरो श्रीवल्लभनखचंद्रछटा विनु सब
जग मांझ अंधेरो ॥१॥ श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के चर
णकमल के [illegible] सदा वैष्णव आसरे हैं तिनके ऊप
र हरिजो श्रीकृष्ण सदा दया करत हैं प्रसन्न होइ के कृ
पा करत है अपनो स्वरूपानंद को सदा दान करत है
१ श्लोक ॥ कृपाकटाक्षसंपातपल्लवानपरो हरिः तमेव
वेदान्तेषु लक्षणं तमेव च नः ॥२॥ याको अर्थ अब
श्रीहरिरायजी आप श्रीमुख सो कहत है जो जो वैष्णव
नके ऊपर आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु कृपा कटाक्ष
करत है सो आप कृपा करिकै अपनी अमृत दृष्टि सो
अवलोकन करत है तिनको पल्लव पात श्रीठाकुरजी क
रत है पद्मनाभदास साहि[illegible]लाधुरते सो श्रीठाकुर
जी आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु की कानि करिके पद्म
नाभदास के छोला भोग धरे आरोगते सो या भांति आप
श्रीमहाप्रभुजी कृपा कटाक्ष करिकैं सदा न करत है

सोउनवैष्णवननेललावृधिकोटिकोटिअपराधपरतहैं
सोतोऊश्रीवल्लभचंद्रसर्वअपराधक्षमाकरिकेअपवरूप
हीकरतहैं।१६।श्लोक।।यदीयहृदयेश्रीमदाचार्यचरण
द्वयं।तरुणसरणांशुधसनावृतिमतोनमः।।श्री।याकोअ
र्थ।।अवकहतहैंजोपुष्टिमार्गीयभगवदीयकेहृदय
मेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकेदोऊचरणकमलविरा
जतहैं।याभांतिश्रीमहाप्रभुकेमनवचनहृदयकरिकें
शरणहैं।तिनकेसताहिअपराधसोंअहोऊतिनहू
कोप्रभुनाकरिप्रतिबंधदूरिकरतहैं।अंगीकार
करतहैं।१७।श्लोक।।यदंगुलीनखालेन्दुचंद्रसैन्य
समाहृयि।तापहरतिभक्तानांतंदानंदप्रदंभुवं।।
याकोअर्थ।अवश्रीहरिरायजीकहतहैंजोश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभुकेचरणकमलकौहैसोअंगुलीपरम
सुंदरहैं।तिनमेंहसनखचंद्र२०हैंय एसेसोएकन
खचंद्रकीछटाआगेकोटिचंद्रमाकीकिरणलज्जापावत
हैं।सोएसेंश्रीमहाप्रभुजीकेनखचंद्रजोवैष्णवहृदय
मेंधारनकीयोहै।सोतिनभक्तनकेहृदयकेत्रिविधिता
परिहरतहैं।आधिदैविकआध्यात्मिकआधिभौतिक।।
तथाकायकवाचकमानसिक।।अन्यजन्मकेदोषरूप
गौहिसमस्तनमेंप्रतिबंधरूपतापसगरेदूरिहोतहैं
एसेश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकेचरणकमलहैं।सोदा
नेयानंदरसानंदसेवनकोकरतहैं।१८।श्लोक।।स्वल्पयस्तु
गतेलोकेवेदेचपरिकीर्तितः।फलंतेनविनाचार्यच
रणाम्बुजद्वयंममः।।याकोअर्थ।।अवश्रीहरिरायजीआ
पकहतहैं।जोवेदमेंहैंकीर्तिजाकीएसेजोवस्तुस्व
पदार्थसंपत्लोकजोब्रह्मलोकसगरेंज्ञानमार्गी
यमर्यादामार्गीयकीसर्वोपरफलहैं।सोजोक
जोफलहमारेपुष्टिमार्गमेंबहुत

षि.प.
१०९

चतुर्थमोक्ष तांई सब तुच्छ हैं। एसो यह पुष्टिमार्ग है सो जा
में श्रीकृष्णाधरसुधापान यही परमफल है सो साधन
करिकें सिद्धि नाहीं है। तातें मेरे तो परमफलरूप आप
श्रीवल्लभाचार्यजी के दृढ़ ये चरणांबुज यही फल
है। इन ही करि कृष्णाधरामृत सिद्धि है। पाछें [illegible] अन्य
वेदविहित फल जे अन्य अतिधूम [illegible] यतो वह मुख चिंत
नायते [illegible] या [illegible] वेदविहित अने
क प्रकार के कर्म हैं वेद में ज्ञानमार्ग योगमार्ग कर्ममा
र्ग उपासनामार्ग अने व्रत संयम नेम इत्यादि अ
नेक साधन हैं सो काहेतें जो ताके लीएं तें यह पुष्टि
मार्ग को फल जान्यो नाहीं जात है निश्चय काहेतें जो
पुष्टिमार्ग तो केवल व्रजभक्तन के भावात्मक सर्वोपर
है। सो श्रीमहाप्रभुजी को प्राकट्य साध्य है साधनतें सि
द्ध नाहीं है। तेसें वह मुखजी वके चि [illegible] एसें
नीहरिजो भगवान की कथा [illegible] श्री
भगवान की कथा वह मुख को न सुहाइ और भगवद्ध
र्मसेवादि वह मुख के चित्त में न सुहाइ है। [illegible] ज्ञान
तु भक्ति हेतु [illegible] फलरूपाणी। यतो जीवस्य ह्या
सत्व हेतु भेद निवर्त्तिका ७ या [illegible] शास्त्र में श्रेस
[illegible] ज्ञान है सो भक्ति हेतु है सो तातें भक्ति को
ज्ञान भयो है। ताकें भक्ति होइ सो यह पुष्टिमार्ग कुं सि
द्ध कैसे फल नाहीं है। यह मर्यादा मार्गीय भक्ति है
सो तामें श्रेय धर्म को मर्मो सफल है। सो तामें प्रथम ज्ञा
न ही मुख्य है। ता पाछें मर्यादा भक्ति होय सो पुष्टिमार्ग
के फल में तो ज्ञान और मर्यादा मार्गीय भक्ति दोऊ
विरोधी हैं सो काहेतें जो यह ज्ञान में दासत्व नाहीं
रहत है। और पुष्टिमार्ग में तो जीव को दासत्व मुख्य
है प्रभु स्वामी है या भांति श्री भगवद्सेवा है ताभी

वकोतिवर्तेकत्तौ ज्ञानहैं।तहां स्वामीसेवक यहभाव
नाहीहैं।श्लोक।मर्यादाभक्तिरप्येषा नावर्देवफल
त्मिका यावन्नयज्जतेपुष्टिः भक्तिसकलसङ्गाद।
याकोअर्थ ऊहमर्यादाभक्तिहै उहअपनीआत्मा
कोंदेवश्रहंब्रह्मसमानतहैं।जोमेंहीब्रह्महों।ताकरि
केप्रभुसोंसेवकभावछूटिजातहै।यहज्ञाननतेयहज
ताएजोपुष्टिभक्तिसर्वोपरसिरोमनिहै।तानतथा
मर्यादामार्गकीभक्तिकेमहमाथेपरविराजतहैं।
तातेपुष्टिभक्तिसर्वोपरजाननी।श्लोक।पुष्टिभक्ति
हरेरास्यंतेत्वसमासुभव:स्वयं न्यावसज्जता:संत:
फलरूपाभवंतिहि।।याको अर्थ।यहपुष्टिभक्तिहै सो
श्रीठाकुरजीरासादिलीलाकरिभक्तनकोरानहरीरे
रसलीलाश्रीठाकुरजीकरिवेकोंवे नवजनभक्तनके
लीयेकरीहैं।एसेश्रीलक्ष्मसोश्रीवल्लभाचार्यजीयह
कलियुगमेंपुष्टिभक्तिदै।सोतिनकलीपरगटसो
श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीहै स्वयंभगवान्श्रीकृष्णचं
द्रजीहैं।सोप्रगटहैं।सोतातेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभु
वेचरणकमलकोदृढआश्रितहैं।एसीसतितेअंत
रंगहैं तिनहीकोभजनसर्वात्मभावसोंकीयोनव
रासलीलामेंफलप्राप्तिभयो।सोतेहीयहपुष्टिमार्ग
मेंजोश्रीमहाप्रभुजीकेआश्रितहै।तिनहीभगवदी
नकोफलसिद्धिहै।।श्लोक।।तदुत्तरं नकंतव्यंमनु
ष्येपरिकिंसु।।तथास्याकफलंप्राप्तेनभोगाद्यधिका
रिति।।१०।।याकोअर्थ।।तातेउत्तरजोपुष्टिमार्गतभक्ति
फलज्ञानकर्मवेदमर्यादाभक्तिइत्यादिविरोधधर्म।
तिनकैनाहीकर्त्तव्यहै।।येरसनकरिकेभक्तप्राणीको

मारगीयधर्मसेवादियहलौकिकफलात्मकनहीकरैजो
मेंसुखपाऊंकुटंबीदेहसेवंधीसुखीहोइ।। पारलौकवैदि
क कामनार्थकरैं न भोगादिविचार्यहलौकिकवैदि
ककामनासर्वहोउवेंकेंनौ।। श्लोकः।। नस्मात्फल
विनाचार्यपदाम्भोजद्वयंसदा हृदिधार्यनैवकार्योसं
शयापितमानसं।।११।। याकोअर्थ।। यहपुष्टिमारगीय
भगवद्धर्मसेवादिकरिपहआपनेश्रीवल्लभाचा
र्यजीकेदोऊचरणकमलकोआपनेहृदयमेंधारनक
रिअहर्निसचरणकमलकोध्यानमनमेंराखैया
ध्यानहसरोकार्यपुष्टिमारगीयकोनाहीकरनयु
हैमनमेंसंशयअविश्वासनकरैं।। सोकाहेतेंजोगी
तामेंकहेहैं।। नाशयस्यात्मा विनश्यति।। संशयतेफल
कोनाशहोतहै।। तातेंसंशयनकरैं।।१२।। श्लोकः।। अत्रसं
शयमापन्नासर्वथाघासुरामता।। देवाअपिपुरानेपि
हरिणापतितादुरात्।।१२।। याकोअर्थ।। श्रीवल्लभाचार्य
जीकेस्वरूपमेंसंशयहोय।। तथायहपुष्टिमार्गमेंसंश
यहोय।। ताकोसर्वथाआसुरीहीजानिये।। देवीजीवहो
इअथवाआसुरकोईहोय।। ताकोंअविश्वासश्रीआ
चार्यजीमहाप्रभूमेंहोय।। सोताकोंश्रीठाकुरजीआप
नेहाथसंसारमेंडारिदेइ।। सोताकोंअंगीकारकवहूंन
करें।। सोतयताहीतेंविवेकधैर्याश्रयग्रंथमेंश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभूकहेहैं।। जोअविश्वासोनकर्तव्यःसर्वथा
बाधकस्तुसः।। तातेंअविश्वासमहाबाधकहै।।१२।। श्लो
कः।। अहोमदचित्रमदमवतीर्णोहरोभुवि।। विद्युमा
नेभगवतोविवृतोअपिसर्वथा।।१३।। याकोअर्थ।। अ
वश्रीहरिरायजीआपुश्रीमुखतेंकहतहैंजोमेरेमत
मेंवडतखेदहोतहै।। औरवडोआश्चर्यहै।। जोभूमिवि
षेंश्रीवल्लभाचार्यजीश्रीहरिजोआपहीहरीयव

तारलीयें सोतिनकों कुलनिंकलंक भगवद्रूपश्रवदीवज्ञ
भकुलभूमिपरविराजमानहैं।औरश्रीभागवतहूविद्यमा
नहै।श्रीभागवतकीटीकानिबंधश्रीसुबोधनीजीहूविरा
जमानहैं।सर्वथानऊंयहजीवमार्गमेंनाहीप्रवर्ततहोतहैं
यहमोकोंबडोआश्चर्यहै।१श्लोक।।सत्पासुविसुबो
धिन्यांसत्सुश्चचित्स्वविना।ग्रंथेसुविद्यमानेसुसर्वार्थ
ज्ञापकेष्वपि।।४।।याकोग्रंथ।अवश्रीहरिरायजीकहत
हैंजोभावार्थश्रीसुबोधनीजीनिबंधभूमिपरविराज
तहैंऔरएकएकहूसत्यहैं।भागवदर्थहूसत्यहैं।तथा
श्रीसुबोधनीजीनिबंधकेवेत्ताएसेसत्पुरुषहूविराज
तहैं।औरछहेवडेश्रीगुसांईजीकेश्रीआचार्यजीम
हाप्रभुकेपुष्टिमार्गीयग्रंथहूविद्यमानहैं।सोएग्रंथ
कैसेहैंसर्वपुष्टिमार्गकेभावतिनकेज्ञापकहैं इनग्रंथ
नद्वारासमार्गरीतिपुष्टिमार्गीयनकूंजानीजातहै।या
भांतिसमार्गरीतिवस्तुविद्यमानहैं।५।श्लोक।।तथा
पिनप्रवर्तन्तेयथाभक्तियथेजनाः।प्रायःश्चपेवहरिणा
कारणत्वेनरक्षिताः।।५।।याकोग्रंथ अवश्रीहरिरायजी
आपुश्रीमुखतेंकहतहैंजोऊपरकहेहैंसोसमार्गपदा
र्थभूमिपरविराजमानहैंतऊजीवपरपुष्टिभक्तिमार्ग
मेंनाहीप्रवर्ततहोतहैं।सोकाहेतेंसो।एकश्रीहरिकीकृपा
कोकारनहै।सगरेपदार्थहैं औरश्रीहरिकीकृपाहो
इतबहीजान्योजाय श्रीहरिकीकृपाहोइतबहीजान्यो
जाइ।श्रीहरिकृपाविनाजीवभक्तिमार्गमेंनाहीप्रवर्तहो
तहैं।तातेंयहपुष्टिमार्गतोकेवलप्रमेयमार्गहै।सोश्री
हरिकीकृपाप्रमेयवलविनायहमार्गमेंकैसेंआवें।।५।।
श्लोक।।मूर्छितेंद्रियवत नरू
कृपाविनासर्वसाधनां । या ।।
अवकहतहैंजोतातेंश्री

सिद्धि होइ ताको दृष्टांत कहत हैं जो जैसे आनविनास गारी इन्द्री मर्छित होइ तिनते कछुन कार्य होइ न व प्राण आवैं तब सगरी इन्द्री चैतन्य होइ आपने आपने कार्य में तत्पर होत हैं ताई श्रीहरि जी की हू पाप स्थापनी ना ही हैं तब परम तत्पर होत हैं ताई पुष्टिमार्गीय साधन इन्द्री स्थाप नी ते कछुन होइ जब श्री हरि जी कृपा करें तब स्वीय पुष्टि भक्ति में आइ सेवादिक करें भाव सिद्ध होइ निश्चय ॥ २१ ॥

इति श्री हरिराइजी कृत सिद्धांत पत्र विवरण टीका श्री ... सम्पूर्ण ॥ २५ ॥ तब रूप कहे हैं जो पुष्टिमार्गीय सगरो पदारथ प्रगट है परंतु श्री हरि जी की कृपा विना नाहीं जीव स्वबल होत नहें हैं ताको कहें हैं जो श्री हरि सहूपा न करत हैं सो ताते श्री हरिराइजी आगें सिद्धांत पत्र में कहत हैं जो श्री हरि नो परम कृपाल यामांति कृपा करत हैं सो ... स्वकीय या नाम है ऐहिक अथवा पारलौकिक अकरा तब रूप कहे तो प्रभु ...न संदाय ॥ १ ॥ या को ... श्री वक हत हैं जो श्री हरि जैसे हैं परम कृपाल हैं अपने स्वकीय निज भक्तन को यह लोक परलोक होत सिद्ध करत हैं यह लोक में विषयादि मनि कोई जानो यह लोक में स्त्री पुत्र धन है सो सिद्ध करत हैं जा में भावद धर्म सेवादि में विरोध न करें या भांति लौकिक सिद्ध करत हैं और अलौकिक में लीला रस स्वरूपानंद को दान सोऊ सिद्ध करत हैं सो निर्विधि ना नावरती में श्री आचार्य जी महाप्रभु कहें हैं भक्त सर्व दुःख निवारकायत मः भक्त के लौकिक अलौकिक सर्व दुःख दूरि करिके सर्वथा सब कार्य सिद्ध करेंगे ताते जीवन को कछु चिंता नाहीं करनी हैं ॥ १ ॥ तथा पि कहें जीव प्रयत्न निज दोषतः अज्ञानात करणा ... नाहीं लम ते ताकूं ... स्वतः ॥ या ... या भांति श्री हरि लौकिक अलौकिक सर्व कार्य सिद्ध करत हैं सो तऊ

जीव अपने मनमें अनेक प्रकारके साधनको उपाय क
रत हैं जीव बुद्धि अज्ञानते अनेक प्रयत्न करत हैं औ
से अज्ञानी जीवन पर श्रीकृष्ण करुनानिधि हैं सो सग
रो अपराध क्षमा करत हैं अपनी ओरते सो अंतःकर
ण में श्री आचार्यजी महाप्रभुन कहे हैं प्रभु के से हैं सत्य
संकल्पतो विभुर्नान्यथा तु करिष्यति। श्रीकृष्ण स
त्य संकल्प हैं श्री आचार्यजी द्वारा अंगीकार कीये
हैं सो कृष्ण जीव अज्ञान करि भक्तन हे प्रभु के से भ
क्ते [illegible] श्लोक। अविरुद्धमकुरुते निरुद्ध्वा स्वयम
पि। यासे पुष्टलोवालेषु पितेव कुरुते हितं ॥ अथा
को अर्थ। यह पुष्टिमार्ग में अविरुद्ध भगवत्सेवादि श्रीह
रिको आश्रय सो तो नाहीं करत हैं और अनेक साधन
प्रयत्न जो पुष्टिमार्गते विरुद्ध धर्म हैं ता ही के करण में तत्प
र हैं। ऐसो अज्ञानी जीव है उलटो चलत हैं। ऐसो हू दास
पर श्री आचार्यजी की वानिते श्रीकृष्ण केसी रक्षा कर
त हैं सो पिता बालक को हित ही करे बालक अज्ञानते
कछु दोष करे परंतु पिता दोष को नाहीं विचारत नहि
नहीं करत हैं सो संन्यास निर्णय में श्री आचार्यजी महा
प्रभुन कहे हैं हरिस्मरण सतो निकर्तुं बाधां वृनोपरां अ
न्यथा मानेरोवालान्यथवा: पृथुपक्ष चिन्त। २ जैसे मा
ता पुत्र को वारवार अपने तनसों पोषन करत हैं तैसें
ही जो जीव श्री आचार्यजी महाप्रभु द्वारा सरण आ
ये हैं तिनको प्रभु बाधा नाहीं करत हैं जा प्रकार भांति
वे दासको कल्याण होइ सोई प्रभु करत हैं ऐसे दया
ल श्रीकृष्ण हैं। श्लोक [illegible] न जानाति निजाज्ञानात्
न्मृति सह नष्ट न। [illegible] सो धराशि जीवोयं [illegible]
परिधि [illegible] या भांति प्रभु कृपा करत
जीव अपने अज्ञानते नाहीं जान

से.प. ११२

तद्धि है अपकार को नाही जानत हो ॥ ऐसे दोष की रासि दोष
भर्यो जीव है ॥ और हरि जो श्रीकृष्ण है सो गुननिधि है जी
व दोषनिधि है भगवान गुणनिधि है ॥ [illegible] ॥ कथम
न्योन्यसंबंधः स्यात् मत्तिजसो स्यि ॥ तथापि दोषराशी
ना दोष है ते निवेदनात् ॥ पापा [illegible] उपर कहे ऐसे
श्रीकृष्ण सो जीव को परस्पर संबंध कैसे होइ जैसे तमजो
अंधियारो है ताको संबंध धर्य सो कैसे होइ जहां ते जहां
इतहां चंधतनमकेसें आवें तैसे ही यह जीव को तप्रका
श्रीकृष्ण सो मिले सो कहत है जो यो रत्तो उपाइ कोई
नाही है जो सर्व भगवान में निवेदन करे तब ही सर्व दो
ष दूरि होइ सो तो रासी वात में प्रसिद्ध है ॥ श्री आचार्यजी
को चिंता भई तब श्रीकृष्ण ने यही आग्या करी जो समर्पन
करावो निवेदन ते सगरे दोष जीव के दूरि होइंगे तातें जी
व को दोष निवेदन ते निश्चय दूरि भये ॥ पालो [illegible] ह्याचा
र्यद्वार का तु सा घो गपता हरियो जे ने ॥ अतः स्वाचार्य चर
णौ स्थाप्यो हृदि निरंतरं ॥ [illegible] ॥ श्री हरिराइजी
कहत हैं जो ऐसो दोषरूप जीव को जब अपने श्रीवल्ल
भाचार्यजी द्वारा निवेदन होइ तब सगरे दोष नास है
इतव श्री कृष्ण की सेवा योग्य होइ ॥ और उपाइ कोई
नाही ॥ ऐसे अपने श्रीवल्लभाचार्यजी के चरणकमल
अपने हृदय में स्थापन करनो यही योग्य है तातें पुष्टि
मारगीय वैष्णव को परम धर्म यही है जो श्री आचार्यजी
के चरण हृदय में अहर्निस धारने करें याही तें सर्व फल
सिद्ध होइगो ॥ [illegible] ॥ यथा बालक रक्षायै डाकिनीतो
भवति हि ॥ माता तथैव भेनवं दुःसंगाद्बालकरक्षे ॥ ७ ॥
या [illegible] ॥ जैसे बालक की रक्षा माता करे डाकिनी
बालक को घात करत है सो बालक की रक्षा ये डाकिनि
ते माता भयभीत होत है बालक को छिपाय राखे ते

सेंहीपुष्टिमारगीयभगवदीयदुःसंगरूपडाकिनीसेंड
अपनेभगवद्भावरूपबालककीरक्षाथेडाकिनीरूप
संगत्यागकरें तातेंवैस्नवकोंदुःसंगवोहोनहीबाध
हैं तातेंसर्वभावजाय यहजानिकें दुःसंगतेंअहं
सडरपतहैं तोभावकीवृद्धहोय ॥७॥ श्लोक ॥ समस्ते
निजस्नेहगोपायाति तथासृतिं नयेवभगवद्भावगो
न त्रियते मने ॥८॥ याको अर्थ ॥ अवश्रीहरिरायजीपु
ष्टिमारगीयवैस्नवसोंकहतहैं जो आपनेहृदयमें
यश्रभाचार्यजीविचराणकमलनमेंस्नेहहै सोसबके
आगेंगोप्यराखनो काहूकेआगेंकहनोनाहीं जैसेंस
तीपतिव्रतास्त्रीहोइ सोअपनेहृदयकोअभिप्रायअप
नेपतिकेआगेंकहे औरकाहूकेआगेंसर्वथाहीनकहे
तैसेंहीपुष्टिमारगीयभगवदीयभक्तअपनोभावसबन
केआगेंगोप्यराखे याभांतिजतनजोरासरहेंतोयाकाल
मेंधमरहेंनाहींतोबाधकहीहोय ॥८॥ श्लोक ॥ हृतिवा
पसमगीयथावद्धयतेरातिखेरिणी भक्तसखाभाव
रहतिथानयेन ॥ ८॥ याको अर्थ अवश्रीहरिरायजीव
र्नतहैं जैसेंहृतविद्याजापयनेवचवनतस्त्रीकोका
मवढें हृतविसंगतेंरतिवढे विभचारिस्त्रीकों तैसेंही
वैस्नवकोंभगवद्भक्तताहुसीमिलेतोभगवानमेंभाव
वढेंयहप्रसिद्धहीभावहेंकाहेतेंहृतीजनेकहाम्पव
हालकेममवचनविषयसंवंधीवारेजोकामवढेंतैसें
हीभगवदीयभगवानकीकथाएसीभावांमनानेंजाक
हृदयमेंभगवद्भावप्रगटहोइआवें तातेंपुष्टिमारगी
यभगवदीयहोइ तिनकोसंगआवस्यककरनों श्री
श्लोक ॥ असत्येसर्वेरावितें नयहखिदोप
भवनाहेतुचेतःस्याप्यं प्र
जैसेंविभचारिस्त्रीअसत्य

.प. थानकों सदा ग्रहमें तें मनन चाहही रहें अनेक परंतु
१३ हमपास मन भटके ते सेंही जा भगवदीय के चित्त श्री
ठाकुरजी के स्वरूप में लग्यो है एक श्री हरि के चरणा
रविंद के आश्रित न तो चित्त स्थित है तिन को मन अ
पने ग्रहमें हू संबंधी लौकिक वैदिक कार्य में न ल
गे तातें श्री प्रभु को आश्रय ही सो मुख्य है निश्चय
१४ इति श्री हरिराइजी कृत सिक्षापत्र षष्ठ विसोतार्थौ
टीका श्री गोपेश्वरजी कृत भाषा में संपूर्ण ६ अब ऊपर क
हे जो भक्त प्रभु के आश्रय हैं तिन को चित्त लौकिक में
नाही लगत है न तो फल में अनेक बाधक हैं तिन
को तजियें तब फल सिद्ध होइ सो कहा बाधक हैं कैसे
तजियें सो आगे निरूपण करत हैं श्लोक ॥ निजाचार्य
पदांभोजयुगलाश्रयणं सदा ॥ निधेयं तेन निखिलफ
लभावविनाशयं ॥ १ ॥ याकौ अर्थ ॥ अब श्री हरिराइजी क
हत हैं जो पुष्टिमारगीय वैष्णव या भांति सो रहे सो तिन
को फल निश्चय ही सिद्ध होइगो अपने निजाचार्य श्री
वल्लभाचार्यजी के दोऊ चरणकमल को आश्रय सदा
है सो ताके सब को निखिल विनाशमही सिद्ध होइ
सो विना साधन ही श्री प्रभुजी की कृपा तें सकल फल
सिद्ध होइगो ॥ श्लोक ॥ धनं ग्रहं ग्रहासक्तिः प्रतिष्ठा लो
कवैदिके ॥ कामादिनिष्ठामनसः स्वर्गादिफलकांक्ष
णं ॥ २ ॥ याको अर्थ ॥ अब श्री हरिराइजी आपु श्रीमुख
तें कहत हैं जो पुष्टिमार्ग के फल में य च्यालीस दोष
हैं सो ये बाधक हैं और दोष तो यों अनेक हैं परंतु
ये च्यालीस दोष मुख्य हैं सो तिन को तजियें तब फ
ल सिद्ध होइ सो कहत हैं प्रथम धन तें यह महा दो
ष है क्यों कि तें यह जीव बावरो होइ जात है काहू
गिनत नाहीं तातें धन को निवेदन प्रभु में करि भग

भगवद्सेवामेंलगावैं।प्रभुजामेंअपनेकोदासजाने
।यहसोयहतेजोयहमेरोसेवकहैमेंवनायोहैमेरोवि
ताकोहै।यहममतावाधकहै।सोछोडे।२।तीसरोयह
सतिहै।श्रेष्टप्रहरग्रहास्थित,मेंकायेमेंआसतिहैआ
जुयहकरनोहै यहवनावनोहै।यहआसतिवाधकहै
श्वोयेलोभवेस्कीप्रतिष्टातेजोयहजोकिलमेंजोकछुध
टतीकायेकरेगोतोप्रतिष्टजाइगी।तातेंफरवानोपजग
वेगोतोप्रतिष्टाजाइगी।मेंस्वरलगाउगो।तामेंमेरीवडाई
हइगी।औरवैद्दिकआडुयाइयहहोमयज्ञइत्यादि
क मैंसवतेवहुतकरतहूं।यहप्रतिष्टावाधकहै।४।क
मोद्विमनेष्टा मख्यातपनवगतेनेम इत्यादि भगवद
मेयामेंनाहीवाधकहै।५।मनमेंस्वर्गादिककेफलकी
कालणाजोस्वर्गलोकमेंजायनानाप्रकारकेभोग
विलासकरूं।यहभक्तिमार्गमेंवाधकहै।६।अवऔ
रहुकहतहैं।स्लोक।।लौकिकेपरमांप्रीतिर्विरुद्धविष
येतथा।च्यमिरुद्धयथासक्तिविशये भोगभोजने।अ
पाके।श्लो०।लौकिकजोदेहसंबंधीस्त्रीपुत्रादिकमेंपर
मप्रीतिसोभक्तिमेंवाधकहै।७।भक्तिनेविरुद्धजोलौकि
कविषयताकीइच्छनजोचाहना।सोऊफलमेंवाधक
है।लौकिकविषयनेविरुद्धविषयासक्तिसोऊवाध
कहै।८।आछोआछोखानोविषयभोगार्थभगवत्से
वायमहाप्रसादवेसवलेतहैं।सोभावनाही विषया
थेंआछोभोजनघृतादि।सोऊवाधकहै।९।श्लोकः देहा
दिभिमानवुद्धजोविद्याविहितोपिच।भगव
नाभावासदेनें देहपोषणंध्यायकेंअ
मानजोमनमदनेकाहूकोनेगि
रहैवटीनित्यसवारोअपनीदे
हलोयहवाधकहै।।१ मनसे

मेहो ब्राह्मण क्षत्री सब मोते नीचे हैं मो समान कोई ना
ही यह भांति मैं बाधक है १२ विद्यामद जो मैं बहुत पढ्यो
हूं षटसास्त्र को ज्ञान मोकों है और तो सब मूर्ख हैं यह वि
द्यामद बाधक है १३ अन्य सिद्धि नाई होन मदने १ भगवद
नाहीं करत लौकिक वैदिक अनेक कार्य में दिन बिता
वत है भगवत्सेवा में मन नाही है यह पुष्टिभक्ति में
बाधक है जैसे ब्राह्मण गायत्री न जपे तो ब्राह्मणपनो
जाय तैसे ई वैष्णव दास के भगवत्सेवा न करे तो पुष्टि
भक्ति में बाधक है १४ देह को पोषन रंच हू सीत उष्ण स
हि सके अनेक औषध तेषान पान ते देह की रक्षा में र
हे देह की रक्षा तो भगवत्सेवार्थ करी है सो नाही वि
चलने विकार्य देहपोषे सो बाधक है १५ अव
और ह बहुत है श्लो० असत्संगास्सदा दुष्टः सदानु
[illegible] भक्तानां निवेदनानुसंधानत्यागः शरन विस्म
तिपयः [illegible] असत्संग महादुष्ट को वह सुखना
हुष्ट होइ सो उ बाधक है १६ और श्रीकृष्ण महा गुवि
षकसाद छाडिके असमर्पित खाय यह महाबाधक है
सो पद्मपुरान में कहे हैं श्लो० अनिवेद्य तु यो भुंक्ते ह
स्ये परमात्मने पचंति पितरस्तस्य नरके शाश्वतीः स
मा १ अवैष्णवानो मन्ने [illegible] सो भवेत् त
था वृथः अनर्पितो तथा वैष्णो मासमद्ध से भवेत् २
कूर्मपुराणे अनर्पयित्वा गोविंदे यो भुंक्ते धर्मवर्जि
तः स्वान विष्ठा सम चान्नं निरंतर सुरया समं ३ इति
वचनात् असमर्पित ते बुद्धि भ्रष्ट होइ सर्व धर्म को
नास होइ यातें महा बाधक है १७ निवेदन कीयो है
ताको अनुसंधान कबहू नाहीं करत है जो मैं समर्पन
कीयो है पंचाक्षर को कहा अभिप्राय है या भांति नि
वेदन को अनुसंधान नाहीं करत यह बाधक है श्री

कृष्णजीकीशरणस्मृतिहै।अष्टाक्षरमहामंत्रश्रीकृष्णश
रणंमम:यहस्मरणकीविस्मृतिबाधकहै२२।श्लोक।
देवांतराश्रयस्तस्य प्रार्थनापिफलार्थिनः।भगवच्चित
रहिताव्यावृत्तिरपिलौकिकी॥१॥याकौअर्थ।औरदेव
कोआश्रययहमहाबाधकहै।मालानशरणपुरुषोत्त
मश्रीकृष्णकोआश्रयछोडिअन्यदेवकोआश्रयक
रैतौयहपुष्टिमार्गकोफलनाशीहैसिद्धांतस्मृति
मेंकहेहैं।हारितस्मृतौ:नान्यदेवंनमस्कुर्यान्नान्यदेव
निरीक्षयेत्।नान्यप्रसादंभुंजीतनान्यदायतनंव्रजेत्
॥१॥याभांतिअनन्यरहेतौफलसिद्धिहोइश्रीगुसांई
जीकहेहैं।श्लोक।भगवत्पादपद्मपरागयुक्तान
हियुकेनरमरणपितरां।इतराश्रयणंगजराज
गतौभवहिरास्सभमथुरीवके।१।अन्यसंबंधगंधो
पिकंधरासंबंधबाधनेऽशक्तवात्।याभांतिअन्यदे
वाश्रिअन्याश्रयबाधकहै।२।अन्यदेवरुद्रब्र
ह्मादिशिवादिगणेशसूर्यदेव।सोफलकीप्रार्थना
यहबाधकहै।श्रीकृष्णसर्वसामर्थ्ययुक्ततिनकोंछोडि
अन्यदेवसदापराधीनतिनसोंफलकीला।यहपुष्टि
मार्गबाधकहै।२।भगवानकेचरणारविंदनेचित्तर
हित।लौकिकवैदिककार्यमनमेंअसंभावनाविपरी
तिभावनामिथ्याभानयहपुष्टिमार्गकेफलमेंबाध
कहै।२३।अबयहलौकिकआवृत्तिकरिलौकिका
वेशहोइमानअपेक्षयहलौकिककार्यबाधक
है।२४।अबकोआरहेकहतहें।श्लोक॥गुरुद्रोहस्तदी
येभ्यस्तस्याधिक्यविभावना।स्वस्यान्यदेवसामर्थ्य
सिद्धियाणांवपोषणं।१।याकौअर्थ।गुरुद्रोह करे
गुरुऐप्रसन्नहोइतौयहबाधकप्रभुअप्रसन्न
तौगुरुरक्षाकरैगुरुप्रसन्नहोइतौरक्षाकरि

सामर्थ्य नांही ॥ ४ ॥ और पुष्टिमार्गीय भगवदीय कों
अपने तें न्यून जानें । अपने कों अधिक भगवदीय
कों जानें । या भांति मन में भावना करें यह बाधक हैं
२५ देह में अत्यंत सामर्थ्य सो काहू को गिनें नाहीं ॥ ऐ
से प्रकार होय तथा बडो विषय होय यह बाधक है २६
अपने इंद्रियन पोषन में लग रहे सो इंद्रिय को विष
य ही भोगाइ प्रिय है तातें इंद्रीयन पोषणतें विषय या
वेस होवे है २७ अब और हू कहत है श्लोक ॥ गृहेष्वभि
रतिर्भार्यापुत्राप्तिश्च मनो गतिः ॥ लोकानावरहितोऽद
[illegible] तन से स्थिति ॥ याको अर्थ ॥ गृहादिक लौकि
क कार्य की रति अरु गृहादिक में प्रीति २८ स्त्री
पुत्र में मन की प्रीति देह संबंधी स्त्री पुत्रादि में मन
इनके दुःखतें दुःखी होइ इनके सुखतें सुखी होइ यह
पुष्टिफल में बाधक २९ श्री कृष्ण के अनुभव बिना दे
व श्री गोवर्द्धननाथजी तथा नातो मंदिर तथा कुंभनदा
के मंदिर तथा पुष्टिमार्गीय नाइसीके देह राज सेवा त
था व्रज इनको भगवद्भक्त को अनुभव है अरु महात
व भगवद्भक्तो बिना जीवको अनुभव कछु न होइ ३०
अब और हू कहत हैं श्लोक ॥ दृष्टिश्चोक्ता लौकिका
न स्वभावतो न तथा स्वातंत्र्य भावने स्वयं जीवत्व
भाव इह [illegible] या को अर्थ ॥ यह नौ लौकिक दृष्टि सो
कहे देह संबंधी कुटंब अरु अनेक अलौकिक अच्छी
होइ तो सुख पावै दुःख होइ बुरी होइ नहिं होइ तो निर्मोह
होइ तो दुःख पावै शोक होइ सो यह संसार रूपी हे समे दी
इ फल है कवहू सुख कवहू दुःख याही में भयरहे सो
फल में बाधक है ३१ द्रव्यादिक लाभ में लोभ होइ जो
इतनो नानो द्रव्य भयो और होइ तो अच्छो कुटंब बढे तो
अच्छो द्रव्यादि लोभ पुष्टिमार्ग में बाधक है ३२

अपनेकोखतेंऐसीभावनामनमेंराखैहे।सपनोभलें
यह बाधकहे।१३ जीवकोस्वभावदुष्टनाहीकीभावना
भाविवेकेसा विनादुष्टस्वभावसबकोबुरोचाहेयह
बाधकहे।१४ स्लोक॥ अधिकार। पापरतिपक्षपाती
दुरात्मनः। इत्यक्रस्ताहीनजनोपहीनमापुनः।१०
याकोअर्थ अधिकारकाहूकोरहेइनातेंअनेकजीव
कोभलोबुरोकरनोपडे सोबाधकहे।ऐसीआचा
र्यजीमहाप्रभुसुबोधनीनिबंधमेंकहेहैंजोनाराय
ननेऐसासोंभाग्यवंतकहे।याऐसाकोअनुभव
नभयोंकाहेतेंरामृथस्विकेअधिकारीहैंतातेंअ
लानासुरसोंकहीनारदकेपूर्वसगरेपिरनोहे।एका
ग्रहमननाही।तातेंवृत्रासुरसोंकहीसोव्यासजीविद
पुराणकेअधिकारीहैंतातेंइनकोंअनुभवनभयोंना
तेंव्यासजीशुकदेवजीसोंकहेहे।सोशुकदेवजीकाहूवा
तथेअधिकारीनाही।तातेंअनुभवभयो।तातेंअधि
कारीकोफलमेंबाधकहे।१५ जोजीवकोमनपापर
तिहैं।ऐसोपापीजीवपरीलानाही।औरखोटेमनुष्य
चौरादिकदुष्टक्रियाकरेताकोपक्षपातकरेंसाचे
कोमूठाकरे।जेठकोसाचोकरेताकोफलमेंबाधक
हे।१७ अहत्यतेकूरहोइकाहूकोभलोनविचारेंमहाव
नटक्षत्रारेंसोबाधकहे।१८ पाहीनजनजेकोईहेंया
केमरणहोइतिनकोंअपलाकरेंयाकोत्यागकरे।
हपुष्टिभक्तिमेंबाधकहैं।१९।यारस्तमानहोइवि
नकारनक्रोधहोइभ्रकुटीचढीरहे।सहनननहोइय
पुष्टिमार्गमेंबाधकहे।१४ स्लोक॥ एतेचान्येचबो
अरोषाविस्मारकोहरिःसावधानीभूयसेहक्ष

कोफलमेंबाधकहे३६॥

जिनमें होइ तिनकौ हरि निजानि जाय यह जीव हरि
कों न जाने तातें श्रीहरिराइजी कहत हैं समस्त पुष्टि
मार्गीय सो घनेजो सगरे वैष्णव सावधान रहियो
यह दोष ८ रूपन राहये अवकूप है सो घरूपराग कहे
नाकी श्रोषधी कहत हैं काहेतें यह चालीस दोष प्र
बल हैं तातें या भांति जो जीव रहेगो तिनको यह दोष
सम्न लगेगो श्रीकृष्णके चरणारविंद में अत्यंत आर
रारहै सर्वस्व जाने १ अब श्रोर कहत हैं श्लोक भग
वन्मार्ग मात्र स्थैसन्मार्गको ह्विभिः विरते रन्यतः हृष्ट
गुणश्रतो नरान्नभि १ या को अर्थ भगवन्मार्ग जो पु
ष्टिमार्ग भगवान ही स्वरूप श्री आचार्यजी को धर्म अ
पने जीव न ताथ प्रगट भये हैं एसे पुष्टिमार्ग में स्थिति
होइ २ और एतन्मार्गीय यह पुष्टिमार्ग के फलकी
कोला होइ और मर्यादा के फलकी न होइ काहेतें
पुष्टिमार्गको फल श्रीकृष्णकी सेवा स्वरूपानंदको
अनुभव यह फल है और अन्य मार्ग में स्वर्गादिक ब्र
ह्मलोक तथा मोक्ष पर्यंत चतुर्थ मुक्ति सो यह फल
सर्व पुष्टिमार्गते विरोध है तातें पुष्टिमार्ग के फलकी
चाहना [illegible]रे ३ यह लौकिक अन्य कार्यते विरक्त श्री
कृष्णकी सेव[illegible]गा विना सर्वठौर तें मन खिल
रावे ४ और [illegible] सब गुणन आसक्त रहे सगरी
आत्मा मनकरि ध्यान करि श्रीकृष्ण ही की सेवा व
न करि गुनगान श्रीकृष्ण को क्रिया करि श्रीकृष्ण
ही की सेवा या भांति सर्वात्मभाव श्रीकृष्ण के गुन मे
है न तथा एसो भगवदीय होइ तिनको संग करे ५ अ
ब और कहत हैं श्लोक श्री आचार्य सरणं याते स्तदि
श्वास समन्वितै परिप्लुता खिल स्थैर्य सदानंद ज्ञानो
न्मुक १२ या को अर्थ अपने आचार्य श्री वल्लभा

चार्यजीकेचरणाम्बुजनकीरजतैंहीश्रौरदृढविश्वासम
नमेंहोइयहजानैजोश्रीवल्लभाचार्यजीकेचरणकमल
कीकृपातेंसकलकार्यसिद्धहोइगो निश्चयाश्रयदृढविश्वा
सराखै।३।श्रौरलौकिकवैदिकपुष्टिमार्गमेंनविरोध
होइताकोसर्वथात्यागकरै।स्वाचार्यश्रीश्राचार्यजीके
चरननमेंश्रीकृष्णकेचरननकीमननमेंउत्साहराखै।य
हीलक्षणलक्षणमेंचरननकीश्रपेक्षाराखै।येयहनवभा
तिकेगुणरूपयमेंहोइसोसर्वरागद्वेषरहितहोइ रासेगुणस
हितभगवदीयहोयतिनहीकोसंगकरैनवसमरसै
यहरिहोइ प्रभुकृपाकरैपरंतुकालमहाकुटिलहैभगव
दीयकोसंगनाहीमिलतसोश्रागेकहतहैं।श्लोक॥इ
दानीमानतःकालःसर्वबुद्धिविनाशकः।दुरपतिनदुः
संगोमिलितोनास्त्यवापिहि।४।याकोश्रर्थ।श्रीश्री
हरिरायजीकहतहैंजोरूपदोषरूपरागइचालीस
४४सकेतातेंइहिकरणायप्रभुकेगुणरूपचौथ्यइं
इकहैपरंतुयहकालजोश्रवश्रायोहैसोसर्वबुद्धि
कोनासकश्रायोहैकालदोषतेसतप्रानीहैंतिनहूकी
बुद्धिनासभईहै।यश्रानीकीबुद्धिनासहोइ।यामेंकहे
रहेनोएकतोकालदोषबाधकहोहूसरेदुःसंगविनो
चाहश्रापुनेसुनसिद्धिश्रायमिलनहै।तानैवरमेंहस
मैंधरयोहैताकरिकैंजोधर्मकोलेसुदैननहैंसोऊस्हाय
तेपतितमार्गपरनहैंश्रौरभगवद्धर्मपढिवेकीकहाच
लीहैंकरलटोहैसभीजोकछुहैसोऊदिनाशजात
हैंतातेंकालदोषश्रौरदुःसंगबहुतबाधकहैं
४५श्लोक॥किंकार्यंकिमकार्यंपायतःस्फुरतिनैव
हि।प्रभुनास्ववतत्वंजावनउपसंहृतमेवहि।४५यया
कोश्रर्थ।यहकालदोषतेकछुकार्यंकरिवेभगवद
संबंधीनाकछुश्रौरहीचलतोहोइजाइ

सि॰मु॰
२१७

नविचारियेंफेरियाकलयुगमेंकछुमनमैंपुरेसोयातेंभ
लेकार्यमैंअनेकप्रतिबंधपडतहैं केवलहूप्रभुनकोपु
बलप्रतापमनमेंआवतहै जोश्रीकृष्णसर्वोपरसबकेकार्यके
सिद्धिकर्ताहैं अपनेजानिकें प्रमेयबलतेंकृपाकरेंगे
इनकोप्रतापऐसोहीप्रगटहैं॥ वेदपुराणश्रीभाग
वतगीतामेंप्रसिद्धहै॥ ऐसेश्रीकृष्णहमारेप्रसिद्धपति
हैं सोहमकोकहाडरहै॥ सर्वसिद्धिहै॥ याभांतिकबहूंप्र
भुकोबलप्रतापहृदयमेंआवतहै॥ सोफेरिउपसंहा
रनासहोइजातहै विश्वासछूटिजातहैं॥ लौकिक
सुखदुखतिनकोपावतहैं॥ १५ श्लोक॥ साधनानि
नसिध्यंतिकालदोषान्नरात्मनः प्रतिबंधश्चकाला
दिकृतःप्रत्यहमेधति॥ १६॥ याकोअर्थ॥ तहांकोइक
हैतौकछुसाधनकरौ॥ जासाधनतेंमनसेंदुर्वासनान
उठैभगवत्स्वरूपहोइ॥ याभांतिकोईकहैं तहांश्रीहरि
इजीकहतहैं॥ जोसाधनकरिसिद्धिनाहीहोतहैंतौ
फलतौमहादुर्लभहै॥ तातेंयहकालदोषतेंसाधनना
हीसिद्धहोतहैं॥ तातेंयहकालादिकतेंप्रतिबंधहोतहैं॥ ह
तजोउत्तमकरियेतौप्रत्यहबुरीहोइजातहै॥ सोआगें
कहतहैं॥ १६ श्लोक॥ उद्वेगप्रतिबंधोवाभोगोवापिप्र
जायतेप्रतिबंधसेवनंतेप्रत्यग्रापफलस्याति॥ २७ या
कोअर्थ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुसेवाफलमेंनिरूपणकी
येहैं॥ तामेंतीन ३ प्रतिबंधकहेहैं उद्वेगप्रतिबंधोवा
भोगोवास्यात्तुबाधकं याभांतिकहेहैं॥ प्रथमउद्वेगमन
कोहोइ तबसेवामेंमननलगै प्रतिबंधहोइ पाछेंदू
सरीरादिकवैभवाकोमननहोइ भोगतेविषयावेस
होइजाय तबप्रभुअप्रसन्नहोइ सोयाभांतिप्रति
बंधतेंजबभगवत्सेवामेंनहोइ तबपुष्टिमार्गीय
फलकीआसाकाहेकोकरीये यामार्गमेंतौभगव

दसेवाहीफलहैसोऊनभईतौआगेंकहाफलहोइगो।१७।लौ
कनहूंयापिश्रीमहाचार्यचरणाश्रयणन्नमा।निवर्तते।
निरासंशानममतोफलतद्विना।१८।याकेअर्थतातेंयाम
र्गमेंसेवाफलहैंसोयहस्वरूपदोषमहानिश्चय,तऊश्रीह
रिराइजीकहतहैं।जोऐसोमेंसेवाविनाफलकीनिरासे
होनतऊएकमनमेंभरोसोहैं।मेरेश्रीवल्लभाचार्यजीके
मेरेचरणकमलकोआश्रयमनमेंकीयोहूं।भगवत्सेवा
करिरहितहूं।तऊश्रीमहाप्रभुजीकेचरणकेआश्रयते
यहपुष्टिमार्गकोफलसर्वोपरलद्धिहैं।निश्चयसिद्धहो
इगो।याविश्वासरहैं।१८।इतिश्रीहरिराइजीकृतस
र्वविसनावलीकेश्रीगोपेश्वरजीकृतसंपूर्ण।१८।आश्र
वरूपकहैंसर्वसाधनरहिततथासेवाकरिरहितहैं
तऊश्रीमहाप्रभुजीकेचरणाश्रयतेयेफलहोइगो
सोफलकोनजानिहोइ।सोआगेंकहतहैं।जोआश्र
यतेंदैन्यताफुरैं।सोफलरूपहैं।सोदैन्यताआगेंवर्ण
नकरतहैं।श्लोक॥कदानंदात्मजःस्वप्रुरूपावृष्टिक
रिष्यति।प्रतिक्षयेवास्मदेहिमन।भ्रांतमहेंद्रियं
१।याकेअर्थ।अवश्रीहरिराइजीविज्ञप्तकरतहैं।नंदा
त्मजश्रीकृष्णयहकहिंहरिराइजीकेपुत्रकहैवसुदेव
नंदनाहीं।यहपुष्टिमार्गमेंनंदकुमारसेव्यहैं।श्रीगुस
ाईंजीनंदमहोत्सवकेअध्यायमेंकहेंहैं।नंदस्यात्मज
उत्पन्नेजातोल्हादोमहामना।नंदरायकीआत्मनि
प्रगटे।एसेश्रीकृष्णभावात्मकरसेपुष्टिपूर्णपुरुषो
त्तमसोकौ।अपनेस्वकीयनिजभक्तजानिआपनीकृ
पादृष्टिकबकरेंगे।तुमारीप्रतिक्षाकरतकरतअसमद्
दिवसेमनइंद्रीसहितदेहसर्वशिथिल ह्वैगये।श्री
गुसांईंजीविज्ञप्तमेंकहैंहैं।यो त्वत्पा
राज्यैककिंकरा।तदुक्तंप्रथमप्रस्तुतदट

सि०व०
१७

नविचारियें पेरिरावतलगनैंकछुमनमेंपुरैसाभांतिम
नेकार्यमेंअनेकप्रतिबंधपडतहैं केवलश्रीप्रभुनकोपु
बलप्रतापमनमेंआवतहैंजोश्रीहरिसर्वोपरसर्वकार्यके
सिद्धिकर्ताहैं अपनेजानिकैं प्रसन्नहोवतहैं कृपाकरेंगे
इनकोप्रतापरसोऐसाप्रगटहैं वेदपुराणश्रीभाग
वतगीतामेंप्रसिद्धहै एसेश्रीहरिहमारेप्रसिद्धिपति
हैं सोहमकोकहाडरहै सर्वसिद्धिहै याभांतिकबहूंप्र
भुकोबलप्रतापहृदयमेंआवतहैं सोपेरितपसंग
रनासहोइजातहै विश्वासहूटिजातहैं लौकिक
सुखदुखतिनकोपावतहैं ।पे।श्लो०। साधनानि
नसिध्यंति कालदोषान्तरात्मनः प्रतिबंधश्चकाला
दिकृतःप्रत्यहमेधते ।टी०। याकोअर्थ नहांकोइक
हैतोकछुसाधनकरों जासाधनतेमनमेंदुर्वासनान
उठें भगवदर्थहोइ याभांतिकोइकहैं तहांश्रीहरि
इजीवहतहैं जोसाधनकरिसिद्धिनाहीहोतहैं तो
फलतोमहादुर्लभहैं तातेयहकालदोषतेसाधनना
हीसिद्धहोतहैं तातेयहकालादिनेंप्रतिबंधहोतहैं व
तजोउत्तमकरियेंतोप्रत्यहैहबुरीहोइजातहैं सोआगें
कहतहैं ।पे।श्लो०। उद्वेगःप्रतिबंधोवाभोगोवापिप्र
जायते प्रतिबंधसेवनंनेप्रत्यग्रापरसृप्ति १७ या
अर्थ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुसेवाफलमेंनिरूपणकी
येहैं तामेंतीन ३ प्रतिबंधकहेहैं उद्वेगप्रतिबंधोवा
भोगोवासपातुबाधकें याभांतिकहेहैं प्रथमउद्वेगमन
कोहोइ तबसेवामेंमनलगे प्रतिबंधहोइ पाछेंदू
सरीरादिकतेंभोगकोमननहोइ भोगतेविषयावेस
होइजाय तबप्रभुअप्रसन्नहोइ सोयाभांतिप्रति
बंधतेंतबभगवदसेवामेंनहोइ तबपुष्टिमार्गीय
फलकीआसाकाहेकोकरीये यामार्गमेंतोभगव

रुसेवाहीफलहै सोउन भईतौ आगेकहा फलहोइगो।१७। सो
कृतार्थयामि श्रीमदाचार्यचरणाश्रयणात्स्वसा।निवर्तेतो
निरासेरान्नमनो फलत्वधिया।१।याको अर्थ जातेंयामा
र्गमैसेवाफलहैं सोयहकालदोषमहा निश्चय नउश्रीह
रिरायजीकहतहैं।सो एसोमैंसेवाविनाफलकीनिरासे
सोनउएकमनमैंभरोसोहै।मेरैश्रीवल्लभाचार्यजीके
मेरचरणकमलकोआश्रयमनमैंकीयोहै।भगवत्सेवा
करिरहितहूं तउश्रीमहाप्रभुजीकेचरणकेआश्रयतें
यहपुष्टिमार्गकेफलसर्वोपरलब्धिहै।निश्चयसिद्धहो
इगो।याविश्वासलो।१८।इतिश्रीहरिरायजीकृतस
प्तविंसतिकारिकाश्रीगोपेश्वरजीकृतसंपूर्ण।२७।अथ
वक्षपरकटे सर्वसाधनरहितनथा सेवाकरिरहितनो
तउश्रीमहाप्रभुजीकेचरणआश्रयतेयेफलहोइगो
सोफलकोनमाति होइ।सो आगेकहतहैं जो आश्र
यतैंदैन्यतासुरैंसोफलरूपहै।सोदैन्यता आगेवर्ण
नकरतहैं।स्लोक।।कृष्णानेहात्मजःस्वयं कृपावृष्टिक
रिष्यति।प्रतिरूपये वास्मरो टिमन।शान्तमद्विंये
१।याको अर्थ अबश्रीहरिरायजीविज्ञप्तिकरतहैं।नंदा
त्मजश्रीकृष्ण यहकहिनैं हरिरायजीनैं पुत्रकहे।वसुदेव
नंदनाहीं।यहपुष्टिमार्गमैं नंदकुमारसेव्यहैं।श्रीशुक
देवजीनेंदसमस्कंधके अध्यायमेंकहैहैं।नंदस्वात्मज
उत्पन्नेजाताल्हादोमहामनाः।नंदरायकीआत्मातें
प्रगटे।एसेश्रीकृष्णभावात्मकरासेपुष्टिपूर्णपुरुषो
त्तमसोंको अपनेस्वकीयनिजभक्तजानि आपनीकृ
पादृष्टिकवब करोगे तुमारीप्रतिष्ठा करनकरन असमद्
खिते मन इहीसहितहैं हस्वबांछितलहोइगो।श्री
गुसांईजीविज्ञप्तमेंकहैहैं।योऽसीतान्द्रलीनायत्वत्या
सात्वैवकिंकरा।तद्गोकेथमप्याशुकृस्तोचरंमम:

तातेमेरेनेत्रकेगोचरमोकोंवदनचंद्रकेदरसनदेहुगे
१ श्लो० करुणानाशिधिःस्वीयनिधिसर्वोधिकःप्रभुःउ
पेक्षतेयुतःस्वीयानितिचिंतातुरंमनः २ याकोअर्थ हेश्री
हस्तनुमकैसेहो करुणाकेनिधिहो औरसर्वेश्वाणीमा
त्रकेस्वामी एकजगरेजान्हकेप्रभूहो ताहूमेस्वीयजोतुमा
रेभक्तहैं तिनकेतोसर्वस्वनिधिहो ऐसेप्रभुस्वीयअप
नेभक्तकीउपेक्षाकोकरतहो यहचिंतानित्यकरिकेंम
नतेआतुरताभयोहूं श्रीगुसांईजीविज्ञप्तिमेकहैहैं हा
नाथजीचिंताधिसरोजीवदललोचनःयथोचितंवि
धेहीतिप्रार्थनंतवकस्यामि हेनाथकमललोचनमें
तुमसोंप्रार्थनाकरयकरूं तुमारीकृपातेजीवनहो सो
यहविप्रयोगव्याप्तहैं तातेप्रार्थनामेंकहाकरूं तुम
सर्वज्ञहो सबजानतहो ३ श्लो० निजानंदनिमग्नस्य
भवेद्यद्यपिविस्मृतिः भक्तार्थेभवनीगीस्याकृपालोरू
चिंतानमा ४ याकोअर्थ हेश्रीहस्तनुमकैसेहो अ
पनेआनंदमेंरात्रिदिनमग्नरहतहो परकहिकेंयहज
नारे सोऐसेमग्नरहतहो जोयहभावसंसारादिककों
विस्मृतिहै तथापितऊअपनेभक्तन्केअर्थतुमकृ
लीरहो ५ याग्यनाते औरतुमपरमकृपालहो
तुमारेभक्तजोसंसारमेंहैं तिनकोअवचिंताई
करोगे रूचिहीकृपाकरिअंगीकारहीकरोगे सोश्री
गुसांईजीविज्ञप्तिमेंकहैहैं त्वदंगीकृतयोजीवस्वाधि
कारायतःप्रभो अनस्वनविचाराहोकृपाकुरुकृपानि
धेः हेनाथतुमारोअंगीकृतजोजीवहै सोतुमारेअ
धिकारयोग्यहै सोइहालोकिकसंबंधनेतुमभूलेहो
अधिकारयोगपनाहीहै तऊतुमइनकेदोषनकोवि
चारमतिकरो कृपाईकरो काहेनेतुमकृपानिधिहो
हमपरकृपाहीकरो ३ श्लो० केप्रार्थयेपुत्रदीनो

विहायतेिनपसे [illegible]
साधनो॥४॥ यत्न [illegible]
करै हमदीनहै तुम्हा [illegible]
है तुम बिना श्रीर को [illegible]
सेहै सर्वसाधनरहित [illegible]
है यही भरोसो है सो [illegible]
है तुमारी चाश्रय [illegible]
जीविवेक धैर्य [illegible]
वासवेथास्रणा हरि [illegible]
नपाय इसको नाही [illegible] तातें [illegible]
॥ मन्नाथ नाथ [illegible]
सौं नवाधि हिवि [illegible]
हतुमसे नाथ हौ [illegible]
सर्वसाधनरहित हौ [illegible]
विरहाकुल हौ काहेत [illegible]
हौं श्रोर तुमारी [illegible]
तुमारी सेवा [illegible]
हससा [illegible] पीडित [illegible]
रा [illegible] त्वदर्शन [illegible]
वित यथेम [illegible]
दर्शन विना तुमारे [illegible]
नाथ [illegible] उनव [illegible]
करतहै जो हमको [illegible]
कोकरावो नाम [illegible]
तुनार्करि [illegible]
पोषनकरो [illegible]
संसार [illegible] तातें [illegible]
सुखहारिहौ [illegible] दर्शन [illegible]

तातेमेरेनेत्रकेगोचरमोकोंवदनचंद्रकदरसनदेहुगे
१ श्लो॰ करुणानारिधिःस्वीयनिधिसर्वाधिकःप्रभुःउ
पेक्षतेकुतःस्वीयानितिचिंतातुरंमन ॥ श्या॰ ॥ टी॰ ॥ हेश्री
हरतुमकैसेहो ॥ करुणाकेनिधिहो ॥ औरसर्वकेप्राणीमा
त्रकेस्वारकःसगरेजगतकेप्रभुहो ॥ ताहूमेंस्वीयजोतुमा
रेभक्तहैं तिनकेतोसर्वस्वनिधिहो ॥ ऐसेप्रभुस्वीयस्वरूप
नेभक्तकीउपेक्षाकेंउंकरतहो ॥ यहचिंतानित्यकरिकेम
नतेआतुरताभयोहूं ॥ श्रीगुसांईजीविज्ञप्तिमेंकहेंहैं हा
नाथजीचिंताधिसुरांजीवितदललोचनः यथोचितंवि
धेहीतिप्रार्थनंतवकस्यमि ॥ हेनाथकमललोचनमें
तुमसोंप्रार्थनाकहांकरूं ॥ तुमारीकृपातेजीवतहों सो
यहविप्रयोगतप्तचित्तहैं तातेप्रार्थनामेंकहाकरूं तुम
सर्वज्ञहो सबजानतहो ॥ २ श्लो॰ ॥ निजानंदनिमग्नस्य
मेयद्यपिविस्मृतिः भक्तार्थंभवतीगोप्यकृपालोरु
चितानमा ॥ श्या॰ ॥ टी॰ ॥ हेश्रीहरतुमकैसेहो ॥ अ
पनेआनंदमेंरातिदिनमग्नरहतहो ॥ पहकहिकेंयहज
नायेंसोऐसेमग्नरहतहैं जोयहभावसंसारादिककी
विस्मृतिहैं ॥ तद्यपितऊआपनेभक्तनकेअर्थतुमस्मृ
वनारलीयेहो ॥ प्राप्त्यनातें ॥ औरतुमपरमकृपालहो
तातेतुमारेभक्तजोसंसारमेंहैं तिनकोंअरुचिनाही
करोगे ॥ रुचिहीकृपाकरिअंगीकारहीकरोगे ॥ सोश्री
गुसांईजीविज्ञप्तिमेंकहेंहैं ॥ त्वदंगीकृतजोजीवस्वाधि
कारायतःप्रभो ॥ अनंतस्वनविचारोहो कृपाकुरुकृपानि
धे ॥ टी॰ ॥ हेनाथतुमारोअंगीकृतजोजीवहैं सोतुमारेअ
धिकारयोग्यहैं सोइहालो विकरसंबंधतेतुमभयेहो
अधिकारयोगपनाहीहैं ॥ तऊतुमउनकेदोषनकोंवि
चारमतिकरो कृपाहीकरो काहेतेंतुमकृपानिधिहो
हमपरकृपाहीकरो ३ श्लो॰ ॥ केप्रार्थयेपुनर्दीना

ायनिजनायकौ। तदेकशरणाः नित्यं विमुक्ताः सर्व
वनेर्ग्रन्थ्याको अर्थ। हे नाथ हम तुमतें कहा प्रार्थना
हम दीन हैं तुमको हम अपने नायक प्रतिजानत
तुम विना और कोई हम नाहीं जानत हैं। और हमके
हैं सर्वसाधनकरि शून्य रहित हैं। तातें नित्य तुमारे सरण
यही भरोसो हैं। साधनहूतें ना कछु प्रार्थना करते ना
तें तुमारो आश्रय करि तुमारे शरन हैं। सो श्री आचार्य
जी विवेकधैर्याश्रय ग्रंथमें कहे हैं। अत्र सर्वं प्रसवको
वा सर्वथा शरणं हरिः इत्यादि वचनको विचारि और
नुपाय हमको नाहीं सकत हैं। तातें तुमारी सरणागति
। मन्नाथ नाथयन्ते भवाभिविरहाकुलाः। हरसनस्य
ओंन वापि देहि वे ग्रन्थ स्तुति पायाथे। ग्रन्थ हे श्रीम
सतुमको नाथ हो। और में केसा है। महा नेनतुच्छ हैं
सर्वसाधनकरि रहित हौं। भव जो यह संसार ताहिक में महा
विरहाकुल हौं काहेतें। यह संसार ताहिक ये मती तत्पर
हौं और तुमारी सेवादि भगवद्धर्मकरिके रहित हौं। तातें
तुमारी सेवादि भगवद्धर्मके विरहित हौं ताकोय
हम संसाराग्नि पीडित व्याकुल हौं। सो श्री गुसांईजी वि
तापिम कहे हैं। त्वद्दर्शन विहीनस्य त्वदीयस्य तुमा
विन व्यर्थ भवन्तथा नायड भोगायान्वेक्य। तुमा
दर्शन विना तुमारे तदीयजीवेहें। सो व्यर्थ कोहें तें हे
नाथवे दुर्भगा उनके भाग्य खोटे हैं। तातें श्री हरिराइ
करत हैं जो हमको दरसन देहु। और परस हे श्री अ
कोकरावो तामें यह जगत जो सेवा करावो और
नुनाद करि शब्द करि हमारे हृदयमें यथा रासतक
पावन करो। तव हमको सुख होय काहे तें। विरहा
संसाराग्नि करि व्याकुल हौं। तातें केवल दरसनहीं
महादरिद्रा। दरसन परस सब गुनादिकेसु तने

स.प.
१९

यसैंयाभांतिसुखदेहु॥१॥ श्लोक॥ निजाचार्यस्थानस्मान्
यदिहृत्सः प्रहास्यति॥ गमिष्यति ध्रुवं नाथ प्रतिज्ञैव त
दानव॥२॥ या श्लोक में श्री हरिरायजी कहत हैं जो
आपने श्रीवल्लभाचार्यजी के आश्रय पुष्टिमारगीय
करीय है तिनको हे नाथ तुम छोड़त ही नाहीं निश्चय
प्रसन्न ही रहत हो तिनकी प्रसंसा ही करि निश्चै आप
ने जानत हो जद्यपि वह जीव भगवद् नाम हूं नाहीं ले
त कछु धर्म नाहीं है न उन्ने आपनी [illegible] की एवा
कों अंगीकार ही करत हो तातें हे नाथ हम हू आपने श्री
वल्लभाचार्यजी के आश्रित हैं एसे के ऊपर प्रसन्न हो
उगे नाथ हमको खोटे जानि दोष देखिके छोडोगे तो तुम
री प्रतिज्ञा भंग होइगी निश्चय तातें कृपा करो कहा हे ते
तुम श्री आचार्यजी ते प्रतिज्ञा करी है जिनको ब्रह्मसंबं
ध करावोगे तिनके सकल दोष दूरि होइगे तिनको में
अंगीकार करत हो सो सिद्धांतरहस्य में कहे हैं ब्रह्मसंबं
ध करणात्सर्वेषां देहजीवयोः सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दो
षाः पंचविधाः स्मृताः १ इत्यादि वचन ते तुम हमारे दोष
देखोगे तो तुमारी प्रतिज्ञा जायगी तातें आपनी प्रति
ज्ञा के लीए श्री आचार्यजी महाप्रभुजी के आश्रित जो
नि हम पर कृपा करो॥२॥ श्लोक॥ वयं तु सर्वथा दुष्टाः स्व
धर्मविमुखा अपि। त्वमस्मदीयान् माधर्मान् गृहा
ण गुणपूरितः॥३॥ या श्लोक में श्री हरिरायजी क
हत हैं हम के सेहें वय जो बालापन ते दुष्ट ही आच
रण कीये हैं आपने पुष्टिमारगीय धर्म ते रहित हैं कब
हूं पुष्टिमार्ग की रीतिते भाव सहित सेवा नाहीं करी है
तातें आपने स्वधर्म ते हम विमुख हैं और हे नाथ तुम के
से हो अस्मदीय आपने जन दास के धर्म की वासना ता
ही करोगे काहे तें तुम सर्वगुण करि के पूर्ण हो तातें उ

ताकी चाहना न करोगे। कृपा करि श्रीगुन हम सारिखे पर
निश्चय कृपा प्रमेय बलतें करोगे। सो विज्ञप्ति में श्रीगु
साईंजी कहे हैं। श्लोक॥ वलिष्टा अपि मद्दोषा न कृपा
ये तु स्वेरका। तस्य ईश्वरधर्मत्वात् दोषा नो जीवधर्म
तः॥१॥ यद्यपि हमारे दोष अब बहुत बलिष्ट हैं तऊ तुमारी
कृपा के आगे दुर्बल हैं। काहेतें तुमारी कृपा है सो ईश्व
रता धर्म लीये है। दोष है सो जीव धर्म तें है। सो ईश्वर धर्म के
आगे जीव तुच्छ है। तातें कृपा करो॥१॥ श्लोक॥ कृपालो पा
लनीयानां गुणदोषविचारणा। न कार्या स्वीयकरण
विहितं करणाय हि। याको अर्थ। हे नाथ तुम कैसे हो
परम कृपालु हो। पालन करो। हमारे गुण दोष को विचा
र तुम मति करो। काहेतें हम तुमारे हैं। श्रीआचार्यजी
द्वारा हमारो धर्म तुम तें भयो। तातें हम कहें करण अपने
कार्य के लीये कीये। जो सेवा स्वतंत्री को धर्म है। सो का
र्य मोसों न बनि आयो। उलटो अपराध अनेक करे। पुन मों
तुम हित के लीये हमारो वरण कीयो। सो वे हित कार्य मो
सों बनत नहीं। सो तुम मेरी ओर मति देखो। आपुन वरन
तानि कृपा करो। सो विज्ञप्ति में श्रीगुसाईंजी कहे हैं। च
दंगीकृतयो जीवे स्वाधिकारायतः प्रभो। अन तेन वि
चार्य हो कृपा कुरु कृपानिधे॥१॥ तुमारे अंगीकृत जो जी
व है सो तुमारे अधिकार योग्य है। अथवा दोष करि अ
योग्य है। तऊ तुम अपने दोष मनि विचारो। काहे तें तुम
कृपा के निधि समुद्र हो। सो कृपा करो॥१॥ श्लोक॥ अ
ज्ञानादि प्रैर्दोषै गणनाया मम प्रभो। श्रम मेष्यति
गोपीश ततो विस्मर सर्वथा॥१॥ याको अर्थ। हे नाथ तु
म कैसे हो। तुम काहू वात में हारो नाहीं। तुम को कबहू

करो

५०
२०

ननाकरोगेतोश्रमहीतुमकोहोउगो अपारदोषहैमेरेना
तहैगोपीजस्यइसंबोधनकोयहजताबो जोतुमगोपीके
ईशहो विनासाधनगोपीजनपरकृपाकरीतैसेंइमारेऊ
परकृपाकरो सर्वथाहमारेदोषको विसरिजाऊ श्रीगुसां
ईजीविज्ञप्तिमेंकहेहैं अपराधेपिगणनानैवकार्येद
नाधिकः सहजस्वयंभावेनस्वस्यच्छुद्रतयाचनरहे
वृजकेअधिपतिराजानिःसाधनकेफलात्मकहमा
रेहू अपराधकीगणनाकरनोतुमेंउचितनाहींहैका
हेतें तुमारीसहजमेंईश्वरताआगेदोषसहमारे छुद्रहै
सोतुमकहांदोषविचारोगे तातेंकृपाकरो ॥ श्लो॰
कीनेषुगुणात्तीनेषुतावकीनेषुमत्प्रभोपराधीनेषु
करुणाकरणीयत्वमप्वेया ॥१०॥ या॰ श्लो॰ हेनाथमे
अल्पेनदीनहौंदुखीहौं काहेतें यहमायाकेगुणसे
सांसारिककार्यमेंलीनहौ ऐसोदोषकरिदीनहौ
तऊमैंतुमारीहौं तुममेरेप्रभुहौ मैंतोअपराधिनी
हौं मायाकेवशहूं ताते ऊपरसर्वथाहीकरुणाक
रियें सोविज्ञप्तिमेंश्रीगुसांईजीकहेहैं वास्त्वकमो
धीनतायनकरोपिमयिसुदूरा तदप्यनुचिंतयस्व
तवाहीयास्पूरीहतुः ॥१॥ हेसुंदर श्रीलक्ष्मणतोका
लकसेंइत्यादिमायाकेआधीनहौ तऊतुमारीहौ
आपनोत्वदीयजानिकृपाकरौ ॥१०॥ श्लो॰ निःसाध
नोमनोदीनोगतधनाखुदुःखितो निजाचार्योप्रि
ताशोकः शोकक्षोभमोहभयाकुलः ॥११॥ या॰ श्लो॰ श्र
श्रीहरिरायजीकहतहैं जोमेंऐसोदीनहौं निःसा
धनहौं मेरेसेवाइसाधननाहीहै औरभावरूपीधन
हुतोइहै ताकीरक्षानिहीनहौं जाकोधनजाय सोदी
नहोइ यहलोकमेंप्रसिद्धिहैं औरबहुतदुखी
हौं औरआपनेश्रीआचार्यजीकेआश्रितहौं औ

रसोकलोभमोहभयमायाकेगु॥ नाकरिकैंव्याकु
लहौं।कछुअपनेधर्मकीसुधिनाहीहैं।औरऐसेइं
निसाधनजीवपरकृपाकरतहौ।सो आगेंकहतहैं
११॥श्लोक॥ भवंतितवपापात्रेमहोदारदयानिधे।प्रय
छकरुणानेत्रोद्गतंपात्रेलयंभवेत॥११॥याको अर्थ ऊपर
कहेऐसोहोइतोंप्रभुकेकृपापात्रयोग्यहोइ॥निःसाध
नहोइमनतेधनकरिहिनहोइधनगयेतेंदीनतादुख
होइ अपनेश्रीवल्लभाचार्यजीकेआश्रितहो॥शोक
लोभमोहसंगकोघोरकालभयतेंव्याकुलभयो।तव
प्रभुकृपाकरी।तातैंश्रीहरिरायजीकहतहैं।जोमेंउग
सोंहूतुम्हारेकृपापात्रहौं।तुममहोदारहौ।दयाकेनिधि
हौ।तातैंदयाकरौ।काहेतें।अपनीइच्छातेंकरुणाक
रिलनदीयोहै।सोदीनतारूपीपात्रतुमारेदीयेतेंभ
योहै।सोदिनदिनदृषहीनहोतहैं।दिनदीनतावढत
है।तातैंवेगिहीकृपाकरौ॥१२॥श्लोक॥संसारदावद
ग्धानांजीमूतजलकांक्षिणां।नवनीलजलदानंत
जलदानेविनासुखं॥१२॥याकोअर्थ॥अवजोदृ
ष्टांतकहतहैं।वनमेंदावानलअग्नितेंवनमेंगरे
जीवआदिदग्धजरतहोइ।तिनकेसीतलकरिवेकौ
एकमेघजलवरखेयहीउपायहै।औरउपाइवासम
यकोईनाहीहै।जद्यपिजलनेसमुद्रनदीअनेकभरी
हैं परंतुवनकेदावानलकोंमेघहीजलदानकीरिति
सनेविरानवझे॥तैसेहीयहमायासंबंधीदेहसंबं
धीहैं।अहंताममतारूपयहदावानलमेंजोदग्धहे
जरतहैं।तिनकोनीलमेघरूपश्रीगोवर्द्धननाथजी
अपनेआनंदरूपअनंतजलकोदानकरैं।तवजीवपा
छवकेसुख।औरउ

पाइकोईना

प. प०
२०

तनोकरोगेनोश्रमहीतुमकोहोकुगो अपारदोषहेमेरेनो
तहेगोपीजयहसंवोधनकहियहजननारोजोतुमगोपीके
ईशहो विनासाधनगोपीजनपरकृपाकरीतेसेंहमारेऊ
परकृपाकरो सर्वथाहमारेदोषके विसरिजाउ श्रीगुसां
ईजीविज्ञप्तमेकहेहै अपराधेपिगणानानेवकायेह
नाधिक सहजस्वरूपभावेनस्वस्पकुरुतयाचनाइहे
वृज के अधिपतिराजा निःसाधनके फलात्मकहमा
रहू अपराधकीगणना करनोतुमेउचितनाहीहेका
हेते तुमारीसहजमेंईश्वरता आगेदोषहमारकुछहे
सोतुमकहासेयविचारोगे ताते कृपाकरोगे स श्लो
हीनेषुगुणातीतेषुतावकीनेषुमत्प्रभो पराधीनेषु
करुणाकरणीयत्वया १० या को अर्थ हेनाथमे
........होदुखीहोंका हेते यह मायाके गुणसे
सारात्विककार्यमेंलीन हो एसोदोषकरहीनहों
तऊमेंतुमारीहों तुम मेरेप्रभुहो तातें अपराधिनी
हों मायाके एसोहूं तातेऊपरसर्वथाहीकरुणाक
रियें सो विज्ञप्तमें श्रीगुसांईजी कहे हैं का लकर्मा
धीनताय नकरोपिमयिसुदर तस्याप्ततु विनंयस्य
तवाहीयो स्पुरीहत: ११ हेसुंदर श्रीलक्ष्मणजीको
लकर्म इत्यादिमायाके आधीन हो तऊतुमारीहो
आपनोत्वदीयजानिकृपाकरो १० श्लो निसाध
नामनोहीनांगतधनाबुदुःखिता निजाचार्योरि
ताशोक: शोक लोभमोहभयाकुलार? या को अर्थ
श्रीहरिरायजीकहतहै जोमे एसोहीनहों निसा
धनह्यो मेरेमेंव कछुसाधननाहीहे और भावरूपीधन
हुतोहे जाकरि अतिहीनहों जाकोधनजाय सोदी
नहोइ यहलोकमें प्रसिद्धहें और बहुतदुखी
हो और आपने श्री आचार्यजीके आश्रितहों श्री

रसोक लोभमोह भयमायावेगु ॥ नाकरिवेंव्याकु
लहों ॥ कछु अपनेधर्मकी सुधिनाहीहे ॥ औरऐसे इ
निसाधनजीवपरकृपाकरतहें ॥ सो आगेंकहतहें
११ श्लोक ॥ भवंतितेतुपापात्रेमहोदारस्यानिधे ॥ प्रय
छकरुणातेभ्योहंतपात्रेलयंभवेतां ॥ याको अर्थ ऊपर
कहेएसोहोइ तो प्रभुकेकृपापात्रयोग्यहोइ ॥ निःसाध
नहोइ मनमें धनकरिहिनहोइ धनगयेतेंदीननादुख
होइ अपनेश्रीवल्लभाचार्यजीके आश्रितहोइ ॥ सोक
लोभमोहसंगको औरकालभयतेंव्याकुलभये ॥ तव
प्रभुकृपाकरि ॥ तातेंश्रीहरिराइजीकहतहें ॥ जोमेंऊए
सोहूं तुमारेकृपापात्रहो ॥ तुमअहोदारहो ॥ दयाकेनिधि
हो ॥ तातेंदयाकरो ॥ काहेतें ॥ अपनीइछातेंकरुणाक
रिसनहीयोहो ॥ सोदीनतारूपीपात्रतुमारेहीयेतेभ
योहै ॥ सोदिनदिनक्षयहोतहै ॥ दिनदिनहीननाबढत
हे ॥ तातेंवेगिहीकृपाकरो ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ संसारदावद
ग्धानांजीमूतंजलकांक्षिणं ॥ नीलजलदानंत
जलदानंविनासुखं ॥ १२ ॥ याको अर्थ ॥ अवजोविन
दृष्टांतकहतहें ॥ वनमेंदावानल अग्नितेवनसगरे
जीवआदिदग्धजरतहोइ ॥ तिनकेसीतलकरिवेको
एकमेघजलवरखेयहीउपायहे ॥ औरउपाइवासम
यकोईनाहीहे ॥ जद्यपिजलतेंसमुद्रनदी अनेकभरी
हें परंतुवनके दावानलको मेघहीजलदानकरिति
नकोंहरेतवहोइ ॥ तेसेहीयहमायासंवधीदेहसंवं
धीहे ॥ अहंताममतारूपयहदावानलमेंजोदग्धह
जरतहे ॥ तिनकोनीलमेघरूपश्रीगोवर्द्धननाथजी
अपनेआनंदरूपअनंतजलकोदानकरेंतवडीकृपा
करें ॥ तवहीयहपुष्टिमारगीयजीवकोसुख ॥ औरउ
पाइकोईनाहीहे ॥ १३ ॥ अव और हूं कहतहें ॥ श्लोक ॥ ये

प. २१

मायापीकृतासर्वात्मत्सेवोपियग्रहस्थिता। तरात्वभावना माय भवतीक रवेकिसु। ४। या श्लोक को अर्थ श्रीहरिराय जी आपसेवककी रीहे तिनकी प्रार्थना प्रभुनसों करिके जीकरकरावतहे हे नाथ मैं अपने अंगीकृत सेवक बहु तहीकीरहे सो ग्रहस्तसेवक बहुत ही कीरहे काहेते ग्रहस्ताश्रममें सेवा बनि नाही। आवत भक्ती या श्रममें सेयह जानीजो भलो मोसों सेवा नाहीवनततो ग्रहस्त कोसेवक करि सेवारीति बताईए ये मेरे सेवक भली तुमारी सेवा करेंगे तो हमोको सुख होइगो। यह अ पनी सहायके लिये ग्रहस्त अपने अंगीकृत कीरहे सोवे ग्रहस्थ भगवानकी सेवाते नासभये एसेउ लटी हतनकरतहे सो मेकहा करों तथा तुम मोको अंगीकृत करि अपनी सेवाके अर्थ ग्रहस्थाश्रममें हमको स्थिति कीरहे सो हमतो सेवातुमारी छोडिके विककर्थउल टेचलतहे तावातको तुम कहा करो। ४। लो कः वह मुखाः प्रकुर्वतित्वसर्वधर्मवहर्मुखा। सहायतामा देव नहातुमदहमुत्सहे। ५। या श्लोक को अर्थ एक जो जीवसुभा वनतदुष्ट वहर्मुखहे दूसरे वहर्मुखदुष्टकेसंगतेयगरेजी ववहर्मुख भये सोमें भ्रमकरि अपनी सहाय ग्रहस्तवे सवको जान्यो जोमें अंगीकृत कीरहे सो ए मोकोस हाइ होइगे। ए सब भ्रम सो सेवककी रीहे सो केवल स्वच हाइ होइ गे सव भ्रम सो सेवक की रीहे सो ... नके छोडिवे लतहे भगवत्सेवा नाही करत तिनके छोडिवे को उत्साह हमें वसे भ्रपा लेके वसे छोडो जाय। ५। लो कः सहायक्लेमभुत्पाद्य वचयंति यथा जनं मार्ग स्थितं तथानाथ वंचितोहंग्रहस्थितो। ६। या श्लोक को अर्थ मेसव तथानाथ वंचितो हे ग्रहस्थिते। ६। याको अर्थ जो मे तुलटो कअपनी सहाय अर्थ कीयो भ्रम करिके जोमे तुलटो चयंति जो मेठगपोरपो हे नाथ मे तुमारो मार्ग पुष्टि तोमें स्थिति होइके एसो मे स्थिति होइवे एसो मे तिनके

एग्रहस्तवैष्णवनैंमोकोठगो॥एकतोमैंअपनेकीफिकरक
रतहों॥तोऊसगरेइनहूकेऊपरकीफिकरमोहूकोंकरनी
पडी॥याभांतिग्रहस्थजननेतथाग्रहस्ताश्रमनेठगा
योहूं॥१६॥श्लोक॥ यथाधिकूपपतितंमंडूकादुखरै
जैनं॥भयंयंतितथामुखोदुर्वचोपिग्रहस्थिता॥१७
याकोअर्थ॥ लौकिकदृष्टांतनैंकहतहैं॥श्रीहरिराइ
जीजोयाभांतिमोकोंदुखभयोहै॥जैसेंअंधकूपमेंमंडुक
पर्योहोय॥सोदुःखतेबोलैं॥सोसबकोंभयउपजावै
तैसेंग्रहस्थमेंअनेकअनेकलोगतिनकेदुर्वचनसु
निकैं॥वाकोंमहाभयहोतहै॥ग्रहस्थाश्रममेंस्थितिएसे
देहसंबंधीतिनकेअनेकभांतिकेवचननताकोंसुनि
कैंमेरेमनमेंव्यथाहोतहै॥यहकहियहजताए
जोमैंएग्रहस्थवैष्णवमेरीविडाईकरतहैं॥सोदुःखमे
रेमनमेंहोतहैं॥मोघरकेदेहसंबंधीअनेकभांतिनिंदा
करतहैं सोदुखमेरेमनमेंहोतहै॥१७॥श्लोक॥ किय
त्पर्यंतमेबेहिमदुपेक्षांकरिष्यति॥त्यक्तेवादोषसाहि
त्याद्विमुखोहंदयालुना॥१८॥याकोअर्थ॥ तातेंहेनाथ
मैंदुखीमैंहूं॥सोमेरीउपेक्षाकहांपर्यंतकरोगे॥तथामो
कोंदोषसहितजानिकैंत्यागकरोगे॥परंतुमेंयहमन
मेंजानतहों॥जोतुमदयालहो॥तातेंत्यागतोकबहूंन
करोगे॥श्रीगुसांईजीविज्ञप्तिमेंकहेहैं॥चित्तेनदुष्टोव
चसापिदुष्टःकायेनदुष्टक्रियायदुष्टः॥ज्ञानेनदुष्टोवै
चैसोपिभजनेनदुष्टोममापराधःखलनिधाविचार्ये॥चि
त्तहूदुष्टहै॥तुमारेमेंनाहीलागत॥वानीहूमिथ्याभा
षनतेदुष्टहै॥कायाहूतुमारीसेवानाहींकरत॥तातेंदु
ष्टहै॥क्रियाहूमिथ्यालौकिककरियतहै॥ज्ञानहूदुष्ट

रोदोषअपराधक

प.
२२

१८ श्लोक ॥ त्यक्तुं कुत्र गमिष्यामि न मेऽस्ति शरणं मम: नाव
मारोप्य दीनं खं मध्ये धारामज्जयेत ॥ १८ ॥ याको अर्थ ॥ अब श्री
हरिरायजी कहत हैं ॥ हे नाथ कहा चिंता तुम ईश्वर हो कर्तुम
कर्तुम् अन्यथा कर्तुं सर्व सामर्थ्य हो ॥ सो यह जानो जो मेरे सरन
लायक यह नाहीं है ॥ यह विचारि कें त्याग करो तो हम क
हां जाय ॥ हमारे और कहूं तुम विना ठिकानो नाहीं है तु
मारी सरण विना रंचक हू कों नाहीं जानत ॥ तब मेरी
कहा दिसा होइगी ॥ जैसे नाव में बैठाय और मध्य धारा में
नाव कूं छोडि दीये तो उह कहा करे ॥ तहां खेवट ही सहाय
होय तो पार लागे ॥ और उपाइ नाहीं तैसे ही हम तुमारे पुष्टि
मार्ग रूपी नाव में बैठे हैं ॥ अब तुमारे मन में आवे तैसी करो
१९ श्लोक ॥ निजाचार्य कुले जन्म विसर्ग विहितं मम:
विहिते चेन्नपि सदा दोषापिने हृप कुरु ॥ १९ ॥ याको अर्थ ॥
भलें तुम मेरो त्याग करोगे तो तुमसों हमारी कहा कछु च
लत है ॥ परंतु यह मैं कहत हों जो निज हमारे श्रीवल्ल
भाचार्यजी के कुल में हमारो जन्म भयो ॥ सो कहा अर्थ हो
तुम ने हमारो जन्म श्री आचार्यजी के वंस में दीयो है सो
कहा प्रथम नाहीं जानत हते ॥ अब छोडत हो ॥ ताते यह
तामो कों वडी है ॥ जो तुम कहो जो तुम कहा करोगे सो
जानी नाहीं जात ॥ मो में तो सदा दोष करि कें पीडत
भयो हों ॥ ताते कृपा ही करो ॥ यह निश्चय निर्धार है तुमारी कृ
पा ही ते हमारे सर्व कार्य सिद्ध होइगो ॥ २० श्लोक ॥ असंग: स
र्वथा दुष्ट सत्संग सहितोप्यहं यथा रापिपणिपनः कादि
श्लोको मृगादने ॥ २१ ॥ याको अर्थ ॥ हे नाथ असत्संग मो के
द्रसों दिसा ते घेरे हैं यह बडो दुख है ॥ मो को रंचक हू कुसंग
ते बुद्धि विगडै तो सर्व ओर ते मोकों दु:संग वेष्टत है ताते
मुहुं सर बुद्धि नास भई है ॥ और सत्संग ते सर्व धर्म को ताय
होइ सो सत्संग मो ते बहुत दूर है ॥ ताते मेरी कली हदु

संसारके मध्यमें बैठ्यो हूं। सो मेरी कहा दिसा है जैसें अरन्यव
नमें अकेलो छोडि दियो होत हाथी मृगादि पसुपंखी को ईनाहीं
तो उन वो न दिसा को जाय। तथा एकले मृगकों महा गंभीर
वनमें छोडि सो व्याकुल होय। अनेक सिंघकी दसो दिसा
गरज सुनि उह कोन दिसाकों जाउ। तैसेंई मोकों भगव
दीय सत्संगतें छोडे हैं दुःसंग दसो दिसा हैं। सो मैं कोन
दिसाकों जाउं सो उपाइ ही सूझत नाहीं॥२१॥ अब औरहूं
कहत हैं लौकिक दृष्टांत॥ श्लोक॥ जातपक्षाः खगा
स्वीयजननीं च त्यजंति हि। यथा तथा करालेस्मिन्
काले हं भगवज्जनैः॥२२॥ याको अर्थ मेरी कहा अवस्था है
जैसें खग जो पक्षी हैं ताके बच्चाकों जब पंख होइ तब वह पु
त्र अपनी जननी जो माता ताकों तजिकैं अनेक वनमें उडि जा
त हैं तैसेंई ह मोरपास भगवदीय कृपा वातो करते सो वह का
ल महाकराल रूप प्रतिबंध रूप सोई पंख भयो। ताकरि भगव
दीयजन मोकों छोडि गये। सो मैं कहा करूं॥ श्लोक॥ चिंता
पारावारपतितस्यात्रैव च मग्नस्य। एनं जनं वडवाग्नि
शरणं अवलंबनाचार्यो॥२३॥ याको अर्थ भगवदीय संग
विना मेरे हृदय में ऐसी चिंता है जाको पारावार नाहीं
चिंतारूप समुद्रमें मग्न हों॥ ताको दृष्टांत कहत हैं। जै
से कोई महा गंभीर पानीके समुद्रमें मग्न भयो पर्यो
होय। ताकों एक वडवाग्नि ही सहाय भूत है। औरको
ई नाहीं॥ एक घरी छणमें सगरो पानी सोख लेय तैसें ही
यह संसाररूप भव सागरमें पर्यो हों। यामें एक श्रीव
ल्लभाचार्यजी बिना सरण हों। ऐसें उपाइ हैं महाप्रभु अ
लौकिक अग्निरूप हैं। सो एक छणमें सगरी चिंता
संसार दुःख सब सोख लेयेंगे। यह उपाइ है सो एक
छणमें सगरी उपाय हैं॥ श्लोक॥
हाय सो हा प्रियाभक्त॥ हा गोपि

सि.प. यह वर्णन ॥ ४ ॥ या श्लोक ऊपर कहे या भांति श्री हरि
॥ ३ राइजी दैन्यता करत विप्रयोगात्मक ग्रिहस्थमें प्रगट भये
सो आरतिते विरहसों देहानुसंधान भूलिके वोले हा लक्ष्मणु
मदीगति हों फलात्मक नामक हे ॥ १ ॥ हा नंद पनुनंदरायके
पुत्र जैसें नंदराय हमें पाले तैसें तुम हू पालो यह दूसरो ना
म कुमारिकाके भावते ऊपर हा ब्रज कहे सो श्रुतिरूपा
के भावते ॥ २ ॥ पीछे कहे हा यसोदाजी के प्राणप्रिय पुत्र
यह श्रीयमुनाजीके भावते ॥ ३ ॥ पाछे कहे हा गोपीजनके
प्राण आधार यह मुख्य श्रीस्वामिनीजीके भावते ॥ ४ ॥
चारो नाम लेके कहे ॥ ए से प्रभु आपने करते विप्रयोगात्म
सुदुसेंहमपरे हे सो काढिलेहु ॥ या भांति कहे ॥ ४ ॥ ५
॥ श्री हरिराइजीकृत सिक्षापत्र को विवृत्ति टी
श्री पत्र १० संपूर्णम् ॥ १८ ॥ अब ऊपर दैन्यता
करि दैन्यते विप्रयोग प्रगट होइ ताको अनुभव क
रें सो यह सर्व भगवद् धर्मसवसिद्ध होइ सो बुद्धि ते न
प्रकार होइ सो आगे सिक्षापत्रमें कहत हैं सो ॥ ॥ बुद्धि
नासक कालोयं सर्वेषां समुपागतः ॥ अतो हि सर्वथा
गोप्यं बुद्धिरत्नं सुबुद्धिभिः ॥ १ ॥ याको अर्थ ॥ ॥ आप श्रीहरि
राइजी कहत हैं जो यह कलिकालमें वर्तमान हैं सो
सबकी बुद्धिको नास भयो हैं काहेते कलियुगमें वि
चार जो और धर्मको लेइगो ताजीव भ्रष्ट न होइगो अ
नेक धर्ममें एक धर्म न भयो तो कहा बिगडत है ताते बु
द्धि हरि लीयो बुद्धि नास भयें ते सबके धर्म बुद्धि ते करि
ये सो ताकातें हरि लीयो तब सुंदर सारे धर्मको नास
भयो कुबुद्धि ते विपरीत आचरण करे तातें श्री हरि
राइजी पुष्टिमार्गीय वैष्णव सो कहत हैं जो तुम साव
धान होइ रहियो यह काल सर्व बुद्धि हरनको आयो हैं
ताते सुबुद्धि ते वैष्णव हैं सो अपनी बुद्धि रत्न को वेदी

मेंधरि इतनने राखियें॥ काहूसों न जतनाईये तो रत्न रहें
नाहीतो चोर लेजाय॥ तैसेई जो आपनी वैस्नव सुंदर
बुद्धि पाइकैं लेकरि राखोगे॥ तिनहीकी रहेगी॥१॥ श्लो
क॥ सत्संगालसस्मरणांशरणागतिसाधनेनहाभावे
कृतिसर्वाप्पतौवैपथमेनिहित याको अर्थ॥ अब श्रीह
रिराइजी बुद्धिरक्षणकौ विशेष वर्णन करत हैं॥ सदा पुष्टिमा
रगीय वैस्नवके सत्संगमें रहैं॥ और अपने मनमें ध्यान
करि श्रीहलसके स्वरूपको स्मरण करें॥ और श्रीहलसके
सरणकी भावना सदा मनमें राखें॥ अष्टाक्षर श्रीहलस
मंत्रमें सरणपद कहे॥ सो सरणकी भावना करें॥ काहेतें
भावविना जो क्रिया करें॥ सर्व वृथे हैं॥ तैसें राखेमें होमें
नाको कहा फल तैसेई भावविना जो करें॥ सो सब वृथेही
हे॥ श्लोक॥ अतएकोकमाचार्यैस्वकीयकरुणात्मभिः॥
बुद्धिप्रेरककृष्णस्यपादपद्मप्रसीदतु॥२॥ याको अर्थ न
हां कोऐव है जो यह बुद्धिरक्षणकौ प्रकार तुम सही कहत हो
वैनहूं सुनेंहो॥ तहां श्रीहरिराइजी कहत हैं॥ जो श्रीआचा
र्यजी महाप्रभुजी सुखतें कहे हैं॥ जो बुद्धिप्रेरककृष्णस्य
पादपद्मप्रसीदतु॥ जो बुद्धिप्रेरककृष्णस्यपादपद्मप्रसी
दतु॥ जो बुद्धिप्रेरक श्रीकृष्ण हैं॥ तिनके चरणारविंद
प्रसन्न कीना तें सुंदर बुद्धि होत है॥ तातें मन वचन क
येकरि श्रीकृष्णकी सरण जो कोउ देगो॥ तिनके चरणा
रविंदकी प्रसन्न की तातें सुंदर बुद्धि होत है॥ तातें म
वचन कायेकरि श्रीकृष्णकी सरण जो कोउ देगो॥ ति
चरणारविंदकी प्रसन्न की तातें सुंदर बुद्धि होत है॥ तनाको
तें मन वचन कायेकरि श्रीकृष्णकी जो ॥२॥
जो तिनकी सुंदर बुद्धि होउगी॥
उपकारोपि गायत्र्या ध्यान हेतु र्यमन्त्र॥
गायत्र्युक्त मर्जोन प्रतिमोदन:॥ छ॥ याको

हरिरायजी कहत हैं । जो गायत्री आसनाके बालकको देत
हैं । सो कउ उपकार प्रभुको है काहेते गायत्री उपदेसतें वेदके
कर्ममें योग्यता होय । तिसेई वैस्नवकी बुद्धि निर्मल होय सो
ऊ प्रभुको उपकार है । काहेते बुद्धि निर्मल होइ तो श्रीठा
कुरजीको ध्यान होय । सो ई गीतामें श्रीभगवान अर्जुनप्र
ति कहे हैं । बुद्धियोगके अध्यायमें सो आगे कहत हैं श्लो
क । ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते । बुद्धिस्थैर्य
हू ऐसे ही होत तिनसंसय ॥ १ ॥ याको अर्थ । भगवान अ
र्जुन प्रति कहे हैं । जो श्रीगीतामें दूसरे अध्यायमें ताक
रिकें बुद्धि स्थैर्य होय । ताकरिकें हरि जो भगवान हैं ति
नमें रति होय और बुद्धिनाय तो हरि हृदयतें जात रहे नि
श्चय । संसय आत्मा विनस्यति । संसयभयो अविश्वास
ताकरिकें आत्माको नास होय । ताहीतें गीताजीमें ए
कसगरो अध्याय बुद्धियोगको भगवान कहे हैं । काहे
तें सुन्दर बुद्धि होय । तब इसगरे धर्म बने । तप करे तो बुद्धिसो
होय रत तप हू बुद्धितें होय । स्नान तीर्थ दान इत्यादि म
र्यादा मार्गके साधन हू कर्ममार्गके साधन हू पुष्टिमार्ग
मेंहू । लौकिक कार्य सब हूं सुंदर बुद्धितें सगरे कार्य लौकिक
कार्य वैदिक कार्य सिद्ध होय । बुद्धि विना कोई कार्य सिद्ध न
होय । सो भगवद्गीतामें कहे हैं । सो आगे विस्तारसों बु
द्धिरल भेद कहत हैं । प । श्लो । का । न्नमास्यव गीता
यो सर्वनास निरूपित । अतो बुद्धि सुपरला भावभावन
कारणं ई या । का । अ । र्थ । बुद्धिनाभांतिनास होय बुद्धि
नासतें आत्माको नास होइ । सो भगवान गीतामें द्वि
तीय अध्यायमें यो ग बुद्धि कहे हैं । ध्यायतो विषयान्पुंस
संगास्तेषूपजायते संगात्संजायते काम कामात्क्रोधो
भिजायते १ क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिवि
भ्रमः स्मृतिभ्रंसात् बुद्धिनासो बुद्धिनासात्प्रणास्य

॥प्रकृतिवचनात्॥भगवानकहतहैं।हेअर्जुनजीववि
षयमेंप्रवर्तहोतहैं।सोइसंगतें।जबइसंगमेंसारीकूं
संगहोइमनवअनेकभांतिकेविषयकामादिप्रगटहो
यथाकथ्यादिभयतेंक्रोधहोइ।क्रोधादिकतेंमोहप्रगट
होइमोहकरिस्मृतिभ्रमहोइ।अग्रहानतेंलोकिकसंस
रीकोंअपनोजानेंतिनकोपालनार्थअपनीपोष
नार्थखोटीक्रियाकरें।याभांतिस्मृतिकेभ्रमनतेंबुद्धि
कोनासहोइबुद्धिनासतेंआत्माकोनासहोययहव
होतामेंयहसिद्धांतभयोजोइसंगतेंकामहोइक्रोधतें
मोहहोइमोहतेंविस्मृतिवितेंभ्रमनहोनाइनासना
हीजबबुद्धिजाया।तबनासहोइ।यातेंबुद्धिकीरहा
करेंबुद्धिहैसोभगवद्भावकेभावनमेंकारनहैसो
बुद्धिकोनप्रकारसुंदरहोया।सो।आगेंवर्णनकरतहैं
महाप्रसादादितें।श्लोक॥प्रसादभलीभांतिसें
वनाकरगोरपितन्तसंगेनसदाइहलकथाश्रवणकीर्तने
भाषाकोअर्थ॥अवश्रीहरिरायजीकहतहैं।जोऊपरकहे
जोऊपरकहेजोबुद्धिकीरहायाभांतिकरें।यसमर्पितव
सुमेरवकहे।अपनोमनचलायमानकरें।सदामह
प्रसादभक्षनकरें।औरश्रीहरिकीसेवानित्यकरें।औ
रभगवदीयकोसंगकरें।दुःसंगकोत्यागकरें।श्रीकृष्ण
कीलीलातथानामकोकीर्तनकरेंतोबुद्धिनिर्मलहो
इप्रभुस्वरूपमेंपधारें।यहसिद्धांतभयो॥७॥इतिश्रीह
रिरायजीकृतएकोनविंशोशिक्षापत्रताकीटीक
श्रीगिरिधरजीकृतसंपूर्ण॥१९॥आगेंबुद्धिरहा
रप्रकारकहे।परंतुकालदोषहूबडोहै।यहहनः
भगवानकृपाकरें।तातेंआगेंकालदोषहूनलागें
तेंआगेंबुद्धिहूसुंदररहैं।सोप्रकारकहतहैं।श्लोक॥
तेव्यःसर्वदाकृष्णो।विस्मर्तव्यंजगत्सुना।प्रपंचस

पाकालदेसकहै अरुऊद्रव्यादिकमेंसमारोपस्थिघरआ
यौ ऐसेद्रव्यकौसर्वस्वजाननो ओरमेरीसर्ववस्तुकोक
तोहूं यहअभिमानसोहम्भमताकरिरहितहोइ द्रव्यकौ
सर्वस्वजीवनप्रानजानै यहममत्वओरमेंहीग्रहस्ताश्र
ममेंजातमेंओरअनेककार्यमेंअपनेकोकर्त्ताजानैं य
हदोऊवाधकहै तातैममत्वअहंकारछाडै २ ओरसग
रेमंत्रमैंश्रीकृष्णकोएकनामहै सोईसर्वोपरमहामंत्र
जानै श्रीकृष्णशरणंमम ओरअनेकगुणहै सोउश्री
कृष्णकीअनेकलीलाहै तिनहीकोगुनगानभावना
मुख्यहै सोअष्टमस्कंधमैंश्रीशुकदेवजीकहैहै मंत्रतंत्र
स्वतश्छिद्रंदेसकालार्हवस्तुत सर्वंकरोतिनाश्छिद्रंदेस
कालाईवस्तुतः सर्वंकरोतिममसंकीर्तनेनतव १ याभांति
श्रीकृष्णनामलीयो कीर्तनसर्वदेसमैंअधिकार सर्वोप
रसाधनकरिचुकौ श्रीगुसांईजीविज्ञप्तिमेंकहेहै हरेरक्ना
मनिव्यक्तिर्येहश्रुतिरहेसदा गुणपरमिपद्यदानार्थेतनथै
नाशुनान्यथा १ श्रीकृष्णकेसेहै वेदस्तुतिकोसारहै सो
श्रीकृष्णकीक्रियायाहीतेंलीयोजायअन्यथानाहीगा
तेमेंनहीश्रीकृष्णकोनामसर्वोपरहै गुणहूश्रीकृष्णकी
लीलाकोसर्वोपरहै यवओरहूकहतहै लो[illegible]कर्मा
गतनपद्मसमको
हिसत्संगसाधनेमतः याको श्रीकृष्णकीसे
वाहै सोईसर्वोपरउत्तमसोउत्तमकर्महै जहांश्रीकृष्ण
कीसेवाकरी तहांसर्वसाधनसिद्धकरिचुक्यो सोअ
ष्टमस्कंधमेंब्रह्मानेकहीहै यथाहिस्कंधसाखानां
तरोर्मूलावसेचनं एवमाराधनंविष्णो सर्वेषामा
त्मनश्चहि इत्यादिवचनसोजाननो जेसेवृक्षकी
जडमेंजलसींचेतोसवडारपातहरीहोइ तेसेंही
श्रीकृष्णकीसेवाहीतेंसर्वसाधनसर्वलोकसंतु

१होइ।तातेंसगरेकर्मसेंमुख्यश्रीकृष्णकीसेवाहीनेंहैं।सर्वसा
धनकेसंग्रहरूपहें।२।षटपदार्थहृदयमेंधरेंतोसमर्थधर्मी
श्रीकृष्णसदाहृदयमेंतेंकबहूंबाहिरनजाय।श्रीकृष्णश्री
जीसाक्षातस्वरूपवल्लभकुलजहांविराजेंसर्वोपरतनमदेस
उहांजानैं।२।प्रेरकालतहींजानैं।३।जाघरीसत्संगहो
इसोइद्रव्यादिकसेंमेंदमेंहीकिनो।४।यहअभिमानत्याग
करें।५।श्रीकृष्णकोनामसर्वोपरमंत्र।६।श्रीकृष्णकी
लीलासोईसर्वोपरगुण।७।समस्तकर्ममेंश्रीकृष्णकी
लीलासोईसर्वोपरहैं।८।षटपदार्थसर्वोपरहें।सो
नवमिलें।तबमनमेंसहनकरिपुष्टिमारगीयवदीय
कोसंगहोइ।यहीसाधनहे।औरदूसरोसाधननाहीं
तातेंसत्संगपायो।सर्वसाधनकरिचुक्यो।३।नहांकोउके
हेंसत्संगदुर्लभहें।सोकहांमिलेंनहीकहनहें।श्लोक॥
कृष्णसांनिध्येरेशेतुयनास्तिदृतिसाधन।काल:प्रसंग
हेतुसुमिलितेसोह्रदेतिहि।७।याकोअर्थ।श्रीहरिरायजी
कहतहें।जोपुष्टिमार्गीयभगवदीयजहांश्रीकृष्णस
निध्यहैसमेंतिष्ठतिरहतहें।जहांश्रीकृष्णविराजतहैंत
हांभगवदीयहृदयनसेवार्थेंरहारहतहें।तहांकाल
कोप्रसंगनाहीहें।उनभक्तनकेमिलनेंकोलरहनक
रतहैंजोहेरवो।विपरीतिकालकोभलोकालभयो।इ
हांमेरोसामर्थ्यनाहीचलतहें।तातेंजहांश्रीगोवर्द्धनना
थजीसाक्षातस्वरूपहैंश्रीवल्लभकुलकोमंदिरहोइ।प्र
हांभगवदीयमिलें।तबसर्वकार्यसिद्धहोइयहसर्वो
परसिद्धांतहें।श्लोक॥सर्वस्यापयोगोपिसिद्धेत
सद्बुद्धिरात्मि॥
मिहि।८।याकोअर्थ।रासेंप्रभुऔरभगवदीयजहां

सुदरबुद्धिसवतादूसीकेसंगतेहोयअभिमानअहं
कारअज्ञानकरिनिवर्तहोइ प्रभुकोआश्रयसिद्धहो
इ तथाभगवदीयकोआश्रयकरैतोसर्वोसिद्धिहोइ अ
वश्रीहरिकहतहे श्लोक कृष्णनामस्वरूपादिज्ञानंतु
तत्रत्यहि भगवत्सेवनंवापिपुरुषार्थस्तदेवहि टी
याकोअर्थ श्रीकृष्णकेनामकोश्रीकृष्णकेस्वरूपकोज्ञा
नतबहोय तबश्रीकृष्णकीसेवाकोपरमपुरुषार्थरूपफल
रूपसर्वोपरजानें तबप्रभुकृपाकरें तबहीजान्योजा
य नाहीतेसिद्धांतमुक्तावलीमेंकहेहें कृष्णसेवासदाका
र्यामानसीसापरामता श्रीकृष्णकीसेवासदाकरें फलरू
पजानिमनलगाइकेकरें तबश्रीकृष्णप्रसन्नहोइ अपने
स्वरूपानंदकोअनुभवकरावें तबमानसीसिद्धहोइ
तातेंपरमपुरुषार्थरूपजानिभगवत्सेवाकरनी टी
श्लोक यदातथाविधापेतोइत्थंतेसर्वसाधनात अतः
सत्संगएवास्मिन्मार्गेसर्वसाधनं १० याकोअर्थ ऊ
परकहेजोश्रीकृष्णकीसेवातेनामस्वरूपकोज्ञानहो
इ नाहीभांतिसेंनजनकीसेवातेभगवदीयकेस्व
पकोज्ञानहोइ मनलगाइसर्वोपरजानिताइसीकी
सेवाकरें तबताइसीकेस्वरूपकोज्ञानहोइ प्रभुरूपा
होकरें अबश्रीहरिरायजीकहतहेंजोहमारेयहपुष्टिमा
र्गमेंतोसर्वस्वएकसत्संगहीसर्वोपरसाधनहे निश्च
यहै ताहीतेंनवरत्नमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुक
हेहें निवेदनंतुस्मर्तव्यंसर्वथाताइसैजनैः तातेंभ
गवदीयकोसंगकरनो १० श्लोक तदभावेसर्वथै
वनाकिंचिदिहसिध्यति तस्मात्प्रयत्नकर्तव्यःसत्सं
गायसुबुद्धिभिः ११ याकोअर्थ ऊपरकहे भांभांति
भगवदीयमेंभावसिद्धिभएतेंसर्वसिद्धहोइ एसेंतदी
यकेसंगबिनाकिंचितनामकछुहूसिद्धिनाहीहोइ

तातें सर्वथा प्रयत्न करिकें भगवदीयके सत्संग करत हैं। सत्संग
करत हैं। सत्संग करे सो ऐसें सब सुबुद्धि हैं। तथा सत्संगतें
सुंदर बुद्धि आवै। तथा जो भगवदीयकी सुंदर बुद्धि होइ
तिनको संग करें। एकादश स्कंधमें भगवान कहे हैं। निरो
धयति मां योगो न सांख्यं धर्म उद्धव॥ न स्वा
ध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तं न दक्षिणा॥१॥ व्रतानि यज्ञ
छंदांसि तीर्थानि नियमा यमा॥ यथावरुंधे सत्संगः स
र्वसंगापहो हि माम्॥२॥ या भांति अनेक साधन करिकें भग
वान नांही वस होत हैं जैसें सत्संग करिके वस होत। तातें स
त्संगको यत्न सर्वथा पुष्टिमार्गीयकों करनो है। ऐसो
कहि वर्णन करि आचार्य हरिस्थाने तदीयकों अदूरे वि
प्रदेशे वा यथा चित्तं न दुष्यति॥१॥ याको अर्थ। अब श्री ह
रिरायजी कहत हैं। जो हमारे श्री वल्लभाचार्यजी महाप्रभु
भक्तिवर्द्धिनीमें कहे हैं। अतस्थेयं हरिस्थाने तदीयैः सहतत्
परैः। अदूरे विप्रदेशे वा यथा चित्तं न दुष्यति॥१॥ इति व
चनात्॥ तातें हरिस्थान श्री गोवर्द्धननाथजी विराज
त हैं तहां स्थिति होइ रहे हैं। तदीय भगवदीयसों मिलिकें
रहें। पास रहिकें सेवा करे। जामें चित्तमें कोई दोष न होइ
या भांति रहें तो होत निकटमें चित्तको दोष होइ तो नेक
दूरि रहें जामें दरसन नित्य बने चित्तमें दोष न होइ या
भांति भगवदीयसों मिलिकें रहे हरिस्थानमें। श्लोक॥ चि
त्तदोषे कथं सेवा चेतस्तत्प्रवणं भवेत्। अतो विचार
कर्तव्यः सर्वथैव कृतं वा सहेत॥१॥ याको अर्थ॥ जब चित्त
में अनेक भांतिके दोष उत्पन्न होइ तब सेवा काहेकी
सो श्री आचार्यजी सिद्धांतमुक्तावलीमें कहे हैं। चेतत्प्र
वणं सेवा तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजा॥ तनुजा वित्तजा मन लगा
इकें करे तो तब मानसी सिद्ध होइ। सो जैसें नदीको प्रवाह रा

सुंदरबुद्धि सबताडूसीके संगने होय अभिमान अहं
कार अज्ञान करि निवर्त होइ प्रभुको आश्रय सिद्ध हो
इ तथा भगवदीयको आश्रय करै तो सबै सिद्धि होइ अ
व श्रीआरहुक हत है श्लो ॥ कृष्णनामस्वरूपादिज्ञानं तु
ततरव हि भगवत्सेवनं वापि पुरुषार्थस्तदैव ही ॥
याको अर्थ ॥ श्रीकृष्णके नामको श्रीकृष्णके स्वरूपको ज्ञा
न तब होय तब श्रीकृष्णकी सेवाको परमपुरुषार्थरूपफल
रूप सबौपर जानें तब प्रभुकृपा करैं तबही जान्यो जा
य ताहीते सिद्धांतमुक्तावलीमें कहे हैं ॥ कृष्णसेवा सदा का
र्या मानसी सा परा मता ॥ श्रीकृष्णकी सेवा सदा करै फलरू
प जानि मन लगाइकै करै तब श्रीकृष्ण प्रसन्न होय अपने
स्वरूपानंदको अनुभव करावैं तब मानसी सिद्ध होइ
ताते परमपुरुषार्थरूप जानि भगवत्सेवा करनी ॥ ९ ॥
श्लो ॥ यदा तथाविधांये तो इस्यंते सव्यनायता ॥ अतः
सत्संग एवास्मिन्मार्गे सर्वसाधनं ॥ १० ॥ याको अर्थ ॥ जो ऊ
परके है जो श्रीकृष्णकी सेवा ते नामस्वरूपको ज्ञान हो
इ ताही भांति सं नजनकी सेवाते भगवदीयके स्वरू
पको ज्ञान होइ मन लगाइ सबौपर जानि ताडूसीकी
सेवा करैं तब ताडूसीके स्वरूपको ज्ञान होइ ॥ प्रभुकृपा
ही करैं अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो हमारे यह पुष्टिमा
र्गमें तो सर्वस्व एक सत्संग ही सबौपर साधन है ॥ निश्च
य है ताहीमें नवरत्नमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु क
हे हैं निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा ताडृसैर्जनैः ॥ तातें भ
गवदीयको संग करनो ॥ १० ॥ श्लो ॥ तदभावे सर्व
वना किंचिदिह सिध्यति तस्मात्प्रयत्नः कर्तव्यः सत्
गाय सुबुद्धिभिः ॥ ११ ॥ याको अर्थ ॥ ऊपर कहे भाभा
भगवदीयमें भाव सिद्धि भये तें सर्व सिद्ध होइ एसे त
यके संग बिना किंचित्मात्र कछुहू सिद्धि नाही होय

तातें सर्वथा प्रयत्न करिकें भगवदीयके सत्संग करत हैं। सत्संग
करत हैं। सत्संग करें सो ई वैष्णव सुबुद्धि हैं। तथा सत्संगतें
सुंदर बुद्धि आवें। तथा जो भगवदीयकी सुंदर बुद्धि होइ
तिनको संग करें। एकादश स्कंधमें भगवान कहे हैं। निरो
धयति मां योगो न सांख्यं धर्म उद्धव। न स्वा
ध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तं न दक्षिणा॥१॥ व्रतानि यज्ञ
छंदांसि तीर्थानि नियमा यमा॥ यथावरुंधे सत्संगः स
र्वसंगापहो हि माम्॥२॥ या भांति अनेक साधन करिकें भग
वान नांही वस होत हैं। जैसें सत्संग करि वस हो। तातें स
त्संगको यत्न सर्वथा बुद्धिमान करिये। और निबंधमें श्लो
क। कृत्वा चोक्तमाचार्ये हरिस्थाने तदीयके। अदूरे वि
प्रकर्षे वा यथा चित्तं न दुष्यति॥१॥ श्याको अर्थ। अब श्रीह
रिरायजी कहत हैं जो हमारे श्रीवल्लभाचार्यजी महाप्रभु
भक्तिवर्द्धिनीमें कहे हैं। अतस्थेयं हरिस्थाने तदीयैः सहत
त्परैः। अदूरे विप्रकर्षे वा यथा चित्तं न दुष्यति॥१॥ इति व
चनात्। तातें हरिस्थान श्रीगोवर्द्धननाथजी विराज
त हैं तहां स्थिति होइ रहे हैं। तदीय भगवदीयसों मिलिकें
रहें। पास रहिकें सेवा करें। जामें चित्तमें कोई दोष न होइ।
या भांति सों दूर होत निकटमें चित्तकों दोष होइ तो अव
दूरि है। जामें रसकन नित्य वनें चित्तमें दोष न होइ या
भांति भगवदीयसों मिलिकें रहें हरिस्थानमें। श्लोक॥ चि
त्तदोषे कथं सेवा चेतस्तत्सर्वगा भवेत्। अतो विचार
कर्तव्यः सर्वथैव तत्र वा सहजना॥१॥ श्याको अर्थ॥ जब चित
में अनेक भांतिके दोष उत्पन्न होइ। तब सेवा काहे की
सो श्रीआचार्यजी सिद्धांतमुक्तावलीमें कहे हैं। चेतस्तत्प्र
वणं सेवा तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजा॥ तनुजा वित्तजा मन लगा
इकें करें तब मानसी सिद्ध होइ। जैसें नदीको प्रवाह रा
त्रिदिन धारा एकरस चलत है

एक रस भगवत्सेवा में लग्यो रहे सो सेवा में तो होइ तनु
जा वित्तजा करत में जब चित्त को दोष होइ तब आगे मा
नसी फलरूप कहा तें सिद्ध होइगी तातें श्री आचार्यजी
के वचनामृत को विचार एकांत में अकेले बैठि के करें
जो मैं कितनी सेवा करी मेरे चित्त में तो कछु दोष नाहीं उ
त्पन्न भयो या भांति एकांत में बैठि के अपने चित्त को
विचार करत रहें सो बुधा विचार्य मन्त्रोक्तं निधा
य हृदि सर्वथा स्वार्थे स्वयं कार्यो विचार एकवल्लभैः
१४ या श्लोक एकांत में बैठि के अपनी बुद्धि सों विचा
र करै सो श्री आचार्यजी महाप्रभु भांति वल्लभैः में कहे
हैं बाधसंभवनायां तु नैकांते वास इष्यते हरिस्तु स
र्वतो रक्षां करिष्यति न संशयः १ इति वचनात् यह
श्री महाप्रभुजी और भक्त वचनामृत को विचार अप
ने हृदय में सर्वथा ही करनो है तहां कोई कहे एकांत
में अनेक सुख दुःख आवें सो तहां रक्षा कौन प्रकार क
रे तहां श्री महाप्रभुजी कहे हैं जो हरि भगवान सर्व
था अपने भक्त की रक्षा करेंगे यह चिंता न करें सर्व
था एकांत में बैठि के अपनी सुंदर बुद्धि तें अपने चित्त
को विचार नित्य करें तहां कोई कहे प्रथम कहे नि
रंतर सेवा करें भगवदीय को संग करें पाछें कहे ए
कांत में बैठि के चित्त को विचार करे सो दोऊ एक सं
कैसे होइ तहां कहत हैं जो सेवा दर्सन के समय तो
सेवा स्मरन करे पाछें अनोसर में एकांत में बैठि के
चित्त को विचार करे या भांति भगवदीय सों मिलि
के रहे तो सगरे कार्य सिद्ध होइ १४ इति श्री हरिराइ
जीकृत शिक्षापत्र त्रिसप्ततमो टीका श्री गोपेश्वरजी
कृत संपूर्णम् ३० अब ऊपर कहे जो हरि स्थान में भग
वदीय के संग स्थिति होइ सेवा करे और एकांत

मैवेठिकें चित्तकौं विचार करैं तो धनकौं नहीं अपने
मनमें साधनकी भावना न करें यह मार्ग निसाधन
फलात्मक है। सो कौन भांति सो अव आगें कहत हैं।
श्लोक॥ निसाधनफलमार्गे वल्लभेनोपयुज्यते। सा
धनानां मनो माय मान्मेत्येवो हितागुतिः॥१॥ याको
अर्थ॥ अव श्रीहरिरायजी कहत हैं। साधन साध्य न
ही है कृपासाध्य है अपनो वल करि कोटानको
टि साधन करें ताकी सिद्धि नाहीं है साधन तो ग
कनामक रिकें आत्मा संतोष होय यह श्रुति में कहे हैं सो
मर्यादा भक्ति में कहे हैं। पुष्टिमें एक शरणाई प्रभुको मूले
तो आसुरावेस होय। और मर्यादामें एक नाम स्नेह नाथे
होइ यह भेद है। पुष्टिमार्गमें भगवान वरण करें तव फ
ल सिद्धि होइ। मर्यादामें जिनने साधन तिनने फल। यह निरूपण
पुष्टिमें प्रभुकी जिनने कृपा तिनने फल। किं
मपि॥ सो आगें स्वनिरूपण करत हैं॥२॥ श्लोक॥ यथैव हरिणा ते
तु सर्वस्व मूलं हि हरिर्वे रा मुच्यते॥ अव श्री ह
स्वकथा निष्ठतिवेजनः॥२॥ याको अर्थ॥ यह सिद्धांत है जो
रिरायजी कहत हैं। जो पुष्टिमार्गमें सो हरि केवल निहे
सर्वस्व मूल पुष्टिमार्गको फल सो साध्य नाहीं है जैसो ज
नहें। तातें जीवके साधन साध्य नाहीं है। तैसो फल सो वहन
जीवको भगवान वरण करें। तैसो फल साधन साध्य नाहीं है
न होत हैं। तातें जीवके साधन साध्य नाहीं। सो ई यह पु
जीवको पुष्टिमार्गमें वने प्रभुकी गति है। अन्यथा और नाहीं। ता
मार्गकी रीतमें निष्ठति है। याको ह
भगवान वरन सोय प्रकार सो करत हैं॥२॥ श्लोक॥ वरा
कारकी है। सो आगें कहत हैं॥ लीलास्थिते
धासादात् पर्यं पर्य विसेदृतः॥
नाहं ने ख्यातिपरंपरा॥३॥ या

जीकहतहैं जोवरनदोयप्रकारकोहै। एकसाक्षातएकपरंपरा सोयहदोयभांतिकेभेदहैं। श्रीकृष्णकीलीलास्थितिसृष्टिमेंहूंदोयप्रकारहै। साक्षातहूंवरनहैंपरंपराहूहै सोऊआगेंकहतहैं। श्लोक ॥ आचार्यद्वारकेतवैवंवरणांनहरेस्तत। लीलास्थ्येपिभतेषुदृष्टिसृष्टिषु सीक्षितो ॥ यां ॥ टीका ॥ अवश्रीहरिरायजीकहतहैं। जोश्रीवल्लभाचार्यजीद्वाराजीवकोवरणभयोहै। एसोवरणहरिजोश्रीकृष्णहूसोंहुनहनहोइ। तातेंहरिकेवरणकीरीतहूंश्रीआचार्यजीद्वाराजीवकोवरनकीरीतेहूं सोउनमेंहै। सोश्रीकृष्णकीलीलाप्रवृष्टिमेंऊत्पन्नभक्तकोंवरनदोयप्रकारकरकीयोहै साक्षातहूंपरापरातेंहूं सोआगेदोऊभांतिकोंवरणकहियतहै। ॥ श्लो ॥ सोसाक्षात्श्रुतियुहरिणावरनंवाहसुनपरंपराप्रकारेणमर्यादापुरुषोत्तमा ॥ यां ॥ टीका ॥ श्रीकृष्णावतारमेंसाक्षातवरणतोश्रुतिरूपाकोंभगवानआपुवरणकीयोहै। औरअग्निसत्त्वहनोसोहजारअग्निकुमारकोपरंपरा। मर्यादापुरुषोत्तमश्रीरामचंद्रजीद्वारायाभांतिलीलासृष्टिमेंहूंसाक्षातपरंपराकोवरणहै। ॥ श्लो ॥ अन्यथाप्यत्रभेदोस्तिदासनात्मीयतादिभि। आत्मीयत्वनावनारदासेदासत्वयाकृति ॥ यां ॥ टीका ॥ यहदोयभेदविनासाक्षातपरंपरायहदोयभेदविनावरनेहोइ। दासभावऔरआत्मीयभाव। आत्मीयभगवानकोसंबंधीनवयदोयऔरप्रकारआत्मीयभगवानकोहोइ। अन्यअवतारदसामेंदासभावविनाभगवानकोआत्मीयसंबंधनहोइ। सोदासत्वमेंदोयभेदहै। सोमर्यादापुष्टिकहतहै ॥ श्लो ॥ दासत्वेप्यस्तिभेदोहिमर्यादापुष्टिभेदत। अत्रैनजीवस्यानंतदासत्वाधिनिसर्गत ॥ यां ॥ टीका ॥ दासत्वभावमेंदोयरीतिहै। एकमर्या
७

दाभांति एक पुष्टिभक्ति यह दोय भेद हैं॥ और अन्य जीव हैं
दासत्व धर्म विना के स्वतंत्र ते प्रवाही हैं॥ तिनसों दासत्व
धर्म स्वतंत्र अधिक है॥ दासत्व ते आत्मीय प्रभु को संबंधी
होत है॥ श्लोक॥ यथा वृतिस्तथा सर्वे फलस्तस्य करोति
हि॥ मर्यादायां तु तानस्य भवेत्साधन तिष्ठता॥ टी॥ याको
अर्थ॥ जैसी जाकी वृत्त है जहां को जीव है जैसी क्रिया में
स्थिति है ताभांति श्रीकृष्ण फल देत हैं॥ सो पुष्टिप्रवा
ह मर्यादा में श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे हैं॥ रछ्यामात्र
न मनसा प्रवाहं सृष्टिवान्हरिः॥ वचसा वेदमार्गं ही
पुष्टिं कायेन निश्चयः॥ इति वचनात्॥ मनसे प्रगटी सो
सृष्टि प्रवाही॥ तिनको फल पर संसारी बंधन में प्रा
टी सो मर्यादा॥ वेद कार्य में कर्ममार्गीय भई तिनको
फल सत्यलोक पीछे मोक्ष॥ और भगवान के सरीरते
प्रगटी सो पुष्टिसृष्टि तिनको मन भगवत्सेवा में ल
गयो॥ तिनको फल स्वरूपानंद को अनुभव॥ याभांति
जैसे जीव जैसी क्रिया॥ तिनको ताई भांति श्रीकृष्ण फ
पा करत हैं॥ जिन जीवन को वरन भगवान मर्यादा में की
यो है॥ तातें जीवनकी निष्ठा साधन में होय गई यही वि
वारे जो फल तो साधन करे तो कछु फल मिले॥ यह
मर्यादा भक्ति॥ अब पुष्टि की रीति कहत हैं॥ श्लोक॥ पु
वनुगृह दृष्टिस्तथैव सकलं पुनः॥ वयं तु अनुग्रहाचार्य
हमर्यादास्या सहा दीया को अर्थ॥ पुष्टि में जीव को वरन
ावांन की रीति है॥ सो जीव प्रभु की अनुग्रह देखन
विकर्म न करे भगवद्धर्म ही करे॥ परंतु साधन को फल
सिंक वहू न लावे॥ निःसाधन होय प्रह्लाद ने जो प्रभु
करेगो ते सब मेरो कार्य होयगो॥ याभांति सब ठौर स
धर्म में प्रभु को अनुग्रह ही देखे॥ सो श्री आचार्यजी

पुष्टिमर्यादा सहित नहीं हैं भीतर पुष्टि रसमें मग्न हैं ऊपरते
मर्यादावत् मर्यादा के रक्षक हैं सो आगें कहत हैं ॥ श्लो
॥ अंगीकृतिः समर्यादैः सर्वैस्त्वंगीकृताः स्वतः ॥ अ
नस्तदुक्त मर्यादा स्थितिर्हितकारिणी ॥ १० ॥ याको अर्थ
॥ सो श्री गुसांईजी सर्वोत्तममें श्री आचार्यजी को ना
म कहे हैं अंगीकृता समर्यादा इत्यादि वाको तें सर्वे
त्वाजो पुष्टिमारगीय समस्त जीवनकों अंगीकार स्व
तः आपुही कीयो है नहीं यह श्री आचार्यजी महाप्र
भुनकी उक्ति आपु है श्री मुखसों कहे हैं जो पुष्टिमार
गीयहूं मर्यादा रीतिमें स्थिति होइ करे ऊपरते वेदमा
र्ग न छोड़े लोक वेद विरुद्ध कार्य करे तो श्री आचार्यजी
हितकरे पुष्टिरसदान करे तातें यह पुष्टिमार्ग लोक
विरुद्ध नाही है यह जाननो ॥ १० ॥ श्लो ॥ पुष्टिप्रभुत्वा
दस्माकं लौकिकपारलौकिकी सर्वा चिंता हरेरखनि
श्चिंताचं विभाव्यतां ॥ ११ ॥ याको अर्थ ॥ या भांति श्री हरिरा
इजी कहत हैं जो अस्माकं हमारे प्रभु ऐसे पुष्टि हैं यह
लौकिक वैदिक सर्व वेद मर्यादा संयुक्त भीतर वेव ल
पुष्टिरसको अनुभवमें मग्न हैं ताहीतें सर्वोत्तममें क
हे हैं जो श्री आचार्यजी वचन कहत हैं जो क्रियाकर
त हैं जो मनमें विचार करत हैं जो स्वरासलीलामें
आपुको तात्पर्य है ऐसे श्री महाप्रभुजी पुष्टिमारगी
य वैष्णवकी लौकिक वैदिक चिंता हरेंगे यह मनमें
निश्चय जानि निश्चिंतताकी भावना मनमें राखें तव
प्रभुमें मन लगै चिंता भगवद्भावमें बाधक है तातें नि
श्चिंत होइके करो यवस्थो रहै कहत हैं ॥ श्लो ॥ अतरा
वोत्तमाचार्यैः निजज्ञातः कथ्यते तोपलते निजा
वार्तावे श्री गोकुलेश्वरः ॥ १२ ॥ याको अर्थ ॥ ऊपर कहे ता
भांति निश्चिंत हो प्रभुकी इच्छा जानें सो नवरत्न ग्रं

यातें श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे हैं। सर्वेश्वरश्च सर्वात्मा
निजेच्छातः करिष्यति॥ प्रभु श्रीकृष्णजी कैसे हैं सो सबके
आत्मा हैं सबके ईश्वर सर्वोपरि हैं सबके अंतःकरणकी
जानत हैं तातें आपनी निज इच्छातें बिना मांगें सर्व सिद्धि
करेंगे तातें अपेक्षा बिना अपने जनकी चाहि करेंगे
हैं तो आर्तिवियुक्त दीनबंधु ऐसे गोकुलेश्वर श्रीकृष्ण हैं
तहां कोई संदेह करे जो प्रभुकी इच्छा विपरीत हैं तब सुख
कैसे करेंगे अरु करेंगे अन्यथा करेंगे ऐसे हैं सो विपरीत इच्छा
होय तब प्रार्थना करवे न करें यह कोई संदेह करें तहां
कहत हैं श्लोक॥ हरीच्छा विपरीतापि दासदुःखाय
नो भवेत। अनुकंपानिधानत्वाद्धरेर्विपरीतिवर्तने
१३ याको अर्थ॥ अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो हरिइच्छा
विपरीत है काहेतें जीव अज्ञान करि मनमें कछु तो
विकल्प है सो प्रभु नहू करे जैसें नारदको आहंकारी
की इच्छा भई तब भगवान न करन दीनी तब नारदजी
बहुत दुख पायो तब कृपा करिकें दुख दूरि कीनो तथा
प्रह्लादको हिरण्यकश्यप बहुत दुख दीनो सो प्रह्लाद
हू प्रभु इच्छा मानी सहे पाछें प्रभु दुख दूरि कीनो हैं त्य
को मारे तैसें ई जो कछु विपरीत इच्छा प्रभु परीक्षार्थ
करें प्रभु तो सबके आत्मा हैं सर्व आपुही तें बिना क
हैं जानत हैं सो दास सबको दुःख देखिकें आपु ई हृदयमें
तपायमान होत हैं जा भांति दासको मनोरथ है ता
ही भांति आपु प्रभु प्रवर्तते होइगे जा भांति दासको सुख
होइगो सोई आपु करेंगे तातें सुख हूमें प्रार्थना ना
ही करनी योग्य है॥१३ श्लोक॥ चांतिमात्रे मनुष्याय
प्रार्थना नविधीयते॥ कृपालुत्वे भवेत्ता निजाने
जनं न संदेहः स्यात्॥१४ याको अर्थ॥ अब श्रीहरि
रायजी कहत हैं जो यह पुष्टिमार्गमें आर्तिमात्र

पुष्टिमर्यादामाहिन हैं भीतरपुष्टिरसमेंमग्न हैं ऊपरते
मर्यादावेदमर्यादाके रक्षक हैं सो आगें कहत हैं श्लो
क ॥ अंगीकृतिः समर्यादैः सर्वेष्वंगीकृतास्ततः ॥ अ
नन्तदुःख मर्यादास्थिति हि हितकारिणी ॥ २ ॥ याकोअर्थ
॥ सो श्रीगुसांईजी सर्वोत्तममें श्रीआचार्यजीको ना
म कहे हैं ॥ अंगीकृतो समर्यादो इत्यादि वाकोतें सर्वे
याजो पुष्टिमार्गीय समस्त जीवनको अंगीकार सव
तः आपुही कीये हैं नहीं यह श्रीआचार्यजी महाप्र
भुनकी उक्ति आपुही श्रीमुखसों कहे हैं जो पुष्टिमार
गीय है मर्यादा की तिमें स्थिति होइ करे ऊपरते वेदमा
र्ग न छोड़ें लोकवेद विरुद्ध कार्य करे तो श्रीआचार्यजी
हित करें पुष्टिरस दान करें तातें यह पुष्टिमार्ग लोक
विरुद्ध नाहीं है यह जाननो ॥ १० ॥ श्लोक ॥ पुष्टिप्रभुत्वा
दस्माकं लौकिकपारलौकिकी सर्वा चिंता हरिरवनि
श्चिंतां विभाव्यतां ॥ ११ ॥ याको अर्थ ॥ याभांति श्रीहरिरा
इजी कहत हैं जो अस्माकं हमारे प्रभु ऐसे पुष्टि हैं यह
लौकिक वैदिक सर्व वेद मर्यादा संयुक्त भीतर वे व
पुष्टिरसको अनुभवमें मग्न हैं ताहीतें सर्वोत्तममें क
हैं जो श्रीआचार्यजी वचन कहत हैं जो क्रियाकर
त हैं जो मनमें विचार करत हैं सो सब रासलीलामें
आपुको तात्पर्य है ऐसे श्रीमहाप्रभुजी पुष्टिमार्गी
य वैष्णवकी लौकिक वैदिक चिंता हरेंगे यह मनमें
निश्चय जानि निश्चिंतताकी भावना मनमें राखें तव
प्रभुमें मन लगे चिंता भगवद्भावमें बाधक है तातें नि
श्चिंत होइकै करो यह वर्णन करत हैं ॥ श्लोक ॥ आता
वोत्तमाचार्यौ ॥ निजेच्छातः करिष्यति ॥ जो पलते निजा
वार्तिवंधु श्रीगोकुलेश्वरः ॥ १२ ॥ याको अर्थ ॥ आपके हैं ता
मों निश्चिंत है प्रभुकी इच्छा जानें सो नवरत्नग्रं

यातेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेहैं।सर्वेश्वरश्चसर्वात्मा
निजेच्छातःकरिष्यति।प्रभुश्रीकृष्णजेसोहैं।औरसर्वके
आत्माहैं।सर्वकेईश्वरसर्वोपरहैं सर्वकेअंतःकरणकी
जाननहैं।तातेंआपनीनिजइच्छातेंविनामांगेंसर्वसिद्धि
करेंगे।तातेंअपेक्षाविनाअपनेजनकीआर्तिकरेंगे दी
हैं।तातेंदैवंधुहीनवंधु।ऐसेगोकुलेश्वरश्रीकृष्णहैं
नहांकोईसंदेहकरेजोप्रभुकीइच्छाविपरीतिहैं।प्रभुस्व
तंत्रहैंकर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं ऐसेहैं।सोविपरीतिइच्छा
होयतवप्रार्थनाकरवेंनकरें।यहकोईसंदेहकरेंतहां
कहतहैं।श्लोक॥ हरीच्छाविपरीतापिदासदुःखाव
लोकनात्।अनुकंपानिधानत्वान्नैवविपरीतिवर्तते
१२।याको।अर्थ।अवश्रीहरिरायजीकहतहैं।जोहरिइ
च्छाविपरीतिहैं।काहेतेंजीवअपराधनकरिमनमेंकछुतो
किकचाहे।सोप्रभूनस्वार्थजैसेंनारदकोव्याहकरिवे
कीइच्छाभईतवभगवाननकरनदीयो।तवनारदजी
वहुतदुःखपायो।तवकृपाकरिकेंदुःखदूरिकीयो।तथा
प्रह्लादकोहिरण्यकश्यपवहुतदुःखदीयो।सोप्रह्ला
दप्रभुइच्छामानीसहे।पाछेंप्रभूदुःखदूरिकीयो।हिरण्य
कोमार्यो।तैसेंईजोकछुविपरीतिइच्छाप्रभुपरीताय
करें।प्रभुतोसर्वकेआत्माहैं।सर्वआपुहीतेंविनाक
हेंजाननहैं।सोदासनकोदुःखदेखिकेंआपुहूदुःख [illegible]
करपायमानहोतहैं।जाभांतिदासकोमनोरथ [illegible]
हीभांतिआपुप्रभुप्रवर्त्तहोयगो।जाभांतिदास [illegible]
होयगो।सोईआपुकरेंगे।तातेंसुखरूप [illegible]
हीकहतहैं।१३।श्लोक॥ आर्तिमात्र [illegible]
प्रार्थनानविधीयतां॥कृपालुरेवभक्त [illegible]
जनानंदःस्याप्य।१४।याको अ[illegible]
राय तीकहतहैं।जोयहपुष्टिमा[illegible]

को कर्तव्य है जो मेरो प्रभु की सेवा स्खलन नाहीं जन तः म
नुष्य जन्म सगरो यह ही बीति गयो । या भांति आर्ति करें अ
लौकिक अलौकिक फल की प्रार्थना कछु न करें काहे
ते श्री हरि सो परम कृपाल हैं ताते अपने जन दास की
आर्ति देखि के प्रभु आपन नाहीं रहि सकें ताते निरोध ल
क्षण में श्री आचार्य जी महाप्रभु कहे हैं । श्लोक ॥ के
दासानां नानुदृष्ट्वा कृपायुक्तो यदा भवेत् तदा स
र्वं सदानंदं हृदिस्थं निर्गतं बहिः ॥ ३ ॥ इति वचनात् अ
पने जन की विरह आर्ति रूप क्लेस संयुक्त प्रभु देखि के कृपा
युक्त होत हैं सर्व प्राणी मात्र के हृदय में सदा आनंद रूप
भगवान हैं सो विरह प्रगट ई हो अपने दास को सुख देत
हैं ताते आर्ति यह पुष्टिमार्ग में सुख है सो आर्ति कौन
प्रकार करे सो आगे कहत हैं ॥ श्लोक ॥ आर्तौ विक्लि
यते यतु स्वगुण कथा हि कें ते वा स्वप्रभु के सिन्ना
ने प्रविशन्ति ध्रुवं ॥ ५ ॥ या श्लोक को अर्थ ताते श्री हरि राय जी
आर्ति करि सो ति पूर्वक कृपा करे भगवद् सेवा स्वगात
करैं वा नीति गुन गान करैं संयोग में संयोग के पद्य
नो सर में विप्रयोग के पद गान करैं अथवा दस्नी सुबो
धनी आदि कथा सुने मनन करि के श्री हरि सौ लीनली
को स्मरण करैं सो श्री आचार्य जी महाप्रभु कहे हैं जो
या भांति पुष्टि मार्गीय के सर्व स्थिति है ताको हमार
यह पुष्टि मार्ग को धर्म न निश्चय होय ताते कहे
सर्व या होइ तसा कोउ कहे जो वेद सास्त्र में अनेक
साधन कहे हैं ताको फल कहे हैं तुम साधन ने फल
नाहीं कहे प्रभु की कृपा ते कहे सो कहो या भांति संदे
ह होइ ताको कहत हैं ॥ श्लोक ॥ अन्यथा लप्यायेत्तु
कृल सा मुक्त साधकै न मुख्य फल संबंधस्ततो भवति
निश्चितः ॥ ६ ॥ या श्लोक को अर्थ श्री हरि राय जी कहे

जोयह पुष्टिमार्गकी क्रिया बिना जानेते साधनके
फलसिद्धि है। सो श्रीकृष्णकी सायुज्यमुक्तिको लाभ
होइ साधनकी रीति अनेक फल मुक्ति ही होय यह पु
ष्टिमार्गको मुख्यफल जानिके बहुत धर्म बहुत होय यह नि
श्चय सिद्धांत जाननो। अब पुष्टिमार्गीय फल जा भांति
होउ सो कहत हैं श्लोक॥ तद्वर्जितप्राप्ति नेयांतद्रूपाय
सेवनात् तत्स्वरूपात्सद्गुणानि वचोस्त्वं विचारणात्
॥७॥ याको अर्थ॥ अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो यह पु
ष्टिमार्गीय आर्ति विप्रयोगात्मक एसी आर्ति कोप
ष्टिमार्गीय आर्ति विप्रयोगाग्नि आर्तिरूप जो श्रीवल्लभा
चार्यजी श्रीकृष्णविप्रयोगाग्नि अन्यंत प्रीति
चार्यजी के चरणकमलकी सेवा करिये अन्यंत प्रीति
सों सो जब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके वचनामृत
बोधनी जी निवेधादि सगरे छोटे बडे ग्रंथको विचार
करि निश्चय करिये तब श्री आचार्यजीकी कृपाते आर्ति है
सो पुष्टिमार्गीय क्रिया साध्य आर्तिफल यह मार्गमें कहत
है॥७॥ अब श्लोकार्थ कहत हैं श्लोक॥ निवेदनानुस
धानात् त्यागात्संगस्य भावतः। अन्यथा न भवेदेव स
हतानं तत्साधने ॥८॥ याको अर्थ॥ अब श्रीहरिराय
जी कहत हैं जो निवेदनको अनुसंधान अष्टप्रहर राखे
निरंतर अहंता ममता कहूं नयास्त पुष्टिमार्गीय भगवदी
यके संग निवेदनको स्मरण करनो यहै ताको आर्ति
फल होइ और प्रकार अनन्तकोटान कोटि साध
न करे तोहु आर्ति सिद्धि न होइ तब श्रा
र्तिको आर्ति सिद्ध करे परंतु आर्ति सिद्धि न होइ॥
तिलभाई भगवत्फलकी आशा कहा करिये ताते
या भगवदीय के वचन कथे में लगे प्रीति आ
कर्तव्यो नान्यथा मिति निश्चयः॥८॥ याको अर्थ॥ अ
ब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो अपने ते आप
मार्गमें रहनो सो भावकी वृद्धि निश्चय होय

करिकैं श्रीआचार्यजी के वचनामृत ग्रंथ हैं श्रीसुबोधनी
निबंधादिक छोटे बडे ग्रंथ तिनहीं को मन लगाइकें पाठ क
रै वचन की विषे वारी धाराप्रवाह सगरे हैं तिन तब श्रीआ
चार्यजी कृपा करें परंतु गोप्य ही जिसो पाठ करें औरकोई
जो तिनाही और [illegible] प्रकार सो जनावे नाही बडाईप्रति
ष्ठा के लिये न करें गोप्य करें और लौकिक वैदिक में मन न ल
गावें या भांति पाठ करें तो ताको निश्चय आसक्ति सिद्ध होइ
और [illegible] न हू जो भक्ति वा विषे मूकं बावरं मतं वाचः
प्रश्नपादयद्दर्शनं ज्ञानं भवेत्तितः ॥ याको अर्थ
श्रीहरिरायजी कहत हैं जो ऊपर पुष्टिमारग के आर
ति की रीति कही सो ऐसो होनो तो बोहोत दुर्लभ है
या काल में तातें आश्रयसाधन नवनें तो मन में धैर्य करि
आसरो रहें तथा वाहिर रहें लौकिक में नकाहू
की सुने न काहू को कछु कहे यह या काल में श्रेष्ठ मत
है वानी जो वचनामृत आवे सो अपने मुख सो कहे
और काहू को कछु प्रयोजन नराखे काहे ते दुष्ट
लोग [illegible] के मुख की वानी को फल नाही होई
ताते दुर्जन दुष्ट को संग न करें तिन की वानी हू न सुनें
या भांति पुष्टिमारगीय भगवदीय रहे जो दुर्जन दुष्ट
प्राणी भगवद्वार्ता कहे तो वाहू भगवदीय वचनाम
त श्री के मुखसों सर्वथा न सुनें उलटो बाधक होत भा
लिखें तहां कहत हैं [illegible] नामिक गाय
त्री कल: [illegible]: बिसु [illegible] नत्सथ मातन्त्र वर्णाश्च
भाविन रोहि तिर [illegible] या [illegible] अर्थ श्रीहरि
रायजी कहत हैं जो सम्रक्ष क मुख तें गायत्री सुनें तें कछु
फल नाही होत हैं उलटो बाधक हैं काहे ते उच्चार
ण को स्वरूप भेद है वा [illegible] संगात गायत्री को वर्ण जो
अक्षर सो बहु [illegible] रूप होइ काहे ते वह गायत्री मंत्र

ाधिदैविकविकल्पआत्मस्वरूपहोइकेदेवनासर्वोत्तिराधा
होइजायकेवेवस्तभौतिकहोइजातेसेंऐवेसव
गुजेनकेमुखतेसुनिर्केतेकथावार्ताफलरूपनहो
ाबाधकहोइजैसेंगंगाजलसुंदरहैपरंतुनीचजा
ीचमारचांडालादिकेपात्रमेंहोइतोउहजलनें
ाश्चितकरनोपडेगोछुवेतोन्हानोपडेयाभां
तिपात्रमेंदहे॥२१॥श्लोकः॥ अतःपुत्तनश्रवणा
होइअत्पूतजायनें॥सावधानसमेंश्रेयसमीहकः
६
श्रवणकीर्तनात्॥२॥व्याख्याकोअर्थ॥ऐसोपुष्टिव
हर्मुखअन्यमार्गीयहोइतिनाकेमुखतेभगवद
धर्मसुनेंतेकछुफलनहोइ॥होयप्रतिबाधहोय
उलटोउलटोप्रायश्चितकरनोपडे॥जैसेंगंगाजी
कोपानीधाराछूटिकेंरहिजायनामेंभक्तकेंगंगा
जलजोनिवेंद्र्योहोइतोमहादोषहोइतिनाकोप्र
श्चितकरनोपडे॥तातेंपुष्टिमार्गीयवैष्णवसवतु
मसावधानरहियो॥जोवैष्णवपुष्टिमार्गमेंस्थिति
होइमार्गअनुसारक्रियाकरैयाभांतिसुंदरपात्र
हरिश्रवणकीर्तनप्रीतिकेकरैनोभक्तिमार्गमेंप्र
देखहोइयहपुष्टिमार्गमेंहाइदुर्लभसर्वोपरउत्तमोत
महेअबआगेपुष्टिमार्गीयभगवदीयकेलक्षण
कहतहैं॥२श्लोकः॥निरपेक्षहरिजनानिजाचार्य
पदाश्रिता॥श्रीभागवततत्वज्ञादुर्लभायवसूत्र
लो२व्याख्याकोअर्थ॥पुष्टिमार्गीयभगवदीयकेसी
होइनिरपेक्षजाकोकछुअपेक्षानाहीहोयपूर्ण
कामहस्यनेहोइलौकिकवैदिककछुइच्छानहो
नहोयऐसोनिरपेक्षहोयचतुर्थमुक्तिपर्यंतवा
सनानहोसांचोरहस्यजनाएकश्रीहरिजनको

न सबन में तें रा ॥ श्री कृष्ण ही में अनन्य भाव होइ औ
र अपने श्री आचार्य जी महाप्रभु के चरणकमल
को आश्रय मन में दृढ होइ ॥ और श्री भागवत्त को
तत्व जो श्री सुबोधिनी जी निबंध में ज्ञान होइ जो
रा से भगवदीय मिले तिनही को संग कर्तव्य है तहां
श्री हरिराइ जी कहत हैं ॥ जो या काल में ऐसे भग
वदीय मिलिवे को परम दुर्लभ है तातें ऐसे भगवदी
य न मिले तो और अन्य को संग मति करियो सो आ
गे कहत हैं ॥ श्लोक ॥ अतः सरणमंत्र हि कर्तव्य
मखिलं तत ॥ यदुक्तं तात चरणै रति बाक्याद्विध्य
ति रधुना ॥ या॥ याके ऊपर कहत हैं भगवदीय न ऐसी
जो न मिलें तो सरणमंत्र अष्टाक्षर महामंत्र श्रीकृ
ष्णसरणं मम ॥ या मंत्र को साधन करैं ऐसी भावना क
रै ताही करि अखिल कार्य सकल सिद्ध होइगो ॥ सो स
रणमंत्र है जब श्री आचार्य जी द्वारा सरण आयो तब
सिद्ध होइ ॥ सो श्री गुसांई जी विवरण में कहे हैं ॥ श्लो ॥
यदुक्तं तात चरणैः श्री कृष्णः सरणं मम ॥ तत्रास्ति
नो अवं न मोहि के परलोकिके ॥ श्री गुसांई जी कहत
हैं जो हमारे तात चरण श्री आचार्य जी महाप्रभु जी
की उक्त प्रगट की यो ॥ अष्टाक्षर महामंत्र ताकरि यह
लौकिके रोय कार्य सिद्ध होइ ॥ तातें हम निश्चिंत हैं
इत्यादि वचन को विचार श्री महाप्रभु जी की सरण
होइ ॥ अष्टाक्षर की भावना करें तो सगरे कार्य होय
निश्चय ॥ श्लो ॥ तथा विधेयं कृपया यथा गोव
र्द्धनेश्वरः स्वीयत्वं विराद्वैव निजरूपं नताश्रितः ॥ २५
या को अर्थ ॥ अब श्री हरिराइ जी कहत हैं जो ऐसे स
रां भगवदंस ऊपर करे सो यह कब होय जब श्री गो
वर्द्धननाथ जी कृपा करें तब होइ ॥ अपने आश्रित जा

निरूपनेनिजस्वरूपकौदांनकरौंप्रसन्नहोइकैंतवही
सर्वकार्यसिद्धहोइ॥सोयहपुष्टिमार्गसाधनसाध्यना
हीहै॥कृपासाध्यहै॥गिरिराजकेसंबंधपुलिंदीपस्न
कृपाकरि॥तेसैंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकेसंबंधतें
श्रीजीकृपाकरैं॥तवसर्वसिद्धहोइ॥२५॥इतिश्रीह
रिराइजीकृतसिंतापूरणकत्रिसनाकीटीकाश्री
गोपेश्वरजीकृतसंपूर्ण॥३॥अबवऊपरकहेजोश्रीजी
कीकृपाहोइ॥तवसर्वकार्यसिद्धहोइ॥सोपंचपर्वा
अविद्यानासहोय॥विद्यासिद्धहोइ॥तवभगवान
श्रीकृष्णहृदयमेंविराजें॥सोअविद्याइपंचपर्वाकौं
करिकहतहैं॥तातेंयहसिद्धांतश्लोककहतएकैं
वनेनकहतहैं॥अबप्रथमअविद्याकौप्रकारकहत
हैं॥काहेतें॥अविद्याजायतवविद्याइहृदयमेंआवेंजैसे
इसावतारमेंश्रीकृष्णनेभगवानकीअविद्यादूरिक
रि॥तवहृदयमेंपंचअविद्यास्थितिभई॥सोश्रीसुवो
धिनीजीमेंवर्णनहैं॥ताहीअनुसारश्रीहरिराइजीव
र्णनकरतहैं॥श्लोक॥कामाविष्टक्रोधयुक्तसंसारास
क्तिसंयुते॥लोभाभिभूतसततंधनार्जनपरायणा॥१
या॥अर्थ॥अबश्रीहरिराइजीकहतहैंजोअविद्याके
इतनेरूपहोइजाके॥हृदयमेंभगवानकेवइनही
स्थितिहोइ॥कामाविष्टो॥कामादिकविषयमेंलिप्त
आवेशहोइ॥सोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुसंन्यासनि
र्णयमेंकहेहैं॥विषयाक्रांतदेहानांनाविशःसर्वथा
हरिः॥इत्यादिवचनतेंजानोजोकामआविशनकरतो
१॥औरहृदयमेंक्रोधभर्योरहै॥सोवांडालकेस्वरू
पहै॥तहांचांडालरूपक्रोध मेंहोइतें
गवानहृदयमेंकैसेआवें॥ता
३॥यहलोकिकसंसारमेंआसक्त

प॰ देवघर स्नानादिके भोगपोषणमें अष्टप्रहर आसक्त हैं
तिनके हृदयमें भगवान नांही आवे ३ और लोभक
रि भरे हैं इत्यादिके लीये अपघात चोरी करत हैं स्व
हीको सर्व स्वपदारथ जानो हैं अष्टप्रहर कोडी जो
वे में मन है रहे सबंधीमें लोभ है ऐसेंके हृदयमें भग
वान न रहे ४ और धर्मार्जन धनके उपायमें परायण
हैं अपनो धर्म वेद वचन धनके लीये जतावे अने
क वार्ता सिद्धांतनके लीये करें अष्टप्रहर धन
हीमें मन राखे तिनके हृदयमें भगवान न रहे ५ अ
ब और हू कहत हैं लोक प्रतिष्ठा विरह नेह हैं नित्य प्र
नाय वर्जिते गोकुल भयाको नेविषयध्यान
तत्पर तो इत्याको अंधे रह्या करिके रहित हैं अनेक
जीवनको हिंसा देखाईको दुःख देखि प्रसन्न रह
त हैं या भांति हृदय रचक मनमें नांही हैं तिनके हृद
यमें भगवान न रहे ६ तैसें करिके जे रहत हैं भगव
दीवैष्णव मांजनको रचकहू स्नेह नांही है किन्नी
भगवद्वार्ता सुने परंतु रंचकहू भगवद्रसको द्रवी
भूत हृदयमें न होइ ऐसेंनके हृदयमें भगवान
न रहे ७ नित्य संतोष करिके रहित हैं वैष्णवको स
दा संतोष करें ऐसो एक लगई संतोष नाही ऐसे
जीव अष्टप्रहर संतोष विना हाय हाय यह कार्य न
भयो आज नोकँ छुनक मायो अबके सेवा सब ले
गो या भांति सदा संतोष करि रहित हैं तिनके हृदय
में भगवान न रहे ८ सदा सर्वदा संतोष करि संतोष
करि व्याकुल रहे स्त्रीपुत्रादिकनके प्रीति के सोक
ग्रहादिकमें सुख अथवा सोक जो केसें निर्वाह हो
सो या भांति बालपनते वृद्धपर्यंत सोक हि करि व्या
कुल रहे ९ और सदा भय करि हृदयमें कंपायमान

...अउ स्त्रीन्नादिकैकौंकालउर वैरादिककौ
उरसोतनसंबंधीहैंसंबंधीकोउर इत्यादितौ विके
मैंहकरिहृदयमैंतत्परहैं आवेसरहै नाके हृदयमें
भगवानकवैहलरहैं॥१॥विषयादिकेसाधनमैंत
त्परहै हैसो विषयनासिद्धिहोउ अनवध्यानहीमन
मैंअनेककुविचारकरै॥याभांतिकेकुकार्यकरेतौकोइवेस
वजानेतौआछौआछोखानपानहो आछौआछोकपड
पहरैपरस्त्रीकिमिलिवेकौविचारकरै॥याभांतिक
कुकार्यकरै॥उहनसामिल्लोइतबदुखपावे॥मनही
मैंध्यानकरै॥ऐसेविषयध्यानमैंतत्परहै॥नाकेहृद
यमैंभगवाननरहै॥११॥अवओरहूकहतहैं॥श्लो॥
अहंकारयुतकूरदुष्टपलेकपापकै॥रानेमागीत्रि
तःसर्वेसाम्यचितनभाव्यनोमायया॥ अर्थ॥ अहंका
रयुतहैं॥जोमोसमानऔरदूसरोकोईनाहीहै मेव
हुतसमर्थहों॥मेरेमेंबडीवैभवताहै॥मेसेवास्त्र
ग्यादुतनकरतहों॥मैंअनेकमनोरथकरतहों॥सो
सगरेकुटंबकोपालनकरतहूं॥मेरेसगरेआपाको
रीहै॥इत्यादिमनमैंअहंकारराखै॥नाकेमनमैंहृद
यमैंभगवाननरहै॥१२॥कूरहृदयहोय पराये बुरो
हृदयमैंविचारै॥मनमैंकपटहोय॥जोमेरोलावपरै
तो॥तबदुखदेहिंगो॥याभांतिकेरहदृष्टिहैं टेढोरहै
ताकोवोल्यो॥ऐसेकूरकपटीकेहृदयमेंभगवा
नरहै॥१३॥अबमनकेकार्यकोईकरै॥चोरीअन्याईको
कोबुराकरै॥ताकौपक्षपातकरै॥वाकोसाचकरिवे
रवी॥सवननतेआपुवैरबांधै॥याभांतिदुष्टमानीको
संगकरै॥ताकेहृदयमैंभगवाननरहैं॥ ज्ञानमा
नस्थितितथापुष्टिमार्गविनाकोउमा कमें
उपासनाइत्यादिमेंवाहैतो

सेवकभावनाहीहैं सर्वेगुणभगवानकेस्वरूपईकों
जानतनाहीहैं निराकारजानतहैं ताकेहृदयमेंभ
गवाननरहें १५ साम्प्रचिंतनदेवतान्त्रसामहादे
वइद्रादिकइत्यादिकोंचिंतनकरे इनसोंफलचा
हे याभांतिअन्याश्रयकरें ताकेहृदयमेंभगवान
नरहें ॥ अववओरहूकहतहैं ॥ अस्ता ॥ लौकिकविमु
खकेसजनवैमुख्यसमत हरलीलारोपरहे ॥ तथा
कर्मजडेपिच ॥ भ्रमा ॥ लौकिकावैशतश्रीकृ
ष्णविमुख भ्रष्ट अहरमिथ्याध्यानमिथ्याक्रियामि
थ्याभाषणा लौकिकसेंमग्नश्रीकृष्णतेविमुखतासे
के हृदयमेंभगवाननरहें १७ तथाहरिकेजनअन
न्यभगवदीयतेविमुखभगवदीयकीनिंदाकरें भग
वदीयकोदुखदेइ ऐसेकेहृदयमेंभगवाननरहें १८
श्रीकृष्णकीआज्ञानरमयविरोध तेसेंभगवानश्रीकृ
ष्णसोपातिसई सेवानिरोध तामेंदोषदृष्टि जोप्रभु
कामादिकेवसहें परस्त्रीयाभांतिचोरीमेंदोषदृष्टि
केहृदयमेंभगवानननरहें १९ औरकर्मजडकर्म
मार्गमेंतत्पर आद्यादिसेवासेवाप्रभुकोछोडिदेइ
कर्महीकोमुख्यजानेंभगवत्धर्ममेंप्रीतिनाहीऐसे
२० अबओरहूकहतहैं
मूर्छित ॥
तौ भयाचार्य
श्रीवल्लभाचार्य
जीतिनकेचरणकमलतें विमुखतासेकेहृदयमेंश्री
हरिनरहें सुंदरभगवद्वार्ता चोरासीइत्यादिवार्ताइ
त्यादिकोंदूषकनिंदकजोयहभाषाहैं अनेकमुत
करिकहतहैं इत्यादिभगवद्वार्तामेंजाकोविश्वास
नाहीहैं निंदकहैं लौकिककार्यमेंप्रसन्नहोइ

सेवक हृदयमें भगवान न रहें ॥ यह दूषण ॥ २ ॥ भक्ता विरोधे
ष अविद्या के वरते हैं । सो जाके हृदयमें रहें । ताके हृ
दयमें श्री हस्त कवहूं न आवें । भगवदावेश कवहू न हो
अनातें वे सेवक के यह दूष विशदोषतें रहित रहनो
यह दोय तें डरपत रहे और ऊ वे सेवक लालन के हृ
नहीं । जो इतनो गुन होइ तो वे सेवक के हृदयमें श्री कृ
ष्ण विराजें । सो तकरन हैं पाल्यो कृ ॥ दीनेष्पुदे निःप्रप
च लीला चिंतन तत्परो रचा वा पंसरणानि न्यंसने का
म विवर्जितो श्लाया को अर्थ ॥ दीन हो इके वो इक छुव
कहे है श्लोक ॥ आचार्य चरणोस में दैन्य त्वनोयस
धनं । श्री आचार्यजी महाप्रभु श्री सुबोधनीजी में कहे
है । जो प्रभु प्रयत्न करिवे को साधन । एक दैन्यता ही है
नातें दीन होइ तो ताके हृदयमें भगवान विराजें और प्रभु
हृदयहीं उ मन्नमें कपट छल छिद्र नहीं होइ प्रभु भाव
तें प्रभु को भजन स्मरण करें ताके हृदयमें भगवान
विराजें ॥ रत्यो निःप्रपंचादिक तें रहित होइ । काहू देह
संबंधी में मन न लगावें । एक प्रभु में मन राखे । कछु दे
ह प्रपंच को बाधक न करें । ताके हृदयमें प्रभु विरा
जें ॥ श्री हरि की लीला स्वरूप वाकी लीला दीनकी
लीला सह लीला हरि नेक हैं । तिनके चिंतन में तत्पर
है सो निरोध लक्षण में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं
प्रात्रा विष्ट चितानां सर्वामुरवैरिणः भगवान के गुण
तें में प्रविष्ट होइ अनेक अनेक दोष हृदय में तें सुरदैन्य
होइ तिन वैरी को नाश होइ अनातें लीला में जिन को चि
त्त परे । तिन के हृदय में प्रभु विराजत हैं ॥ आप ने पुष्टि
मार्गीय के आचार्य श्री वल्लभाचार्यजी के चरण के
अहर्निश चिंतन में हैं । सो श्री सर्वोत्तम

है असेयभक्तसेप्रार्थेचरणाब्जजोधनायनमः यामें
तिश्रीमहाप्रभुजीकेचरणाब्जमलकीरज॥ अपनेंस
र्वस्वधनजान्योहै॥ तिनकोंह्रदयधरामृतसिद्धहै॥ ति
नकेहृदयमेंश्रीछलविराजें॥ पा ओरलोकिकवैदिक
देहसंबंधीसर्वकामकामिनमैंवर्जितहैं॥ कहूमनकी
आसक्तिप्रभुविनानाहीं॥ ऐसेभक्तनकेसेवकके हृ
दयमेंप्रभुविराजें॥ ध्रुवजीरहूंकहतहैं॥ स्लोक॥ व्रजश्री
वरणांभोजरेणुप्राप्त्यभिलाषुकैः॥ गुणगानपरैर्हरे
र्नामार्थपरिभावुकैः ७ याकोअर्थ॥ व्रजभक्तस्वामि
नीजीकेचरणाब्जमलकीरेणुकेप्राप्तकी॥ अभिलाषा
निसदिनमेंहै॥ जोमोकोंव्रजभक्तनकेचरणकमल
कीरजकवप्राप्तिहोइगी॥ यहीमनोरथमनमेंरहत॥
जैसेउद्धवजीभ्रमरगीतकेअध्यायमेंकहेहैं॥ स्लोक॥
आसामहोचरणरेणुजुषामहंस्यांवृंदावनेकिम
पिगुल्मलतौषधीनां॥ यादुस्त्यजंस्वजनमार्यपथं
चहित्वाभेजुर्मुकुंदपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्यां॥ १॥
वंदेनंदव्रजस्त्रीणांपादरेणुमभीक्ष्णसः॥ यासांह
रिकथोद्गीतंपुनातिभुवनत्रयं॥ २॥ इत्यादिवचनकेभा
वविचार॥ ताकेहृदयमेंश्रीछलविराजें ७ श्रीछ
लकीलीलासंबंधीगुनगानकरें॥ सोद्वादसस्कंध
मेंश्रीशुकदेवजीकहेहैं॥ स्लोक॥ कलेर्दोषनिधे
राजन्नस्तिह्येकोमहान्गुणः॥ कीर्तनादेवकृष्णस्य
मुक्तबंधःपरंव्रजेत्॥ १॥ इत्यादिवचनकेगुनगानकरें
ताकेहृदयमेंप्रभुविराजें ८ कीर्तनकरावेंतामेंश्रीछल
यहनामकोअर्थविचारिकेंअनुभवकरें॥ अष्टादस
हासंमवोअष्टमहरके है षष्ठमस्कंधश्रीभागवतमें
कहेहैं स्लोक॥ अज्ञानादथवाज्ञानादुत्तमश्लोक
नामयत्संकीर्तितमघंपुंसोदहेदेधोयथानलः

णन्नामोच्चारणमाहात्म्यं हरेः पश्यत पुत्रकाः अजामि
लोपि येनैव मृत्युपाशादमुच्यत॥ औ॥ और अष्टमस्कंध
में कहे हैं॥ तेषां भागणमनुष्येषु कृतार्थोन्नपतिष्ठितं
स्मरंती स्मारयंती हरेर्नामकलौ युगे॥ अ॥ इत्यादिवचन
तें श्रीकृष्णही के नाम ही के अनुभवतें भगवान हृदय में
विराजत हैं॥ अब और हू कहत हैं॥ श्लोक॥ अनन्ये
नन्यसेवैकनिष्ठा तत्परतो गतौ भगवद्धर्मनिरतो विर
ते गुन संगिनि॥ व्याख्या॥ और जो॥ एक श्रीकृष्णही में अन
न्य भाव हैं श्रीकृष्णही की सेवा करनी श्रीकृष्णही को स्म
रण श्रीकृष्णही की कथा को श्रवण गुनगान मन वच
न तें कर्म करि पुष्टिमार्ग के धर्म में अनन्य हैं स्मृति में क
हे हैं हारीतस्मृतौ अनन्यसाधना यत्तु तथैवानन्यसाध
ना अनन्यभोगभोगाय ते तु सर्वाधिकारिणः॥ १॥ या
भांति अनन्य होइ नान्यं देवं नमस्कुर्यात् नान्यं देवं ति
रीक्षयेत्॥ नान्य प्रसाद मान है नान्य दायन नैवद्ने
न रखे से अनन्य होइ ताके हृदय में श्रीकृष्ण वि
राजे॥ १४॥ तथा अनन्य होइ पुष्टिमारगीय जे सेवैं स
व हैं तिन में पूर्ण निष्ठा करि उन भगवदीयन को संग
करि उनकी सेवा करैं सो भगवदीय गाये हैं॥ एक भर
सो व्रजभक्तन को दूजे नंदकिसोर को॥ और भांति वर्णे
ते श्री आचार्य जी महाप्रभु कहे हैं॥ अतः स्थैर्य हरि
स्थाने तत्तदीयैः सह तत्परैः प्रभु के स्थान में तदीय के सं
ग तत्पर रहे ताके हृदय में प्रभु विराजे॥ १५॥ और उभय
क धर्म में रति होइ यह पुष्टिमार्ग के धर्म में भी निष्ठा
होय और साधनादि में मन न लगावे और निवरत्य
थ में श्री आचार्य जी महाप्रभु कहे हैं पुष्टिमार्ग स्थि
तोय स्मान्न साधनो भक्तोऽखिला सेवाहि निर्गु
णा राजाबांधन वा हरिक्रिया॥ १६॥ याभांति गुरु की आ

गपीअमानपुष्टिमार्गमेंस्थितिहोइसंसारादिमेंसालीवा
रहेजैसेंजलमेंकमलहै।याभांतिभगवद्रूपमेंरतिहोय
ताकेहृदयमेंप्रभुविराजें।१४।औरविरक्तहोइलौकिक
तेसर्वप्रभुमेंसमर्पनकरिदेइ।१५।श्रीआचार्यजीमहा
प्रभुसिद्धांतरहस्यमेंकहेहैं।तस्मादादौसर्वकार्येस
र्ववस्तुसमर्पनं याभांतिजोवैष्णवभगवानकोसम
र्पनकरिकेंऔरतेविरक्तहोयरहेंतिनकेहृदयमें
प्रभुविराजतहैं।यवऔरहूंकहतहैं।श्लोक।तस्मात्
भावसंयुक्तेनरसेनपरमात्तिग अर्थवल्लभस्तली
ला वं च वल्लभोनाकुले।१७।याकोअर्थ।श्रीहृदयमें
आर्तिभरेंतेप्रभुकृपाकरें।सोनिरोधलक्षणमेंश्री
आचार्यजीमहाप्रभुकहेंहें।श्लोक।आत्मानं
दजनानंदरूपाश्रुक्तोपदाभवेन।तदासर्वसदा
नेस्रदृहस्थं निर्गतं वहिः।इतिवचनात्।भक्तकोआ
र्त्तिलेसंयुक्तभगवांनदरिवकेंकृपायुक्तहोइसर्व
केआनंददाता।ऐसेप्रभुवाहरप्रगटहोइदरसन
देइकेंअपनोअनुभवकरावें।तातेंआर्तितोयहपु
ष्टिमार्गकोफलहै।तहांप्रभुपधारें।१८।श्रीहृदय
मेंभावभरेंतेंजैसेंस्त्रीकोव्याहहोइतवहीभा
वहोइजोयहमेरोपतिहै।तैसेंजवश्रीआचा
र्यजीद्वारानिवेदनहोइतवश्रीहृदयमेंभावया
कोहोइ।सर्वस्वश्रीहृदयहीकोजानें।यहभावहोइ
तवभगवानहृदयमेंपधारें।१९।भगवत्स्वरूप
रसेसरसहोइ।औरअन्यमार्गीयरसतथावि
षयादिरसकरिहीनहोय।एकपुष्टिमार्गमेंहृदली
धरामृतास्वादः यहीरसकीसिद्धिचाहे।ऐसेरसि
कवैष्णवनकेहृदयमेंप्रभुपधारें।२०।अन्यलग
नीरवद्धिहोइ।अन्यमार्गीयकेलगनेदुरके

संगतेंविषयादिककेसंगतेविषयादिककेसंगतेबुद्धिच
लायमाननहोइ ॥ ऐसोदृढपुष्टिमार्गमेंहोइ ताकेहृ
दयमेंप्रभुपधारें ॥ १७ ॥ औरश्रीकृष्णकीलीलानानाप्र
कारकीतामेंचित्तचंचलहोइ ॥ ऐसीमेंलीलारसमें
मग्नहोइ ॥ सोसिद्धांतमुक्तावलीमेंश्रीआचार्यजी
महाप्रभुकहेहें चित्तस्तत्प्रवणंसेवा ॥ यहमानसी
जोचित्तएकरसनदीकेप्रवाहकीनाईश्रीहरिस्व
प्रभुकीलीलामेंरहें तहांसेवाकरीयाभांतिजाकोचि
त्तप्रभुकीलीलामेंचंचलहोइ ॥ ताकेहृदयमेंप्रभुप
धारें ॥ १८ ॥ औरश्रीकृष्णकेदरसनकोमननाऱ्वारव्या
कुलरहें सोश्रीभागवतएकादसस्कंधमेंजनकजी
कहेहें श्लोक ॥ दुर्लभोमानुषोदेहोदेहीनांक्षणभं
गुरः ॥ तत्रापिदुर्लभंमन्येवैकुंठप्रियदर्शनं ॥ इत्यादि
कवचनतेंजाननी ॥ जोयहमनुष्यदेहपरमदुर्लभ
हेंक्षणमेंभंगहोइगो ॥ तामेंभगवानकोदरसनप
रमदुर्लभहें ॥ सोएदेहसोहोतहें सोकुंभनदासजी
कोयहभावहें ॥ एकसमेश्रीगोवर्द्धननाथजीके
अंतरायसोंविरहतेंदिनइतुमसोंविनुदेखे ॥ ऐसेंदर्श
नमेंआर्तिहोय ॥ ताकेहृदयमेंप्रभुविराजें ॥ १९ ॥ सब
ओरसेंकरतहें श्लोक ॥ मनोरथसंतानकांतस्वैरा
सीन्यसंयुते ॥ एतादृशेषुहृदयेषुहरिर्विशन्तेक्षणात्
१ ॥ याकोअर्थ ॥ जैसेंव्रजभक्तनकोंभाप्रकारकेमनोर
थश्रीठाकुरजीकेसुखकेअर्थहोतहें ॥ बागावस्थया
भयाऐसोंमग्नहोतनमनधनसबआत्मभावप्रभुमेंहे ते
सेंहिपुष्टिमार्गमेंवल्लभकुलसर्वस्वश्रीकृष्णकोविनि
योगकरावतहें तैसेंइतनमनधनकरिकेसबप्रभु
हीकेकार्यमेंसेवामेंअनेकमनोरथ
करतहोइतोमनहीतेंनानाप्रकार

मानसी सेवा ताके हृदय में प्रभु बिराजे ॥ १ ॥ श्रोर तो कि
कवेद्रिय में देह संबंधी कार्य में सब ठौर आपने मन को
उदास राखे लौकिक में मालीन्न त रहे । संसार के दुख
सुख के मन उदासीन रहे तो प्रभु हृदय में है ॥ २ ॥ श्रा
च श्री हरिराय जी कहत है जो यह दोष बिसगुण बिद्याः
पजा वे सब के हृदय में आवे ताके हृदय में श्री कृष्ण प
धारे ऐसे ते स्वरूपानंद को अनुभव करावे जैसे वृजभ
क्तन को अविद्या दूरि भई विद्या सिद्ध भई तथा श्री कृ
ष्ण हृदय में बिराजे तैसे ई वे सब दोष बिसगुण दोष छांडि
द्या बिसगुण को धारन करे तो श्री कृष्ण निश्चय ताई
सुरा हृदय में पधारे ॥ ३ ॥ इति श्री हरिराय जी कृत सि
क्षापत्र ताकी टीका श्री गोपेश जी कृत संपूर्ण ॥ ३२ ॥
अब कुक विद्या अविद्या के प्रकार कहे है सो ब्रजभक्तन
के हृद प्रभु ही सिद्ध की रीत व भये भक्त को सामर्थ नाही
है प्रभु ही अविद्या दूरि कीये पाछे विद्या दीन कीये
सामर्थ आपनो दीये तब रास पंचाध्याई में प्रतिबं
ध सुवारे तो छांडि के संसार प्रभु पास पधारे अनुभव भयो
तैसे तहां पुष्टि मार्ग में जब प्रभु कृपा करे तब ही फल
होइ सो आगे कहत है लौकिक असि मार्ग प्रभो रि
सा मात्र सर्व काल शोक चाचरा व्यावन प्रति कू
लो पुलनि जे रुप्या को अ ये श्री हरिराय जी कू
हत है जो हमारे श्री वल्लभाचार्य जी के पुष्टि मार्ग में
हरि श्री कृष्ण सेव प्रभु की इच्छा ई सब कार्य में सा
हे देवी जीव को आधी के होइ सो दुःसंग में सब होइ त
थापि श्रीर को वरण होइ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शुद्र कोई
वरण होइ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शुद्र कोई वरन होइ त
था प्रतिकूल मार्ग को देवी व हम सुख होइ म्लेच्छ से
इ चांडाल मालाहर इत्यादिक होय सर्व धर्म करि रहि

सेऊ को प्रभु की इच्छा तें सरन आय। यह पुष्टिमार्ग की
को निश्चय पावै। तातें इच्छा ही तें मुख्य है। सो वानो
द्धि है। अलौकिकानन्द और अलौकिकान की वेटी भगवद् इ
त सरन श्री गुसांईजी की आज्ञा वा हरिवंसजी द्वारा
ले आतो। तातें इनकी इच्छा परमकारन है। तातें भग
इच्छा परमकारन नहै। तातें भगवद् इच्छाई परमकारन
मुख्य है यह निश्चय सिद्धांत जाननो। श्लोक॥ तहां
रतना ग्रस्तु दैन्यपारख्य ह्योकृतान। सदीनेषु निजामि
ह्य मनुकूलीकरोति हि रः॥ याको अर्थ॥ ताके वचन
को नास होइ तब हरि विके तन सेवा में अंगीकार होइ
काहे तें यह स्वरनधर्म है। लोक सेवा में प्रतिबंध है। प्रभु
संबंधी नाही है देह संबंधी है। जहां जीव जाके घरमें
गटे। सो ईश्वर न कहावै मैं पीछे वह ईश्वरता धर्म जात
रहै। फल जटा जहां जे अमल होइ तहां को वरनधर्म उह
आत्मा संबंधी नाही है देह संबंधी है जहां लौं देह
तहां तांई वरनधर्म। तातें भगवद्सेवामें कामना
है प्रभु को अंगीकार तन न कहवावै। तातें श्री आचार्य
जी महाप्रभु प्रगट होइ कें आत्मनिवेदन करवाय
ताकी रसार देह संबंधी वरनको नास भयो। जो मैं
फलानी जाति यह अहंता ममता छूटी। यह भाव
भयो जो मैं तो प्रभु को दास हों। यह दैन्य सिद्ध भयो
भावन को संबंधी भयो। सर्वभाव देह सर्वामें अंगी
कार भयो। ब्रह्म संबंध तें सुद्ध भयो। सो दीनता के
हि सभाव हु भयो। तब प्रभु की इच्छा आपु तें भई
जो अब तो यह मेरो भयो। अब तो छूटो न जाय। तब
तातें प्रभु की निज इच्छा भई। प्रभु अनु दी
सिद्ध भए। सो कहत हैं। श्लोक॥
मानो कि फल दुःख में मनो। रूपाव जायते

प.
९६

कष्टिद्धिनस्रोतान् ।। अथ याको अर्थ ।। अब श्रीहरिरायजी कह
तहैं ।। तव प्रभु श्रीकृष्ण अनुग्रह भए तव सगरो फल सि
द्ध भयो ।। यामें संदेह नाहीं है ।। ताते श्रीकृष्ण की कृपा को
कारण दैन्य नाहीं है ।। सो लौकिक में कछू प्रसिद्ध दिखि
यत है ।। जो काहू को कोऊ वैरी होइ वे सो कछू काम विगाडे ।। परंतु
आय के शरण पडे ।। तो मैं तो तुमारो हों ।। अब चाहो सो क
रो तब वह कृपा ही करे ।। मारयो न जाय ।। तैसे अनेक जन्म
ते जीव भूल्यो है ।। सो सर्व श्री आचार्यजी द्वारा समर्पन
करि कै दैन्य होय रहे ।। तो मैं श्रीकृष्ण को दास हूं ।। तव प्र
भु प्रसन्न हो कृपा करें ।। सो श्री भागवत एकादस
स्कंध में पिंगला वाक्य ।। श्लो ।। संसार कूप पतितं विष
ये मुषितेक्षणं ग्रस्तं कालाहिनात्मानं कोन्यस्त्रातुम
धीश्वरः ।। १ ।। और पुरुरवा ने विनती करी है ।। श्लोक ।। पुरु
ष्या दिष्टं चितं कोन्यो मोक्षयतुं क्षमः ।। आत्मारामेष्व
रक्तं ते भगवन्तं मधोक्षजं ।। २ ।। शुकदेवजी कहे हैं ।। श्लो
को ।। घोरे कलियुगे प्राप्ते सर्वधर्मविवर्जिते ।। वासुदे
वपरा मर्त्यास्तेन कृतार्था न संशयः ।। ३ ।। पुरुष्या दिष्टं चितं
कोन्यो मोक्षयतुं क्षमः ।। आत्मारामेष्वरक्तं ते भगवन्तं म
धोक्षजं ।। ४ ।। या भांति पिंगला पुरुरवा रही ।। और द्रुपदी
गजेंद्र जिन ने आर्ति करि सरन आए ।। तिन सवन को प्र
भु उद्धार करे ।। और कलियुग यह महा कठिन काल है
सर्वधर्म करि वर्जित है ।। ताते एक प्रभु को आश्रय करि
दैन्य ही करि कृपा प्रभु की होत है ।। यह सिद्ध है ।। ९ ।। अव
और हू प्रकार दैन्य को कहत हैं ।। श्लो ।। अथ नाहं दैन्यं
हि मार्गोक्षिन परसं साधनं मतं ।। अभिमानो दस्वापि
सततं नाहिरो ।। १० ।। अथ या को अर्थ ।। अव श्रीहरिरा
इजी कहत हैं ।। जो हमारे श्रीवल्लभाचार्यजी के मार्ग
में परम साधन एक दैन्य है ।। दैन्य भावना करणार्थ

सर्वसमर्पन हे ताते जाकों दैन्यता सिद्ध भई तिनकोंय
ह पुष्टिमार्ग को फल सिद्ध ही भयो। सो विवेक में श्रीगु
साँईजी कहे हैं। यादृसी ताद्रसी नाथ त्वत्पादाम्भोकरि
करौ। न द्वन्द्वं कथमाप्स्यसि करद्गोचरं नमा।२९ ह्या
रिवृद्रं न लो कृद्वे के कहे हे। जेसी तेसी तुमारे चरणा क
मल की पिकरी दासी हों। ताते आपनी जानि कृपा क
रि मेरे नेत्रन को दर्शन वेगि ही करावो। और श्री आ
चार्यजी महाप्रभु श्री सुबोधिनीजी में कहे हैं दैन्यता नो
व साधन। या भांति दैन्यता सर्वोपरि साधन है यह पुष्टि
मार्ग के फल में विरोधी येक सद् अभिमान ही निरंतर
प्रहीबाधक है। ताही ते श्रीआचार्यजी महाप्रभु विवेक
धैर्याश्रय में कहे हैं॥ अभिमानश्च संत्याज्यः स्वाम्यधीनत्व
भावनात्। विशेषतश्चेदाज्ञा स्यादन्तःकरणगोचरः
२ अभिमान तो सर्वत्र न होइ सो करें दासको नाही
कर्तव्य है। काहे ते स्वामी के आधीन की भावना दास
को कर्तव्य है। काहे ते स्वामी के आधीन की भावना दा
स को कर्तव्य है। सो अभिमान ते दासपनो जात है तो
तें बडो बाधक है। यह पुष्टिमार्ग के फल में विरोधी है
४ अब और हू कहत हैं। श्लोक॥ तो विज्ञाय प्रयत्नेन
परित्याज्यो फलार्थिभिः। शेषाः समस्तेन्द्रियाणां सा
धने रक्षनाय येन। ५ याको अर्थ॥ और प्रभु सो
फलार्थ विज्ञाति करत है। काहे ते लौकिक की प्राप्ति
ते लौकिक सुख तो सर्व इन्द्रियन को साधन नाहि
त है। सगरे साधन को नास है। सो निरोध लक्षण में श्री
आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं। संसारावेशदुष्टानां इ
न्द्रियाणां हिताय वै संसारावेश सो इन्द्रिय को
प्रिय है। ताते कछु फल न मागनो। सो विवेक
य में श्रीमहाप्रभुजी कहे हैं। श्लोक। प्रार्थिते

व· १०

किंस्वान्स्यां मिभिः प्रार्थसंशयात् प्रभुतें प्रार्थना करि
ये। का है तें स्वामीजो श्रीकृष्ण तिनके मनमें अभिप्राय क
ह्यो है हे प्रभु कहा जानिये कहा दान विचार्यो है देन कुं
और जीव बुद्धि तें कहा मांगे तो प्रभु अप्रसन्न होइ जो
सेतो बड़ो पदार्थ विना मांगे देतो यह तुच्छ मांग्यो तो तु
च्छ देतो या भांति प्रार्थना करें ते फल सेन्न ता होइ
लो विवेक सिद्ध करे तो सारी इन्द्री विमुख होइ जाइ
ता तें प्रार्थना प्रभु सों सर्वथा ही न करनी श्लोक आ
श्रयाश्रयमात्रेणनाशयिष्यति मत्र भु निजा वा
ञ्छितानां तु हो ष्वन्निस्वरूपनाईया केश्रयो ऊपर
कहे जैसे प्रार्थनाते फलको दान होइ नाही नासही
इ सो कहत है जो दामोदरदास संभरवारकी वार्ता
में है स्त्रीने रंचक अन्याश्रय कीयो सो पुत्र मरि
होय गयो ऐसो बाधक है श्रीगुसांईजी विज्ञप्ति में क
हे है श्लोक अहं बुद्धि ग्रसी संगी मांगी हतो
स्वयं अन्य संबंध गाधापीकं धरासक्वाधन्ते १ अ
न्य संबंध गंध होय तो गरो कटे प्रभु सो अन्या
श्रयन सह्यो जाय जैसे राइजी चंद्रिका पूजन गा
ये सो प्रभु को बुरी लागी तब तन्हा सुंदर सनसर्पन
राइजी को निगल गयो तब प्रभु की सरण होइ
प्रार्थना करी तब छुटे तातें अन्याश्रय महा बाधक है
और अपने श्रीवल्लभाचार्यजी के आश्रय ऐसे जो
भगवदीय जन है तिन में जो दोष दृष्टि जो को देखत
है भगवदीय को दोष देखि तिन को नास होइ निश्चय
जैसे अग्नि में पतंग जर मरत है अग्नि को कछु नाही बि
गड़त है तातें भगवदीय में दोष न विचारे जैसे अग्नि
सर्व सब में है परंतु सुद्ध है जैसे मसदेवजी विषपान
कीयो तो उन को कहा बाधक है ईश्वर सर्व जड चेतन्य

तोकहाबाधकहै तेसेई भगवदीयमेंहोयतु...
...नकोफलनासहोयहै श्लोक॥ संबंधमात्रनो
...मीभवतिदृणामानतः ग्रंतः स्वाचार्यमात्रैकश
...मीभवतिदृणामातः श्रंतः आचार्य आश्रिकेसंबंधमा
...त्तपुराश्रितैर २५॥ अर्थ॥ श्रोरश्रुश्रिकेसंबंधमा
...ते जोएकलणजोडारे सोईभस्महोयजाय याभें
...कहनो सोप्रसिद्धहीविषयनहें तैसेंईजोस्वाचा
...श्रीवल्लभाचार्यजीकेसरणमात्रतेसकलदोषभ
...सारवकलणमेंहोइतोजवश्रीग्राचार्यजीकेचरनन
...मलकोंदूरएकश्राश्रयकरेंताकेदोषभस्महोय
यामेंकहाकहनो उचितहीहैश्रीमहाप्रभुजीकेच
...एकमलकेश्राश्रयतेंदोषदूरिहोइ श्रोरदैन्य
...तासिद्धहोइफलरूप श्लोक॥ नजु श्रथोविबोधा
...थाविहिना निप्रयत्नतेः दुःखाः वर्जितैः संगसभा
...प्राप्तेरपि द्याको॥ श्रर्थ॥ यद्दुष्टिमार्गीयग्रं
...श्रीश्राचार्यजीमहाप्रभुश्रीगुसांईजीकेश्रादिलै
...सुबोधनीजीनिबंधश्रनुभाष्यटिप्पनीविद्वन्मंड
...नइत्यादिकहोइवेदेग्रंथश्रीसर्वोत्तमादिइनकेभाव
केबोधभयेतेंश्राश्रयसिद्धहोइ सोसर्वोत्तमग्रंथ
मेंश्रीश्राचार्यजीकेपुत्रश्रीगुसांईजीकहेंहें श्लोक
नदुक्तमपिदुर्बोधं सुबोधं स्याद्यथातथा इतिवचन
न वे सो परकहेहें जोजहांताईवेदकेश्रर्थकोबोध
नहोइ तहांताई प्रभुकीप्राप्तिनाहीं तहांताईप्रभुके
पानकरेसोयाकलिकेजीवनकोंतोवेददुर्बोधहें
जान्योनाहींजातहे ताकेलीयेश्रीगुसांईजीसर्वोत्त
...मगास्वकीए यामें १०८ श्रीश्राचार्यजीमहाप्रभुजी
केश्रलौकिकनामहें यहसर्वोत्तमकेजपकी
...निश्चयवेददुर्बोधहोय श्रो
कोदानकरे निश्चय

प॰ १

श्लोक॥ हलाधयामृतास्वादस्तिष्ठिरत्न नसंसयः॥ या
भांति नातें सर्वोत्तमकौं जपवैस्नवकौं आवस्यकतेम
है यस्त्रवरिसवौसुबोधहोइ॥ दैन्य होय आश्रय सिद्ध
होइ॥ तातें फलार्थ श्रीगुसांईजी प्रयत्न कीयो है तैसे
ही वैस्नवकौं हू प्रयत्न करि सगरे पुष्टिमारगीय ग्रंथन
कौं अवलोकन करनो॥ और दुःसंगकौ त्याग करें
सत्संगमासके यत्न करि अन्याश्रय होय दैन्य होइ॥ ताही
तें प्रथम स्कंधमें श्रीभागवतमें श्रीशौनकजी कहे हैं
श्लोक॥ तुलयाम लवेनापि न स्वर्गं न पुनर्भवं॥ भग
वत्संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुताशिषः॥१॥ या भांति
सत्संगबराबरि सुख न स्वर्गमें है न मोक्षहूमें है ता
तें सत्संग करे तो दैन्य और भगवदाश्रय सिद्ध होइ
॥ श्लोक॥ स्थैर्यसेवापरैरन्याश्रयत्यागविवर्ज
तो॥ कामक्रोधादिदोषैश्च परित्यागो हरिस्मृतिः॥ या
श्लोकार्थ॥ श्रीहरिरायजी कहत हैं॥ जो श्रीकृष्ण
की सेवा स्थिर होय॥ काहेतें॥ यह पुष्टिमार्ग
में परमफलरूप भगवत्सेवाही है॥ और श्रीभागव
त नवमस्कंधमें श्रीभगवान ने कहे हैं॥ श्लोक॥ मत्से
वया प्रतीतं च सालोक्यादिचतुष्टयं॥ नेच्छंति सेव
या पूर्णाः कुतोऽन्यत्कालविप्लुतं॥१॥ इति वचनात्॥ ए
से भगवत्सेवामें विश्वास कीरे हैं जो चतुष्टय मुक्ति
पर्यंत नाहीं चाहत हैं या भांति सेवामें पूर्ण होइ तिन
कौं काल नाहीं बाधक है या भांति श्रीकृष्णकी सेवामें
स्थिति होइ॥ और अन्याश्रय न करें देवता आदिक
काहिको आश्रय रंचक होइ तो फलको नास होइ
तातें अन्याश्रय न करें॥ ऐसो विचारण आपने मार्ग
कौ टेक कीर रहे॥ और कामादि विषय और लोभकौ
त्याग करें॥ काहेतें कामादि विषयन श्रीठाकुरजी

हृदयमेंतेंप्रधानहैं।औरलोभकरिसंसारासक्तिहो
तहैंसोलोभकरिकेंपापपुण्यविचारतनाहींहैंअ
पनोस्वार्थहीकेवलदेखै।ताकेवसहोइस्त्रादिकहूं
तन्यासहूंसंवंधीकुटंवतिनहूकीरक्षाकरतहै।ऐसे
लोभीऔरकामीकेहृदयमेंप्रभुनआवैं।तातेंकाम
लोभसदात्यागकरैं।तवदैन्यसिद्धहोयफलरूपाहै
प्राप्तश्रीहरिरायजीकृतसिक्षापत्रताकीटीकाश्रीगो
पेश्वरजीकृतसंपूर्ण॥३३॥अवरूपकहैंदैन्यमुख्य
है।सोग्रंथकेवोधतेसत्संगतेसेवातेंदैन्यहोय।सोसे
वाहूदोयप्रकारहै।एकमुखारविंदकीभक्तिसर्वोपर
रीकचरणारविंदकीभक्ति।सोआगेंदोऊभक्तिकोप्र
कारकहतहैं।श्लोक॥श्रीकृष्णःसर्वदासेव्यःफलप्रा
प्तस्वतःस्फुटः।मुखारविंदभक्त्यैववसौलोत्सेवरूप
या॥१॥याकोअर्थ॥अवश्रीहरिरायजीकहतहैं।जो
यहपुष्टिमार्गमेंतोसदासर्वदाश्रीकृष्णजीहीसे
व्यहैं।सोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुचतुश्लोकीमेंक
हेहैं।सर्वदासर्वभावेनभजनीयोव्रजाधिपः।इतिव
चनात्।सर्वदासर्वभावकरिव्रजकेअधिपतिश्री
कृष्णतिनहीकीसेवाकर्तव्यहै।स्वस्यायमेवधर्मो
हिनान्यःक्वापिकदाचन।।महाप्रभुजीकहेहैं
रावहमारोयहधर्महै।हमारोपुष्टिमार्गमेंजोकोइआस्थि
तहै।तिनकोयहीधर्महै।निश्चयश्रीकृष्णसेवाहीक
र्तव्यहै।औरकोईवसापिकोईकालमेंदूसरोसाधन
नाहीं।कर्तव्यहै नाईकरिकेंपुष्टिमार्गकेफलकीप्राप्ति
स्वतःआपुहीतेंसिद्धहोय।तातेंमार्यनाहूनहीकर्त
व्यसेवाहीकर्तव्यहैं।काहेतेंमुखारविंदकीभक्तिसों
सोलात्मस्वरूपसेवानेंसिद्धहोय
तम

प. मेंसाक्षात्कारहै प्रभुमुखारविंदरूपकी भक्तिकहतहैं
२ सर्वोपरहै और श्रीचरणारविंदकी भक्तिकहतहैं
श्लो० चरणात्मकभक्तौतु धर्मसेवात्मरूपया धर्म
द्वारातद्विशिष्टप्रभुप्राप्तो नसंशयः २ या श्लो०कौ अ
र्थ चरणात्मकभक्ति है सो धर्मसेवात्मकरूपहै जैसेश्र
गे ऐसो सिवनारदसनकादिकसबकोरिआरोहै
ताहीभांतिमर्यादासंयुक्त धर्मवत्करतो यहधर्म
द्वाराभक्तिहै ताकरिकेप्रभुकीप्राप्तिहै यामेंसंशयना
हीहै तहांसंदेहकोइकरैंजोऊपरमुखारविंदकीभक्ति
कहे धर्मसेवात्मकही द्वाराप्रभुकीभक्तिवताए तब
दोऊएकहीभई तबश्रीआचार्यजीमहाप्रभुप्रगटहो
इकैंकहाअधिकारकीनो याप्रकारसंदेहहोइ तहा
कहतहैं तोफलमेंबहुतभेदहै पुष्टिभक्तिमेंअधरामृ
तरसकोपान औरमर्यादाभक्ति धर्मरूप तासैमुक्त्या
दिफलहै सोआगेंनिरूपणकरतहै फलकोप्रकार
श्लो० तत्रसायुज्यसंबंधात्लोभामृतसेवने मु
खारविंदभक्तौतुसाक्षात्सेवनमप्रत ३ या श्लो०कौ अ
र्थ यह श्रीचरणात्मकमर्यादाभक्तिकेंसायुज्यभक्तिकी
प्राप्तिहै ताहूमेंएकभेदहै जोकोभावतसोसेवानक
रे कछुकामनामनमेंराखेकहूनराखे जैसेप्रह्लाद
जीभक्तिकरी पाछेंनृसिंघजीखंभमेंतेंप्रगटहोइक
हतहैं प्रह्लादकछुमांगि तबप्रह्लादनेकहीं
मेंव्योहारीनाहीहों मैंभेंकछुचित्तमांगिवेकी
वासनाहोय सोऊतुमहरिकरिहैं याप्रकारनि
सुकामकरै तबसायुज्यमुक्तिमेंरूपप्रभुमेंलीन
होइ औरमुखारविंदकीभक्तिहै सोतोप्रभुकी
साक्षात्सेवारूपहै भक्तियनमेंहूप्रभुकीसेवाऔ
रफलप्राप्तिभएपाछेंहूप्रभुकीसेवायामेंसाधनफल

न्यारोनाहीं।सदाप्रभुकौंसाक्षात्स्वरूपानंदकौअनुभव
हैतातेंमुखारविंदपुष्टिभक्तिसर्वोपरिहै।औरमर्यादाभ
क्तिसोंबडीतातेंन्यारीहै।तातेंदोयन्यारीन्यारीभक्तिवर्णी
हैं॥४॥श्लोक॥एतादृक्फलिताभक्तिर्भवेद्धेकेवलपुष्टि
तः।तत्रापिमुखरूपास्मदाचार्याश्रय।नत्थमेंसर्वथा
कार्येस्तत्रएवखिलंभवेत्॥४॥याकोअर्थ॥ऐसीयहमुखा
रविंदकीपुष्टिभक्तिताकोसाधनएकश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुकेआश्रयपरसाधनहैंतातेंप्रथमसर्वथायहीकार्यकै
तव्यहै।हमारेश्रीवल्लभाचार्यजीकेसरनआयनांमनि
वेदनकरिपाछेंअपनेमनमेंदृढश्रीवल्लभाचार्यजीके
चरणकमलकोआश्रयकरें।ऐसेहीसबअखिलसक
लकार्यसिद्धहोइयामेंसंसयनाहीहै।तातेंमुखार
विंदकीभक्तिमेंएकश्रीआचार्यजीकोआश्रयहीसाध
नहैऔरकोईनाहीं॥५॥श्लोक॥अतःपरंतुतद्भक्तेर्व
स्यासाधनादिकं।निरूप्यतेस्वतोषायतद्रूपानां
हृदिस्थितेः॥६॥याकोअर्थ॥औरमर्यादाभक्तिहै।ताके
नोसाधनअनेकप्रकारकेहैं।पाछेंमुक्तिफलहैऔ
रपुष्टिभक्तिमेंकेवलश्रीआचार्यजीकोआश्रय
तातेंचरणात्मकभक्तिवारसाधनकतव्यहै।और
निरूपणकरतहैं।अपनेमनमेंसंतोषार्थतथाअप
नीयेपुष्टिमार्गीयभगवदीयकेसंतोषार्थजो
हमकोंऐसोदानश्रीआचार्यजीमहाप्रभुदीयेहैं
याप्रकारनिरूपणकरतहैंतहांश्रीमहाप्रभुजीकीकृ
पातेंयहपुष्टिमार्गीयभगवदीयभक्तिहृदयमेंस्थि
तिहोइश्रीपूर्णपूर्णहयोनमलीलासहितहोउ
भक्तिकेसाधनवर्णनकरतहैं॥श्लोक॥यथामर्यादाभ
क्तौश्रवणभावस्तुसाधनेतथासर्वोत्तम
तत्वेनवुध्यन्तां।याकोअर्थ॥जैसें

ने जो स्वभाव है सो साधन है सगरो जो स्वाद जो स्वमय
है अपनपेको जो स्वमान नहीं यह जो स्वया भांति सब
ओर जो स्वभाव पहले भयो सो भक्ति को साधन है तैसेई यह
पुष्टिमारग में जे भक्तन के भावात्मक है तातें भावही यह
भावना साधन है तातें जे भक्तन को भाव की भावना
करे यही साधन बुद्धि में निश्चय राखे ७ श्लोक वस्तु
तस्तु फलं चैव फलं स्यात् प्रवेशनं तत्स्वरूपं तु सर्वेषां
देहान्तःकरणात्मनां ७ या श्लोक को ऊपर भयो सो भा
ति कहे है तामें वस्तुतः जो अक्षर ब्रह्म स्वरूप फल तामें
प्रवेस होय फेर माया के गुण में न आवे यह मर्या
दा मारगीय फल और पुष्टिमारगीय को प्रभु की
लीला रूप फल में प्रवेश तहां स्वरूपात्मक रस को
अनुभव है तातें सेवा ने अन्तःकरण अन्तःकरण सों
प्रभु की लीला को अनुभव सर्वेन्द्रीयन को मनत्वे
न सर्व प्रभु में तत्परता जैसे ब्रजसुंदरीन में गद्यार्थ में क
हे हैं या प्रकार मुख्य फल लीला रूप ताको अनुभ
व पुष्टिमारगीय भक्त को या प्रकार सो भयो सो पुष्टिभ
क्ति को न्यारे न्यारे फल वर्णन है तातें पुष्टि भक्ति परम
रसात्मक सर्वोपरि श्रेष्ठ है ८ श्लोक येन भावेन भ
गवत्यात्मभावो हि जायते तस्मात्तद्भावात् स्वदेहा
दिसकलं स्यात्तदर्थकं ८ या श्लोक को ऊपर कहे तो
भांति भाव जो भगवान में बढे अपनी आत्मा को
भाव बढे प्रभु में तो भाव हू बढे और जो अपनी आ
त्मा को भाव न बढे प्रभु में तो भाव हू न बढे और जो अ
पनी आत्मा को भाव भगवान में न बढे तो भाव जा
न रहे है तातें अपनी आत्मा को भाव भगवान में ब
हे जा प्रकार सों उपाय करत रहे तो जब अपनी आ
त्मा को भाव भयो सो कैसे जो निर्धि जब देह आदि

ईमनसबप्रभुकेअर्थलगे तनमनधनतीन्योप्रभुमें
लगे तनुजावितजादोउप्रकारसेचूकरौ॥श्लो॥
नहेसाअर्थसिद्धर्थेभगवानप्यपेक्षते॥य तो देहा
दिष्वपिप्रभुःलीलोपयोगत॥१०॥ याको अर्थ
यहभावदसेवाहै देहादिसिथेअर्थ तथादेहसं
बंधीकुटुंब इत्यादिद्रव्याको मनोरथ नकरे अपनो
भोगसुखकछुहूनाविचारे केवलभगवानहीकी
अपेक्षारहे॥सोप्रभुकोनप्रकारसुखपावेगो मतिक
छुअपराधतेप्रभुउदासीनहोय याभांतिप्रभुकोसु
खविचारे तथाभगवानकेरसनकीस्वरूपानंद
कअनुभवकीअपेक्षाराखे देहादिकोभोगसुखन
विचारे तथाभगवानकेरसनकीस्वरूपानंदकेअनु
भवकीअपेक्षाराखे देहादिकोभोगसुखनविचारे
तहांकोउकहेजो देहकीरक्षानकरेतोसेवाकेसेहो
य॥ औरतुमकहे अथ नाहींकीयेहैं॥ यहसंदेहहोइत
हांकहतहैं जोअपनीदेहकोभोगविचारे इंद्रियनको
सुखविचारिवेनकरें महाप्रसादलेइ॥ तामेंयहभाव
राखेजोप्रभुकीसेवामेंसामर्थहोइ इंद्रियादिसिथल
नहोइजाइ याभावसोंलेइ जैसेश्रीगुसांईजीपरदेस
पधारतेहें तबविप्रयोगकरिहेसहोतहें॥ औरजबपर
देसतेश्रीजीद्वारपधारतेहें तबसुंदरबहुतघीसहि
तमहाप्रसादलेतहैं॥ सोयहभावजो श्रीगोवर्द्ध
ननाथजीहमकोकृसदेखेंगेतोउनकेमनमेंदुखहो
गो॥ सोआछोनाहीं॥ प्रभुहमकोदेखिसुखपावेतोह
मकोआछीभांतिरहनो॥ यहभावतेव्रजभक्तनकोअ
पनीदेहकीरक्षाकरतहैं॥ अपनोसुखनाहींविचार
हें याभांतिदेहादिकीरक्षाकरतहैं
विचारिके॥१०॥श्लोक॥ नस्वार्थं   वा

व· भगवांनेवयत्नाहृयेंनभावेनानैमित्तप्रीतिभेवाति
वे श्लो० ११ याकोअर्थ श्रीहरिरायजीकहतहैं जोस्वा
र्थबुद्धितैंनकरैं जोकछुलौकिकवैदिकफलसिद्धहो
इगो तथाप्रभुकीसेवातेंहूतार्थहोइगो यहस्वार्थ
बुद्धितेंभगवत्सेवानकरैं काहेतें भगवांनतेस्वार्थ
वको विचारैं भगवानतेस्वार्थकोविचारैं भगवान
विनाविचारेंही आपनीइछातेंसर्वकार्यसिद्धक
रेंगे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनवरत्नग्रंथमेंकहेहैं स
र्वेश्वरश्चसर्वात्मा निजेछातःकरिष्यति प्रभुसर्वे
श्वरहैं सर्वकीआत्माहैं सर्वजानतहैं सोआपनी
इछाहीतेंदासकेसकलमनोरथसिद्धकरेंगे ता
तेंप्रभुकीसेवातेंआपनीस्वार्थबुद्धिनकरें प्रेरणा
ाभावतंत्रक्रियावत्तनकरें भावसंयुक्तप्रीतिसोंक
रें काहेतें भगवानकोएकप्रीतिहीतेंधरें पद्मनाभ
दासकेछोलाप्रीतिहीतेंआरोगे तातेंप्रीतिसोंक
रें ११ श्लो० नफलाकोलएं यत्रलौकिकानाय
थाधनेतद्भावेयथालोकेदुःखनासंतपजेतही
१२ याकोअर्थ सोप्रभुकीकछुहूफलनकीका
मनोरथनकरें काहेतें फलकीकामनातें
पुष्टिमार्गीयमुख्यफलनाकोनासहोइ ताकोका
मनाभावमेंबाधकहैं यहजानिफलकोलालनकरें
लौकिकमेधनमुख्यहैं सवहीकोऊचाहतहैं तेसैं
हलौकिककीनाईधनकोंनचाहें काहेतें वोहोततेधनतें
महादोषहोतहैं मस्यकहेकास्कोकारणधनहोय
हकलियुगमेहैं तातें लौकिकवैदिकतथाधनकी
प्रार्थनाप्रभुसोनकरें तथाजोमर्यादामेंज्ञानव्रत
हीसनदरमेंही ऐसेज्ञानहूकोनचाहैं भक्तिमैंबा
धकहैं स्वामीसेवकके भावकोसंबंधकोनासकहैता

तें ज्ञानभक्ति कौं न चाहैं तथा स्वर्गलोक ते ब्रह्मलोक प
र्यंत सुख न चाहैं न इहलौकिक वैदिक देहसंबंधी अने
दुःखसें तिनके नाश होइवेकी प्रार्थना सर्वथा न करैं सर्व
थैसें निष्काम होइ सो ॥१४॥ श्लोक ॥ सर्वत्यागस्तु सहजो
यत्र लौकिकवैदिकयो। निरपेक्षस्वभावस्तु सर्वभावो नि
गद्यते ॥१३॥ भाषा अर्थ ॥ श्रीभगवानमें सहज प्रीति क
रि सर्वत्याग सहज स्नेहमें करि लौकिक वैदिक कछु न
चाहैं। सो यह श्लोकमें श्रीआचार्यजी महाप्रभुन
कहे हैं। यदि श्रीगोकुलाधीशो धृतः सर्वात्मना हृदि
ततः किमपरं ब्रूहि लौकिकैर्वैदिकैरपि ॥१॥ याभांतिस
र्वस्यात्मा श्रीहरि हैं तिनको हृदयमें धारन करैं से
वा करैं। और लौकिक वैदिक कछु न चाहैं। निरपेक्ष हो
इ और सहजभाव होइ मनमें कपट छल छिद्र कछु न
राखें सर्वात्मभाव करि। एक प्रभुहीमें मन राखे ॥१३॥
श्लोक ॥ तथात्र दैन्यमेवैकं मार्गे निश्चव राहरिः
दैन्ये नैव संतुष्टः प्रादुर्भूतः फलेच्छया ॥१४॥ भाषा अर्थ ॥
श्रीहरिरायजी कहत हैं जो यह पुष्टिमार्गमें एक दैन्य
ही साधन है। सो वह दैन्य पुष्टिमारगीय भगवदीय
सो यह मार्गके ग्रंथ श्रवण करें तब दैन्यभावकी
प्राप्ति होइ है। ता भांति वह ग्रंथमें श्रीआचार्यजीम
हाप्रभुन हें सेवा या वार्ता कथा सो वा भगवत्सेवा
नियपालन करनी। पाछें पुष्टिमारगीय ग्रंथ भगवदीयके
मुखसों श्रवन करनो सो मैं कथा ह सुननी काहे तें सेवाको
तो फल है। अन्यो न्यो श्रवनतें उत्पन्नो सेवामें रुचि
होइ अभिमानादि दोष दूरि निवृत्त होइ। दैन्यता सि
द्धि भई तासों श्रीठाकुरजी प्रग
ट होइ रस मनमें दिखें सेरासंपर्वाध्या
न करि पाछें निसाधन होइ है

प.
५

नकी ऐ न बनी तब प्रभु तत्काल पधारे तातें जहां तां
ई साधनको बल मनमें होइ तहां तांई दैन्यता नआ
वें तब प्रभु संतुष्ट होय प्रादुर्भूत होइ स्वरूपानंदको
अनुभव करावें ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ॥ न देना तुष्टिमेवं धेनदै
न्य प्रसि यदैन्य नासकं बहु विरोधी सकलमतं ॥ १५ ॥ या
को अर्थ ॥ कोई देवांतर तें होइके न सेवे काहेतें देवता
ब्रह्मा सिवादि इंद्रादिको यह फल वेसें नाही है तो
देवता और कोकहा तें देहिंगे तातें देवांतर भजनतें
अन्याश्रय होय सगरे फलको नास होय तातें दै
न्य विना फलसिद्ध न होय ॥ अब श्री हरिराइजी सम
स्त पुष्टिमारगीय वैष्णवनसों कहत हैं जो जा साधन
तें दैन्यताको नास होइ सो सर्व यह पुष्टिमार्गतें विरो
धी मननामनों के सेहू साधन होय पुष्टिमार्गतें विरो
धी दैन्य नास करें ॥ ऐसो साधन सर्वथा हीन करनो
यह बात है कें यह जतातें जो पुष्टिमार्ग विना अन्यमा
र्गकी जितनी क्रिया साधन हैं तिनतैं सर्व पुष्टिमार्ग
के फलतें विरोधी हैं यह निश्चय मनमें जानिके अन्य
मार्गकी क्रिया नाहीं कर्तव्य है ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ ॥ एतन्मा
र्गीयतो हि हरिर्दैन्य विवर्द्धयेत् ॥ यदाहि जनवंदूप
नाशायतथापि लोवित ॥ १६ ॥ याको अर्थ ॥ अब श्री हरि
राइजी कहत हैं जो एतन्मार्गीय पुष्टिमार्गमें जैसें
कोई श्री आचार्यजीद्वारा सरन आए हैं ऐसें ज
गीहूत जीव भक्त तिनको दैन्य बढावत हैं और स
न अभिमान अपने मनसों होइ सो दुष्ट है फलमें
प्रतिबंधक है ताको नास ही करत हैं सो रासपंचाध्या
ईमें प्रसिद्ध है भगवान वेनुनाद करि व्रजभक्तनको
बुलाय रासक्रीडा तब मद भक्तनको भयो तब भगवा
न अप्रगटे तैसेंहू यह पुष्टिमार्गमें दैन्य भगवान सिद्धि

कोरेनहैंमदकोनासकरतहैं।तथाजहांलोमदहै।तहां
लोंअनुभवनाहीकरावतहैं।याभांतिभगवानअपने
जनकोंदैन्यकरावतहैंमदकोदूरिकरतहैंजहांजहां
लौकिकमेंआसक्तहैंसोसबछोरतहुजायदैन्यसिद्ध
करतहैं।१६ श्लोक॥ स्वामीकृतोहिनिर्वाहःप्रभुनैव
विधीयते।नीचस्वभावदुष्टादिस्वेनैवफलतथा
१७।याकोअर्थ।अपनेअंगीकृतजीवनकोनिर्वाह
प्रभुआपुहीकरैतबहोयकाहेतेंजीवनकोस्वभाव
करिदुष्टहै।सोबालबोधमेंश्रीआचार्यजीमहाप्र
भुकहेहैं।जैसेंअज्ञानीबालककीरक्षामातापिता
करैंतबहीहोय।नाहीतोअग्निजलादिमेंगिरैं।तब
हीहोय।नाहीतोअग्निजलादिमेंगिरें।सोमातापि
ताकरतहीहैं।तैसेंश्रीठाकुरजीअपनेअंगीकृत
जीवनकोनिर्वाहआपतेंकरतआएहैंकरतहैं।औ
रकरेंगे।जीवकोतोएकएकक्षणमेंदुःसंगलगैतोना
सकरिदेइ।मनएकक्षणमेंऔरकोऔरहोइजाइ।सो
प्रभुहीनिर्वाहकरैंतबहोइ।१७ श्लोक॥ अतोदंडप्रधा
नेनमितिवाचरितःप्रभुदंडोहनुग्रहत्वेनमंतव्यस्तुतदा
श्रितैः।१८।याकोअर्थ।स्वामीकृतभक्तनेभूलपरतोप्रभु
दंडदेतहैं।जोफेरिवहकामनकरें।जैसेंनंदरायजीअवि
कारजनगरो।तैसेंईकछुअपराधजीवस्वभावतेंबनै
सोप्रभुदेतहैं।सोदुःखमेंभगवदीयअपनेमनमेंअनु
ग्रहमानेप्रभुकोआश्रयनछोडैं।सोश्रीगुसांईजीवि
ज्ञप्तिमेंकहेहैं।श्लोक॥ दुःखस्वकीयतामत्वेत्वेवचेष्टि
मेवन।अस्मात्सुखीयतामत्वाप्यनुकंपाकदाचि
दंतिवचनात्।श्रीगुसांईजीकहतहैंजोहमकोअ
पनेजानिदुःखदेहु।तामेंहमसुखीहैंजहांतहां

क्तेजनकौंदंडदेइ तवदुखकौं अनुग्रहकरिजनिअ
श्रयमहाप्रभुजीको नष्टदेहै।। तां।। स्लो।।कं।। दंडदानस्वर्ग
येषुपरकौयेष्युपेक्षणं।। आर्तिरेवात्रसततंभाव्यह
स:परोक्षत।।१६।।या।।कें।।अ।।र्थ।। जाकोप्रभुअपनोकरत
हैंतिनकौहीदंडदेतहैं औरजेप्रवाहीअर्हिसंसा
रासक्तिहै।। तिनकीउपेक्षाकरतहैंदुंडनाहीदेत।। और
लौकिकमेंहीआसक्तिलौकिकदेवैकरतेहैं।। दंडनाहि
देतहैं।। रासपंचाध्यायमेंआर्तिकेलीयेप्रभुअंतर्धान
भये।। १६।। पुष्टिमार्गमेंअनादरमेंहै।। सर्वआर्तिउठइ
वेकेअर्थहैं नहींयातेंरूपानंदकोअनुभवनाहीकर
वतहैं आर्तिदेखनोकरावै तातैंआर्तिपुष्टिमार्गीय
वेष्णवकोंसर्वथाहीकरनी।। १७।। स्लो।।कं।। अन्नभक्तार्ति
हृष्टेवमुदितोहरिर्भवेत् संगोभागवतामेवद्वि
येनीभवेत्।।१७।।या।।कें।।अ।।र्थ।। ज्योज्योभक्तक्लेसकरतहैं
त्योत्योभगवांनउहभक्तकोदेखिकैप्रसन्नहोतहैं
तातेंसत्संगभगवदीयकोहोयतौवेगिहीभावकीद
ढि होय यहनिश्चयजाननो।। तातेंसत्संगकोयत्नक
रनो।।१८।। स्लो।।कं।। व्याघ्रस्याग्रेयथादेहीतथादु:सं
गतोभवेत् दु:संगएवभावस्यनाशक: सर्वथामत:
।।१८।।या।।कें।।अ।।र्थ।। अवश्रीहरिरायजीकहतहैं जैसेंवाघ
केआगेसरीरकौनासहीहोइ तैसेंईदु:संगयहभग
वद्भावकोनाशकहै।। तातेंजैसेंवाघकोंसोडरपिकें
अपनेसरीरकीरक्षाकीजै।। तैसेंईदु:संगतेंडरपिकें
अपनेभगवद्भावहुकीरक्षाकरीए।। तव भाववढे।। स्लो
।।कं।। दु:संगत: श्रुता: सर्वे श्रुता हि भरतादय: दु:
संगात्किंतु दोषाभ्यां मनूष्यो बहिर्मुख:।।१९।।या।।कें।।अ
।।र्थ।। भगवद्भक्तअनेकजीवदु:संगहीकरिकेगिर
तहे।। सोश्रीभागवतमेंवर्णनहे।।

थकोम्यावेदुःसंगातेतीनिजन्मकोंअंतरायभयो।
ारभीच्यपितावडेभगवकीयरहतो।सोदुर्योधनदुष्टको
क्लषाए।तातेतारोधतेभगवानकेसंगलडनठाढे
ता।तातेयहदुःसंगलेधतेजीवनिश्चयभगवान
तेवहमुखहोयजाय।तातेभगवदीयदुःसंगतेभि
नहै।तोजीवकोंकिननीकवातहै।२२श्लोक।।लौ
किका।मिनिवैरागुमनो।निष्कासनसदा।न्यलौकि
कवस्तुनद्रवतेनापिचविनस्यति।२३।याकोअर्थ।।
तातेजहांजहांलोकिकमेंमनलागिरह्योहै सोसग
गहींजाननी।तातेलौकिकावैदिकजहांजहां
होयजाकेसंगतेहोयसोसर्वत्यागकरनो।जहांजीव
स्तुमेंलौकिकानिवृत्तहोय।जहांतेभगवद्भावकीहा
करैलगा।तामेंकीयावरी।नवहां।२४ श्लोक।।वैरा
ग्यपरितोषोचहरिसान्योनिरंतर।।तदभावेतुमन
सःकदाचिन्निर्भावतःस्मृतः।।२५।।याको अर्थ।।अवश्री
हरिरायजीकहतहैंजोदुःसंगदोषकेनाशकार्थवैरा
ग्यपरितोषयहदोयनिरंतरहृदयमें
तहांअपनेमनमेंवैरागपसर्वे याय प्राप्त
वधीपदार्थमेंराखे।औरसह यहस्वभावजवरा
तातोमनकोसंतोषकरिहै कामभावायवैराग
गतवदुःसंगतेवचौ।श्लोक।। सोमायभकोन
चित्तचेतसर्वथापरितोषस्तु
वेवबाधको।२५।याकोअर्थ।।
हतहैजोमनमेंदृढवैरागवे

जोमेंभगवद्भावकोना
यमेंराखनो।

स्यांलोभपाखंडसंभव ॥ क्रोधस्तु मध्यपाति
हाबाधकस्स्मृतः ॥ २६ ॥ [illegible] ॥ क्रमप्रगट
विषयादिकी संसर्गी इंद्रिय भगवानने भ
नेवहसंमुख होय जानते ॥ इंद्रियोंको विषयवे
नहीं ॥ और लोभ हृदयमें होइ ॥ ताकरि पाखंडप्र
गटहै ॥ सो संन्यास निर्णयमें श्रीआचार्यजी महाप्र
भु ॥ स्वयंच विषयाक्रांतपाखंडीस्यात्तु कालतः ॥ इति व
त ॥ ताते काम लोभके मध्य क्रोध मध्यपाती है ॥ काम
को विषय न मिले तब क्रोध प्रगट होय ॥ तैसेंई लोभ
अर्थ न सिद्धि होइ तब क्रोध उपजे ॥ ताते क्रोध प्रग
नको कारन काम लोभ होय क्रोध करि पीछें मोह प्र
ट होइ ॥ इत्यादि दोष प्रगट होइ तब लौकिका वेस
इ पहर लौकिको ध्यान हृदयमें रहै ॥ तब दैन्यता नाश
होइ ॥ २ ॥ श्लो ॥ अतो मार्गीय सर्वस्व दैन्यभाव कि
ग्रक ॥ दैवसर्वेषु कार्येषु मूलसेवाकथादिषु ॥ २७ ॥ या
टीका ॥ अब कहत हैं जो यह पुष्टिमार्गको सर्वस्व दै
न्यभाव है ताके नाशकरहनी जो हैं काम लोभ और क्रो
ध ताते इन तीनोंनको निश्चय त्यागही करनो ॥ और
दैन्य सर्वकार्य विषे राखनो ॥ सो दैन्यके सर्वकार्य वि
षरै ॥ ताको उपाय यह है ॥ श्रीकृष्णकी सेवा है तनुजा
वित्तजा प्रीतकरि केकरनी ॥ और ॥ श्रीकृष्णकी सेव
श्रीसुबोधिनीजी आदि ग्रंथ सुननो ॥ यह सेवाकथा
कोनेम नित्य प्रति राखे तो दैन्य हृदयमें रहे ॥ २७ ॥
श्लो ॥ बीजं यथा मंत्रसाम्ये तद्युक्तमार्गे भवे
त् ॥ तदाभावेन सेवादि सकलं पुष्टिसाधनं ॥ २८ ॥
टीका ॥ जैसे मंत्रको बीज मुख्य है यह सास्त्रमें क
हे हैं ॥ बीजमंत्रतें अस्वित साधन सिद्धि होइ यह
सास्त्रोक्त है तैसेंई सेवामें भाव है भावसहित करे

नवई सिद्ध होइ श्लोक ॥ तस्मादुक्तेप्रयत्नेन दैन्यभक्तियुतो
जन हैं पेन गोपिकाः सिद्धाः कौंडिन्यो विपरीत न ॥ ९९ ॥ या
श्लोक यो ॥ अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो वैसे प्रयत्न करि
के अपने दैन्य की रक्षा करें ॥ यह पुष्टि मार्गीय भगवदीयन
जित हैं तहां कोई एक है जो या मारग में कोई कौ दैन्य करि सिद्ध
भई है तहां कहत हैं जो दैन्य करि गोपीजन को सिद्ध भई है
पुष्टि मार्ग के आचार्य जी महाप्रभु सन्या
तरह्यो ताको सिद्ध भई सो श्री आचार्य जी महाप्रभु सन्या
मनि लिये में कह्यो है श्लोक ॥ कौंडिन्यो गोपिका प्रोक्ता
गुरवः साधनं च यत् ॥ भावो भावनया सिद्धः साधनं
नान्यदिष्यते ॥ १ ॥ तातें पुष्टिमार्गीयन के गुरु गोपीजन श्री
रज्ञान मारग में याही मारग के गुरु कौंडिन्य ऋषि श्री आसत
प्रकार सों भाव विचारि दैन्यता ही भक्ति मारग के भाव में का
रण है ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ फलमात्र हरे भावो विरहात्मा स
दा मत ॥ रसात्मकत्वात्तद्रूपं सर्वलीला समन्विता ॥ ३० ॥
या को अर्थ ॥ अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो यह पुष्टि
मारग में हरि में भाव रहे ॥ सोई फलरूप है तातें विरह
त्मक मन में रहे का है ते संयोग के अनुभव में अंतःकरण
जा सी प्रभु नाहीं हो बाहर की इंद्री सब रहे सोऽस्मि विनियो
गाहें और विप्रयोग में अंतःकरण मूल सिद्ध होइ तातें वि
प्रयोग भाव हृदय में राखें यह मारग में यह सिद्ध हें का
हेतें संयोग में तो जहां लीला रस न तहां तो सुख और
विप्रयोग में रसात्मक पुरुषोत्तम सब लीला सों युक्त
रूप सब ठौर अनुभव होत हैं तातें विप्रयोग भाव सब
पर है जामें सब ठौर प्रभु सों लाग करे ॥
है ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ स्वरूप न सम सन्तत सा स्या
त्ः युगपत्सर्वलीलानामानुभूतिः
या को अर्थ ॥ विप्रयोग में रही

२

प॰ ६ सोलीलासहितस्वरूपनिनिरसात्मकारसर्वठौ
रह्योनहोनहैं संयोगतें अधिकविप्रयोगमें विशेषसु
खहै तातेंयुगलजोहोयप्रकारकीलीलासंयोगविप्र
योगनामेंवैसवअपनोमनलगाइदेउ संयोगस
मैंसेवा अनोसरमैंविप्रयोगकीभावनातथासन
हीकरिव्रजभक्तनकेसंयोगकोविचारकरै पाछेप्रभु
गोचारनकोपधारै तबविप्रयोगव्रजभक्तनकोविचा
रेयाभांतिसोऊलीलामैं अपनेमनकोलगाइदेइ
३१ श्लो॰ एवंविज्ञायमानेसा पुष्टिमार्गविभा
वयेत प्राप्तिश्रीवल्लभाचार्यचरणप्रसादतः ३
२ या॰ अब श्रीहरिराइजीकहतहैं जोऊपर
विप्रयोगआर्त्तिकेप्रकारजाभांतिअनुभवहोइसो
कहतहैं सोपुष्टिमारगीयवैष्णवअपनेमनमैंभा
वनाकरै मनमैंविचारकारसोकछनाही याभां
तिभावनाकरनकरनश्रीवल्लभाचार्यजीकेफल
कीप्राप्तिनिश्चयहोइगी सोसर्वोत्तमकेनामश्री
गुसांईजीपीछेप्रगटनामकहतहैं ॥ अस्यप्रभृतिमंत्रा
र्थ्यचरणाब्जजोधनायनमः याभांतिपुष्टिमारगी
यभगवद्भक्तश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीकेचरणक
मलकीरजअसेयवहुतसोइस्वोपरसाधनजानेहैं
तिनकोछकसाधरामृतफलसिद्धिहैं तातेंश्रीआचा
र्यजीकेचरणकमलकेप्रसादतेयहपुष्टिमारगीयभ
गवदीयकोफलसिद्धहोइ तातेंश्रीआचार्यजीकेच
रणकोभावसर्वतेकूरनो ३२ श्लो॰ यतत्स्वस्व
नंसर्वभावेनसर्वथा बुद्धिभिःकुलरासिकैःसा
रणीक्रियतोहसा ३३ या॰ अब श्रीहरि
राइजीकहतहैं जोऊपरकहेनाप्रकारसन्तजोनि
रंतरसर्वभावकरिसर्वथाभावराखें श्रीआचा

...विप्रयोगको भा...
...व रसात्मक सन्को आश्रय और विप्रयोग को
...हीलीरस सर्वभाव विस्वैथा कने यह है ये
सो कहिके फल त्याग कर्यो श्री हरिचंद्र पर
तिनके मसनहो इहृदय में तथा सुख भावही
समेरसिक रसे तिनकौ राग हृदय मे
तथा श्रीकृष्ण श्रीआचार्यजी महाप्रभु तिन
नकी सरण होइ है न्य भावकरि निः
तिनके पुष्टिमारगीय फलको
इय सर्वोपरि सिद्धांत है ॥२२॥
कोऊ लापत्र मनुष्य त्रिस नो
...हि ... ॥म्पूर्ण ॥२॥ अथ वकपर
...ति श्री ह ... २ ... इति सवेयाकही ता
...टीका श्री ... भांति सर्वोपरि होइ सो
विप्रयोग भाव मुख्य विरह की ... साधनते होइ
कौ साधन है कृपाही सो ... निःसाधन ... तिनते
... परंतु ... प्रतिबंध है ... पुष्टिमार्ग में
... वर्चेत वसिद्ध होइ सो सर्व होय जो पुष्टिमार्ग में
वाधक है सो कहे ... लौकिक ... सजातीय
... विजातीय नमजन ... ॥ अब श्री हरिरा
...भाव ... ॥२॥ ...पुष्टिमारगीय वैष्णव को एक
जीव ... पुष्टिमारगीय विजातीको स
... अन्यमारगीय ... विजातीको
... होइ ... को ... दुःख ... सजन
... होइ ... समझाइ
... भूया ... तिनको ...
... प्रतिबंधक ... मिलि
... मिले ... सुख ... पावे
... परम आनंद ...
... श्री ... लीला ... नरस्वरूप वार्ता ...
... सातें विजातीको स
... गुरुजन ... बोल
... दुःख ... २
... भयो ...

सि.प
५८

न तो सजाती वैष्णव को चहियें सो तो मो कों प्रा
नाही हैं अन्य जो अन्यमारगीय कु संग ते अष्टप्रहर
संभाषन करनो परत हैं यह मो को परम दुख हैं सो दु
ख दूरि नाही करि सकत नाही ॥ १ श्लो० ॥ तदेतदु
भयं जातं मम बाध सुभाग्यत है दुखांतरं तु ज्ञानेन
भक्त्या वा पि निवर्तते ॥ २ या० ॥ अर्थ ॥ यह दोय मे
रे भाग में आय के प्राप्त भयो है जो भगवदीय को
संग चहियें सो तो मिलत नाही हैं विजाती अ
न्यमारगीय विजाती कौ संग अष्टप्रहर रहत हैं यह दो
य मो कों प्राप्ति हैं सो पुष्टिमार्ग में विरोधी हैं और ज्ञानी
को संग है सो अंत में पुष्टिमारगीय कों दुखदाई है काहे
ते ज्ञानी भक्ति की निवर्त करत हैं सो कहत हैं जो यह भ
क्तिमार्ग में तो स्वामी सेवक भाव ही धर्म हैं सो मुख्य है
सेवक धर्म यह है जो अष्टप्रहर स्वामी की टहल में रहै
भक्त कौ यह धर्म है यह भाव के ज्ञानी नाशक है काहे
ते ज्ञानी तो सगरे ब्रह्म की भावना करत हैं और आप
ने कों ऊ ब्रह्म कहत हैं अहं ब्रह्म जो मैं ही ब्रह्म हों यह भा
व में बाधक है यह भाव में दासभाव तो छूटि जायो तब
भक्ति कौ नाश होइ ताते भक्तिमारगीय कौं संग महा
बाधक है दुखरूप है ताते वैष्णव कों ज्ञानी कौ ऊ संग
नाही कर्तव्य है ॥ ३ श्लो० ॥ लौकिकं विषयप्राप्त्या
न हि दुःसंगजं क्वचित् दुष्टगां दुर्लभो वा णीर्मि
ले मम मे तिव द्विषुः ॥ ३ या० ॥ अर्थ ॥ अब श्री हरिराइ
जी कहत हैं जो लौकिक विषयादि को प्राप्ति होय
लौकिक आवेस देह इंद्रिय में होत है या भांति लौकि
क विषय दुखदाई परंतु नाही दुख तो दुःसंग दुख है
सो बडो है सो श्री भागवत में कहे हैं जो विषय ते वि
षई संगी है तिन को संग महा दुखदाई है उनके संग

तेअष्टप्रहरविषयमैंध्यानरहैं॥विषयावेसहोइ सो
श्रीहरिराइजीकहतहैं॥एसेविषयकेसंगीवहमु
खकोसंगमोकोंभयोहै॥ताकरिमोकोंमहादुखहै
काहेतेंदुष्टकेदुर्वचनरूपीवानसोमेरीमर्मसरीरमें
वेधतहैं॥ताकरिकैंवडीपीडाहोतहै॥एसेदुर्वचन
कहिवेवारे॥औरनाहीं॥अधिकारीभंडारीअनेक
वातकहतहैं॥जोतुमअष्टप्रहरकीतेनवातनमेंलगे
रहतहो॥परदेसकाहेकेंलीएपधारेहो इष्यतोकछु
आयोनाहीं याभांतिअधिकारीभंडारीमहादुष्टो
रजोकोईलौकिकअभिनिवेसकरावें॥सोश्रीहरिराइ
जीकोंवुरोलगतहैं॥भगवद्वार्तासोपरमहितला
गतहैं॥यहभावनेकरिंजोदुष्टनकीवानीवानरूप
मेरेमर्मस्थानमेंवेधकरतहैं॥श्लोक॥नचापिलो
मंतेस्वास्थ्यसमाहितमपिस्वत॥इत्यानीतुजनाप्राये
दुःसंगपरवीं॥ता॥धी॥यापेर॥अर्थ॥अवश्रीहरिराइजी
कहतहैं॥जोएसेदुःसंगमोकोंमिल्योहै॥जोरंचकमेरे
मनमेंस्वास्थ्यधीरजनाहींहोनदेत॥तातेंस्वतमोकों
अपनोहितनाहींदीसतहै॥हितजोभगवदीयके
संगतेंहोइ॥तिनकोतोएककणहूसंगनाहींहैं॥अ
न्पाहितरुष्ठिनहूदुःसंगतेंहोय॥सोमोकोंअष्टप्रह
रदुःसंगहै॥तातेंमोकोंअपनोहितनाहींदीसतहै
सोसुमेंश्रीभागवतमेंकहेहैं॥श्रीआचार्यजीश्रीगु
साईंजीकहेहैं॥जोदुःसंगतेवैष्णवजनदुखपावेंति
नक्या॥सोदुःसंगकीपरवीमोकोंआयकेंमिलीहै॥सो
दुखपाउं॥सोआपकहतहैं॥सोमैंभोगतहों॥नहींकोई
कहेजोतुमदुखकोंपावतहो॥अज्ञानीहोइसोदु
संगतेंदु

कहत हैं तातें तुम दुःखकौं पावत हौ याभांति कोई कहै तहां
कहत हैं श्लोक शुद्धमनः कलुषितं लभंते नाति विवक्त
णां गृहस्थितस्य व्यावृत्तियुक्तस्य न हि तात दृशा भया
... श्री हरिरायजी कहत हैं जो मैं यातें दुःख पावत हौ
जो शुद्ध मन होइ आछी सुंदर बुद्धि होय ताहू की लौकि
क चित पापी दुष्टके संगतें ताहूकी बुद्धि भ्रष्ट होय जा
य एक लक्षणामें रसादु संग बाधक है सो श्री गुसांईजी
विज्ञप्तिमें कहे हैं श्लोक यद्दुःसंगी हि संगी संगीतो
गीत तस्मय अन्यसंबंध गंधोपी कंधराम बबाध
ते १ याभांति अन्यसंबंधको गंधहू रंचकहू होय सो
गरो कहैं सो श्री आचार्यजी महाप्रभुकी चोरासी
वार्त्तामें प्रसिद्ध है दामोदरदास संभरवारकी स्त्रीको
रंचक अन्याश्रय दोष भयो ताकरिकैं पुत्र मलेछ
भयो श्री आचार्यजी महाप्रभु अप्रसन्न भए तातें
दुष्टके संगतें आछी बुद्धि होत हैं सो ऊ नष्ट होइ जात
हैं तातें दुःसंगतें दुःखी हो तहां कोई कहै जो एसें
दुःसंगको बेगिही त्याग करि देहु तब शुद्ध बुद्धि है
जी याभांति कहै ताभांति कहै श्री हरिरायजी कहत
हैं जो व्यावृत्ति बिना केवल संग मनुष्य
इनको त्याग करि पाछें मनुष्य वि
सोऊन हू तें अधिक बढ़ै
तातें गृहस्थहू व्यावृत्तिकी रीति राख्यो चाहि
ये और भगवदीयतें ताहू जोहि तिनकों तो व्यावृत्तिन
चाहिये तब अव्यावृत्त होय तब दुःसंग छूटे तहां कोई
कहै तुम गृहस्थ हो सर्वसामर्थ्ययुक्त हो व्यावृत्ति छोड़ि दे
हु तब दुःसंग छूटि जायगो याभांति कोई कहै तहां कह
त हैं श्लोक संयोगा वारयत्नुज्ञाकी व्यावृत्ति विनिरोध
तः अव्यावृतौ न विश्वासः सदा दैयं न तत्याहृति द्या

६ षो॥ अब श्री हरिरायजी कहत हैं जो यह दुःसंग के
निवारन में सामर्थ्य हैं। खोटे मनुष्य को त्याग करी के आप
ने घर में बैठ रहे तो हू दुःसंग न छूटे। तब मनुष्य चाहि
ये। जहां पर स्वरूप में जैये। तहां नित्य नौतन मनुष्य को म
नुष्य को मिलाप होय। तिन को समाधान कर्यो चाहि
ये। तब दुःसंग कैसे छूटे। तातें या वृत्ति विरोधी हैं दुःसंग
छुटन में। जो या वृत्ति न करिये। अन्यथा निराहिये
सो तो सर्वोपरि उत्तम है। सो श्री आचार्यजी महाप्रभु
न विवृत्ती में कहे हैं। अव्यावृत्तो भजेत्कृष्णं पूजया श्र
वणादिभिः इति वचनात्। या भांति अव्यावृत्त होय
तब दृढ विश्वास धीरज चाहिये। सो धीरज विश्वास दृ
ढि जात है। जो रूप विना गृहस्थाश्रम को कैसें निर्वा
ह होय। या संदेह तें विश्वास विना अव्यावृत्ति न भयो
जाय। तातें कहा करिये। इहां श्लोक॥ भगवद्वेषीनो यो
न स तुल्य करावहि। यथा विभावसु वचसैरितः। कौ
ष मृत्कितः॥७॥ याको अर्थ॥ अब श्री हरिरायजी कह
त हैं जो भगवदीया कालदोष तें अपने धर्म की
रक्षा राखे ऊपर अव्यावृत्ति की रीति दुःसंग दोष कहे हैं य
ह कालदोष कहत हैं। जो यह काल वैसो है। भगवद्
धर्म में महा बाधक है। जैसें आसतण्य को बालक को ध
क्षरिवे परीक्षित राजा को आप दीयो। सो यह कार्य
कालदोष तें भयो। सो आगे कहत हैं ७॥ श्लो॥ अव
सन्नस मागत्यमह्या भक्त परीक्षितं। तथा दुर्वचवाक्यैः
क प्रेरितो ध्युतिनामसः॥८॥ याको अर्थ॥ अब श्री हरि

सर्प लेकें समीक ऋषि के कंठ में डारि दीयो । यह बात श्रंगी
ऋषी नें सुनी सो क्रोध करिकें तत्क्षक खायवे को श्राप
दीयो । सो यह सर्व कार्य कालदोषतें भयो । काहेतें महा
भक्त परीक्षित तिनकों यह कालदोषतें यह बुद्धि भई । तैसेइ
कालदोषतें दुर्जन के वचन सर्परूपी हैं । जिनको ता
मस के आवेस में अनर्थ बोलें । सो कालदोष जान
नों । क्रोधवान मनुष्य कालदोषतें ह्वै गयो है । तिनको
संग महा बाधक है । श्लोक । अविज्ञया दुर्वचनै रथि
लेपन सामर्थ्याद् दुर्बलो भौतिको दुःखः समाध्यः सक्रि
यो तिभि । टीका । अर्थ । अब श्रीहरिरायजी कह
त हैं । जो यह कलिकाल में जीवस्वभावतें दुःख भरो
है । तामें तीन प्रकार के दुःख हैं । एक भौतिक । २ आध्या
त्मिक । ३ आधिभौतिक । ३ । तामें अध्यात्म । आधिभौ
तिक इन दोन्युं भगवद्धर्म मन आवे । ऐसे आधिदै
विक दुःख को समाधान बकरनो । अरु तीनों के संग
नें जाय । ताकुं लीरा तीनों के लक्षण न्यारे न्यारे कहत
हैं । अनेक दुर्वचन कहै । आपनेतें वडो होइ तथा भगव
द्भक्त होइ गुरु होइ सो अपमान करि दुर्वचन कहै दुर्व
चन सों अपने मन को विक्षेप करै । और मन को वि
क्षेप करै और सरीरतें दुष्ट कर्म करै पाप आचरण करै सो
यह भौतिक दुःख है । ऐसे दुःख को जब आछे भगवदी
य को सत्संग जब होइ तब सन्निक्रिया भगवदीय वा दिकि
या करै कठिन बोलिवो कुछुटि जाइ मन को विक्षेप छू
टि जाय भगवदीयन के समान भक्ति भौतिक दुःख को संगाहै
३ । अब आगें आध्यात्मिक दुःख के लक्षण श्रीहरिरा
यजी कहत हैं । श्लोक । आध्यात्मिको ज्ञानशून्यो ह्यन्य
था ज्ञानवानपि कष्टसाध्यः कथंचित्तत्वबोधे
न शुध्यति । २ । टीका । अर्थ । आध्यात्मिक दुःख ज्ञान करि

शून्य होय सगरो कार्य अज्ञानतें करैं ताकौं जबकौ
ज्ञानवान बडो भगवदीय मिलै वो होत दिन तौंस
संग होइ वो होत एक रसिक ताको भगवदीय अने
क भांति समुझाय कै बोध करैं तब बहुत दिनमें अध्या
त्मक दुःख सुद्ध होइ १४ अब कहा धिदैवक दुःख कहत हैं
जो कबहूं सुद्ध न होइ श्लोक ॥ नीतिसन्यो महादुःखसन
साध्यः कथंचन ॥ यथा नपुंसको नैव शोषधीः पुरुषो
भवेत् ॥ १५ ॥ याको अर्थ ॥ नीति करिकें शून्य सो महादुःख सो
आधिदैवक दुःख कहत हैं जो कबहूं सुद्ध न होइ असाध्य
कौटिकलो लौकिक संग होइ वैसें हू ज्ञान वाके हृदयमें न
लगै केवल प्रवाही आसुरी ताको मन भगवानमें न
वीनमें भाव कबहूं न लगै ताकौं लौकिक दृष्टांत
कहत हैं जैसें नपुंसक होइ और वाकों कोटि औषध दै
परंतु कोई प्रकार वह पुरुष न होइ वामें पुरुषार्थ न हो
तैसें ही आधिक है विक महादुःख कौ भगवत्संबंधी
ज्ञान न लागै ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ यथा त्रिदोषग्रस्तो न कथं
चिदपि जीवति ॥ नीतिशून्यो निरासश्च न तथा श्रवणा
दिभिः ॥ १६ ॥ याको अर्थ ॥ अब और हू लौकिक दृष्टांत कह
त हैं जैसें त्रिदोषग्रस्यो रोगी कफ वात पित्त ग्रस्यो रोगी के
ई प्रकार न जीवै ताकौं कछु हू औषध न लागै तैसें ही
शून्य महादुःख निरास है सो कितनो हू भगवत्कथा
श्रवणादि करै परंतु वाके हृदयमें भगवानमें मनन
इ सो प्रवाही आसुरी जीव सो पुष्टि प्रवाह मर्यादामें श्री
आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं ॥ वैसें ही सूरदास व्यासते
सर्व सर्वात्म प्रभु ॥ ऐसे प्रवाही आसुर जीव की नाई
न जन्ममें संसारासक्तिमें पर्यो रहै ॥ याको भगवत्प

अपने चरण

सोपथरकोंलेकैंजोएकवर्षलोंजलमेंडारिराखेंपरंतु
पानीउहपथरकोनभेदेजवनिकासैंतवसूकिजायते
सेंप्रीतिशून्यचाणिदेवकमहादुष्टयहपुष्टिमार्गको
भतापदेखिवेंगुणाहूसुनें परंतुकवहूंदेवकेहृदयमेंभ
गवद्धर्मकोलेसहूनआवैं ऐसेवहसुखप्रीतिसन्यानि
रसरसकरिरहितहैं ॥१२॥ सवच्योरहकरतहैं श्लो
प्रायसआसुराजीवायस्मिनप्रीतिरसंभवः ताहसै
नित्यसंगोनभवेदासुरभावना ॥१३॥ याको अर्थ अप
रकहैऐसीप्रीतिशून्यमहादुष्टहोय ताकोआसुरीजी
वजाननो उहजीवमेंप्रीतिकीसंभावनाहूनाहींहैं ऐसे
प्रीतिशून्यजीवसोंसंभवहमकोंसंगआयकैमिलो
हैं नातेंताहसीभगवदीयकेसंगविनाआसुरभाव
नित्यहोतहैंजवनित्यताहसीकोसंगहोयतवयह
आसुरभावनिवर्तहोउ सोश्रीभागवतएकादसस्कं
धमेंभगवानउद्धवजीप्रतिकहेहैं श्लो॰ निरोधय
तिमांयोगोनसांख्यंधर्मउद्धव नस्वाध्यायतपस्त्या
गोनेष्टापूर्तंनदक्षिणा ॥१॥ व्रतानियज्ञश्छंदांसितीर्था
निनियमायमाः यथावरुंधेसत्संगःसर्वसंगापहोहि
मा ॥२॥ सत्संगेनहिदैतेयायातुधानाखगामृगाः
गंधर्वाप्सरसोनागाःसिद्धचारणगुह्यकाः ॥३॥ इतिव
चनात भगवानकहेहैं उद्धवमोकोयोगनाहींव
सकरतहैं सांख्यधर्मनेस्वाध्यायध्याननतपनत्यागव्रत
नयज्ञछंदतीर्थनियमइत्यादिकेसेंवसनाहीं
होतहैं एवसत्संगाकरिकेमेंवसहोतहों सत्संग
कोप्रतापऐसोहैं दैत्यराक्षसखगमृगगंधर्वअ
पछराहस्तीसिद्धचारणगुह्यक इत्यादिसवमोकों
पायो ऐसोसत्संगहैं तातेंश्रीहरिरायजीकहत
हैं जोनित्यताहसीकेसंगविनाआसुरभावहोत

सैंदुःसंगहोयतेसोमेंकहांकरूं।अत्रश्लोक।। दुःखमोक
र्मेदुःखःस्यातज्ञानेदुष्टेननाद्रशी।प्रीतिश्रन्योभक्तिदुष्ट
स्तन्मार्गोपातस्त्यजेत।२४।सारो०अर्थ। अबश्रीहरिरायजी
कहतहैंजोदुःखमोहें दुःखकर्मकरतहैं।सोभौतिकदुःख
औरज्ञानदुःखहें होयपुष्टिमारगकोज्ञाननहोय।सत्संगकेअ
यतेंकछुभगवद्धर्मआवैजुनायहोय।औरप्रीतिश्रन्यजो
भक्तिदुःखहे।आसुरीऐसेजोतीयहपुष्टिमारगीयवैष्ण
वसर्वथाहीत्यागकरैतबभगवद्धर्मरहेंयहनिश्चयसि
द्धांतहैंकाहेतें।ऐसेआसुरकेसंबंधतेंबुद्धिनास
होयजाय।अन्याश्रयहोय।सोयहपुष्टिमार्गमेंमहा
बाधकहे।तातेंश्रीहरिरायजीसगरेपुष्टिमारगीयवै
ष्णवकोंसिक्षाकरतहें।जोभक्तिदुःखकोत्यागहीकर्तव्य
हें।इतिश्रीहरिरायजीकृतशिक्षापत्रपंचविंसतिकी
टीकाश्रीगोपेश्वरजीकृतसंपूर्ण।।२५।।अबछब्बीसकहेंजो
ऐसेदुःसंगकोछोडेंतबभगवद्धर्मरहे।तेसेंईलौकिक
चिंताहूछोडेंतबप्रभुहृदयमेंपधारें।सोचिंतानिव
र्तिकोप्रकारश्रवकहतहें।श्लोक।।नैवचिंताप्रकर्त
व्यालौकिकेभक्तिमार्गगैः।चिंताचिंताकुलेहृदयेकथ
माविशतेगुणो।।१।।सा०ओ०अर्थ।। अबश्रीहरिरायजीकह
तहें।सगरेपुष्टिमारगीयवैष्णवकोंसिक्षाकरतहें।जो
हेसगरेपुष्टिमारगीयवैष्णवतुमकुंयहलौकिकचिं
ताताहीकर्तव्यनहींकाहेतें।चिंतामेंजोवेचिंताकरिव्या
कुलहोइगोतोहृदयमेंसकलगुणसंयुक्तएसेश्रीकृ
ष्णवेसेंआयवसेंकाहेतें।चिंतामहादोषरूपसकल
दोषनकीचिंतामातोहे।जहांचिंताआईतहांसक
लदोषआयो।सोदोषजबहृदयमेंहोइ।तबसकलगु
हृदयमेंकोनप्रकारआवें।तातेंश्रीआ

कार्या निवेदितात्मभिः कदापीति सो निवेदितात्म वैस्न
वपनो सगरो परार्थ आत्मनिवेदन भगवान को
कीयो पाछें चिंता कों करत हैं सर्वथा चिंता न करें भग
वान धनी माथे हैं सर्व करण सामर्थ्य तातें लौकिक
चिंता कछु नाहीं कर्त्तव्य है ॥ श्लोक ॥ यथा ग्रहेत्य हप
तिशुद्धं संमार्जनादिभिः रक्ष्यते तन्यथा तु परा
वर्त्तनं सर्वथा ॥ २ ॥ अथ लौकिक दृष्टांत तें
कहत हैं जैसें लौकिक में गृहस्थ गृह को धनी गृह कों सु
द्ध करिवे संमार्जन करि सगरो कूडा बाहिर निकासि शु
द्ध शुद्ध करि घर में रहत है सो लौकिक प्रसिद्ध ही
है तैसें ही श्रीकृष्ण जा वैष्णव को हृदयरूपी घर शुद्ध रूपी
घर देखत हैं चिंता को दोष जाके हृदय में नाहीं है त
व प्रभु हू वैष्णवन के हृदय में पधारत हैं काहे तें चिंता
लौकिक है सो श्रीकृष्ण के चरणारविंद के विसारक है
काहे तें चिंता भई तब प्रभु को स्मरण भजन कैसें को
रो हृदय में तो लौकिक बस भरि रह्यो है तब प्रभु हृद
य में कैसें पधारेंगे तातें श्री आचार्य जी द्वारा निवेदन
कीये पाछें सगरी चिंता काम क्रोध मद मछरता एह
दय में कूडा भरत है ताकों निकासि कें यह आपनो हृ
दय शुद्ध करि संतत चिंतन करि श्रीकृष्ण ही को आ
श्रय करि रहे तब प्रभु वैष्णव को हृदय शुद्ध देखि कें प्रस
न्न होय पधारें आपने स्वरूपानंद को अनुभव कृपा
करि कें करावें अब अग्रे कहत हैं ॥ श्लो ॥ उक्तं च प्र
भुभिस्तत्समालवरूपानुभिः चैतान्य विनियो
गापि चिंता का स्वस्य सोपि चेन्न स्यात् ॥ ३ ॥ न है
कोउ कहै जो अन्य विनियोग होत है यह प्रभु की सेवा
करत न बनै तब तो चिंता करनी तहां श्री हरिराय जी
कहत हैं जो हमारे श्री वल्लभाचार्य जी परम कृपाल हैं

सोनकलग्रंथमें निरूपण कीयो है। जो अपनेतें अन्यवि
विनियोग होइ तब कछु चिंता न करे काहेतें। प्रभु मन
फेरिकें अपने जीवनको अपनेई विनियोग करावेंगे
याभांति चिंता छोडिकें प्रभुको आश्रय दृढ हृदयमें
राखनो॥३॥ अब और हू कहत हैं। श्लोक॥ सर्वमार्गे वि
चारापि कलौ कैवलिष्यतो। न संसर्गकृतो दोषस्त
स्मात्कलियुगे भवेत्॥४॥ याको अर्थ॥ अब श्री हरिरायजी
कहत हैं जो धर्ममार्ग विचारें धर्मसास्त्र आदिमें यह लिख
के राख्यो है तें जो कलिमें दोष करे ताहीको दोष लि
होय अन्यथा औरको सर्वथा दोष न लगे यह कलि
युगकी मर्यादा है। तातें वैधी वा भक्ति रीति छोडिकें
अन्य विनियोग अन्याश्रय करत तो हू यह चिंता करे
जानें इनकीयो है सोइये भोगेगो मोको कहा बाधक है
ऐसे विचारिकें पुत्र अपने धर्ममें सावधान रहें॥४॥ श्लो
क॥ युगांतरे न तथैवायं पंचमत्वेन गण्यते॥५॥ युग
निजाचार्यैः स्थितैर्नावैहलवैसह॥५॥ याको अर्थ॥ यु
गांतर बीतें कलियुग आवत है। यह प्रथम सास्त्रव
हकी मर्यादा है। तें सो प्रथम सत्ययुग॥१॥ त्रेता॥२॥
द्वापुर॥३॥ कलियुग॥४॥ ये चार भये। सो यह स्त्रव यह
वर्तमान कलियुग है। सो पंचमो उनमत्त उनस
मिनको पहलाख्यो युगमें नाही है। काहेतें यायुग
में श्रीवल्लभाचार्यजी पूर्ण पुरुषोत्तमको प्रगट
है। तातें रसीन भऊ सो श्रीगुसांईजी सूसक्ता की
मर्व है है। श्लोक॥ मायावादकरीन्द्रदर्पदलने
स्पंदुराजोऽत॥ श्रीमद्भागवताख्यदुग्धमसुधा
वर्षेणा वेदादि॥ राधावल्लभसेवया तदुचितं
प्रेम्णा पदेऽरपि॥ श्रीमद्वल्लभनामधेयसदृसो
भावेन भूतोस्त्यपि॥ इति वचनात्॥ सो सेवा

में कहे हैं ॥ ऐसी भईन्ह हैं कबहूं जैसी अवनिधि आई
ता भांत ते ऐसो मन में जाननो ॥ जो एसो कलियुग क
न हूं नाही भयो ॥ और न आगे होइगो ॥ ताते अब दैवी
सृष्टि के उद्धारार्थ श्री आचार्यजी महाप्रभु पधा
रे पुष्टिमार्ग प्रगट कीए हैं ताते श्री आचार्यजी महाप्र
भु प्रागट्य होइ की रीति है जो जीव अन्य विनियोगमें स्थित न
होइ ॥ अन्याश्रय सर्वथा न करे ॥ यह सिद्धांत सर्वोपर
है ॥ एवं आगे कहत हैं ॥ श्लो ॥ तथापि लौकिकं
वकों व्यासग्रहणे ॥ मनः स्थाप्यं तन्निवृत्तौ समय
तन्निवृत्ते ने ॥ श्लोका को अर्थ ॥ अब श्री हरिरायजी कहत
हैं जो कोई वैष्णव को आवंत कलौक संबंधी संकोच दु
ख्वादिकों आय पडे ॥ वो हीन दुख होत जाने तो उन ही
कुटंब में स्थित होइ के सबी होन न करें ॥ तिन के रो
य अर्थ ॥ परंतु अपने मन कों स्थिति न करें ॥ जब समय
आय पडे तब उनको छोडि देइ ॥ जो खुल्ली अपने समझ
यते पुष्टिमार्ग के धर्म में आवे तो उनहूं को त्यावे ॥ जो वे
न आवें तो उनकों तत्काल छोडि देइ मर्यादा ले उपास
कारि फेरि अपने पुष्टिमार्ग की रीति सों प्रमान स्वास
ला करें ॥ श्लो ॥ तत्कालेतन्प्रयत्ने तु रोगस्येवाइवे
द्वितु ॥ अन्तः कार्यएवमेव प्रतिबंधनिवारणे ॥७॥ याश्लो
क को अर्थ ॥ अब श्री हरिरायजी कहत हैं ॥ कुटुंब को संकोच
हि मर्याद्या व्यावेस होइ तो उन ही मैं मिलि के रहे परंतु म
हा रोग समान उनको स्वरूप जाने ॥ उनके त्याग की
भावना मन मैं राखे ॥ जैसे रोगादिकों अनेक औषधक
रि दूरि करियत है ॥ तैसे ई तत्काल अनेक उपाइ करि के
न्य संबंध करे ॥ ताको त्याग करिये काहे ते ॥ एह सास्त्र
मैं कहे हैं ॥ जो भगवद् धर्म में अनुकूल न होइ तासों मिलि
के भजन स्मरण करिये जो औरकों मन सेवा में न होइ

तोआपुहीकरियेताकेपीछेंमहाप्रसादधरिलीजियेंऔ
रजोप्रतिबंधकरैताकोत्यागहीकरियें।जोएकवारत्या
गनहोइतोसनैःसनैःउहप्रतिबंधकोनिवर्त्तकरिये।याभां
तिपुष्टिमार्गीयवैष्णवसेवास्मरणकरैं।अबऔरहूक
हतहैं॥७॥श्लोक॥वृथाचिंतानकर्त्तव्यास्वमनोमोहका
रणी।यथासछिद्रकलसान्जलंस्रवतिसर्वतः॥८॥या
कोअर्थ।अबश्रीहरिरायजीकहतहैंजोवृथाचिं
तासर्वथाहीनाहींकर्त्तव्यहैकाहेतेंमनकोमोह
होइमोहकोकारनएकवृथाहीचिंताहैयहनिश्च
यहीजाननो।ताकोदृष्टांतकहतहैं।जैसेंकलसकेपें
देमेंछिद्रभयोकलसतेंजलसगरोजलबाहिरब
हिजातहैतैसेंईवृथाचिंतासेंमनकोमोहउपजत
हैभगवत्सेवाहीवनिआवत।यहमनुष्यदेहस्वा
पुपरमअनुग्रहजानवत।प्रभुकीसेवायोग्यहैसोसगरी
आयुसबवीतजातहै।सोऐसोदुर्लभधर्मराजजनक
नैंकरीहै।श्लोक॥दुर्लभोमानुषोदेहोदेहीनां
क्षणभंगुरः।तत्रापिदुर्लभंमन्येवैकुंठप्रियदर्शनं॥९
इतिवचनात्यहमनुष्यदेहहैसोमहादुर्लभहैदे
वतानकोहूदुर्लभहैसोऔरहूक्षणभंगुरहै।परंतुभगव
नअनन्यतोदुर्लभहै।सोयहदेहपायकेंप्रभुकोआश्र
यकरेतोइनकीसिद्धिहोय।श्रीवैकुंठनाथश्रीठाकुरके
दरसनकोकरतहैंतातेंवृथाकरिकेंयहदेहकोमो
हकरिकेंवृथासंसारमेंजातहैं।अबऔरहूकहतहैं
श्लोक॥यथायुसततंयांतिनायतेनप्रहस्थिते।९
वेहिगाछतापुष्यहृएंमेवविलंक्येन।टीकाको
अर्थ॥

जानेंजोकीरोएहरू

वहसुखदुःसंगी मिले हैं। ए भगवद्धर्ममें सर्वथा बाधक ही करेंगे। या भांति प्रतिबंधरूप होइ तो तिनको नत्का ख तनाइ त्याग करिके भाजि जाय। एक जनाइ खिलैबे नको काहे तें देह छूटनको प्रमान नाहीं है सो श्री भागवतमें प्रह्लादजी बालकसो कहे हैं जो कौमार आचरेत प्राज्ञो धर्मान् भागवतानिह दुर्लभं मानुषं जन्म तदप्यध्रुवमर्थदं १ इति वच नात प्रह्लादजी कहत हैं हे बालक यह भगवद्ध र्मके मार अवस्था ही ते आचरन कर्तव्य है काहे ते मनुष्य देह महा दुर्लभ है सो निश्चय नाही है तो अब एक छनमें नास होइ जाइगी तातें यह बालककौमार अवस्था ही ते प्रभुको सरन कर्तव्य है यह विचारिकें प्रति बंध रूप यह संबंधी कुटुंब को तत्काल ही त्याग कर्तव्य है। एक छनाइ उनके संग विलंब न करें काहे दुःसंगर्त मन फिरि जाइ सो यह संसारासक्ति होय जाय तातें नाइ छनाउ नको सीघ्र ही त्याग करे। अब और हू कहत हैं मनोवा भगवद्धर्म राग्वेगाः स्यात्पतति वि चल्या शरीर पातनं तद्धि हन्य सर्वथा मतं १ याको अर्थ ऊपर कहे एसे प्रतिबंधको छोडिके कछ करें भगवान श्रीकृष्णके चरणकमलमें अपने चित को स्थापन करें विचक्षण रीति सों ताको यह अर्थ है जो पुष्टिमारगीयकी रीति सों कहत हैं भावो न्वे ओर एक सरण ज्ञानी हूं मर्यादामारगीय हूं भ जन करत हैं तिनते विचक्षण पुष्टिमार्गकी रीति सों नित्य श्रीकृष्णकी सेवादिक सब इंद्रिय देह मन सब भगवानके चरणमें लगावें सो कहत है मन अपने सरीरको पातन जाने यह देहके पोष नमें देहको मोह न होइ तब मन लगाइके तनुजा

जासेवा करें। तातें सरीर कों प्राकृत जानें। और जीव
नित्य सदा प्रभु को दास जानें। तातें यह देह सों भाउ
पशु जो लिखें। यामें जलिलौ पोहोंचे तें सें यह जानें
यह देह का कहि न नास होइगो। यह भावना करिये।
भगवदीय करि लेइ जीव को सदा नित्य जानें। १। अ
विचार कहत हैं। श्लोक॥ न तत्संबंधाश्च विद्यन्ते सत
ताहंममतात्मकः संसारस्तत्कृतः सर्वः संबंधोपि मृषा
त:। २। याको अर्थ॥ अब श्री हरिराय जी कहत हैं जो जी
वकों और देह सों संबंध कोउ काल में नाहीं है। जीव
तो आत्मा हि नित्य है। और को कोटिन ही विचार करें
तो ताहि स्थिर नाहिं है। और को ऊसरी सों संबंध नाहीं
लक्ष योनि भुगतें तहां का ऊसरी सें है। पंच तत्व को
है। काहे तें यह देह प्राकृत पंचतत्व करि कें है। और जीव सद
चिद् प्राकृत नहीं। ता कारज प्राकृत होइ। और सत्व नष्ट
हरि रूप खंड है। ता को अविलिन जगावे। सो लगी है। ता
हरि को सो गावे। नित्य है परंतु अविद्या जो लगी है
करि अपनों सरीर जानत है अहंता ममता माया रूप
जीव को लागी है। या भांति सगरो संसार अहंता ममता
करि विधि है। सो यह लौकिक संबंध सगरो जो है सो
है। अज्ञान करि कै अहंता ममता अविद्या के वस है॥
अपनी मान्यो है। यह को मैं हूं कहत है। १। श्लोक॥ न
संबंध कहे तें दुख न हि मित्र अमुन मो प्रति बंधनि
ये हरि शरणागत जन। १२। याको अर्थ। तातें यह
लौकिक संबंध मिथ्या है। सो उन में मन लगावें।
जन सेया को दुख ही उपजे। तातें जन भगवदीय
जन मज न हीं। सो यह लौकिक संबंध जन मना है
नत है

वहसुखदुःसंगी मिले हैं। ए भगवद्धर्म में सर्वाबाधक हैं
करैगे या सों जो प्रतिबंधरूप हैं तो तिनको नक्का
ल नाइ लक्षण त्याग करिके भाजि जाय। एकक्षण हू
विलंब न करे। काहेते देह छूटन को प्रमान नाही है
सो श्रीभागवत में प्रह्लाद जी बालक सों कहे हैं श्लो
क॥ कौमार आचरेत्प्राज्ञो धर्मान्भागवतानिह
दुर्लभं मानुषं जन्म तदप्यध्रुवमर्थदं॥१॥ इति वच
नात् प्रह्लाद जी कहत हैं। हे बालक यह भगवद्ध
र्म कौमार अवस्था ही ते आचरन कर्तव्य है। काहेते
मनुष्य देह महादुर्लभ है। सो निश्चय नाही है तो एक
एक क्षण में नाश होइ जाइगी। तातें यह बालक कौमार
अवस्था ही ते प्रभु को स्मरन कर्तव्य है। यह विचारि कें प्रति
बंधरूप यह संबंधी कुटुंब को तत्काल ही त्याग कर्तव्य
है। एक क्षण हू उनके संग विलंब न करो। कहूं दुःसंग दे
खते मन फिरि जाइ सो यह संसारासक्ति होय जाय
तातें नाई लक्षण उनको सीघ्र ही त्याग करो। अब और
हू कहत हैं श्लोक॥ भगवच्चरणांभोजे मनःस्थापनमिति
विचक्षणैः शरीरं पालनं तद्धि कल्पनं सर्वथा मतं॥१॥
याको अर्थ। ऊपर कहे एसे प्रतिबंध को छोडि के कह
करे भगवान श्रीकृष्ण के चरणकमल में अपने चित्त
को स्थापन करे। विचक्षण रीति सों ताको यह अर्थ
है जो पुष्टिमार्गीय की रीति सों कहत हैं। भगवान के
आचरण को स्मरण ज्ञानी हूं मर्यादामार्गीय हू भ
ला करत हैं तिनको विचक्षण पुष्टिमार्ग की रीति सों
नित्य श्रीकृष्ण की सेवादिक कर सर्वइंद्रिय देह मन
सर्व भगवान के चरण में लगावें। सो कब वनें
सब अपने शरीर को पालन जानें। यह देह के पाल
न में देह को मोह न होय। तब मन लगाइ के तनुजा

जासेवाकरें।तातेंसरीरकोंप्राकृतजानें।औरजीव
नित्यसदाप्रभुकोदासजानें।तातेंयहदेहलोभाउ
पशुजातिलेया।मजलिलोपाहोचित्तेंसेव जानें
यहदेहहाकरिननासहोऊगी।
भगवदूसंकरिलेहुजीवकोसदानित्यजानें।१
औरहूकहतहें।स्लोक॥ नसंबंधोपिविद्यातस्त
ताहंममताभ्यां।संसारस्तत्कृतःसर्वःसंबंधो
तः।१।याकोअर्थ॥ श्रीहरिरायजीकहें
वकोंश्रीरदेहसोंसंबंधकोउकालमेंनाहीं
तो।आस्थिनातिहें।औरकोटानकोटि
लक्षयोनिभुगतीहें।तहांकाउसरीरसोंसंबंधनाहीं
हें।काहेतें।एदेहप्राकृतपंचतत्वकरिकेंहें।पंचतत्व
हें।काहेतें।एदेहप्राकृतहे
चेप्राकृतहें।ताकारजप्राकृतहे
एकरसअखंडहें।जाकोंअविनजरावे
नकरें।सोरहेनित्यहे परंतुअविद्याजोलगीहें।ता
करिअपनोसरीरजानतहें अहंताममतामाया
तेंजीवकोलागीहें।याभांतिसगरोसंसार अहंताममता
करिबंध्योहें।सोयहलो।किकसंबंधसगरोजूठो
हें।अज्ञानकरिअहंताममताअविद्याकेवसहे
अपनोमानेहें।यहओरहूकहतहें ॥स्लो ॥न
संबंधस्तनदुखनहिमतथासुनमें।
अहरिशरणमाश्रजेत॥२॥याको
लौकिकसंबंधमिथ्याहें।सोउनमेंमनलगावें।
अंतमेंयाकोंदुखहीउपजें।
जनमजनहें।सोयहलो।किकसंबंधउनसूंना
नतहें।तातेंअहंताममताप्रतिबंधरूपजा
सरणाजानतहें।जहांजहांअहंताममता
सर्वप्रभुकोहें।समर्पनकरिदेंकिस

तव यह प्रतिबंध दूरि होत हैं सो नवमस्कंधमें कहे हैं
श्लोक॥ ये दारागारपुत्राप्तान् प्राणान्वित्तमिमंपरं॥ हि
त्वा मां शरणं याता कथं तांस्त्यक्तुमुत्सहे॥१॥ और एका
दसस्कंधमें कहे हैं श्लोक॥ ये दारागारपत्राप्तान् प्रा
न्वित्तमिमंपरं॥ हित्वा मां शरणं याता कथं तांस्त्यक्तुमु
त्सहे॥१॥ और एकादसस्कंधमें कहे हैं कायेन वाचा
मनसेंद्रियैर्वा बुध्यात्मना वानुसृतस्वभावात् करो
मि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयेत्तत्॥२
इष्टं दत्तं जपो तप्तं वृत्तं यच्चात्मनः प्रियं॥ दारान्य
नसुतान्गृहान्प्राणान्यत्परस्मै निवेदनं॥३॥ इष्टं दत्तं जपो
तप्तं वृत्तं यच्चात्मनः प्रियं॥ इत्यादि वचनके अनुसार
पुष्टिमार्गमें श्री आचार्यजी द्वारा प्रभुकों समर्पन करे
क प्रभुहीकी सरणकों आश्रय करते न हे तब और हू
करत हैं॥१३॥ श्लोक॥ भक्तदुखासहिष्णुता तदेवादि
निवर्तयेत्॥ असमर्थो हरिर्वास्ति यथमेव प्रभोर्वदः
१४॥ याकौ अर्थ॥ कपरकहै जो सर्वपदार्थकुटंबादिकों
प्रभुमें समर्पन करि भगवद्भजन हरिकी सरन लीनी
तव संसारके कुटंबी दुख देहि ज्ञातिको दुख होइ तथा ए
कलो है रोगादि दुख होइ॥ तथा द्रव्यादिकी हानि हो
इ॥ तथा लोकनादि अंगकों भंग होइ॥ तथा राजादि दे
इ॥ तथा स्थानादिकनको संकोच अनेक दुःखमय है
आवे तो है॥ तव सहाय याकी को न करे या भांति संदेह
होइ॥ तहां श्री हरिरायजी कहत हैं जो यह भगवद्भज
न सब छोडि हरिकी सरन जाइ तहां कोइ दुख आवे ता
कोसहें॥ तव श्री ठाकुरजी भक्तको दुख नाहीं सहि सक
तहैं ताते भक्तको दुख पावत देखेंगे॥ तव तत्काल दुख
दूरि नेवर्तेकरेंगे॥ सो विवेकधैर्याश्रयमें श्री आचा
र्यजी महाप्रभु कहे हैं॥ असमर्थो हरिर्वास्ति सर्वसामर्थ्य

यतोभवेत तथा अस्क्येवा सुलकेवा सर्वथा सरणं हरिः १
याभांति हरिकी सरन दृढ राखे तौ। प्रभु सर्वे श्रोत रक्षा करे
गे। प्रहलादनें हरिकी सरन कीनी। दुःख सहे। न व भगवान दु
ख सहे। न व भगवान प्रतिबंध दूरि कीये। भक्त की रक्षा ईक
री। सो गीता जी में भगवान अर्जुन प्रति कहे हैं। स्लोक॥ सर्व
धर्मान् परित्यज्य मामेकं सरणं व्रज। जेनो। अहं त्वा सर्वपा
पेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा सुचः॥ याभांति भगवान की सर
न जाय प्रभु दें आश्रय करे। ताकी रक्षा प्रभु करत हैं। यों
भक्ति वर्द्धनी में श्री आचार्य जी महाप्रभु कहे हैं। बाधसं
भावना यां तु नैकांते वासई ष्यते। हरिस्तु सर्वतो रक्षां क
रिष्यति निःसंशयः॥ इति हरिश्रवणाहीइ अपने मन को एक
न में वा सक। हरि सरणा हैं। यतो प्रभु रक्षा सर्व प्रकार क
रे। यामें संशय नाहीं है। तातें सर्व प्रकार हरि ही को आ
श्रय करे। १३ अब आगे कहत हैं। स्लोक॥ यावद्धृति
प्रकर्ते वा ह्युपाय तु निवृत्ते प्रतिकूलतो न त्याग पर्य
ते पिहिते पुन॥१४॥ याको अर्थ॥ याभांति हि अवय
हमें प्रभु की सरन के उपाय में रहे। प्रतिबंध रूप घर को त्या
ग में मन राखे॥ जो कोई कुटुंबी प्रतिकूल होय स्त्री पु
त्रादि माता पिता तिनको त्याग करें। जो उनके अनुकूल
होय तो अपनो धर्म अकेलो ईस्वा करें। साधु उनके
म संप्रसाद प्रसादी वस्तु दे पोषन करें। जो वे कल प्र
तिबंध रूप भगवद्धर्म में देष राखे तो उनको त्याग क
रें। काहे तें भगवान आत्मसंबंधी जन्म जन्म के प्रभु
हैं। और ये देहसंबंधी हैं। जहां मरन देह न हां लों संबं
ध है। नाहीं ते देहसंबंधी केली ये आत्मसंबंध न है
ईनो। याभांति प्रतिकूल के त्याग करें नव हि नहे
अब आगे कहत हैं। १५। स्लोक॥ स्वस्याप्यपचार
तो हरि रवहिरलक॥ स्वकीयचिनाचु लक्ष्कनस्क

रिष्यति॥४॥ याको अर्थ श्रीहरिरायजी कहत हैं जो स
र्वथा यह जीव अपने प्रभु श्रीकृष्णचंद्र के चरणकम
लमें आसक्त होइ ताको लौकिक सर्व दुःख नो आपने
की निजभक्तन की चिंता आगेतें कीये रहे हैं। ओर स्व
रत हैं ओर करेंगे तीनों कालमें वर्तमान भक्तन को ना
ही भूलत नहीं हैं सो संन्यासनिर्णयमें श्रीआचार्यजी म
हाप्रभु कहे हैं श्लोक॥ अन्यथा मातरो बालान्स्तनैः
पुपुषुः क्वचित्॥ माता अपने बालक पुत्रन कों स्तन अति
प्रीति सों प्यावत हैं तिन प्यावे सो ऐसो मातान कूं कब
हू बालक की रक्षा ही लपालन करत हैं तेसें भगवा
न भक्त की चिंता सर्वथा न करौ जा भांति भक्त को हित
होइ सोइ प्रभु करत हैं यह निश्चय जाननो अब श्री
रहू कहत हैं ५ श्लोक॥ स्वयं वि मधुकरैव पितरौ
भुविराः स्थिते नन्न्हाति कृपापूर्ण सेवकं सर्वदाभि
तं ह्य याको अर्थ अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो ज
न पुष्टिमार्गीय वैष्णव कों चिंता कर्तव्य है काहे
तें श्रीआचार्यजी श्रीकृष्ण धनी माथे पर बैठे हैं तिन
को काहे की चिंता है काहेतें यह लौकिकमें बालक
माय पिता बैठो होय सो बालक कूं कहा चिंता होय
हतो लौकिक ओ श्रीकृष्ण तो ईश्वर कर्ता हैं सर्व
सामर्थ्ययुक्त हैं ऐसे वैष्णव के माथे यह पुष्टिमार्ग में
विराजत हैं सदा कृपा सजन की कृपा दृष्टि भक्तन प
र हैं ऐसो वैष्णव कूं कोई अर्थ की चिंता न करनी तातें प्रभु
नित्य विराजत हैं ऐसे प्रभु के सेवक मन वचन कर्म
रिकें आश्रय यही करें पर स्विवेक सर्वोपर हैं अब श्री
रहू कहत हैं ६ श्लोक॥ आचार्यचरणं तस्य चिंता
लेशोपि नैव हि॥ तस्माच्छ्रीवल्लभाचार्यचरणाब्जद्व
याश्रिते ७ याको अर्थ अब श्रीहरिरायजी कहत

जोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसेंस्मरनहैंनाममात्र
हे तिनकोचिंताकोलेसहूनाहीं
सोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुं विज्ञप्तीमेंकहेहैं
श्लोक॥ यदुक्तंजातश्चरणौश्रीकृष्णःशरणंमम: ततएव
स्तेनैश्चिन्त्यमैहिकंपारलौकिकं॥१॥ इत्यादिवचनक
।चिंतासर्वथापुष्टिमार्गीयवैष्णवकोनाहींकरनीय
हे अवश्रीएहहूकहतहैं श्लोक॥ नकापिचिंताकर्तव्या
कृष्णसेवाविनापुनः निवेदनानुसंधानेचिंतामात्रंवि
धीयते॥१॥ याकोअर्थ॥ कृष्णकहेंजोचिंताकोईप्रकार
नाहींकर्तव्यहैतहांकोइकहेजोकछुचिंतानाहीं
करनकहेतवजीवभगवद्धर्मकीचिंतानाहींकरनेवा
हे तबजीवभगवद्धर्मकीचिंताउनकरेगो आसमें
वक्षमेंनकरेगो क्यामजीवकोभगवद्धर्मोमेंमनहूनाहीं
कीकहाग
होगोतुमचि
हतहैं
त
क यहैतो
कि वैदिकफलकीतोअपनेकूरकीनोचिंतानाहीं
कर्तव्यहें श्रीकृष्णकीसेवाविनातोयहपुष्टिमार्गमें
कोपरफलहैसोयहचिंताकोआवश्यकहीकर्तव्यहै
तातेंश्रीकृष्णकीसेवाअरुनिवेदनकोअनुसंधान
अवश्यराखें जोमेंकितनेकालकोप्रभुसोंभूल्योहु
तो अवश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीकीकृपातेसंबंधभ
योहैमैंदासहोंमोकोअवयहाकर्तव्यहैमैसवसमर्प
णकीयोहैं यामें आपनीसत्तासर्वथाहीनकरनीसर्व
प्रभुकोहै याभांतिनिवेदनकोअनुसंधानराखेंसर्व
चिंतामात्रमनसेंकछुनल्यावें अवआगेंकहतहैंश्लो
क॥ लोकेस्वास्थ्यंतथावेदेहतिश्रीमत्प्रभोर्वचः स्मृत
सीघ्रहृदिस्थासानिवनेसेवनार्थिभी॥२॥याकोअर्थ

अव श्रीहरिरायजी कहत हैं जो हमारे प्रभु श्रीवल्लभा
चार्यजी श्रीनवरत्न ग्रंथ में कहे हैं सो का लोके स्वा
र्थं तथा वैदिकमनु करिष्यति १ इति वचनात् श्री
हू कैसे हैं अपने जनकों लौकिक वैदिक में स्थिति
न करें जो अपने ग्यान करि कोई लौकिक में वैदिक में स्थि
ति नैं करै है तो श्रीवल्लभ लौकिक वैदिक कार्य
सिद्धि नाहीं करत हैं या भांति प्रभु को गुण मानें म
न में चिंता दुख न पावे जो मैं अब कहा करूं मेरो नि
र्वाह कैसे होइगो लौकिक तो सिद्धि नाहीं होत यह
चिंता रंच कहूं न करै सो घरी प्रभु को चिंतन करै जो मे
रे ऊपर प्रभु प्रसन्न नाहीं हैं जैसे सेन दासजी श्रीआचार्यजी
के सेवक प्रथम बहुत प्रसन्न रहते सो द्रव्य पायो बीस २०
हजार की एक जीति अब दाइ पैसा में निर्वाह करते पाछें ना
रायनदास ने २०० मोहोर पठाई सो न राखे प्रभु के अ
नुसार चले या भांति वैष्णव प्रभु को गुन ही मानें १८
इति श्री हरिरायजी कृत ... ला ... त्र ... सो ... की ... का
श्री ... प ... र ... सं ... २६ अब ऊपर कहे जो चिं
तान करनी और अन्य साधन होइ तब फल प्राप्ति होइ सो
निःसाधन की भावना को न प्रकार करें सो आगे कहत हैं
श्लोक न सुद्ध भावो नैवास्ति सर्व भावन हीयते नाश्रा
परत्वे विश्वासो न चास्ति परमा दुर: १ या ... अब
श्रीहरिरायजी कहत हैं जो या भांति निःसाधन जीव हो
इ तो प्रभु विनी प्रिय फल दान करें सो मेरे में निसाधन
ता नाहीं है प्रथम तो सुद्ध भाव होइ तब प्रभु कृपा करें
सो सुद्ध भाव मेरे में तो नाहीं है मन में कपट छल ईर्षा
इत्यादिक भरि रह्यो है तातें श्रीकृष्ण में एक सुद्ध निर्म
ल भावना नाहीं है और सब भाव हू प्रभु में नाहीं हैं
ते चतुःश्लोकी में श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे हैं

हासर्वभावेनभजनीयोव्रजाधिपः॥यामेंव्रजकेअ
धिपतिश्रीठाकुरतिनकोभजनसेवासर्वभाव
करिकैंकर्तव्यहै॥सोमोसोनाहीबनतहै॥जेकरतहो
उहीमनमाहीआतममनमेंविचारहो॥तबदेहते
बनत मनवचनकर्मसर्वभावकै प्रभुमेंनाहीहै
वै तबदैन्यताहीकरौ॥तब
मेंतोरंचकहूदैन्यतानाहीहै
विश्वासमेंकहेहो॥श्लोक॥योऽहं
कैऽन्यत्वतोषसाधनं॥हमारेआचार्यच
नश्रीमु   नीजीमेंकहेहैंजोप्रभुप्रसन्नकरिवेको
साधनएकदैन्यहीसर्वोपरिहै॥सोमेरमेंदैन्यतानाहीहै
अवेसजोप्रकारश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकीआज्ञाहै
सोग्रंथमेंसबकहेहैं॥सोहनैंतोऊप्रसन्नहोइसोपुष्टि
मार्गकीरीतिहै॥ताअनुसारआज्ञापालनऊमोमेंना
हीहै॥४॥औरयहपुष्टिमार्गमेंचात्रकपक्षीकीनाईंवि
श्वासरिवेपरसर्वोपरिहै॥विश्वासविनाकछुसिद्धि
नाहीहै॥सोमेरमेंविश्वासहूनाहीहै॥५॥औरप्रभुमेंआ
सक्तिनाहीहै॥परमप्रीतिआरहोयतौप्रभुविनाऔर
ठौरमननलगावै॥सोप्रभुमेंआसक्तिनाहीहै॥६॥अब
औरहूकहतहैं॥श्लोक॥नसत्संगोनिवस्थानंनिवेद
नंस्मृति॥नोश्रवणंनविवेकोदैर्यनसरणस्थितिः॥२
या॰॥अर्थ॥अबश्रीहरिरायजीकहतहैंजोऔरसा
धनहोयनहोयतोसत्संगकरिपुष्टिमार्गकोफल
औरअनुभवहोय॥सोमोकोपुष्टिमार्गीयकोसंग
हूनाहीहै॥७॥सत्संगहोयतौभगवत्सेवामेंअष्टप्र
हरमनहोइतेमानसीफलरूपहोय॥सोमेरमेंतौतनु
जोवित्तजायहीसेवानाहीबनतहै॥सोमानसीपर
मदुर्लभहै॥यहमार्गमेंतोसेवाविनावैष्णवनाईजाय

पु॰
९६

तेसें ब्राह्मण गायत्री न जपे तौ ब्रह्मतेज न आय तेसें वैस
व सेवा न करै तौ वैष्णवता जाइ सो मेरे में सेवा हू नाहीं है
७ और निवेदन को अनुसंधान यह पुष्टिमार्ग में सर्वथा
चहिये सो न करत में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं नि
वेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैरपि सो मोको न तादृ
सी को संग है और निवेदन की स्मृति हू नाहीं है ८ एक प्र
भु को आश्रय यह मन में यह दृढ़ समाश्रयन है सो विवेक
धैर्याश्रय में कहे हैं श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं श्लो
क अशक्ये हरिरेवास्ति सर्वमाश्रयतो भवेत् या भांति
सो एक श्रीकृष्ण ही को आश्रय हू नाहीं है ९ निवेदन कहे
पीछे विवेक चहिये सो विवेकस्तु हरिः सर्वं निजेच्छातः क
रिष्यति इत्यादि मन में विचारे यह सो प्रभु अपनी इ
च्छा ते सब करत हैं जीव को कीयो कछु हू नाही होत है १०
त्यादि भाव वैष्णव को चहिये सो विवेक हू नाहीं है ११
वैष्णव को दुःख सुख में धैर्य चहिये सो श्री आचार्यजी
कहे हैं त्रिदुःखसहनं धैर्यमामृतेः सर्वतः सदा तक्रवद्दे
हवद्भाव्यं जडवद्गोपभार्यवत् इत्यादि आधिदैवि
क सुख आध्यात्मिक भौतिक तीनो प्रकार के दुःख के
सहन कै स्नव करै तैसें न करै दूसरी दुःख सहन करै तब मार
ना लिख सन है जो गोपभार्या दुःख सह्यो यह प्रकार दु
ख सहे तब धैर्य है स्वप्रभु प्रसन्न होत है यह मन दृढ़ की
नाटेक चहिये सो मेरे में धैर्य हू नाहीं है १२ तथा हरि
की सरण में स्थित नहीं हूं या भांति लौकिके परलोके
च सर्वथा सरणं हरिः दुःखहानौ तथा पापे भये का
माद्यपूरणे भक्तद्रोहे भक्त्यभावे भक्तैश्चातिक्रमे कृते
अशक्ये वा सुशक्ये वा सर्वथा सरणं हरिः या भांति
सरण है सो और कलाश्रय में कहे हैं सोरणस्य समुद्ध
रेत्स्वविशालप्ययाम्या है जातें श्रीकृष्ण की सरण है ६

तोप्रभु द्वारकरें सो गीतामें भगवान कहेहैं सर्वधर्मान्
परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्ष
यिष्यामि मा शुचः ॥१॥ याभांति प्रभुकी शरन होइ तो हूं
सो मेंसरणमार्गमें हू स्थिति नाही है ॥१३॥ अब कहें
कहत हैं जहां लों कान माहात्म्य परिस्फूर्ती स्नेह स्तु
त्रचित्त आसक्ति व्यसनादीनां कथापि ख्लु दु
र्लभा का कथा ॥ श्रीकृष्णको माहात्म्यस्फुर्ति हृदय
होइ तो प्रीति होइ जो होत्र अपने श्रमे यत्न ते गा
यगो पगो पी एसे नि: साधनको फलसिद्ध भयो हे अ
नामिलाहि पुत्र भावके नाम ते नारायणो हे में विद्यास्प
दत नाको एक लगामें नारायण भक्तनकी अविद्या हरि
यती नी हें यहपुष्टि मार्गमें श्रीमद्वारिकनके उद्धार
श्रीमहाप्रभुजीकी पर्हें स्वरूपा दृष्टिनें भक्तनको सर्व
कार्य सिद्ध होत है सो मोको कहा डरहै याभांति माहा
त्म्यकी हू स्फुर्ति नाही है ॥१४॥ चित्तमें स्नेह होइ यह बडो
प्रभुप्रसन्न करिवेको साधन है काहेते प्रथम स्नेह प्र
होइ पीछे आसक्ति होइ पीछे व्यसन होइ तब अ
नुभव होय स्नेह सो श्रीकृष्णचंद्र के चरणकमलमें
प्रेम सो है नाही है सो तो आसक्ति व्यसनादिककी ताक
याकहन को कहा दुर्लभ है सो प्रेम आसक्ति व्यसन कब
होइ सो त्रिविध नामावली में श्री आचार्यजी महा
प्रभु कहे हैं बाललीला नामपठात् श्रीकृष्णे प्रेम जा
यते आसक्तिः प्रौढलीलायां नाम्नां पाठाद्भविष्यति
॥ व्यसनं कृष्णचरणे राजलीलाभिधानतः तस्मात् त्री
मंत्रयजाप्यं भक्ति प्राप्त्यै मुमुक्षुभिः सदा ॥१॥ याभांति बा
ललीलाकी नामावली पाठते प्रेम होय प्रौढ राज
लीलाकी नामावली पाठते व्यसन होइ यातापाठ
पुष्टि भक्ति होइ सो तीन पाठ मन लगाइके करें

तब पुष्टि भक्ति निश्चय होय और भक्ति वर्द्धनी में श्रीआ
चार्यजी कहे हैं तत्र प्रेम तथा सक्ति व्यसन ये त्रय दृढ भवे ते
सो मेरे मैं से हरूप नाही हैं १५ ताको हिकै श्रीहरि कके चार
ने मे आसक्ति नाही हैं १६ और व्यसनादिक की कथा
१६ जैसे हैं १७ अब कौन कहत हैं या ... भक्ति
मार्ग प्रवेश नली ... न व्यथित ... भाव
न ... ल वे ... श्री हरि
जीव कहत हैं जो यह पुष्टि मार्ग सर्वोपरता सें मे प्रवे
श होनाही है काहे ते श्रीवल्लभाचार्यजी ने भक्ति के
मार्ग हैं तामें ब्रह्मा दि शिवादिको प्रवेश नाही है तो गो
पाल दास वल्लभाख्यान में गाये हैं यह मारग ... भ
व ... नहीं प्रवेश विधि ... मार्ग शुद्ध
... साधन नाही ... नेम
न में जानत हैं जो यह सर्वोपर भक्ति
को प्रवेश नाही है १८ और लोक
नाही हैं तातें यह मन में जानत हैं
भक्ति मार्ग तो भलो हे ... मन
ही है सो लौकिक मतों स्थिति होइ सो मे ...
... दिक के धर्म मे ... स्थिति नाही है १९ देशादि
को आलय नाही कितने जीव जैसे सु ... तीर्थ को
सेवन करत हैं काशी प्रयाग तथा व्रज है ... एसे
हे सब को आश्रय नाही है २० वेदिक धर्म काहू काल
होय ते सिद्धि नाही है ... मार्ग
में कहे हैं सो काल दोष ते वैदिक धर्म सिद्धि नाही
कर्म मार्ग ते ... फल सास्त्र में कहे हैं
होय ते वैदिक धर्म सिद्धि ना ... सो सन्यास
में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं कर्म मा
... मुनरा कलि का लता

हैं॥ नानावारविनष्टेषु सर्वमार्गेषु तादृशेषु याभाँ
तिकलिकालपायके मर्यादामार्गके साधन सबन
ष्ट भये सो मैं वैदिक कार्य में नाहीं हो॥ अब और स्क
न्द हैं॥४॥ श्लोक॥ न च व्यावृत्तिराहित्यं व्यावृत्तो न हि
तो मन॥ न त्यागः श्लापि सेवार्थो॥ स्वतंत्रस्य तु कस्य क
था॥५॥ याको अर्थ॥ अब श्री हरिरायजी कहत हैं
जो मैं अव्यावृत्त नाहीं हो॥ श्री आचार्यजी महाप्रभु
करें॥ अव्यावृत्ती भजे कृष्णं सो पूजया श्रवणादिभि
या भांति अव्यावृत्त भगवद्धर्म सेवा करि कथा सुने
सो अव्यावृत्त नाहीं हो॥२॥ अब तथा व्यावृत्ति करिवे ह
सो अव्यावृत्त नाहीं हो॥२॥ अनतथा व्यावृत्तिकरि मे ह
रि में चित चहिये सो ऊ कहे हैं व्यावृत्तो पि हरौ चित्तं श्रवण
हो यनेत्सदा॥ या प्रकार व्यावृत्त करत भगवान में मेरो
मन नाहीं है॥ जैसें सन्तदासजी कोडी वे वत॥ का ऊ ते वो
लते नाहीं॥२॥ और भगवत्सेवार्थ हू इन्द्री मन ते लौकि
क वैदिक त्याग नाहीं हैं॥ सो सेवाफल में श्री आचार्य
महाप्रभु कहे हैं जो त्याग न होय तो सेवा न बने उ
गप्रतिबंधो वा भोगो वा स्यात्तु बाधकं॥ बाधक त्यो
गप्रतिबंधो वा भोगो वा स्यात्तु बाधकं॥ बाधक भोग को
रित्याग भोगप्येकं न व्यापरा है॥ गप्रतिबंध भोग को
मूल एक विषय वासना आड़ाय रहे हैं सो भगवत्से
वार्थ त्याग हू नाहीं हो॥३॥ स्वतंत्र नाहीं हो॥ इन्द्रियादि
रह संबंधी कौ सब होय॥ का हे ते विषयादि भोग कौ
त्याग नाहीं हैं॥ ताको स्वतंत्र की कथा कहा है॥ याभां
ति मन सब तें लौकिक वैदिक ते स्वतंत्र होय प्रभु
सरन नाहीं हों॥५॥ अब आगे कहत हैं॥ श्लोक॥ न
ज्ञान विरह स्मृति सयमा नव चोपगो॥ नो दासी त्य
सम भक्तेषु नानाराति गृहादिषु॥ इंयाको अर्थ॥ और
॥

काहेतें विरहतें दैन्य होय जैसें रासपंचाध्याईमें प्रभुन
न ध्यान भये। हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि क्वासि महाभु
ज। दास्यास्ते कृपणाया मे सखे दर्शय सन्निधिं। न याको
रहूं कहत हैं। कुरुदुःसुखं राजनत्कलस्यार्थनलाल
मा तासामाविरभूच्छौरिः याभांति विप्रयोग विरह
तें प्रभु प्रगटे। सो वह पुष्टिमार्गमें केवल विप्रयोग
ई फलरूप है। सो श्रीहरिके विरहकी स्फुर्तिहू नाहीं है
२१ और वानी को नेत्रनको संयम नाहीं है। श्रीभाग
वतमें कहे हैं। जो वानी भगवन्नामगुण नाहीं लेत
सो असद्दृश्वेतरलत हैं। जा नेत्र सो प्रभुस्वरूप दरसन ना
हीं करत। लोगनके दोष देखत हैं। सो मोरकी चंद्रका
वत्। काहेतें यह दोय बहुत बाधक है। एक तो मुख्य त
होय १ और नेत्रनसों दोष देखनो। हृदय दोषरूप हो
त है तातें वानी नेत्रनको आवश्य निग्रह चाहिये। सो
मेरे मेंन नाहीं है। २७ और भगवदीय भक्त सो उदासीन है
और पुष्टिमार्गमें भगवदीयके संगतें यह पुष्टिमा
र्गको फल सिद्धि होत है यह निश्चय सिद्धांत है। सो मो
में भगवदीय सो स्नेह नाहीं है उलटो उदासीन है।
सो मोकों यह मार्गमें कैसें आवेस होइगो। २८ और
ग्रहादिके कार्यमें मनकी आसक्ति होय यह महाबा
धक है। काहेतें ग्रहादि लौकिक संसारासक्ति भगवद्ध
र्ममें बाधक है। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु ठोरठोर
मूंहूंथनके हैं। सब ठौर प्रसिद्ध हैं जो ग्रहादिकार्य
लौकिकमें आसक्त हैं तिनको भगवानके धर्म दुर्ल
भ हैं। सो मोमें ग्रहासक्ति है। २९ अब और हू कहत हैं
श्लोक। नाहं कोपि हि त्यं नत्यधर्मपरिग्रह ना
न्यधर्मनिवृत्त्यर्थं किंकराण्यतिमत्प्रभुः ७ या ग्र

यो॥ अहंकार भक्तिमार्ग में बाधक है। सो विवेकधैर्या
श्रय में श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे हैं। अभिमानश्च
संत्याज्यः स्वाम्यधीनत्वभावनात्॥ अभिमान अहंकार
सो स्वामी को बाधक है। स्वतंत्र होई सो करे। और दास
को धर्म नाही है। सो दास होके अहंकार अभिमान करे तो
दासधर्म जात है। ताते दास को तो अपने स्वामी श्रीकृष्ण
तिनके आधीनत्व की भावना कर्तव्य है। ताते यह अ
हंकार बाधक है। ताते यह अहंकार बाधक है। सो मैं अ
हंकार करि रहित नाही हों॥ ४५॥ और पुष्टिमार्गीय
वैष्णव को अपने स्वधर्म को परिग्रह न चहिये इतनो
अनन्यता जैसें बीरबल ने करी। छीतस्वामी सो जो तु
म परसें श्रीगुसांईजी को तबुजी को रूपक रिकें गावन
हो। सो ऐसा हि पति सुनेंगे तो कहा कहेंगे। इतनो सु
नत ही छीतस्वामी कहे जो मेरे भागे तो तुम ही म्लेछ
हो। जो आजु पाछें तेरो मुख न देखोंगो। बरसो ढीह छो
उचले यारे याभांति अपने स्वधर्म की रक्षा करें। स
गाहिति रक्षा करें काम क्रोध मद मत्सर नाइ
ते अपनी रक्षा करें। सो मैं तो कोई प्रकार अपने स्वध
र्म परिग्रह नाही करत हों॥ ४६॥ और यह पु
ष्टिमार्गीय वैष्णव अन्यधर्म जितने हैं सो सगरे या पुष्टिमार्गीय वैष्णव
को बाधक ही होय परोपर सिद्ध ही होय। ताते अन्यधर्म ३४।
हू बाधक है सो मैं अन्यधर्मतें निवर्त नाही
हों॥ सो
एकतीस दोषसंयुत मैं हों॥ सो करोगे के अंगीकार करो
मी हों। जो मेरो कहा करोगे। प्रापा करोगे हत है
गो। ऐसो मोको जानि नाही पडत है
॥ श्लोक॥ मयि दोषनिधाने तु सर्वेस
साधनत्वमेव ही स्वस्य नित्यं विभाव
ये॥ अब श्रीहरिरायजी कहत हैं॥ श्री

ऊपर बत्तीस लक्षण बत्तीस दोष मुख्य कहे सो इनते
ही प्रति नानाविधि अपार दोष हैं मे मो दोष को निधां
न हों जाको पार गिनत नाही है और सुंदर गुण क
रि हीन हों एक हू गुण मेरे मे नाही है या भांति मे निसा
धन की भावना नित्य ही करनेय है या भांति निसाधन
होय तिन के हृदय मे प्रभु पधारि अनुभव करावे ॥
श्री हरि[illegible]जी कृत शिक्षापत्र [illegible] त्रि[illegible] ताको ही
श्री [illegible] सं[illegible]र्ण २७ अब ऊपर कहे जो
अपने दोष की भावना करि निःसाधन होय पाछे दैन्य
करे तो आगे उद्धव हमवको कहा फल होइ यह सुजमे
भावात्मक रसात्मक पूर्णानुरूपोत्तम श्री कृष्ण सदा भक्त
न के संग लीला करत है ऐसे श्री कृष्ण वो पर तिनको
अनुभव होय सो श्री कृष्ण व्रज मे सदा विराजत हैं सो
कैसे हैं सो आगे वर्णन करत हैं श्लो [illegible] कृष्णो रसात्म
क नित्य गोपिका मंडल स्थिते यमुना पुलिनांतस्थ
वृंदावन विराजिते १ या श्लोक मे अब श्री हरिराइजी
यह श्री वल्लभाचार्य जी के पुष्टिमार्ग मे सेव्य ऐसे श्री
कृष्ण रसात्मक सो कोन प्रकार व्रज मे विराजत हैं सो क
हत हैं जो गोपीजन व्रजभक्त स्वामिनी के मंडल मे स्थि
ति है श्री कृष्ण रसात्मक या भांति नित्य स्वामिनी संग
रासादि लीला करत हैं सो लीला कोन सी ठोर करत
हैं सो कहत हैं जो श्री यमुना जी की पुलिन के मध्य
श्री वृंदावन मे विराजत हैं सो जैसे श्री कृष्ण और रसा
त्मक हैं तैसे श्री यमुना जी रसात्मक हैं तैसेइ श्री यमु
ना जी की पुलिन रसात्मक है तहां भक्तन सहित श्री
कृष्ण विराजत हैं सो श्री आचार्य जी महाप्रभु यमुना
ष्टक मे कहे हैं श्री यमुना जी के तट श्री
तटस्थ नवकाननम

वृजितः इतिवचनात्॥याभांतिश्रीयमुनाजीकेतटपुलि
नमध्यवृंदावनमेंप्रभुविराजिकेदोयप्रकारकीलील
करतहैं॥प्रथमथलक्रीडामेंश्रमभयेतेंजलक्रीडायाभां
तिसदासर्वदाविराजतहैं॥यहस्मरणकरतव्यहै॥स्मृ
तेगोपिकावृंदेःक्रीडन्वृंदावनेस्थितः श्रीवृंदावनमें
स्थितिगोपीजनकेवृंदतिनकेसंगश्रीहरिक्रीडाकर
तहैं कौनभांति॥सोआगेजाप्रकारलीलाकरतहैं सोक
हतहैं॥श्लोक॥नित्यंगानरसाविष्टविशिष्टैस्तैःसतां
हृद्भावैकगम्यैःसर्वत्रप्रसिद्धपुरुषोत्तमोऽर्थः॥आको अर्थ
श्रीयमुनाजीकेतीरनित्यगानरासादिली[illegible]नभक
नकेसाथअनंतरसाविष्टहोयकरतहैं[illegible]नित्य
लीलाकेदोयप्रकारहैं॥एकअवतारलीला॥एकमूल
लीला अवतारलीलामेंश्रमहैं॥प्रमानप्रमेयसाधन
फल सोश्रीभागवतमेंनिरूपणकीएहैं॥प्रथमश्रीठा
कुरजीकेप्रागट्यपहलेंतपस्याप्रमानरीतिसोंजेसेंसा
धनकरेंहैं॥तापाछेंअनुग्रहहोयवरदीयो॥प्रमेयजन
ो पाछेंवसुदेवदेवकीजीकेदोंव्यूहसहितसंयोग
त्मकस्वरूपप्रगटे॥सोश्रीनंदरायजीश्रीयसोदाजी
केइहां विप्रयोगात्मकभावप्रगटे॥सोप्रमेयबलप्रग
टकरिअनेकलीलाकरिसुखदीयो॥माखनचोरीरिंगन
लीलापाछेंकात्यायनीकोव्रतचेनादिक प्रभुमेंप्रेमआस
क्तिव्यसनकीकामना॥यहसाधनपाछेंपंचाध्याईमेंफल
अवताररसामेंमूललीलामेंसदानित्यलीलासोलर
ि॥हारिपवतत्वलगतजयप्रभुकोअसइत्सोकतते
पुरुषोत्तमश्रेष्ठ सोश्रीगीतामेंभागवतमेंलक्षअक्षर
नेश्रेष्ठ सोश्रीगीतामेंप्रसिद्धपुरुषोत्तमकहेहैं सोभ
क्तजिनजानतहैं॥औरसाधनबलतेंनाहीं॥श्लोक
यणावतारपुरुषश्चाद्योवेदवादविग्रहनस्यागारा

ऊपर बतीसलक्षण बतीसदोष मुख्य कहे सो इनने
ही सति जानियो अपार दोष है मे तो दोषको निधा
न हों जाको पार गिनत नाहीं है और सुंदर गुण क
रि रहित हों एक हू गुण मेरे मे नाहीं है या भांति मे निसा
धनकी भावना नित्य ही कर्तव्य है या भांति निसाधन
होय तिनके हृदयमें प्रभु पधारि अनुभव करावें ३
श्री [illegible] प्रि [illegible] प [illegible] त्रि [illegible] ता [illegible] ही
श्री [illegible] पे [illegible] संपूर्ण २७ अंब कस कहे जो
अपने दोषकी भावना करि निःसाधन होय रहे दैन्य
करे तो आगे उद्देस्य वको कहा फल होइ यह रसे
भावात्मक रसात्मक पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण सदा भक्त
नके संग लीला करत हैं ऐसे श्रीकृष्ण सबोपर तिनको
अनुभव होय सो श्रीकृष्ण ब्रजमें सदा विराजत हैं सो
कैसे हैं सो आगे सबै वर्नन करत हैं श्लो० कृष्णे रसात्म
के नित्यगोपिकामंडलस्थिते यमुनापुलिनतस्थ
वृंदावन विराजिते १ या श्लो [illegible] अर्थ श्रीहरिरायजी
यह श्रीवल्लभाचार्यजी के पुष्टिमार्गमें सेव्य ऐसे श्री
कृष्ण रसात्मक सो कौन प्रकार ब्रजमें विराजत हैं सो क
हत हैं जो गोपीजन ब्रजभक्त स्वामिनी के मंडलमें स्थि
ति है श्रीकृष्ण रसात्मक या भांति नित्य स्वामिनी संग
रासादि लीला करत हैं सो लीला [illegible] न सो ठौर कहत
हैं सो कहत हैं जो श्री यमुनाजी की पुलिनके मध्य
श्री वृंदावनमें विराजत हैं सो जैसे श्रीकृष्ण और रसा
त्मक हैं तैसे श्रीयमुनाजी रसात्मक हैं तैसे श्रीयमु
नाजी की पुलिन रसात्मक है तहां भक्तन सहित श्री
कृष्ण विराजत हैं सो श्री आचार्यजी महाप्रभु यमुना
ष्टकमें कहे हैं श्रीयमुनाजी के तट श्री वृंदावन हैं
तटस्थ नव कानन प्रगट मोद पुष्पांबुना सुरासुर

रूजितः इतिवचनात्॥ याभांतिश्रीयमुनाजीकेतटपुलि
नमध्यवृंदावनमेंप्रभुविराजिकेदोयप्रकारकीलील
करतहैं॥प्रथमस्थलक्रीडामेंश्रमभयोतेंजलक्रीडायाभां
तिसदासर्वदावृंदावनविराजतहैं॥यहस्मरणकरतव्यहै॥स्मृ
तेश्रीगोपिकावृंदैःक्रीडन्वृंदावनेस्थितः श्रीवृंदावनमें
स्थितिगोपीजनकेवृंदतिनकेसंगश्रीहस्तक्रीडाकर
तहैंकोनभांति॥सोआगेजाप्रकारलीलाकरतहैं सोक
हतहैं॥श्लोक॥नित्यंगानरसाविष्टविशिष्टैरतेरदृ
ष्टभावैकगम्यसर्वत्रप्रसिद्धपुरुषोत्तमोऽस्॥याकोअर्थ
श्रीयमुनाजीकेतीरनित्यगानरासादिली[illegible]जभक्त
नकेसंगअनंतरसाविष्टहोयकरतहैं॥[illegible]नित्य
लीलाकेदोयप्रकारहैं॥एकअवतारलीला॥एकमूल
लीला अवतारलीलामेंत्र महैं॥प्रमानप्रमेयसाधन
फल सोश्रीभागवतमेंनिरूपणकीयेहैं॥प्रथमश्रीप्र
भुजीकेप्रागट्यपहलेतपस्याप्रमानरीतिसोंजेसेसा
स्त्रमेंकहेहैं॥तापाछेंप्रभुप्रगटहोयवरदीयो॥प्रमेयजन्त
रो पाछेंवसुदेवदेवकीजीकेदोऊसमूहसहितसंयोगा
त्मकस्वरूपप्रगटे॥सोश्रीनंदरायजीश्रीयसोदाजी
केदोउविप्रयोगात्मकभावप्रगटे॥सोप्रमेयबलप्रग
टकरिअनेकलीलाकरिसुखदीयो॥माखनचोरीरिंग
लीलापाछेंकात्यायनीकोअर्चनादिकप्रभुमेंप्रेमभ
क्तिकेकीकामना यहसाधनपाछेंपंचाध्याइमेंफल
अवताररसामेंमूललीलामेंसदानित्यलीलासोस्व
रूपहादिपचत्तयलगतजयप्रभुकोअंसइतसोऊनते
पुरुषोत्तमश्रेष्ठ॥सोश्रीगीतामेंभागवतमेंलक्ष्यदर
नेश्रेष्ठ॥सोश्रीगीतामेंप्रसिद्धपुरुषोत्तमकहेहैं॥सोभ
क्तकरिजानेजातहैं॥औरसाधनवलतेंनाहीं॥

वये भूमौ मत्स्याद्या गतिबुध्यतां ॥ अध्या० ३ ॥ श्लो० ॥ ऐसे
रसात्मक पुरुषोत्तम कौ एक अवतार वैराट स्वरूप है
जाकौं श्री भागवत गीता में पुरुष कहत हैं ॥ यह ब्रह्मा
ंड रूप विग्रह श्री अंग है ॥ अपार मस्तक ॥ और अपार भुजा
अपार चरन तथा आकास मस्तक और पाताल चरन
रहा ॥ लोमावली समस्त ब्रह्मांड में लय यह प्रभु कौ
आद्य अवतार है ॥ तो अर्जुन कौं सब दिखायौ ॥ तब युद्ध
कीयो ॥ ऐसे वैराट स्वरूप के अंस अवतार मत्स्यादिक मंथ
वत्तए कारन कारज रूप है ॥ जितनौ कारज होय तितनौ
काज करि कें माहात्म्य जतावें ॥ जैसें समुद्र मथन समु
द्र में हिरावल तें रत्न लागे ॥ तब कच्छ रूप होइ धारन की
यो ॥ और पे चार अवतार भक्तों ऊपर कीयो ॥ वामन जी
१ नृसिंह जी २ श्री रामचंद्र जी ३ और चतुर्व्यूह संयुक्त
वसुदेव देवकी जी के इहां तातें ये चार अवतारनी कौ भक्त जन
मानत हैं ॥ और अवतारन कौं नाहीं या प्रकार पृथ्वी पर अ
नेक अवतार ले प्रभु लीला करी ॥ अपनो माहात्म्य प्रग
ट करत हैं ॥ भक्तन के अर्थ ॥ अब और हू कहत हैं ॥ ऐसो
अक्षरं धाम वैकुंठ व्यापि वैकुंठ संज्ञिकं ॥ ब्रह्मानंदस्व
त्र लक्ष्मी पूर्णानंदो हरिः स्वयं ॥ ४ ॥ रमा वैकुंठवासी तु वि
भूतीर्यस्य वैष्णवी रमानुपालिका तत्र शक्ति रूपं वग
म्यतां ॥ पा ॥ या ॥ [illegible] ॥ और अक्षर धाम है सो वैकुंठ
है ॥ भीतर सुकुमार विराजत है ॥ सो ताकौ लोक पवित्र
पौ नहीं [illegible] जोगन कौं [illegible] लौगो है ॥ सो सब वेदन कौ म
त है ॥ सो व्यापि वैकुंठ कौं सेवी है ॥ जैसें व्यापि वैकुंठ स
र्वं व्यापक है ॥ जहां पुष्टिमार्गीय रीति सों विराजे
जहां व्यापि वैकुंठ सोई रती जाकौं अनुभव सोइ सौ भि
पर है ॥ और सब तें न्यारो है ॥ जैसें अक्षर सब में व्याप
क है सब तें न्यारो है ॥ आकार कौ नाइ ता ही तें ज्ञानी

अक्षरधाम वैकुंठ व्यापिवैकुंठ कहत हैं। और भक्तन के मन
में व्यापिवैकुंठ वारे हैं न्यारे हैं। रानी सब ठोर व्यापक मा
नत हैं। तातें दास भाव छूटि जात हैं। भक्त जे हैं प्रभु कों दे
खित है मानत हैं। अपने कों दास मानत हैं। ऐसे अक्षरधा
म वैकुंठ में ब्रह्मानंद रूप लक्ष्मीजी हैं। तातें अक्षर ब्रह्म
के उपासना वारे लक्ष्मी आदि में सब ब्रह्मानंद रूप
और पूर्णानंद रूप भगवान विराजत हैं। तहां के अधि
कारी ब्रह्मानंद रूप लक्ष्मी हैं। तातें अक्षरब्रह्म के उपा
सना वारे कों ब्रह्मानंद मोक्ष दीनों है। भक्तन को होत
हैं। या और एक रमा वैकुंठ अप है तहां सनकादिक में
आप जय विजय कों दीये हैं। यह वैकुंठ अक्षरधाम की
विभूति है तहां के वासी जो वैष्णव हैं तिनसों विष्णुपार्षद
कहत हैं। यह श्रीभागवत में कही है। तातें तहां की ल
क्ष्मी पालिका शक्ति हैं। दशशक्ति पुरुषोत्तम की हैं
तामें यह पालिका शक्ति हैं। सो अति गंभीर है। या प्रका
र सो जहां जैसें प्रभु विराजत हैं। तहां तिनकी सेवार्थ
तैसेई लक्ष्मी विराजत हैं।

अब श्रीकृष्णावतार सबको
मूलभूत हैं सो प्रकार आगें कहत हैं। श्लोक ॥ मू
लभूतस्यावतारो मूर्तिव्यूहो विधीयते। प्रद्युम्नो
वासुदेवश्चानिरुद्धोऽनंत एव वा हि याको अर्थ। अ
ब श्रीवसुदेवजी के इहां प्रगट भये। सो कहत हैं। सब अ
वतार को मूलभूत यह है। मूर्तिरूप मूर्ति तो ए
ओर चतुर्व्यूह प्रगट भये सो नाम कहत हैं। वपु
स्वरूप प्रद्युम्न वासुदेव अनिरुद्ध और अनंत जो सं
कर्षण नाव कहे हैं। पीछें चकार धर्यो। तासों यह जानने
खिन वेस और स्याम के सन हीं सहित षट्प्रकार
स्वरूप प्रगट भयो। ८४

र्थ वे सम्प्रदाय भक्तनकी रक्षा करनार्थ इत्यादि अनेक
कारन हैं सो इन चार व्यूहन के भीतर पुरुषोत्तम हैं ति
नको जन्म अवतार नाहीं है सो श्रीमद्भागवत में क
हे हैं न यातिजननिवासो देवकीजन्मवादो यदुवरप
रिषत्स्वैर्दोर्भिरस्यन्नधर्मं। स्थिरचरवृजिनघ्नः सुस्मि
तः श्रीमुखेन व्रजपुरवनितानां वर्द्धयन्कामदेवम् ॥ इति
वचनात् या प्रकार देवकी के उदर ते जन्म वा तू जैसे
श्रवै दिसा ते चंद्र सूर्य प्रगटे यों ही प्रगट भयो रहैकें कहत हैं
लोक व्यूह विहिता यस्तत्र स्थाप्यते प्राप्यते नयः
तथैते राघवे नः कुलोनवतारेवरामपने भया को अ
र्थ या प्रकार चतुर्व्यूह को राखिवें अरु पुनि श्रीकृष्णउन
के भीतर स्थापित विराजत हैं तहां कोई कहै जो रा
मे श्रीकृष्ण संयुक्त व्यूह है सो चतुर्व्यूह को पूजन करि
ये इतने श्रीकृष्णही को भयो या प्रकार कोई सन्देह करे
तहां कहत हैं जो जद्यपि व्यूह करि आवृत श्रीकृष्ण मि
ले हैं तऊ इन चारि व्यूह स्वरूपन की उपासना पूजन
श्रीकृष्ण स्वरूप व्यापक है न जाय काहे ते श्री पुरुषोत्तम
कृष्ण व्यूहमें हैं और सब व्यूह न्यारे हैं ताते व्यूह है सो पु
रुषोत्तम के आगें पाकारी हैं जितनी प्रभु की आज्ञा है ति
तनो कार्य करिके फेरि अपने धाममें प्रवेश करे हैं और श्री
कृष्ण तो नित्य लीला विनोद करत हैं ताते व्यूह की उपा
सना करि स्वर्गलोक तथा मुक्ति फलमें सालोक्य है चार प्रका
र की सिंते सारूप्य सामीप्य सायुज्य सालोक्य और भ
क्तिरस की प्राप्ति नाहीं ताते सर्वोपरि श्रीकृष्ण ही तिनही
की न्यारी भक्ति करें तो मिलैं भक्ति फल को न्यून ना
प्राप्त होत है या प्रकार जगत में जीव सत्संग विना श्री
कृष्ण के माहात्म्य को जानत नाहीं है सो कहत हैं
७ यत्नरजेना महा: प्राकृतने वदं तिहीं भ्रंशकार्ये

मूलरूपेवकल्पयेत्तत्ताम्ना॥टीका॥अर्थ॥अवश्रीह
रिरायजीकहतहैंजोयाप्रकारअसजोचतुर्व्यूहसोअ
नेकप्रकारप्रकारकीलीलाजगतमेंकरतहैंमथुरा
तेभाजिपेखिहूंसोवकरतहैंकाहूकीटहलकरतहैंअ
नेकप्रकारकेविचारकरतहैं।मिलिकेपहलीलाहैरवि
वेकितनेजनजीवजोअपनीहैंसोमहमोहकेवस
तेप्राकृतकीजानीश्रीकृष्णकोजानतहैसोयदवक
लिकेजीवकीकहाहैअवतारहिसामेंकोइएकभग
वदीयप्रभुकोजानतहैंऔरजगतमेंकोईनआनतो
काहेतेंयुंताबनाएकीलीलाकार्यहैरविसवकोइय
हकहतेजोश्रीकृष्णजैयहकार्यकीयोसोमूलरूप
श्रीकृष्णकोनाममिथ्याकल्पनाकरिअज्ञानसोक
हतहैंताहीतेंसवनकोनासभयो॥एकअकुवजीभग
हतेसोआपनपूछेतातेंभतिश्रीकृष्णकीहानीअ
तिदुखभये।श्रीकृष्णकोकेवलज्ञानेदरम्यरसात्म
कलीलाकनोजाने॥चोरठो॥जेसोकायतेंसंकृह
कीलीलाजानेयरभावद्दरहैतवश्रीकृष्णमेंभाव
उपजेंसोश्रीकृष्णवंसहै।सोअवआगेवरननकरतहैं
॥श्लोक॥कृष्णस्तुकेवलंलीलाकरोतिस्वरूपिणी
भूभारहरणंचक्रेकलाभपाखवसर्वथा॥टीका॥अ
र्थ॥श्रीहरिरायजीकहतहैं।जोश्रीकृष्णतोसदासर्वदा
व्रजभक्तनकेसंगलीलाकरतहैं।स्वरूपसोलीलाक
ह्विवेमेंनाहीआवतहैं।जोनिजजनश्रीआचार्य
जीमहाप्रभुकेहैंअंतरंगीतिनकेमनमेंअनुभवक
रिवेकेयोगहैं।तातेंस्वरूपलीलाकहेमानारविहा
रादियाभांतिश्रीकृष्णतोसदासर्वसावृंदावनमेंवि
राजतहैंऔरपृथ्वीपरदैत्यरादिकनकोपापहोत
सोभूभारहरनाकूंकलावतारश्रीकृष्ण

कोमाहिदिवतानकीप्रभुलीलाकरतहैं याभांतिव्रजमेंनि
त्यकरसलीलाहै कनाप्रतिश्रिहूकोंकार्यकरतहैं ८
ता ॥ परमानंददानतुस्वरूपोतातिनिश्चय व्रजस्थएवस
नेपुरस्योवाक्यमापर ॥ १ ॥ याकोअर्थ ॥ अवश्रीहरिराइजी
कहतहैं सोपरमानंदकोदानतोसदाव्रजमेंलीलाक
ती एसेश्रीकृष्णहीतेंहो ३ अत्रोस्यहकआदिग्रंथकरता
केत्याश्रयतेनिश्चयहो ३ ॥ कृश्रीकृष्णव्रजस्थयदी
स्वरूपसोहोइ ३ यद्यपिकृष्णसर्वोपरनिश्चयजोनतो
ताते श्रीकृष्णसदाव्रजमेंरहतनिरंतरास्थितिहै
औरजोपुरीमधुपुरीतथाद्वारिकामेंस्थितिजोस्वरू
पहै तिनकोहूपावोफलसोनाहिहै पुष्टिमारगकोफ
लनाहीहै तातेंजोजीवमथुरास्थश्रीकृष्णकोआश्र
यकरतहैं तिनकोहीश्रीकृष्णअपनोआनंददाननाहीं
देतहैं इनपुरीकेस्वरूपदरावेसोईफलमर्यादामारगी
यरसदानकरतहैं सोभगवदीनामेंकहेहैं जेयथामा
प्रपंचतेरसातथैवभजाम्यहं तास्वरूपकीजोभावसो
जीवप्रभुकोआश्रयकरें तिनकोतेसोईफलसिद्धि
होतहै प्रभुइनाहींभावसोंताजीवकोभजतहैं तेसोई
फलप्राप्तिहोतहै अवयाईकहतहैं १० ॥ श्लोक ॥ तत्रा
पिरूपभेदेनक्रीडतिधर्मतथारस ॥ धर्ममात्रस्वमर्यादा
रहितेकेवलेव्रजे ॥ ११ ॥ याकोअर्थ ॥ याभांतिश्रीकृष्ण
अपनेअनेकस्वरूपधरिकेक्रीडाजगतमेंकरतकरत
हैं जहांजेसोअधिकहै तहांतेसोईस्वरूपहै तहांतेसो
ईरसहै तातेव्रजमेंधर्मीस्वरूपओरावृजविनाधर्म
रूपमर्यादासहितहै ताकरिमर्यादारसकोदानहै औ
रव्रजमेंधर्मीस्वरूपकेवलपुष्टिपुष्टिमर्यादासहित
स्वमर्यादालीलाकोलेकवेहलीतएसोरसात्मके
स्वरूपसदासर्वदाव्रजमेंविहारकरतहैं ॥ अवश्राह

हृत है ॥ श्लोक ॥ सर्वधर्मविशिष्टं तु मर्यादपुरुषोत्तमं
तुष्ठुं खलानुयात्वीलावेवलेनव्रजेऽत्रता ॥ १२ ॥ याको
अर्थ ॥ सर्वधर्मसहित मर्यादापुरुषोत्तम मथुराद्वारि
कापुरीमें विराजमान हैं औ उ छुरवल लीलानुष्ठलित
रसरासमें वल पुष्टिपुष्टि पुरुषोत्तम सो व्रजमें लील
त हैं ॥ तातें मधुपुरी द्वारिकापुरी के स्वरूपमें औ व्रजमें
के स्वरूपमें बहुत ही फेर हैं इनके फलमें हू फेर है तातें व्र
जस्थ स्वरूपकी भावना कर्तव्य है अब और कहत हैं श्लो
क ॥ परमानंदरूपा सा बाललीलादिभेदतः सर्वत्ररसरू
ला त्वेगादभावेन वर्णिता ॥ १३ ॥ याको अर्थ ॥ अब श्री ह
रिराइजी व्रजस्थ स्वरूपकी लीला वर्णन करत हैं जो व्रजमें श्री
यसोदोत्संगलालित श्रीकृष्णके सें हैं परमानंदरूप है
बाललीला आदि पौगंड किसोर यह सगरी लीला सब
रासरूप ही है सो श्री गुसाईजी पुत्ररसग्रंथमें वहे हैं ॥
ता भावसों सगरी लीला रसरूप ही जाननी ॥ सो गद्यरूप
ह भाव वर्णनमें न आवे अंतरंगी भक्तनके मनमें अनुभव
करनमें योग्य है ॥ ऐसो स्वरूपरसरूप व्रजमें विराजत हैं अ
ब और कहत हैं ॥ श्लोक ॥ कामरूपनपाहस्रेनयो नरि
नियामकं एतादृशो मूलरूपे मूललीलासमन्वितः ॥ १४ ॥
याको अर्थ ॥ व्रजमें श्रीकृष्णके सें हैं को किशोर स्वरूप जभ
क्तनको सुखदानार्थ प्रगटे हैं सो लावन्यमन्मथमन्मेय ॥ या
भांति रासपंचाध्याईमें कहे हैं ॥ ऐसो किशोररूप नहीं
वय अवस्थाके नियमना ही है जो किसोर हो होन्वरस
होन वारो यह नियम नाही है जन्मानही समानकी
ऐ ॥ सो श्री भागवतमें कहे हैं जयति जननिवासो देव

तिनकौं कामकी वृद्धि करत हैं औ श्रीगुसांईजी पाल
ना कीरीति है तासें कहे हैं मानकी मानहरता श्रीयसोदा
जीके श्रीगोपाल नाम ललन हैं औ श्री स्वामिनीको मा
न मनावत हैं मानहरता याभांति वाल्लीलाही में
ग्रलकालावच्छिन्न समस्त लीला करत हैं यह विरुद्ध
मोश्रय स्वरूप व्रज में हैं सो गुसांईजी में श्रीगुसांईजी क
हत हैं एतादृशस्य श्रीकृष्ण भक्त मंडल लीला समन्वि
त व्रज में है जैसें श्रीकृष्ण भक्तरूप सर्व व्रज में
लीला करत हैं तैसें भक्तरूप सदा लीला ई करत हैं
तास यह कहिकें पद नतारे जैसें श्रीकृष्ण नित्य है तै
सें श्रीकृष्णकी लीला हू भक्तरूप गोकुल है याभांति सर्व
लीला संयुक्त व्रज में विराजत हैं यह श्री आचार्य कहत हैं
१४ श्लो० ॥ चित्ते निरंतरं स्थाप्यं सेवया सह मार्गगा त
त्सिद्धार्थं सततं चित्ते नापि विधीयते न १४ या को अ
र्थ श्रीहरिरायजी आपने भाई श्रीगोपेश्वरजी पों कहत हैं
जो कृष्ण सेवा में श्रीकृष्णके सर्वभक्तरूप लीला में
इनको अपने चित्त में निरंतर स्थापन करत हैं औ
सेरसात्मक श्रीकृष्णकी सेवा अपने स्वमार्ग में है ता
तें चित्त में निरंतर प्रभुकी लीला संयुक्त अनुभव
करावें सो मानसी सेवा के सिद्ध्यर्थ स्वचित्त सां त
नु वित्त जा सेवा नित्य नेम पूर्वक करनो ही सो सि
द्धांत मुक्तावली में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं
सेवा सदा कार्या मानसी सा परा मता चेतस्तत्प्रवणं से
वा तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजा इति वचनात् श्रीकृष्णकी से
वा तनुजा वित्तजा सदा नित्य नेम सों कर तब मान
सी सिद्धि होइ यह पुष्टिमार्ग की रीति है अब और हू कहत
हैं १५ श्लो० ॥ निवेदनानुसंधानं विधेयं नाडसे सह
स नैव गावक नैयो विश्वासः स्यात्प्रतीदृशः १६ या

अथ ।। यासें श्रीकृष्णमें भाव प्रगट होइ ना क्षर्थ तादृशी
वैलक्षण्य सों मिलिकें निवेदनको अनुसंधान करें ताते
सत्संग करे नित्य नेमसों करे ।। और भगवदीयनके कहेको
वचनको अपने मनमें दृढ विश्वास राखें चातुर्कपरी
वन तव यासें श्रीकृष्णस्वरूपानंदको अनुभव होइ अ
वश्यो रहे बहुतनसों ।। श्लोक ।। कृष्णः कृपापराधीनो दीना
नास्तु पेलके स्वकीयानां मन्यभावात करिष्यति वनस्व
ता ।।१७।। याको अर्थ श्रीकृष्ण ऐसे हैं कृपा करिकें अपने दा
सके आधीन हैं भगवदीय गारे हैं भक्त विरहकातरु
णामय डोलत पाछें लागे यासें श्रीकृष्ण हैं प्रसिद्ध ही है
अर्जुनको रथ हांकत हे पांडवनके आगपाकारी भए श्री
रक्तन भक्तनसों तो एक छिन उन बिना रह्यो नाहीं जाते
हैं या भांति श्रीकृष्ण कृपा करिकें अपने भक्तनके आधी
न हैं ताते जो यह पुष्टिमार्गमें श्रीआचार्यजी द्वारा सर
न होय निसाधन होय दैन्य करि रहे हैं ऐसे भक्तकी उ
पेक्षा कबहूं श्रीकृष्ण नाहीं करत हैं और जे संसारासक्त
जीव तो विवेक वैस्कि में महादुःख पावत हैं तिनकी
उपेक्षा ही प्रभु करी रहे हैं काहेतें संसारमें दोय फल हैं
सुख और दुःख सो पापको फल है दुःख और पुन्यको
फल है सुख तो विवेक तिनकी उपेक्षा है और अपने
स्वकीय निज भक्तको अन्यथा भाव कोई कालमें क
बहूं श्रीकृष्ण नाहीं करत हैं सद्भावकी रक्षा ही क
रत हैं आगे हूं और रक्षा करत हैं और रक्षा राखी ह
करावेंगे ।। ऐसें प्रभु भक्तनकी रक्षा करत हैं ऐसें ही
पालनशील हैं अब और हू कहत हैं तो ।। धर्म
प्रवृत्ति सुचिंतन आख्यायदशो मातिस्यात्तेव पा
नदर्थे सर्वथा ।। याको अर्थ जेसें धर्ममा
वृत्ति भये तें चिंतन सुद्ध होत है निश्चय

भगवानके भावरूपहें के भावकी रक्षा करत हैं धर्ममार्गते
चित्तकी शुद्ध भावते प्रभु ते सेई पाखंड कीये तें मति
जो बुद्धिको नास सर्वथा होइ हैं ॥ अब और हू कहत हैं ॥ १७ ॥ श्लो
क ॥ मार्गप्रवर्तकाचार्ये चरणाम्बुजे निरंतरं ॥ विश्वासः सुदृ
ढ कार्यस्तत्र सर्वं फलिष्यति ॥ १८ ॥ या श्लोकको अर्थ ॥ विसेषप
वै गोवर्द्धनदासके पत्रते जानीयो ॥ विमर्धिके यह पुष्टि
मार्गीयके प्रवर्तकर्त्ता श्रीवल्लभाचार्यजी हैं ॥ तिनके श्री
चरणकमलको दृढ आश्रय करनो ॥ मनमें दृढ आ
श्रय दृढ विश्वास जावे मनको होइ सो ॥ सो सदा निरं
तर राखनो ॥ सगरो फल तिनको निश्चय यही सिद्ध होइ
गो यामें संदेह नाही हैं ॥ तातें सर्वोपरि सिद्धांत यह हैं जो
श्री आचार्यजीके चरणकमलको दृढ विश्वास करनो
विशेष समाचार गोवर्द्धनदासके पत्रतें जानियो १८ ॥
इति श्री हरिराइजी कृत अष्टत्रिंश शिक्षापत्रकी
टीका श्री गोपेश्वरजी कृत संपूर्ण ॥ ३८ ॥ अबके पत्र पुष्टि
मार्गमें सेव्य प्रभु श्रीकृष्ण रसात्मक स्वरूपको वर्नन कीनो
तिनकी सेवा करनी भगवदीयको संग करनो सो प्र
कार चारों करत हैं ॥ श्लोक ॥ सत्संगेन प्रभोश्चित्ते स्था
पनीयं निरंतरं ॥ पूर्वं श्रुतानामर्थानामनुसंधानमाद
रात् ॥ १ ॥ या श्लोकको अर्थ ॥ अब श्री हरिराइजी कहत हैं जो
सत्संग करि प्रभु जो श्रीकृष्ण तिनको अपने चित्तमें स्था
पन करे निरंतर सो नवरत्न ग्रंथमें श्री आचार्यजी महा
प्रभु कहे हैं ॥ निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा ताद्रसैरपि ॥ भा
ति निवेदनको स्मरण तादृसी पुष्टिमार्गीय भगवदीय
के संग मिलिकै करे ॥ तब चित्तमें निरंतर भगवान निरंत
र स्थिति होय निश्चय ॥ सो एक दृष्टांत सो धर्ममें भगवान
निरंतर आपु अपने श्रीमुखसों कहे हैं उद्धवजी प्रति
कहे हैं ॥ श्लोक ॥ निरोधयन्ति मा योगो न सांख्यं धर्म उद्धव

नस्वाध्यायतपस्त्यागोनेष्टापूर्तैर्नदक्षिणा॥ व्रतानिपज्ञ छं

दांसितीर्थानि नियमायमा॥ यथावरुंधेसत्संगः सर्वसंगाप

हो हिमां॥ स्फूतिवचनाते॥ अर्थ॥ उनकहतहैं जोमैं सत्संगनि

करितेनाहींवसहोतहौं॥ योगतथासांख्यनस्वाध्यायतप

त्यागनेष्टपूर्तादिपत्रदक्षिनातीर्थनियमइत्यादिअनेक

नेकसाधननतेमोकोंनिरोधनाहींकरतहैं॥ जैसेंसत्संग

मोकोरोकरहतहैं॥ ताकेवसहोइजातहों॥ तातेंसत्संग

बडोंबडोपदार्थहै॥ तातेंपुष्टिमार्गीयनैंसबकोंसत्सं

गनिरंतरकरनोंहै॥ औरसबवैष्णवगुरुवल्लभकुलकेमार्ग

नामनिकेंसुन्योहै॥ श्रीगोपालदासजीकृततापैनाम

कोंग्रंथसहितअनुसंधानधारपूर्वकसंवारॊजोनाम

श्रीकृस्नकोसोसारवैस्नवकेंसारपरमगुणात्म

कहै॥ एसेश्रीकृस्नवैष्णवसनहे॥ वल्लभनामश्रीआचा

र्यजीसमाधानप्रभाई॥ याभांतिभक्तिनाचकिनामपा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भगवानके भावरूपहि के भावकी रक्षा करत है धर्ममार्गमें
चित्तकी सुद्ध भावतें प्रभु वस्य तें से ई पाखंड कीयतें मति
जो बुद्धिको नास सर्वथा होइ है ॥ अब और हू कहत है ॥ श्लो
॥ मार्गप्रवर्तकाचार्ये चरणाब्जे निरंतरं ॥ विश्वासः सुदृ
ढ कार्यस्तत्र सर्वं फलिष्यति ॥ ऐसे या श्लोको अर्थ ॥ विसेष प
वे गोवर्द्धनदासके पत्रतें जानीयो ॥ विमर्षिवं यह पुष्टि
मार्गीयके प्रवर्तक तो श्रीवल्लभाचार्यजी हैं ॥ तिनके श्री
पदरणकमलको दृढ आश्रय करनो ॥ मनमें दृढ आ
श्रय दृढ विस्वास जा वैष्णवको होइगो ॥ सो सदा निरं
तर ताके सिगरो फल तिनको निश्चय यही सिद्ध होइ
गो यामें संदेह नाही है ॥ तातें सर्वोपरि सिद्धांत यह है जो
श्रीआचार्यजीके चरणकमलको दृढ विस्वास करनो
विशेष समाचार गोवर्द्धनदासके पत्रतें जांनियो ॥ १८ ॥
इति श्री हरिरायजी कृत अष्टात्रिंशत् शिक्षापत्र ताकी
टीका श्री गोपेश्वरजी कृत संपूर्ण ॥ ३८ ॥ अब कहत पुष्टि
मार्गमें सेव्य प्रभु श्रीकृष्ण रसात्मक स्वरूपको वर्णन कीनो
तिनकी सेवा करनी भगवदीयको संग करनो सो प्र
कार चारोंक हत हैं ॥ श्लोक ॥ सत्संगेन प्रभोश्चित्ते स्था
पनीयं निरंतरं ॥ पूर्वं श्रुतानामर्थानामनुसंधानमाद
रात ॥ १ ॥ याको अर्थ ॥ अब श्रीहरिरायजी कहत हैं ॥ जो
सत्संग करि प्रभु जो श्रीकृष्ण तिनको आपने चित्तमें स्था
पन करो निरंतर सो नवरत्न ग्रंथमें श्रीआचार्यजी महा
प्रभु कहे हैं निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृसैरपि ॥ भा
ति निवेदनको स्मरण तादृसी पुष्टिमार्गीय भगवदीय
के संग मिलिकें करे ॥ न वो चित्तमें निरंतर भगवान निरंत
र स्थिति होय निश्चय सो एकादस स्कंधमें भगवान
निरंतर आपु श्रीमुखसों कहे हैं उद्धवजी प्रति
कहे हैं श्लोक ॥ निरोधयति मां योगो न सांख्यं धर्म उद्धव

हे।द्विमां।१ इतिवचनाते भगवान्कहतहैं।जोमैं इतनेसा
धनतेनाहीवसहोतहौं।योगतथासांख्यनस्वाध्यायतप
त्यागतेश्वरतादिप्रसिद्धइतीर्थनियमइत्यादिअ
नेकसाधनतेमोकौ।निरोधनाहींकरतहैं।जैसेसत्संग
मोकोरोकरहतहै।ताकेवसहोइजातहै।तातेसत्संग
वडोवडोपदार्थहै।तातेपुष्टिमार्गीयवैष्णवकोंसत्सं
गनिरंतरकरतेरहो।औरएवेजोगुरुवल्लभकुलद्वारा
नामनिवेदनसुन्योहै।अष्टाक्षरमहामंत्रताकेनाम
कौअर्थसहितअनुसंधानआदरपूर्वककरौ।जोनाम
हैश्रीकृष्णको।सोसारवेदस्मार्त्तकोसारपरमरसात्म
कहै।ऐसेश्रीकृष्णकोस्मरनहै।।वहुनामश्रीआचा
र्यजीद्वाराप्राप्तभयोहै याभांतिभावनाकरिनामसेपर
मआदरराखे।अष्टप्रहरलीयोकरे।यहअग्रेकहतहै
श्लोक।।भगवत्सेवनंसम्यग्विधेयमितिनिश्चितं वै
ष्णवादिसमाधानैस्तत्सेवैवसर्वथा।२।याकोअर्थ।।भ
गवत्सेवाकरैंसम्यकप्रकारअत्यंतप्रीतिपूर्वकओरजा
प्रकारपुष्टिमार्गकीरीतिहैं तारीतिपूर्वकभगवत्सेवा
करौ।इतिनिश्चय यहपुष्टिमार्गीयभगवदीयकोनिश्च
यसेवाहीपरमसाधनहै सोनवमस्कंधमैंभगवानक
हेहैं।मत्सेवयाप्रतीतंचसालोक्यादिचतुष्टयं नेच्छंति
सेवयापूर्णाःकुतोन्यत्कालविद्रुतं।१।तृतीयस्कंधमैंव
हेहै अहोवकीयंस्तनकालकूटंजिघांसयापाययद
प्यसाध्वी।लेभेगतिंधात्र्युचितांततोन्यंकंवादयालुं
शरणंव्रजेम।२ अष्टमस्कंधसाख्यानेतरामूलावसेच
ने।एवमाराधनंविष्णोःसर्वेषामात्मनश्चहि।३ इत्या
दिवचननकोनामविचारभगवत्सेवासर्वोपरमुख्य

धर्मतानि प्रीतिपूर्वक नित्य नेमसों करै और महाप्रसाद
दि प्रसादी वस्त्रादि सों जे नैत्तिक तो वैस्नवको समाधा
न करै जैसे प्रीतिपूर्वक वैस्नवकी सेवा करै तैसेंही प्री
तिपूर्वक ताहूसों भगवदीयको प्रसाद ही वस्तुसों समा
धान करै या प्रकार पुष्टिमार्गमें वैस्नव है तो प्रभु प्रस
न्न रहैं अवश्य और हू कहत हैं श्लोक अतः परं मम प्रतिदि
वसं तैकार्थकरणात सेवयैवाहि संतुष्टः सुखसेव्यः प्र
भुर्भवेत् ३ याको अर्थ प्रभु प्राप्ति करि प्रार्थना दैन्य होय
बीनतीकरि प्रभुको स्याम्रावे भक्तिकी वृद्धि होय सो
श्रीगुसांईजी विज्ञप्तिमें कहे हैं श्लोक यद्दैन्यत त्वत्कृपा हे
तुर्न तदस्ति ममाण्वपि तां कृपां कुरु राधेश यथा ते दैन्य
माप्नुयात् १ प्रीतिसंगमनाहित्यार्थ सर्वमनोरथः नि
रपेक्षयता सिद्धि जीवामि सहिसा प्रसंसः चित्तेन दुष्टः
वचसापि दुष्टः कायेन दुष्टः क्रियया च दुष्टः ज्ञानेन दुष्टो
भजनेन दुष्टो ममापराधः कतिधा विचार्य ३ वृत्ते तो
नापराधे वा पाखंडे वाम यद्कृतं यत् पर्यवस्यति कुत्र
त्रिनजाने हैं विमूढधी ४ वलिष्टा चापि मद्दोषा त्वन्नू
पाग्नेति दुर्बला तस्मात् कुरु यथा मे त्वा दृश्यानाजीव धर्मतः
५ त्वद्दासो न स्थितो नास्य त्वदीय स्पतु नीविते यथेमेवय
थानाथ दुर्भागायानवेक्ष्य ६ या भांति अनेक भावसों
प्रार्थना करे महादुष्ट हौं तुम मेरे प्रभु हो श्री आचार्यजी
द्वारा संबंध भयो है सो मोपर कृपा करो या भांति दैन्यता
ते प्रभुको स्याम्रावे भावकी वृद्धि होइ काहेते भाववृ
द्धिको कारन एक दैन्यता प्राप्ति ही है या भांति दैन्यसों
श्रीठाकुरजीकी सेवा करै तब श्रीठाकुर संतुष्ट होय या भां
ति [illegible] वा करे प्रभु संतुष्ट होउ जाइ तो वैस्नवको
प्रभु सुखसेव्य है कवहू सेवा मे प्रतिवंध न करे वा कवहू रो
गादि बाधा न करै जन्मभरि प्रभुकी सेवा निरविघ्नता

सो होय सो श्रीगुसांईजी कहे हैं सुखसेव्यो। ऐसे वैष्णवको महा
प्रभुजी सुखसेव्य ही हैं। ३। अब और कहत हैं। श्लोक। दुराराध्य
रूपसेवैव शीकराः सुधनं। हरिसेवा प्रवर्तनो भावप्रवर्तनो ज
नामतः। ४। याको अर्थ। श्रीहरिकी सेवा है सो अत्यंत दुराराध्य है
अभ्यासादि विना कोउ सेवा नहीं। ऐसे विषयमें अनेक साध
न समाधि में कष्ट करि होत हैं और जीव तो अनेक दो
ष करि भरे होय हैं या थोरे हैं तिनको दुराराध्य है तिनको
दुराराध्य है बड़े बड़े योगी अपने हृदय में वायु पूरक करत हैं
अभ्यास करत हैं मुनीजन अनेक प्रयत्न करत हैं तिनको दु
राराध्य है प्रभु है तो जीवकी कहा बात है तऊ जो ऐसी जीव
श्रीआचार्यजी महाप्रभु शरण आये हैं और पुष्टिमार्ग
की रीति अनुसार भावरसेवा करत हैं दैन्य ही याप ही
साधन करि ऐसे दुराराध्य श्रीकृष्ण सो भक्तवश होत
हैं सो श्रीहरिरायजी कहत हैं। जो यह पुष्टिमार्ग में श्रीआ
चार्यजी द्वारा सम्प्रदाय के मार्ग की रीति अनुसार भाव
रसेवा करत हैं सो परम भाग्य फल [illegible] परम व
ड़भागी हैं उनहीं को जन्म सुफल है सो हू रस के अनुभवी
हैं स्वजनि हैं। श्लोक। देवासुरमनुष्या वा ये लोके
ते एव च भजन्त्यच्युतं [illegible] सात्मा [illegible]। भ
[illegible] नारायणपरास्सर्वे न कुतश्चन बिभ्यति। स्व
र्गापवर्गनरकेष्वपि तुल्यार्थदर्शिनः। या देवता मनुष्य
असुर पक्षी [illegible] स्वभाव [illegible]
[illegible] सेवा [illegible] तामस [illegible] नाहीं। [illegible]
श्रीनारायण श्रीकृष्ण की कीजिये [illegible] स्व
र्गापवर्ग जो मोक्ष नरक [illegible]
समान कोउ नाहीं है। श्लोक। [illegible]
[illegible] हिंस्यन्ते [illegible]
[illegible] श्रीहरिरायजी [illegible]।

नकरतहैं। जोदृढमनकरिकें सर्वोपरि श्रीकृष्ण तिनकी
वाही प्रीतिपूर्वक कर्तव्य है सो श्रीभागवतमें कहे हैं
ह्लादवाक्यं। नदानंनतपोनेज्यानसौचंनव्रतानिच
प्रीयतेमलयाभक्त्याहरिरन्यद्विडंबनं।१। उद्धवजीकहे
हैं दानव्रततपोहोमजपस्वाध्यायसंयमैः श्रेयोभिर्विवि
धैश्चान्यैःकृष्णेभक्तिर्हिसाध्यते।२। एकादशस्कंधमें श्रीकृ
ष्णवाक्यं। नतस्यैभक्तियोगेनमद्भक्तोलभतेजसा खगो
पवर्गमहाभूकथंचिद्देवांछति।३। यांभांतिश्रीकृष्णकी
भक्तिसर्वोपरिहै। दानतपसौचजोक्रियाव्रतहोमजप
स्वाध्यायसंयमः इत्यादिसबकी भक्ति विना विडंबना है
समर्थतातें निश्चयकरमाहे श्रीकृष्णचंद्रकी भांतिसूं वाही
मनलगायकें कर्तव्यहै चौरासी हजार आगे वर्तमान
हैं जो जो हमको जीतहैं लिखायसो किसप्रकारहूं
रेपत्रमें लिखेहैं सो बांचिकें जानोगे पालो [illegible] श्रीविठ्ठल
प्रभोद्दोससस्यामदाससहस्थितः तत्रत्यवृतांतो लिखो वि
नस्यलेख विसर्जिकें [illegible] श्रीगोकुलनाथ
जीविप्रश्रीविठ्ठलरायजी तिनको दास स्यामदाससहि
तादिसमस्तसेवकवैस्नवयहसमाचारजानोगे वृत्ति
नरविचारसहितलिखोगे अखिलसमाचार कहावेहो
य सोसवे लिखोगे किं मथिके [illegible] श्री [illegible]
[illegible] कीर्तिका श्री [illegible]
रा[illegible] न[illegible] [illegible] सवकुपारवहै जो यह पुष्टिमार्गमें
श्रीकृष्ण [illegible] [illegible] सो [illegible]
कृष्णकीसेवासर्वोपरिहै सो मनलगायहीकर्तव्यहै सो
करतहैं। परमभागवत सो आगे कहतहैं श्लो। प
मवकरतहैं। [illegible] निवेदनं मद्भक्ताश्चचरितै
रापकारो [illegible] श्रीहरिरायजी आप
गणभवसुव।१। या [illegible] कहतहैं जोमें आपनो
देमाईश्रीगोपेश्वरजीसोकहतहैं जो में सर्वे लायक है
हूसा निवेदनकरतहो काहेतें तुमसब

प्रियभाताहो तातें दुखसुख तुमाबिना औरदूसरो किनसों
कहों और तुम दूरि हो जो पास होते तो दुख में सहाय ही करते
और मोको दुख दीन होतो तुमारे संग तें तातें यह पत्र द्वारा में
दुख जानोगे महातर एसी है आसा जाकी एसे भगव
दीय मेरे पास तें अपने कार्यार्थ चले सो दूराये मोको
इके अव जन के मिलन की आसा मोको नाहीं है और
तुम दूर हो तें दूरि हैं तातें पत्र द्वारा आपनो दुख लिखे हों
सो वांचिके समाचार जानोगे जी ॥ श्लोक ॥ तानामिति
जमार्गीयस्य धर्म किंचित्क्यावस्तार नदसिद्धिः जहल्के
नंको मे दूरि करिष्यति ॥२॥ याको अर्थ ॥ श्री हरिराइजी
कहत हैं जो श्री आचार्यजी श्री गुसांईजी की कृपा बल
ते किंचित् कछु थोड़ो सो अपने यह निजमार्ग पुष्टिमार्ग
कोधर्म सिद्धि न भयो काहे तें परम भगवदीय सो तो अप
ने कार्यार्थ परदेस गये ॥ और अब यह दुःसंग दोष तें
यह पुष्टिमार्गीय धर्म सर्वोपर सो सिद्धि भयो ताके
रिके मेरे हृदय में अत्यंत दुख लेस भयो है सो यह
कलेस मेरो दूरि करोगे सो मोको जानि नाहीं पड
त काहे तें मैं सब साधन सुधर्म कार्य रहित हों
और अनेक दोष भर्यो हों तातें मेरो दुख दूरि करिके मे
रो दुख को सब कोई दूरि करोगे तातें मेरो धीरज हृदय में
नाहीं रहत है आपनी इच्छा है विदेले सब का पावत हों
श्रय में बसो हों सो आप को कहत हों सो को [illegible] प्राय
पारवड मुख्य है हरिराय हृदि चिंतितं ॥ कृपा कुरु पु
रूपा में कुशल ते दीनता सबल ॥२६॥ याको अर्थ ॥ श्री हरिरा
नीति प्रता होय कें तहां ॥ अपने सेवकन को पुष्टि
अपने मुख

सो कहा कहों

कोपाखंडी याको सुखिया जानत हैं कारेते हरिनो
सर्व दुखहर्त्ता परम दयाल दीनवत्सल हैं तऊ मेरी उपे
क्षा कीनी है तातें मैं जानत हौं जो मोको महापाखंडी
जानि कें मेरी उपेक्षा कीनी मेरो त्याग कीयो है सो श्रव
मैं कहा करूं या भांति दैन्य करते श्रयुर्हे सो श्रीगुसांईजी
कहे हें चित्तेन दुष्टो वचसापि दुष्टः कायेन दुष्ट क्रिया
वदुष्टः ज्ञानेन दुष्टो भजनेन दुष्टो मम्मापराधादि न था
वि चार्य १ सो नामि मैं दुष्ट भाग्यो हों यथा श्रीगोकुलेश्वरः
नत्व के शास्त्र हि सुत्वं स्वभावं कुरुतेत्पथा २ श्रीगुसां
ईजी श्री गोवर्द्धननाथजी सों कहत हैं जो मैं चित्त करि
कें दुष्ट हौं वाणी करिकें दुष्ट हौं कायासों करि दुष्ट हौं
क्रियाकरि दुष्ट हौं पाखंडी तिसों दुष्ट ना साहन करत
हौं ऐसो मेरो अपराध कहां ताई विचारोगे तातें श्रपरा
ध मति विचारो श्रौर मेरो परम सामर्थ्य भाग्य है सो मैंया तुमि
न्यो है गोकुलेश्वर यह सर्वथा जो आपने गाय गोपगो
पीसांप्रजकी रक्षा करी है तुम ही गोकुल के रक्षक
प्रभु हौ ऐसो परम दयालु तुमारो स्वभाव है सो छोडि
दीयो क्यों जो भक्तन के क्लेश सबकु सहन लागे
सो तुम ईश्वर हो करतुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं सर्व सामर्थ्य पुरु
ष तुम चाहो सो करो तातें तुमको कहा कहूं हियेमें लज्जा
गी हौं जो ऐसो श्रम तुमको भयो अपनो उह दयालु
स्वभाव फेर मेरे हो तो तुमको कठिन है नाप नो भक्त
के दुख को सहन लागे याभांति दैन्य पुष्टिमार्ग में साध
न है भगवद्‌ [illegible] एगारे हैं होपति तनको राजा
होपति तनको ईश होपति तनको नायक इत्यादि है
न पकरि जीवन को स्वरूप प्रगट कीये सो भगवान स्या
म्यारे पडे न यह प्रभु तातें श्री आचार्यजी महा
प्रभु कहे हैं जीव को स्वभाव तो दुष्ट इति वचनात्

याभांतिश्रीहरिराइजीश्री आचार्यजीश्रीगुसांईजीवि
भावचतुसारकरतहैं जोमेंपाखंडीमेंमुख्यहों औ
सोमोकोप्रभुअपनेचित्तमेंचिंतनकरिकेंजद्यपिश्री
हरिदयालहैं कृपालहैं दीनवत्सलहैं तऊमेरीउ
पेक्षाकीनीहेंतहांकोईकहेंजोप्रभुजोश्रीलक्ष्मीतो
भक्तकीउपेक्षानाहींकरतहैं यहशास्त्रपुराणश्री
भागवतगीतामेंप्रसिद्धहै औरतुमनेंकैसेंजानीजो
मेरीउपेक्षा याभांतिकेउप्रतिउत्तरकरतहैं
श्लोक॥ उपेक्षितःश्रीहरिणातदीयैरप्युपेक्ष्यते अन
न्यामिसरणांवनस्थस्यविक्षता॥४॥याको अर्थ। श्री
श्रीहरिरायजीकहतहैं जोमैंयातेंजान्योजोहरिभग
वतनेमेरीउपेक्षाकीनीहें जोमोकोपुष्टिमार्गीयतदीयमोकों
छाडदीए सोमेंआगेवडेनके श्रीमुखद्वाराशास्त्रवार्ता
सुनीहें जोभगवानप्रसन्नभएँवतजानियेंजवभग

अवकिनकीसरनकरूं

यहें तुमप्रभुकोदेखहुराये

प. १०

कोपाखंडीयाकोसुखियाजाननहींकारतेहरिनो
सर्वदुखहर्त्तापरमदयालदीनवत्सलहैं तऊमेरीउपे
क्षाकीनीहैं तातेंमेंजानतहों जोमोकोमहापाखंडी
जानिकेंमेरीउपेक्षाकीनी मेरात्यागकीयोहै सोसब
मेंवदाकरुं याभांतिदैन्यकरतेंश्रहें सोश्रीगुसांईजी
कहेंहें चिंतनंदुष्टोवचसापि दुष्टंकायेन दुष्टक्रिया
वदुष्टं ज्ञानेनदुष्टोभजनेनदुष्टो ममापराधं हि नधा
विचार्य १ श्रीनाथमिमंदभाग्योदैन्यंथगोकुलेश्वरः
नत्यजेत्यास्वस्थितस्वभावंकुरुनेतथा २ श्रीगुसां
ईजीश्रीगोवर्द्धननाथजीसोंकहतहैंजोमेंचित्तकरि
केदुष्टहें वानीकरिकेंदुष्टहें कायासोंकरिदुष्टहे
क्रियाकरिदुष्टहों पाखंडीतिरोहुं भजनसोंहुंनकरत
हों एसोमेरोअपराधकहांताइंविचारोगे तातेंअपरा
धमतिविचारो श्रोएमेरीममहासदभागहें सोमेंयातेंजा
नेहैं गोकुलेश्वरयहइसधाममेंजो आपतो गायगोपगो
पीसबव्रजकीरक्षाकरीहैतुमहीगोकुलकेरक्षक
प्रभुहो एसोपरमदयालतुमारोस्वभावहै सो छोडो
हीमांवहारमेंजोभक्तनकोक्लेसअवसहननहारो
सोतुमईश्वरहो करतुंअकर्तुंअन्यथाकर्तुंसवसामर्थ्यपूर्ने
हो तुमचाहोसोकरो तातेंतुमकोकहाकहियेमेंमंदभा
गीहो जोहमनोश्रमतुमकोभया अपनोउहदयाल
स्वभावपरमेरलीतेतुमकोकठिनहेगोपहो भक्त
केदुखकोसहननलागे याभांतिदैन्यपुष्टिमार्गमेंसाध
नहें भगवदीदैन्यकारगारगेहें होपतितनकोराजा
होपतितनकोइस होपतितनकोनायकइत्यादिहे
न्यकरिजीवनकोस्वरूपसंगटकरिए सोभगवांनसों
नारपडेनवदच्छ्रमरे ताहीतेंश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुकहेंहें जीवोस्वभावतोदुष्ट इतिवचनात

ईजीश्री आचार्यजी श्रीगुसांईजीके
अनुसार कहत हैं जैसे पाखंडीमें सुख है औ
तैसे चिंतन करिकै जद्यपि श्री
याल हैं कृपाल हैं दीनवत्सल हैं तऊ मेरी उ
पेक्षा कीये हैं तहां कोई कहै जो प्रभु जो भक्तवत्सल तो
की उपेक्षा नाहीं करत हैं यह सास्त्र पुराण श्री
भागवत गीतामें प्रसिद्ध है और तुम तैसें जानी जो
मेरी उपेक्षा याभांति कोउ प्रति उत्तर करै तहां कहत हैं
॥ श्लोक ॥ उपेक्षितः प्रियदारिणा नदीयेरप्युपेक्ष्यते अन
के यामि सरणं वनस्थश्च विस्मृता ॥ ४ ॥ या अर्थ । श्री
श्रीहरिरायजी कहत हैं जो मैं यातें जान्यो जो हरि भगवा
न मेरी उपेक्षा कीये हैं जो मोकों पुष्टिमार्गीय तदीय मोकों
छोडि दीये सो मैं आगे कहे ते श्रीमुखद्वारा शास्त्रवानी
सुनी है जो भगवान प्रसन्न भये तब जानिये जब भग
वदीय मिलाप होइ और भगवान उदासीन भये तब जा
निये जब भगवदीय छोडि जाइ तातें मैं जानत हों जो मे
री भगवान उपेक्षा करि मोकों छोडि गये हैं तो अब मैं क
हा करूं किनकी सरन जाऊं यह चिंता मोको बडी हृदय
में भई है जो भगवान भगवदीय दोऊ मेरी उपेक्षा की
ये अब किनकी सरन करूं सो जैसे कोई गंभीर वनमें
भूलि पडे तब तिनकी और जाइ कहूं गैल सूझै नाहीं
तब बडी चिंता होइ तैसे ही मोकों चिंता बहुत भई है त
हां कोई कहै जो प्रभुने उपेक्षा करी तब भगवदीय हू उपे
क्षा करि छोडि गये तो यह दोष तुम प्रभु ही को तुम मत
न कहो सो यह भक्ति मार्गकी रीति कहत हैं प्रभु तो निर्दो
ष है तुम प्रभुको दोष ठहराये याभांति कोई कहै तहां
कहत हैं ॥ श्लोक ॥ प्रभोरपि न्यवेदोषो गुणान्...
तोमपि विस्मृत्य दोष निश्चयं गृह्णीयात् [illegible]

१.प. ॥ श्री हरिरायजी कहत हैं जो प्रभुको दोषनो रं
७१ चक नाहीं हैं यह सगरो दोष मेरो हैं जो मेरेमें गुणको ले
श नाहीं है और दोषन रवसि खा पर्यंत मेरेमें भर्यो हैं
सो अपनो दोष मैं विसरि गयो हों और गुन नाहीं हैं सो
अपनेको महागुणवंत जानत हों यह अगपान्न मे
रे मेरें सो मेरो हैं सगरो दोष है और प्रभु तो सब गुणसं
युक्त हैं सो मैं अज्ञानकरि भ्रमायो हैं अब और हू कह
त हैं ५ ॥ अब श्री हरिरायजी कहत हैं जो जैसें सुं
दर भेष आभूषण वस्त्र पुरुष कों पहरावें और वह पु
रुष को श्वास तो नाहीं है तब वस्त्र आभूषण वस्त्र पुरुष भेष
हू वृथा है श्वास बिना प्रेत समान है सुंदरता हू वृथा
है तैसें ही भाव बिना सेवा कथादिक भाव कों कहत सो
मेरेमें भाव नाहीं है तातें मेरो कीयो सेवादिक कथा कहा जे
से पुरुषकों श्री प्राण श्वास होय तो भेष सब आछो ला
गे बिना वृथा हैं तातें भाव होय तो कथादिक सेवा
दिक रस कों अनुभव होय भाव बिना क्रिया वृथा न
सो कहा सो मेरेमें भाव नाहीं है अपनी दशा अर्थ कहु
कहत हैं ता करिके मोकों कछु फल सिद्ध हैं कछु ना
हीं तातें मोकों दुःख होत है ६ अब और हू कहत हैं श्लो
क साधन एव नैषा स्थिति निर्वृत्ति नो हरौ न चानुभाव
कुरुते निजं भागाभिधं मपि ७ या ॥ तातें जी
व श्री हरिरायकी कथादिक सेवादिक में यह जीव नाहीं थि
ति हैं तब भाव हृदय में कहां ते तिष्ठे भाव सो यह
रा श्रवन करे तब हृदय में भाव सिद्ध होय सो श्री भाग
वत द्वितीय स्कंध में श्री शुकदेवजी कहे हैं श्लोक प्रवि
ष्टः कर्णरंध्रेण स्वानां भाव सरोरुहं धुनोति शमलं कृष्ण
सलीलस्य यथा शरत् १ सत्सकं पेतक वाक्यं त
स्मात् सो विदि माहात्म्य भाव रस सुंदर श्रुण्यात्मकी

तैयेनित्यंसप्रश्रयोनिसंशयः ।२। इतिवचनात् भग
वानकीकथाकेसीनिर्मलहैजैसेंगंगाजलतावे
तेयआसपासकेसर्वपवित्रहोइजैसेंहीकहेकहावे
औरजोसुनेपाछेंअनमोदनकरेंतोसबसुद्धहोइश्रोता
नेंश्रीहरिरायजीकृतहैतिथाश्रवनविनाहृदयमें
भावकैसेंतिष्टेसर्वथानतिष्टे।औरजहांतांलौकि
हिकसंबंधीकार्यमेंतेमनकोत्यागनहोइतहांताईश्री
भगवत्केस्वरूपकोअनुभवकहांतेंहोइ।काहेतेंमनक
रिकेंभावसिद्धहोइहै।सोमननोंलौकिकसंसारादिमें
आवेसभयोअनुभवकहांतेंसिद्धहोइसोसंन्यासनि
र्णयमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेहैं।विषयाक्रांतदे
हानांनावेशःसर्वथाहरेः जाकीदेहइंद्रियमेंविषयादि
कीभावनाकामनाभरीहैंताकेहृदयमेंभगवदावेस
कहांतेंहोइसर्वथाहीनहोइ।सोयातेंमनसोंलौ
किकवैदिकत्यागनाहीहैंताकेंअनुभवकहांतेंहोय
अवश्यहीकहतहैं।श्लोकः।सेवानुप्रतिबंधोवाभोगो
हैमादिनाधकेगेहविनादिकाराशितिवर्यसामानसी
सेवेनयथालोच।।औरभगवत्सेवानतुजाकिनज
हीमेंअनेकप्रतिबंधहैं।सरीरइंद्रियकेविषयकीकाम
नाउठेतबसेवाकरतमेंउद्वेगहोइजोतबसेवाकरिकें
कोंपीछेंखानपानकरें।याभांतिप्रथमविषयादिकवौ
भोगकीकामनाहोइतबमनमेंउद्वेगहोइ।सेवामेंम
ननलागे।तबप्रभुकोंबुरोलागे।तबप्रतिबंधहोइ।
जोमैंसेवाहीनबनिआवैंतबग्रसादिकार्यवितइ
आदिकमेंआसक्तिहोइतबमानसीकहांतेंसिद्धह
होइ।सोअवापरवेमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेहैं
उद्वेगप्रतिबंधोवाभोगोवास्यात्तुबाधकं इतिवचनां
ता।इहसंबंधीखानपानविषयभोगासेमायासक्तिप

ऐसे वामें बाधक हैं उद्धार करावत हैं तब तनुजा वित्तजा
सेवा न भई लौकिक संसारासक्त भयो तब मानसी व
कों कहा ते सिद्ध होइगी सो या प्रकार में लौकिक भोग
में आसक्त हू हैं तिनको मानसी तो परम दुर्लभ है तनु
जा वित्तजा सेवा नाहीं सिद्ध हैं या प्रसंग और हू कहत हैं श्लो॰
नातः परं सुखं यातेषु दुर्भगस्य परा स्वतः । तत्सुसर्व
सुखं तेषु सोऽहं समहं स्थितः । ९ या श्लोक को श्री हरिरा
यजी कहत हैं जो मेरी यह दुरवस्था है ताते श्री आचार्य
जी श्री गुसांईजी तथा श्री गोकुलनाथजी तथा श्री क
ल्याणरायजी ये हमारे पितृ समान हैं श्री आचार्यजी
मार्ग प्रगट कर्ता श्री गुसांईजी यह पुष्टिमार्ग के प्रकाश
कर्ता हमारे वल्लभकुल तथा हमारे पुष्टिमार्गीय वै
ष्णव पिता ही हैं यह भाव श्री गोकुलनाथजी द्वारा नाम
निवेदन भयो है सो मेरे गुरुचरण पिता ही हैं और क
ल्याणरायजी हमारे तातचरण जगत प्रसिद्ध हैं ताते
मैं तातचरण जगत प्रसिद्ध हैं ताते मैं तातचरण तें न्या
रो दूरि पर्यो मोको परोक्ष है सो या समय में या दुःख में मेरी
कौन सहाय करेगो ताते मैं बडो दुर्भागी हों मेरे भाग्य न
ष्ट भये हैं और सत जो तुम सगरी वस्तु के जाननवारे हो
तथा पुष्टिमार्गीय भगवदीय सर्वगुण युक्त तिन हू
ते मैं दूरि पर्यो हों तुम हू दूरि स्थित हो भगवदीय हू तो
ते दूरि स्थित हैं सो अब मैं कहा करूं ताते यह जानत हौं
जो दुर्भागी हों या दुःख में मेरे पास सत्पुरुष कोई नाहीं
है जो मेरो रंचक हू समाधान करै ताते मैं कहा करूं दुःख
रूपा वत हो अब और हू कहत हैं श्लो॰ श्री भागव
तच्चिन्तानुविनाशात्सतो मनस्थान्तनविले
पान्तवान् रागभावनं १० या श्लोक को अर्थ
हे जो तुम तो बडे सज्ञान हो सत्संग नाहीं है तो कहा

भयो। श्रीभागवतको अवलोकन करै। ताई कहिकैं स
कल चिंता दुःख क्लेस दूरि होइगो। याभांति कोई कहै तहां
श्रीहरिरायजी कहत हैं जो याको ग्रह चित्त होय तव श्री
भागवतकी खवरि पडे मनतो मैं चिंता क्लेसकरिंदु
खित हृदय होय रह्यो है ताकूं श्रीभागवतको भाव
माको कहां तैं दीसिगो। और ताकूं सी भगवदी सतपुरुष
होय वे श्रीभागवतको भाव कृपा करिकै सुनावे तव
जान्यो जाय। अरु जो मैं दूसि हृदय चित युक्त श्रीभागव
तमैं कैसें होइगो। संतोष तहां कूं ईकहै जो हरिकी सर
नकी भावना करो। श्रीआचार्यजी महाप्रभु विवेकधै
र्यमें कहे हैं। अशक्ये वा सुशक्ये वा सर्वथा शरणं हरिः
तथा भगवदीनासे भगवान् अर्जुन प्रति कहे हैं सर्व
धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपा
पेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः। याभांति सरनकी भाव
नातें सगरो कार्य सिद्ध होइगो याभांति कोई कहै तहां श्री
हरिरायजी कहत हैं जो मेरे मनमें अत्यंत विक्षेप होय
रह्यो है ताकूं कैसें सरनकी भावना कहां तैं होइ १४ अव और
हू कहत हैं श्लो०।। वार्त्तान्तरं रतिप्रेमणा अथ दूरस
नो जेय: महत्त्वमत्यंतो कासना प्रपत्यारैन्य नासने
११ या [illegible] तहां कोई कहै जो औरनकूं तौ अथव

प
१३

दृढ़ो आश्रय तरको जपनाहीं वनततो दैन्यभाव
करोनेनाहीं करि प्रभु प्रसन्न होइगो सो श्री आचा
र्जी कहे हैं दैन्यते हरितोषणं दैन्य हीय तो भगवान से
व पावे या भांतिको उकरे न होय कहत हैं जो लौकिक में
लोगन में अपनी महत्व बड़ाई है तामें पद ममता
जो में बहुत समझत हों में में बहुत धर्म है ताको विदैन्य
ताको नास है सो लोकन की बड़ाई पद महत्व तामें उन्म
त फूल्यो फिरत हैं ताको दैन्य तो नास है सो लोक
न की बड़ाई पद महत्व फूल्यो फिरत हैं ताको दैन्य ता
नास है तातें में वक्ष्यामि अवश्य हूँ कहत हैं सो [illegible] ति
वेदनानुसंधानं हि सन्ततं एवं कथं वै केते गरा सर्व
त्यागाभावाद् दुःखे भ [illegible] या [illegible] अवकहे जो नि
वेदनको अनुसंधान राखे ताहीकरि सर्व सिद्ध हैं
तहां श्री हरिरायजी कहत हैं सदा भांति पुष्टिमार्गीय
भगवदीय तिनको अत्ते जिदीयो अब निवेदनको अ
नुसंधान कैसे करे निवेदनको अनुसंधान कैसे
करें निवेदनको अनुसंधान [illegible] भगवदीय सों
मिलिवे कर्तव्य है सो श्री आचार्यजी महाप्रभुन वा
लग्रंथ में कहे हैं निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैः
पि: इत्यादि वचन करि भगवदीय विना अवके लोम
के संग हो तहां कोई कहे जो केवल प्रभु की सेवा करी
श्रीकृष्णाश्रय में श्री आचार्यजी महाप्रभु सर्व माग
प्राकट्य करि सरन सिद्धि कीनी है सो ऐसे कैसे या भांतिकी
[illegible] कहै तहां श्री हरिरायजी कहत हैं केवल सरन
तें सब लौकिक वैदिक तीर्थ व्रत कर्म इत्यादि
सर्वत्याग मन में होइ अब सरन द्रढ़ होइ सो मेरो मन तो लौ
किक वैदिक कार्य में लगि रह्यो है सर्वत्याग को अभाव है
तातें सरन कहा तें होइ सो कोउ तो केवल श्री हरि की शरन

लपरमदुर्लभहैं तातें मैं कहा करूं। [illegible]
हैं, श्लोक॥ यो चेत्तश्चितनसः शुचदूषण[illegible]नपश्यय:
विवेकधैर्यन हेतुमखाधीराश्रमेन थो १३ अर्थ कृष्ण श्री
कहत हैं जो मेरो चित्त लौकिक हैं सम्बंध
ते चंचल होय रह्यो है ताकरिकें श्री कृष्णकृपा
लमें आश्रय दृढ नाही है सो आश्रय नाहीं होत
म हैं या आश्रय को साधन विवेक धैर्य सो ऊ सिद्धि
ही हैं तो आश्रय की कहा कहूं श्री आचार्यजी महा
प्र विवेक धैर्य सो ऊ सिद्धि नाही हैं तो आश्रय की कहा
कहूं श्री आचार्यजी महाप्रभु विवेक धैर्याश्रय में तीनों
कारक है हैं सो साधन मेरे में कहां विवेक धैर्य सतत
तथाश्रय: इति वचनात विवेक धैर्य की सि
द्धि करिकें तब श्रीकृष्ण को आश्रय दृढ हो
धीरमें रा जा [illegible] ऐसो आश्र
तें सिद्ध होऊं ताकरिकें आश्रय
कैसो रहें कहत हैं श्लोक॥ भावो वस्तु भावे
[illegible] [illegible] [illegible] चरणौ
[illegible] १४ याको अर्थ। यह श्री हरिरायजी कहत
[illegible] है जो कछु नाही बने तो व्रजलीला की
ताकरि अनुभव होऊ गो याभांति को उब
तर सों श्री हरिरायजी कहत हैं जो भाव को अनुभव को
लीला सामग्री [illegible] सम्बंधी देखत होय
हो तो मैं नित्य [illegible] बाहिर प्रदेस में स्थित हों तहां
कै भाव उत्पन्न होय याभांति प्रपन्नपने [illegible]
ताकरि [illegible] भयो है न्यते
यो सो है दानुस
की लीला [illegible] कहत हैं ततः वह
[illegible] श्री हरि [illegible] लीला

प. ७४

कृसंगकरीहे एसीव्रजभूमिकहाहे व्रजभूमिकेठोरठो
रचरणारविंदकहाहे ध्वजावज्राद्रिओडसचिन्ह गोप
देखेजेसें २ मत्स्य ३ धनुष ४ त्रिकोण ५ अर्द्धचंद्र ६ आ
काश ७ ष्याम चरणकेचिन्ह हें ध्वज १ अंकुश २ कम
ल ३ वज्र ४ साथीय ५ अष्टकोण ६ जव ७ ऊर्ध्वरेखा ८
कलश ९ इतगोचरणकमलके षोडशचिन्हसंयुक्त
व्रजभूमिकहाहे १४ अब आगेकहतहें श्लो० कृतो
लकृष्णतृषायोपुलिंदीभावपोषक: इसेश्रीयमुना
देव्याश्रीलाससविनाहिका १५ या अब इहांलख
ताहेंकृष्णदासइनको नाम गलेगिरराजजीपरसद्या
नजोपुलिंदिनीसारिखीवोभावकोपनकीये गिरि
राजके संगतेपुलिंदीको भावजन्य नभयो एसे गिर
राजजीसर्वांगते प्रभुकीसेवाकरतहें सवेरितुमेप्रभु
कोसुखदेतहें गायसुखपावतहें एसोगिरराजजीकहा
हें भावकोपोषक श्री श्रीयमुनाजीकहाहें कुमारी
केमनोरथपूरनकर्त्ताश्रीयमुनाजीतहांविराजतहें ए
सेदेसकहाहें यमुनाजीकहाहें सोकेसहें लीलासवि
नारिकाहें इनकेआश्रयतेंश्रीकृष्णकीलीलाकोअ
नुभवहोइ एसीश्रीयमुनाजीकहाहें अबआगेकह
तहें १५ श्लो० इतेवेणुरवायेवोसमाकृष्टाव्रजस्थि
ता: व्रजनाथकरांभोजप्रोक्षिताङ्कगवांगणा १६ या
अब   अबश्रीहरिरायजीकहतहें जोयहवेणुको
रवश्रीकृष्णकोवेणुनादकारिसमस्तव्रजभक्तनकोर
वश्रीकृष्णकोवेणुनादकरिसमस्तव्रजभक्तनकोर
सदानकरतहें स्थावरजंगमसंबंधरससोंपूरितहें
तनमकृष्णव्रजकहाहे सर्वोपरश्रीकृष्णव्रजकेनाथ
आपनेकरांभुजसोंपोछतहें सगरीगाइनकोसुख
देइपालनकरतहें एसीगायकहाहें अनेकगाय

के गुणसम स्त्री हरसहित सो वरतहैं अब और क
नहीं ता सो का। अनंतलीलाधारा तेगुना: काषिपिन
। विनुनाद परायन भुजाइयुग्मपति णा।४
अनंतलीला जनभक्तन के संग श्री हरिलव करतहैं
राअवत हैं ऐसे वृन्द कहहे औरवेणुनाद मुनि मधुकी
रन में परायण पंछी ब्रह्मादिकी साखा भुजारूप
पर आरूढ होइ बैठे हैं अपनी चंचलस्वभाव त्यागके
न की नाई बैठे हैं ऐसे पंछी कहत हैं सो जुगलगी
तगुणगीतगायगायके निर्वाह करत हैं।
कलवेणुगीतो आरुह्य येद्रुम भुजानरुचिरप्रवाः
एवंति मिलित दृशो विगतान्य वृत्ता।धिया
न गावत हैं ताई भावसे श्री हरि सीज मग्न होय
भावना करत हैं अब श्री और हू कहत हैं सो के
चरणाभोजरेणुचक्र ध्वज स्थिता दधिनि
हैं अब णमंगला।धियाको अर्थ। ॥
इजी कहत हैं जो वृजस्त्री के चरण
वृज में स्थित हैं सो सो को वहा जैसे उद्धवजी
। आसा लहे चरणरेणु जुषामहं स्यात वृंदा
गुल्म लतौषधीनां पादलग्न
त्या भेजे मुकुंद पदवी श्रुतिभिर्विमृग्यां
होय कहें और प्रातः काल दधिमथन
ने को परममाल रूपसे कहे हैं
लोका गोपी समुत्थाय नि
न्य च दधिन्य मंथान त
गुरु को विकच कुंजकंकण

प. | वसतन हांकुं डलतियत के पोकाहतवेंकु माधवजी उ
१७५ | श्रीयतीनां मरांधेंहतोंदनें रजागानांदि वनसपश
ध्वनितिं प्रदृश्य मग्न तिनैयुगल मिश्रंनतांनिरष्यतैयै
नदीसां मम मंगलें यामाव मेंमग्नहो ह श्रीहरिरायजी
कहतहैं । पि । ध्यव श्याहं कहतहैं सौ श्री यमुना वा
लुकादेह संबंधः कुसल सपृष्ठि: वृह्मसुख लसातत्त
तदीयत्वं च सदुतः ॥ १ ॥ प । श्री । ध्यव श्रीहरिरा
जीकहत हैं जो श्रीयमुना जी कीवालुका कहांहो ए
सीवालुका के संबंध तें श्रीजी । कि कदेह होय तथा
श्रीयमुना जी कौ जल परम लीला रसरूप तत्वरस
जलता तें जल और वालुका के इन संबंध तें श्रीजी
कि कदेह सिद्धि होइ सो जल यौ वालुका कहा सो
श्री गुसांईजी यमुनाष्टक के पद्य में कहे हैं नवनंदग
त वालुका संकलनि जो गागागनां मुदा करिये तीय
लोकानुसार भावि मृग भयो है या भांति बृज की ली
लाको अनुभव विप्रयोग भाव सो करि पीरी सेन्य वारत
हैं जो मैं निरंतर वृहसुखदी हों तांदी ते मोको पुष्टिमार
गीय भगवदीय को मिलाप सो कहां यदरूप तत्र ई सो भा
व तदीय के संग तें सिद्धि होय सो तदीय तो जहां यह
भाव की जो व्यता होय तिनके संग सिद्धि होत है मेरे
संतत वृहसुख दैं । तातें मोकों भगवदीय को मिलाप
कहां । पि । ध्यव श्रीहरि कहत हैं सो श्री । परमानंदरूप
सौ वेनांविदु रवसं तेरी पौलका भावतौ नावद्दृष्टलौ
चायें सं श्रय । रथ या श्री च्य । परमानंद श्रीगोवर्द्धनना
थजी सा तस्वरूप श्रीविट्ठलनाथजी यह पुष्टिमार्गमें
परमानंदरूप श्रीकृष्ण रसात्मक सेवा है । पर श्रीवल्लभा
ते हृदि हैं । तासों कहें मेरे चित्त में निरंतर दुख रहित हैं
दृष्टि कौ सो तिन प्रभु बिना के सें होय एक मेरे मन भावे

नाहीहैं औरहूसेकोऊभगवदीयकेमनकेपोषनकू
तोहूनाहीहैं औरश्रीवल्लभाचार्यजीकेचरणकमलको
दृढआश्रयमोमेंनाहीहैंताकरिकेमेंनिरंतरदुखकोप्रा
प्तहों ऐसेश्रीहरिरायजीकहतहैं॥१०॥श्लोक॥विषयाग्निनिवेश
नपेहाणविशांतिप्रभो जातोऽभिशापतस्सर्वसाधनाभ
ववानितः॥११॥याकोअर्थ॥श्रीहरिरायजीकहतहैंमेंकै
सोहों विषयावेशकरिकेभयोहूं सोप्रभुमोकोविषया
वेशकरिकेहृदयमेंनाहीवासकरतहैं सोश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभुसंन्यासनिर्णयग्रंथमेंकहेहैं विषया
क्रान्तदेहानांनावेशःसर्वथाहरेः याभांतिविषयके
आवेशकरिकेप्रभुहृदयमेंनाहीस्थितहोतहैं यो
रविषयकेआवेशतेहरिकेदर्शनकीइच्छाआर्तिनाही
होतहैं तोप्रभुहृदयमेंकैसेंआवेंगो याभांतिसर्वसाध
नकेअभावकरिकेतुम्हारेस्वरूपमेंनाहीआयस
कततातेकरिकेभावकहातेसिद्धहोय तातेमेंविषया
वेशीसाधननकरिकेहीनदासोहोंभगवद्भावकोलेसहूमें
मेंनाहीहों ऐसेश्रीहरिरायजीकहतहैं॥१२॥श्लोक॥निःसाधनत्वे
भावेतुविद्यमानेप्रयोजकं। तदभावेकेवलंमेसाध्यमेव
नचान्यथा॥१२॥याकोअर्थ॥ मेंकैसोहूं श्रीहरिरायजीक
हतहैं भावविनानिःसाधनहोयवेकोजोसारसकार्यभ
गवद्धर्महूछोडिदीयोहै सोऐसोनिःसाधनअप्रयोज
कहैंजोमेंकछुसामर्थ्यनाहीहैं सोप्रसिद्धहीजगतमेंदि
खमानहौं भगवद्धर्मसंसारीनाहीकरतहैं सोवहांनिस
धनहैं तैसेंईऔरसंसारीकीनाईलौकिकासक्तिनिसाध
नमेंहूहों ताकरिकेकछुसिद्धिनाहीहो काहेतें जगतमें
कोऊस्वतंत्रकर्मसेवास्मरणप्रभुकीनाहीकरत तातें
होनिसाधनहौं तातेंभगवानमेंतद्रूपतास्वभावभगवि
नासत्कार्यहोय सोकेवलदोषरूपहीहों ऐसेंमेंहूं

न। नाथा। बनाय कै नाही करनेसो। ग्यो ईश्रै यत्नमें हो
ई [illegible] मैमे भाव है नाही है। स्या [illegible] अर है कहने है सो
[illegible] सरीरै [illegible] सम [illegible] क्रियाकां [illegible] सेन्यानी यथा
[illegible] वधिरी म [illegible] विह्वल : [illegible] ना [illegible] श्या [illegible]
[illegible] सामर्थ हाय [illegible] क्रियाको [illegible] लौकिक
वनै तैसै भाव [illegible] नापकलसाधनजहोहै ताकौ हष्टा
तकहनहै तैसै ग्रंथहै सो [illegible] नप्रकारहै वो [illegible] अरव
कहा [illegible] अर [illegible] कहावो लैं अर हस्त विनाक
क्रियाकरै अर [illegible] विनाकैसै चलै तैसे ही [illegible]
जो है [illegible] भाव सार हित : क्रौ [illegible] किका [illegible] भा
प्रकार पावै [illegible] भ अर भावबि
यफलकी सिद्धि नाही है सो भावही परगारो है
[illegible] भजि सा [illegible] भाव भाविवस्वा कोटि साध
को [illegible] भाने सेव [illegible] धू [illegible] नद मारमागमो कोन
मारगामी ति पुरुषनै [illegible] भाव [illegible] सर्व [illegible] टीरी
ति [illegible] वसन भूषण [illegible] पहरै भाव सो [illegible] उल
[illegible] मुद्रा [illegible] कौ [illegible] यत्न [illegible] वेस विधि कोने
मनाही प्रीति [illegible] पहर्यावा [illegible] नसकै [illegible] माहन
सू [illegible] या प्रकार भाव ही सैं सर्व सिद्धि है
सो [illegible] भाव [illegible] सिनाही है [illegible] कौ कहूं सि
नाही है [illegible] भाव हू कौ [illegible] नाही है
[illegible] हां सिद्धि नाही है [illegible] प्रका [illegible] विलसो
[illegible] पेल [illegible] भव [illegible] गा मिसर हास्य [illegible] तिमे
[illegible] भगवद्का
मनोरथ प्रभुस्वा संबंधी ताकरि रहित है प्रभुकी
[illegible] मन [illegible] नाही लागत है [illegible] लौकिक
[illegible] विषयारितथा तैरेहवे भरण पोषण मेरे सब
धी भरन पोषन में पटहाचे ताकरि ग्रसित है ताकरि

रिजोश्रीहस्तसोंमेरीउपेक्षाकीएहैंमेरीबुद्धिनाहीलेत
हैंमैंमहादोषकोसमुद्रहों।तातेंमेरोत्यागकीएहैंऔर
रवदोषमहामेंऐसेहैंसबोंपरभारीहैं।तातेंप्रभुमोकोंछो
ड्सोसतजनजेभगवदीयहैंसोसदाईरखाभावकरि
केंरहितहैंजैसेंविभीषणकोंरामननेपरसोंप्रहारकी
योतऊविभीषणविनतीकीयो।भलीवातकहीऔरलघु
दासनेंश्रीगुसांईजीकेदरसनवंदकीयो।परंतुश्रीगुसांई
जीरूपदासकोंभलोईकीएवहरीतिसोभगवदीयरहे
तौप्रभुप्रसन्नहोइसोमैंभगवदीयकीरहतामेंनत्यरहोंत
तेंमेरोत्यागप्रभुकीएहैंसोअबमैंकहाजाऊंऔरकहा
करुं।अबमैंकोनगतिहोनहारहे।यहबेठोदुखमोमेंहे
अबऔरह्वेवहनहीं।।५।।स्लोक।।विसवैषिणास्याक
मधिकारस्हतापुनःध्रुतेयुवतिवरेपनकायमेकमनी
हस्यो।रई।याकोअर्थ।भगवद्धर्मसंबंधीदुःखवनोमेरेहृद
यमेंवीहोतहतो।औरलौकिकवागवरदुःखआयवेप्राद
भयोहैं।सोकहतहैं।मोहमारोअधिकारीविरक्तवेराग
नतमेंनावीवहुतवडाईहैं।औरमेंअवहुतकृपापात्रनो
निवेंवाकोसंगकीयो।अपनेपासराख्यो।सोविरक्तअधि
कारीकामनीजोपरस्त्रीकोदेखिकेंमोहितहोतभयो
सोपरस्त्रकलिमेंयुवतीमहामोहनीहैं।काहूकोधीरज
ज्ञानविवेकराखतनाहीहैं।तातेंयुवतीवसअधिक
हीहोतभयो।अथवाविरक्तहोइकेंअधिकारलीयोता
करिकेंयुवतीकेवसभयो।कामहृदयमेंबढतभयो।अ
वऔरएककहतहैं।स्लोक।।कस्याश्चित्तरनियामविघ
वायाश्चैसामान्तोदुष्टेनस्यापिनोगर्भःपतितश्चन
थोयहांतार्‍हैं।याकोअर्थ।याप्रकारयुवतीकेवसहो
इकोईकालमेंसमयपायसंबंधकरतभयो।सोवो
ईयहवातकोजानतनाहीं।सोवहविधवास्त्रीके
साविषयहोतभयो।सोवहस्त्रीकोगर्भरहिगयो।

प· ७

ताकरिकैं वह स्त्री औरमेरो अधिकारी महामनमें दुखी
भयो जो अबकैसी है दुगी पाछें औषधिनकरि होउ
सिखिकैं गर्भ गिरावन भये सो यह बात सबठौर प्रसिद्ध
गानिकैं सबको आवन भयो अब और हूं कहत हैं सो
मरणं चो भयो मधेव कस्य चित्स्यान्न संशयो एते
न प्रेमजीनाम्ना महीपति निर्वारिता ७१ या [illegible] अर्थ औ
रह हैकैं गर्भ गिरायो सो मरन कहो इके गिरयो ताकरि
कैं राजा में हाविमवा खवरि भई सो मरन समान दुख है
न भयो यामैं संसय नाही और कहां नाईमें लिखो सो प्रेम
जी विसवमें संग हतौ सो अनेक यत्न करिकैं मेरी आप
त दुख निवारन करत भयो राजद्वारको समाधान की
यो और मेरे सानकरि साधन कीयो सो जानो गा अब
और हूं कहत हैं सो [illegible] विश्वासः कस्य कर्तव्य इति खिन्न
मनो मम: यह कार्येन वलंति मनुष्याणां मभावतः ७२
या [illegible] अर्थ ताते ऐसी बात रिखिकैं अब काहू विस्वासको
न कोक रिये तो विकटदुख संवधके ती [illegible] यस्थ को छो
डि विराग समान वेसको मंगलीयों ताको [illegible] तीय हा
ति है भई अबको नको आपने पास राखियें अबको
नको विस्वास करियें सो मनुष्य मिलन नाहीं है सो य
ह बडो ई दुख है पर हरसमै जान्यो मनुष्य चहियें सो
मिलनाहीं और विश्वासका हूकै ऊपर आवन नाहीं
और विश्वास बिना सुख नाहीं होत है ७२ अब और
हू कहत हैं सो [illegible] अतः स्निग्धोपि कार्येनु
स्मोतः सदा प्रायपः प्रेमजीनाम्ना
वन रहीया
अनिहीहि [illegible] प्रे
ह मान्यो अ
ही होन है हमारी
रिकैं सब औरतें मनमें

है। सो भगवद्धर्म मेरे संग में एक प्रेमजी ही है सो केव
ल विरक्त को नाही रहत हैं। जितनी वननन हैं तितनी ह
मारी स्हनकरी लौकिक तें न्यारे रहत हैं। हे अहस्थप
तु विरक्त वत जैसें विरक्त के धर्म शास्त्र में कहे हैं। तद्व
त रहत हैं। ऐसी इन की दिसा है इनके संग तें कछु स
नेह का ने रहत हैं। तद्वत रहत हैं। सो अब ए मेरे पास
ने चलिवे को विचार कीयो है सो मो को महा दुख भयो है
सो या गेह कहन है। स्थ्या श्लोक॥ अलिं युंजन्ति समात्
मेष्या बहु समाहितः। ता नापराध सर्वोपि मृषा औ
धवशात मः॥३०॥ या को अर्थ। या प्रकार प्रेमजी हमेरे पा
स तें चले आवे मैं कोन प्रकार सों निर्वाह करोगो। त
तें या प्रकार समान वा छुक अपनो दुख तुम को लि
खियै सो वा होन करिवे जानियो। कहा तो इ लिख
यो है सो वो होन करिवे जानियो। कहा ताइ लिखें। ए
वातन तो लिखवे में नाही आवे। ता तें लिख्यो सो मेरो
अपराध क्षमा करियो। और अधिकारी विरक्त जु
मारे पास आवत हैं सो या उको अपराध क्षमा क
रियो काहे तें जीव हैं सो दोष निधान हैं। तातें क्ष
मा तिकरियो। काहे तें तुम परम वत हो ऐसी है
तातें कृपा क्रोध के वसता ऐसी होयतो येउ वडे
दोष है। तातें तुम को धव सम्मति दीजियो यह क्रोध
है सो उचाडा को स्वरूप है सेग द्रव्य धर्म में वाधक
है। क्रोध तें भगवद्भाव सदूरि होत जात है। सर्व अर
स्थ रहत है। श्लोक। इहाशत्रिसुरज्ञा ह्व्रेमालिर
तिस्तु सवैया भवद्भिः सर्वात्मे
ष्यक। ३१। या सो अर्थ। ॥

॥ पूव ॥

…प.
१८

तें हम पर हैं सभी भांतिके दुःख पावत हैं मेरो चि
त ठिकानें नाहीं है तातें कछु मेरी वानी अपनें मनमें
मति ल्याईयो। और तुम प्रभु के सान्निध्य हो सब
प्रभु संबंधी तुमको कार्य करनो है तातें तुम चित
को ठिकानें राखियो प्रसन्न मन राखियो। और य
ह विरक्त अधिकारीके ऊपर जैसे पूर्वरूपा राखत
हैं ताई भांतिया ऊपर स्नेह राखियो मनमें कछु दू
षण यामें मति विचारियो। एक रस अपने मनकी
वृत्ति सर्वथा आछे राखियो। और दोयजनें अप
नें घरमें तथा सेवक मनुष्य वासव सों मिलिकें स
बकें न्यारे न्यारे समाचार सब वागिद पत्र लिखिकें
पठाइयो। अथ और एक श्लोक २० श्लोक। आर्त प्र
पन्ना त्रिन पथा तत्र स्थिर भवेत् मुखरोपि समीची
नो मुख दोष विवर्जित ॥२०॥ याको अ… और यह वि
रक्त अधिकारीको समाधान भली भांति सों करियो आ
र्त प्रसन्नता सों याकी प्रसंसा करि याके चित्तको
समाधान करियो अत्यंत प्रसन्नता सों याकी प्रसंसा
करि याके चित्तको प्रसन्न करियो काहेतें ईहांतें दुःख
पाइकें गयो है सो तुम कछु उहां कहोगे तो मनमें म
हा दुःख पावेगो सो मनके रोग में कछु भाव मना
हीं बनि आवत है तातें एसी भांति राखियो जो चि
त्तमें प्रसन्न होय तब याको चित्त स्थिर होइगो और
तुम कछु कहोगे तो यह दुःख पावेगो और तुमको मुख
रता होइगो और कछु यह तुमारे हाथ कछु मि
लेगो नाहीं और यह मुखरता दोष है सो सब दोषन
में मुख्य है तातें शास्त्र में धन्य श्री आचार्यजी पे यह
मांग्यो जो मुखरता दोष जाय तातें मुखरता दोषन है
दूरि कीयो सर्वथा करियो सो किय वानी बोलन

कोंनिरोधहीमनसोंकरनोंउचितहै॥ [illegible] ओरहवो
रतहिंसलोक॥ वैघुकेन प्रेरनाके विशेषपरितोषणात
भावत्सना त्वहवसनितः पुनरुथ्यित॥२॥ याको अ
र्थ॥ जोयह विरक्त अधिकारी हैं सो अपने घरमें वैघुहै य
गृही अर्थ धरेसकी जानतहैं तातें अपने घरके कामकों
हैं तातें विषय भलीभांतिसों याको परितोष करयो औ
रयाले दोष मनमें मति विचारियो काहेतें सारवु
रागमें कहेहैं जा जीवको जैसी गति होय जैसें संग
नितैसही कायमें जीव तत्पर होइजाइ जैसें पाकारि
केडुक जो रसरूपको घटपाछारि तैसें जीव भग
स्वधर्मकेमें सत्संग करिकें तत्पर होय संगविना दुसं
नहोयते फिरारि तातें जीवको कहा होय हैं प्रभुकी इ
ब्रजरहा जैसोइ होतहैं तहांतें सोइ संगतें सोइ साधन
वनिस्थावतहैं तातें तुम अपने हृदयमें बहु होयमति
[illegible] भलो मनमें धारनकरियो
वरियो। सर्वप्राणीमात्रको भलो मनमें धरो ताको कल्यान
याप्रकार सिक्षाजीव अपने मनमें [illegible] सिक्षापत्र चालीसमें
होमारस्टाति श्रीहरिराइजी कृत सिक्षापत्र संपूर्ण॥ याप्रकार
ताकी टीका श्रीगोपेश्वरजीकृत संपूर्ण तुमको पत्रद्वारा निवेद
रूपरके सिक्षापत्रमें अपनो दुःख तुमको [illegible] आयो होइगो काहेतें
नकरयो ता वस्तु मोरे मनमें दुःख आयो होइगो तातें अब यह पत्रमें
तुमसें सबंधी परमहितकारी हो तातें सो वाचि
मनारा पुष्टिमार्गीय सिद्धांत वर्णन करतहो सो वाचि
पुष्टिमार्गीय सिद्धांत वर्णन और जे पुष्टिमार्गीय भ
कें अपने मनमें धारन करियो और जे ॥ लौकि
कवलीय हैं तिनके धारनकरिवेयो ग्य हैं सो ॥ पूर्वापर
कसवकरें कार्य प्रभुसेवोपयोगनात पांस्वत्र पूर्वापर
किंपोनरलौकिक रयाम। अर्थ॥ अब श्रीहरिराइजी
पुष्टिमार्गीय धर्म सर्वोपरि करत हैं जो भगवदीय हैं
जितनो लौकिक कार्य है सो प्रभुकी सेवामें विनियो

नरै यह सब तो पर मुख्य धर्म है घरउ भाव रूपे बार
हरके वे थोक देव इंद्रिय यह रूप व भगव
तथा का उमे तो हरयो
लभाति पुत्र होइ यह भाव सो करै जेसे निरोध ल
श्री आचार्यजी कहे है भगवद् में सेवा में प्रति वे
ताको त्याग करै अनुकूल होय ताको संग्रह करै जहां
मन की वृति रहै जो प्रभु ने जो रखे सो प्रभु की ली
ला ही करि जाने अपने प्रभु को ही चिंतन करै
सब छोडि के जैसे एक ऊपर का रहि आवे है कि तुम लो कि
व मन में न विचारै तब प्रभु प्रसन्न होय । तहा कोइ म
रह्यो तो लौकिक तो अनंत प्रकार है और लौकिक वस्
तो विनो वन आइ नाहीं है ताते लौकिक समय तो विकल
रे भाव रूप्या वेग मे यवा करै तो निर्वाह होय सो तो
कि कस्व अच्छे है सो कहा प्रयोजन नहीं प्रभु ने कृपाल
है थोडे सो व चये न व हुत मा जेगो या प्रकार को ईस देस्क
रै लो वित मे ल्याव तहां कहत है लो व नरो वत्नेह
रखा ता लौकिक सातिप अनः तहां पहा व मानस्य न
सिद्ध्य पि लौकिक या अ । अन श्री हरिरायजी
कहत है अपने स्वकीय भक्त है सो लौकिक वत रैनो प्रभु
को नाही सुहाय तब प्रभु उपेक्षा करै उदासीन होइ
जाइ तब सेवा मे मनको उद्वेग होइ अनेक कार्य मे मन
जे तब प्रभु प्रतिबंध करै जो भगवद् सेवा न बनि आ
तो मे व्याप श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे है उद्वेग
प्रतिबंधो वा भोगो वा स्यात् बाधकं । बाधक तो परि
त्याग भोग एक तथापरं यह सब के मन रूप संबंधी
गत है खान पान विषय इंद्रिय न को सुख देह को सु
ख यह तो रहै तब भगवद् सेवा भली भांति सो व नै
प्रसाव साथ भोगावे मन न रहै तथा देह सबंधी
मे मन को रखे तो सेवा मे उद्वेग होइ पाछे

१ प्रतिबंध करै सो सेवा उत्थने। ग्रोरप्रभुकौं ल्है
नै।विकरौ या सति होय।कार्य करो।सो उ कार्य
सो नानाप्रकारके दुःख काहूको पावै। ना
कौं सर्वथा दीन करै।प्रभु की से
करै।७।यह निश्चय सिद्धांत है श्र
।सुद्भाव:प्रभो स्थाप्यो न चा
श्रे तिमा
।र्थ्याको ।प्र वे द्भाव कौं स्था
ए ति काहू कौं दिखावै
माहिं न सुने द
गारकरै जप पाठ श्रादी श्रादी वार्तो
यह सब करतव्य तुराई जाननौ।ना हिं न कोई न होइ
धारन करै।नो श्री गुसांई जी श्रागरे पधारे
तब एक वैस्नव पठायौ।श्रपने घर सेवा चतुराई सो करि
तहं श्री गुसांई जी चित्राबन वंत न कहे।ताते चतुराई है
सो सब श्रप्रयोजक मिथ्या हैं।ता में बहुत फल सिद्ध न
हीं है।ता में बहुत फल सिद्ध नाही हैं वे वस्त्र प्रतिष्ठा मात्र
हैं सो लोक प्रतिष्ठा भगवद्भाव की नाशक तातें प्रभुस
वे हृदय की जानत हैं श्रंतर्यामी हैं तहां मन को व
पटवहु चलत नाही है सो विवेक धैर्याश्रय ग्रंथ में
श्री श्राचार्य जी महाप्रभु कहे हैं सर्वज्ञ सर्वन स्पादि
सर्व सामर्थ्य मेव च।इति वचनात प्रभु सर्व रस साम
र्थ युक्त हैं याभाव सो वरै सो जानि के वे सोई फल देय
तातें लोभार्थ प्रतिष्ठार्थ वस्त्र कपट सयुत न करनो
जिन नी रीति वधी है।तिनतनी पुष्टिमार्ग की मर्यादा
रीति सो करनो।सो विवेक वैश्रिवक छु कामन्ना मनमें
नरा खनी।श्रन श्रोर हू कहत हैं।श्लोक।सद्भावे ने
तदीय तु लो विवेक साधयेत्स्वयं।न त्साधितम वि
न स्व सिद्धतिनामन्यथा।४।या को श्रर्थ।न इहां को ई क

है जो शुद्ध भाव प्रभु में राखि सर्व प्रभु में निवेदन करै
पाछे लौकिक दुःख आदि कि नासे वाको न प्रकार करै
यह संदेह होइ तहां कहत हैं जो यह सर्व लव शुद्ध भा
व ते प्रभु में मन लगाइ तत्पर होइ जो कोऊ सेवा कर
न होइ रासो शुद्ध भाव प्रभु में राखि के तौ लौकिक वैदिक स
बल कार्य सिद्ध करत हैं सो संतदास की वार्ता में प्रसि
द्ध ही वर्णन है जो चौबीस रूपका की पूजा में प्रभु सर्व कार्य
सिद्ध करते पद्मनाभदास के ठाकुर नाम में सकल पदार्थ सिद्ध
करते ताते शुद्ध भाव सों करै तहां कोऊ कहै जो लौकिक
वैदिक वारे लोक विघ्न करैं तहां कैसें करै यह संदेह
होय तहां कहत हैं जो श्री आचार्य जी भक्तिवर्द्धिनी में क
हे हैं सेवायां वा कथायां वा यस्यासक्तिर्दृढा भवेत् । याव
जीवं तस्य नाशो न क्वापीति मतिर्मम ॥ १ ॥ बाधसंभावना
यां तु नैकांते वास इष्यते हरिस्तु सर्वतो रक्षां करिष्यति
न संशयः ॥ २ ॥ प्रभु के कार्य में सेवा दि में दृढ भाव है य स
वै ठौर ते अपनो मन राखें तत्व करि लेइ तब काहू की भली
बुरी न देखैं रास भक्त की निश्चय प्रभु सर्व ओर ते रक्षा क
रें जैसे अंबरीष को दुर्वासा के शाप ते रक्षा करी ताते
निर्विघ्न सों मन लगाइ प्रभु के धर्म में तत्पर होइ अन्य
था और कार्य जो वेद को नाहीं करते यहै तब प्रभु ही यह
लोक में पायो है वही मान राखें सब और हू कहत हैं
४ लोक ... शक्यो हि कर्तव्य स्ततो बे लौकिक व्यय:
नाशमें लौकिकं तु बढ़ै न न बाधते पया ...
अवश्य ही हरिराइजी कहत हैं जो मुख्य तो यही है जो लौ
किक वैदिक न करें तो छूटें आवश्यक होय सो लौकि
क करैं तामें आसक्ति न होय आसक्ति मन की होय
यही बाधक है आसक्ति बिना अनेक लौकिक वैदिक ती
हू वै सो बाधक सर्वथा ही न करें सो श्री आचार्य जी
कहे हैं गृहस्थ वो मनात्याज्ये न त्यक्ते न सकाने ह ...

सुनीविरूपः संसारमोचकः १
हैं अन्यथा तो भजेत्कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः व्यावृत्तोपि
श्रवणादौ यत्नेस्सदा २ ॥ इति वचनात् ॥ जो तो गृह
नभक्त होय तो सर्वत्याग पूर्वक प्रभुको भजन जो त्याग न हो
इसके तो समग्र घर श्रीकृष्णकी सेवामें विनियोग करे ॥
व्यावृत्त ऐसी वहै नामें हरिमें निरंतर चित रहैं याप्रकार
हैं तो बाधक न होइ नाही तो बाधक करै आगे कहत हैं
श्लोक ॥ अन्यथा बद्धमाप्येत तद्बाधेनैव पेहलया ॥ कृष्णमे
वैक विषये सुखं चेन्नोनिभीयतां ३ ॥ याको अर्थ ॥ लौकि
क वैदिक में जो चित बड़ु नहीं बढे सो प्रभुनो अंतःकरन
में विराजत हैं तब लौकिक में उद्वेग आसक्ति देखे तब
उपेता करि उदासीन होय जाय सो संन्यास निर्णय में
श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं विषयाक्रान्त देहानां
नावेस सर्वथा हरेः तब लौकिक विषय में आसक्ति मन
की इंद्रियकी देहीसि प्रभु देखे तब अपनो भगवद्भाव
रूपरसको आवेस सवामें न पैचि लेइ ताको सर्वथा प्रभु
की लीलाके स्वरूपको भगवद्धर्मको आवेस कबहू न ब
है भगवद्धर्मे करने उद्वेग मन में रहै याहूँ प्रतिबंध होइ
तब बहिर्मुख होय जाय केवल लौकिको सक्ति होय तब प्रभु
वाको उपेक्षा करि त्याग करि देइ ताते अन्यथा लौकिक
विषय ते आसक्ति मन न करै प्रभु की सेवा संबंधी कार्य
लौ निज प्रभु संबंधी विषय धारण करै जो फल लेउ छ
नको यह वर्धिये ता अर्थ यत्न करे फलानी सामग्री
प्रभु आरोगेंगे तो आछो फलानो यामा वस्त्र आभूष
वस्त्र प्रभुमें विनियोग होय तो भली या भांति हरि
विषय का राग होय जा प्रकार सोई बात मन में धरे
लौकिक याहु एसी सुने जा के सुनेते लौकिक में वैराग्य
होइ औ प्रभु संबंध में अनुराग दृढ होइ ताते

[illegible] कहे जो भगवदीयको संग होइ तो संसार भाव न
नाहीं [illegible] जाको लौकिक संग होइ सो जलवत्
को नासक है तिनके सातें भगवत्स्वरूप
न [illegible] नहीं होय तातें भगवदीयको संग नित्य
[illegible] और यह पुष्टिमार्ग में आरत है सोई
है तातें प्रभुके दरसनकी आर्ति होय मन [illegible] सरा
सो निरोध [illegible] है सो लौकिक [illegible] मानानुज
[illegible] यदा भवेत् तदा सर्वेस्मि नंदं हृदिस्थ
गतं [illegible] सर्वानंदमयस्यापि कृपानंद सुदुर्लभः [illegible]
[illegible] जैसे काष्ठके भीतर अग्नि है मथन तें वा
हे [illegible] प्रभु [illegible] नाथ [illegible] सकरने वाहर प्रगट
[illegible] तो प्रभु सर्वत्र ठौर है और कृपानंद सुदुर्लभः
[illegible] करन है तातें दरसनकी आ
[illegible] है सो [illegible] स्वास्थ्य तो दि
[illegible] करुणानिधि ; श्चित्त वृत्तेपि
धरि १ [illegible] ते मन नि
सि लौकिक आर्ति के दुखस [illegible]
ति [illegible] नव प्रभु तो करुनानिधि
[illegible] अनुभव सदा [illegible] न
[illegible] सो भगवान उद्धवजी प्रति कहे हैं [illegible] त्वं तु
त्यज स्वजन बंधुषु मय्यावेश्य मनः
[illegible] हे उद्धव तुम सर्व त्याग करि के
न बंधु [illegible] आवेश [illegible] सब
[illegible] तुमको [illegible] भय नाहीं है तातें
हरि [illegible] जो [illegible] अपनी चिंता न
संबंध [illegible] लोक परलोक की कछु चिंता नाहीं
है [illegible] तुम जैसे पिता पुत्रको पालन की चिंता
पुत्रको कछु भय नाहीं या प्रकार प्रभु अपने भक्त

[illegible] श्री [illegible]
[illegible]
[illegible] सौं
[illegible] है
[illegible] [illegible]
[illegible] सौ सि
[illegible] वार्ता [illegible]
[illegible] समात [illegible]
[illegible] पुष्टिमार्गीय [illegible]
[illegible] सेवा प्रभु [illegible]
[illegible] श्री हरिरा
जीव रहते हैं ते पुष्टिमार्गीय जन के घर है [illegible]
[illegible] को जे पहा पुष्टिमार्ग तें वाते सुखी आश्रय
[illegible] सकल में सुख प्रभु को सेवा है तासे प
[illegible] सेवा बिना [illegible] फल को [illegible]
[illegible] तातें यह सबमें जानतो जो के श्री
की सेवा करत हैं तिनको सदाही कल्यान होय
[illegible] पुष्टिमार्गीय को फल है सो है
है यह स्वामी निश्चय सिद्धांत भयो ॥ अब श्री गो
[illegible] हार्द अपहरि जी व्रजदास ति हारे ह
दय में श्री हरिराय जी आइ मेरो दुख दूरि कीयो
आपने चित्रापत्र को टीका सेरी [illegible] जो लियो
मैं हृदय में विराजे श्री हरिरायजी की रीति है तातें
श्री [illegible] जी के हृदय में श्री आचार्य जी श्री गुसां
ईजी नित्य विराजत हैं तातें यह भाव प्रगट भयो
है सो तुम [illegible] रस चतुर हो अत्यंत गोप्य यह रहस्य
लियो [illegible] नहिं [illegible] यो गपनाहीहै ॥ २२ ॥